BHAVAN'S LIBRARY

This book is valuable and NOT to be ISSUED out of the Library without Special Permission

ृभगवंतमास्करे मीमांसकश्रीनीलकण्टभट्टविरचितः

दानमयूखः।

(सप्तमः)

र्वे रेरेरेइत्युपाह्वच्यंकटेशशास्त्रिणा संग्रीधितः।

मुम्बय्यां

फोर्ट नेक-हाउस लेन-फोर्बस स्ट्रीट प्रविभागे ' प्रणिलाल इच्छाराम देसाई ' दलनेन स्वीवे ' ग्रुसरासी न्यूस ' ग्रदणयन्त्राख्ये ग्रद्रवित्या तत्रैय प्रकाशितः ।

विक्रमसक्त् १९८०.

किस्ताब्दः १९२४.

मुल्यं कपक्रवयम

अथ दानमयुखस्थविषयाणां अनुक्रमणिका । विपय: 27 विषय: पृष्ठम् । प्रथम २८ होममन्त्राः १ मङ्गलम् ... ٤ २ दानसामान्येति शर्तव्यता २९ टानानि ... ९४ ३ ० रजतादितलाविधिः ... × 803 ३ पात्रम ... ३१ नानारोगप्रादिस्तलाविधि १०४ ४ देयम् ३२ घतादितुलाविधिः ... १०५ ५ काला: ३३ रूपादितलादानप्रयोगः ६ पुण्यवेशा. ... ३४ हिरण्यगर्भदानम् ... ७ प्रतिग्रहे देशनियेघ.... 20 883 ३५ प्रयोगाः ... 226 ८ रात्रिकृत्यम् 8 8 ३६ ब्रह्माण्डदानम् ... ९ प्रतिप्रहीतृ इत्यम् ... 53 १२१ ३७ कल्पतच्दानम् ... १० द्रव्याणां प्रतिमहस्थानानि १२७ શ્ધ ३८ गोसइसम् ... ११ परिभाषा ... र ७ १३१

28

ર્ષ

20

26

49

२९

3 8

38

48

uu

12

46

€3

619

હધ

३९ हिरण्यकामधेतः ...

४० हिरण्याश्वदानम् ...

४१ हिरण्याश्वरथदानम् ...

४२ डेमहस्तिरथदानम् ...

४३ पञ्चलाङ्गलदानम् ...

४४ धरादानम् ...

४५ विश्वचक्रदानम् ...

४६ महाक्लालतादानम्

४७ सप्तसागरदानम् ...

४८ रत्नधेनुदानम् ...

४९ महाभूतघटदानम् ...

५० दश महादानानि ...

५१ रजतदानम् ...

५२ अधदानम् ...

५३ विलदानम् ...

५४ तिलकम्मदानम् ...

११५

१३८

१३९

888

१४५

१४७

१५१

१५५

१५ ७

१५९

१६२

888

338

17

१६८

३२ द्रव्यप्रतिनिधिः

१४ दक्षिणाप्रमाणम ...

१३ वेबताप्रतिमाः

१५ द्रव्यमानम ...

१६ धान्यादिमानम

६७ भूमानम् ...

१९ कण्डानि ...

२० भद्दप्रवादकारः

२२ लोकपालरूपाणि

२४ वाखपूजा ...

२६ अधिदेवलाः

२५ द्वारपूजा ...

२७ वस्वाधेकादशदेवताः

१८ मण्डपादिलक्षणम् ...

२१ विनायक।दिलक्षणानि

२३ प्रण्याह्याचनावि ...

| धा. विषय: | अ विषय: प्रतम् |
|--------------------------|-------------------------------|
| ५५ गजदानम् १७३ | ८३ महियी २६५ |
| ५६ दासीदानम् १७४ | ८४ मेगी २१६ |
| ५७ श्यदानम् १७५ | ८५ अजा २१८ |
| ५८ महीदानम् ••• ॥ | ८६ मेपः २१९ |
| ५९ यहदानम् १७७ | ८७ परंतदानानि २२० |
| ६० मटदानम् १८५ | ८८ रवणाचलः ३२८ |
| ६१ प्रतिअयदानम् ११ | ८९ गुइपर्वतः २२९ |
| ६२ कलादानम् १८६ | ९० सुवर्णाचलः २३० |
| ६३ वैवाहिकदानम् १८७ | ९१ विल्यकः २३१ |
| ६४ कपिलादासम् १८८ | ९२ अधींदये विलयमैतदानम् " |
| ६५ तिल्पेतः १९१ | ९३ कार्पसायलः २३४ |
| ६६ पृत्रभेतुः १९२ | ९४ वृताचलः ग |
| ६७ जल्पेतः १९३ | ९६ रत्याचतः २१६ |
| ६८ शीरपेतः १९४ | ९६ रीपाचलः २१६ |
| ६९ दिविचेतः १९५ | ९७ शर्कराचलः २३७ |
| ७० मधुषेतुः १९६ | ९८ शिलादानम् २३९ |
| ७१ रसधेतुः १९७ | ९९ भद्रनिधिदानम् २४१ |
| ७२ शर्कराभेतः १९८ | १०० आनंदनिधिदानम् २४४ |
| ७३ कार्पोसधेतुः १९९ | १०१ देवतादानानि २४७ |
| ७४ रूवणचेतुः २०० | १०२ ब्रह्मविष्णुवद्गदानम् १४८ |
| ७५ द्ववर्णधेतुः २०१ | १०३ द्वादशादित्यदानम् २५० |
| ७६ वरूपात्वहरे सुवर्ण- | १०४ चहादित्यदानम् १५१ |
| धेतुदानम् २०२ | १०५ होकपासहकदानम् - २५२ |
| ७७ स्वरूपती गोदानम् २०३ | १०६ नवमस्यानम् २५३ |
| ७८ गोदानविधिः २०) | |
| ७९ गो.पूजने दाने च २०। | १०८ शल्दानम |
| ८० हेमभूझीदानम् २१ | १ १०९ जात्मप्रतिकृतिदानम् २५% |
| ८१ उमयरोगुराचितुदानम् २१ | २ ११० घनदम्तिदानम् । |
| -८२ वैतरणो ः २१ | ४ १११ शालमामदानम् २५९ |
| | 111 |

| विषयानुकमणिका । | | | | | | ₹ | |
|-----------------|------------------|-------|---------|------------|--------------------|--------|--------|
| અ. | विषय: | a | वृष्टम् | अ. | विपय: | | प्रथम् |
| ११२ | कालपुरुपदानम् | | २६० | १३ १ | र्गघद्र०यदानम् | ••• | 23 |
| ११३ | कालचनदानम् | | २६१ | १३२ | रत्नदानानि | ٠ | ,, |
| 888 | यमदानम् | ••• | २६२ | 888 | गलन्तिकादानम् | ••• | 260 |
| ११५ | आयुष्करदानम् | ••• | २६३ | 848 | प्रपादानम् | ••• | 25 |
| ११६ | सम्पत्करदानम् | • • • | 78X | १३५ | उदकदानम् | ••• | 268 |
| ११७ | कृण्गाजिनम् | ••• | २६६ | १३६ | धर्मघटदानम् | ••• | २८२ |
| ११८ | श्यादानम् | ••• | २६९ | १३७ | यज्ञोपवीतदानम् | ٠., | २८३ |
| ११९ | शियाय शय्यादान | म् | २७१ | 255 | यष्टिदानम् | ••• | 77 |
| १२० | वस्रदानम्, | | 29 | | इन्धनदानम् | | 258 |
| १२१ | आसनदानन् | | २७३ | | अग्नीष्टिकादानम् | | २८५ |
| १२२ | भाजनदानम् | *** | ** | १४१ | दीपदानम् | * * *, | 33 |
| १२३ | स्थालीदानम् | | 208 | १४२ | अभयदानम् | *** | २८७ |
| 128 | आपोकदानम् | | २७५ | १४३ | मासेष्वनुक्रमेण दा | नानि | ,, |
| १२५ | विद्यादानाख्यमति | दानम | ,,, | 388 | अश्वत्यसेचनम् | ••• | 53 |
| १२६ | वेददानम् | | २७७ | | पान्थोपचारः | ••• | २८८ |
| १२७ | पुस्तकदानम् | ••• | २७८ | १४६ | गोपरिचर्या | ••• | २८९ |

१३० वाब्रुवामम् ... २७९ १४८ मानाहव्यदानयन्त्राः २९६ इति दानमपुरास्यविषयाणामजुक्तमणिका।

विधिः ... २९०

१२८ छत्रोपानद्दानम् ... ,, १४७ सहस्रादिविममोजन-

१२९ अनदानम्... ... 12

'गुजराती न्यूस ' मुद्रणालचे मुद्रितानि ऋय्य-संस्कृतपुस्तकानि ।

| | Literan | ~~~~ | | - Aloda |
|--|-------------|-----------------|-------|-------------------|
| | acsund | स्तकानि | ì | |
| १ दानमयूखः— | | ٠ | | |
| २ विशिष्टाङ्गेताधिकः | *** *** | ••• | *** | ?-0-0 |
| 3 नाराष्ट्राक्षता। धका | (णमाळा— | | | 1-0-0 |
| | | GT - | ••• | 7-6-0 |
| व विष्णुसहस्रतामक | - Corn | | *** | 0-3-0 |
| ३ ।३।यसहस्र <i>नाम</i> क | - | *** | *44 | 6-1-0 |
| ५ द्वासहस्रमामा | ··· | ** | *** | 0-1-0 |
| ७ अभारसभागकारण | - | *** | *** | · |
| ८ मधसदेशकाळ्या— | ··· | *** | 440 | स िवमाणम् |
| े रता नमस्ताहार | | *** | *** | 32 |
| A CHARLETTINE TO THE | | *** | *** | सुदियमाणः |
| | | *** | 440 | स दियमाणम् |
| | • | *** | | सदिवमाणः |
| | * *** | *** | *** | अन्यन्त्राण्ड |
| 59 1991122333771 | *** | *** | *** | 25 |
| | *** | *** | *** | ** |
| | | *** | | 31 |
| १७ इंशोपनियद्वात्यसम्। १८ रखंशकास्यम् | नम्— | *** | *** | |
| १८ खवंशकाच्यम्— | द्येपेता— | | *** | 39 |
| १९ किरातार्जनीयम्- | | *44 | *** | सुदियमाण: |
| च्यायाम्- | | *** | | - 73 |
| २० श्रीमद्वारमीकिरामाय शब्देन्द्रशेसग्रदिनानानिक | 200 | *** | *** | 21 |
| भाग्य देव देव सारा दिनाना निवन | Bankat - C- | वस्वतन्त्रवार | भेन | |
| | | | | |
| शारामराजस्य नाम्नः प्रकोत | S 52 46 341 | षीशस्य भी। | काको- | |
| | | | | |
| | | | | |
| रामायणीशरामण्यारः प्रमायणीशरामण्यारः प्रणीतया भूपणाख्ययाः विभञ्ज वस्त्र | पया टीक्या | क्षीको कि | तया | |
| प्रणीतवा भूपणाख्यया : विभव्य वस्र बद्धम् । ए. स | धेकया व | मित्रक । कार्ना | াত্ত- | |
| वालकापना निर्मा पूर्व | - 3065 | 4 4 68 | भा | |

बालकाण्डम्—उपरिनिश्टिटीकात्रयोवेतम् । मूल्यम् हः अयोज्याकापञ्चम्—अवीविद्वश्चीकावयोजेतम्। मृ रू अयोज्याकापञ्चम्—अवीविद्वश्चीकावयोजेतम्। मृ रू

किष्किरधाकाण्डम् - उपीतिर्दिश्शीकावयोगतम् मृरुः सन्दरकाण्डम् - वपीतिर्दिशीकावयोगतम् । मृरुः

स्य काण्डम्—उपिनिद्दिशेषात्रयोगेतम् । मृ हः उत्तरकाण्डम्—उपिनिद्दिशेषात्रयोगेतम् । मृ हः

3-0-0

4-0-0 3-97-0

₹-92-0 C---€~0~0

दानमयुखः ।

सप्तगः ७

श्रीगणेशाच नम-॥

यो लीलया सन्तत्तुतेऽत्र विश्वं सत्यालयात्रामि विश्वस्ये । स्वयं नव्यत्याल म पूर्णेस्यः रिववं सत्योत्वात्र स्विमेगासी ॥ १ ॥ श्रुतीः स्मृतीवीस्य पुराणजातं सत्तित्रियन्यानि सन्निवन्यात् । श्रुतीः स्मृतीवीस्य पुराणजातं

श्रीनीडकण्डो विद्वणोति कृत्यम् ॥ २ ॥ परस्वत्वीत्परयन्तो द्रव्यत्यागो दानम्। व्यत्ययविनिमयादयस्त्वे-लक्षाच्या एव दानपद्प्रयोगात् ! इति केचित् । परे 'प्रयोगस्य भाकः-स्वात्तद्विश्वस्वेनापि विशेषणीयम् ' इत्याहः । दामोदरठकुरस्तु ः' कयादि बार्यितमदृष्टार्थरवेत विशेषणीयं प्रीत्यादिदाने दानपदं गौणम् इत्युचे । तत्र । सोमक्रयातिव्यापयवारणात् । गोण्यां मानाभावाच । बुरस्यि पारादेशेन स्वक्तस्यापहर्ता हु प्रत्यवैत्येव । ताहशापहारे शिष्ट-विगानेन (नेपेधकस्पनात् । 'परस्वं नाददीत ' इत्येवमाकारकः प्रत्य-क्षस्तु, निपेधो न प्रवर्तते । अपहारद्शाया कस्याऽपि स्वत्वाभावात् । दाद्यः पुत्रकृत्यसौ तु मानाभावः । रक्षणं तु परकीयम्यापि प्रीत्यादिती-पपद्यत [°]एत । अध्न्युदेशत्यक्तपुरोडाशादावित्र । अन्यथा सन्नाऽपि पुनरत्पत्तिप्रयोजकस्तिष्टकृद्धविष्यमावेऽपि पुनरूत्पत्तिप्रसङ्गः । स्त्रिष्ट-ऋदादिविधिसस्य एव गुनरूत्पत्तिनीन्यथा । त्यकोपादाने विगानादिति निर्णायितं तन्त्रस्त्रादौ । न स्यागकाले खत्वापगमः, कि तु विप्रकर्त-कस्वीकारकाल इति त कस्यचित्राहतः प्रलाप उपेक्षणीय एव । यदि केनचित् कश्चिद्राञ्चणमुरिदय किश्चिद्रव्यं सुवर्णरजतादि ।

सनसा नात्रमुद्दित्य शलमध्ये बाट्टं क्षिपेत् । दाता तत्कळमाप्रोति प्रतिपाही न दीपमाङ् ॥ इत्यादिवयनप्रतिपादितेन निषिनोतसूच्य देशान्तरस्थाय तद्व वर्षे प्राहितम् । सम्र यदि सध्येमार्ग नष्टं चौरेकोऽपह्नतं तदा दातुनं कोऽपि प्रत्यवायः प्रमाणाभाषात् । दानपळं तु नैत्र जायते । शास-गर्वतापस्यवसानकस्योत्सर्गस्याभावत्वात्। गवानेन वधसा दानातु-क्ल्पेन पात्रोदेश्यकः सङ्ख्य एव विश्वीयते, न तु पांत्रस्वत्वीत्पचिपर्यन्त-वार्जि, खहेशमात्रथवणादिति बाच्यम् । प्रजापतिप्रतान्तर्गतीयदा-दिल्यानीभ्रणसङ्ख्यपद्भापि फलपर्यन्तनाया आवद्यकल्यान् । अन्यथा तमार्थि सङ्करमानादेव कर्छ स्यात्। अस्तिवि चेन्मैवम्। 'तस्य वता ' इति भावस्पत्रतोपक्षमेणा भावस्पाऽऽदित्यानीस्वास्तिविह्छो पक्रमानुरोशायतिपाळनीयस्वाधोऽन्यभिचारिणी भाषक्त्या सङ्स्पिकियां समयि । स्त्र च परिपास्तिऽनीक्षणादौ व्यभिचारात्सद्भस्यस्त्रेणैव दर्पता स्थात् । अतो न सङ्गल्यमात्राचन फलम् । किन्यात्र मध्देशका-लावन्त्रेहेन पात्रह्लामधेनासम्भवं चल्पाने मानसपात्रोहेन्यको जला-भिक्ररणको जलप्रदेशी विधीयते । न तु पात्रम्यत्यपत्तिपर्यन्तताऽपि बार्यते । पात्रहातृपविप्रहीनृपदेस्यागप्रतिग्रह्योः प्रवीते. । सती न प्रविनदीतृत्यापारं विनोदेशविज्ञिष्ट नलप्रहोपमात्रात्मलमिति दिक ।

यत देवल--

सर्थातामुदिते वात्रे अद्धया प्रतिपादतम् । दानीभरवीभिनिर्देष्ठं व्यार्ग्यानं तस्य कप्यते । इति ।। सर्व्यपाणसारिकन्दानोत्वर्थः, न दानसामान्यपरम् । इति दान-

स्वत्यम् । एउद्रार्शसः सामग्रेशेपनियदि—'दानेन सर्वान् फामुननवामोति निरुत्धीसन्तप्' इति ।

क्यास---

यदश्मिम विशिष्टेम्यो यदश्मिस दिने दिने । तत्ते जित्तमई मन्ये ग्रेषं करवापि रक्षित ॥ भाक्षाद्वेमपि भासमर्थिम्यः कि न दीयने । • इण्यानुक्तो विमयः कशा करम भविष्यति । इत्यादि ॥ तश्च दानं त्रेधीकं भगवद्गीतासु— । दातव्यभिति यहानं दीयतेऽद्रीर्भागा देशे काळे च पात्रे च तहानं सान्त्रिक स्प्रतम ।। यत्त प्रत्युपकारार्थं फलभुद्दिश्य वा पुनः।

दीयते च परिक्षिष्टं बद्राजसमुदाहतम् ॥ **अदेशकाले यहानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।** असंस्कृतमञ्ज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥

विष्णुधर्मोत्तरे--

तामसाना फल भुङ्के तिर्यक्ते मानवः सदा । वर्णसङ्करभावेन वार्द्धके यदि वा पुनः ॥ याल्ये वा दासभावे वा नाज कार्या विचारणा । वतोऽन्यथा तु मातुष्ये राजसाना फल भवेत् ॥ सारिवकाना फलं असके देवत्वे नाऽत्र संशयः ।

मासचे-

येपा पूर्वे हतं कमें सास्त्रिकं मनुजोत्तम । पौरुपेण विना तेपा केपाश्चिद्द्रयते फलम् ॥ कर्मणा प्राप्यते लोकान् राजसंस्य तथा फलम् । फुच्छ्रेण कर्मणा विद्धि सामसस्य तथा फरूप् ॥

हाशीत:--

मुमूर्पुस्तामसं यश्राप्रकृतो ददाति । इति ।

अप्रकतोऽसावधानः ।

गारुडे---

, भईते यत्मुवर्णादि दान तत्कायिकं मतम् । आर्तानाममयं द्यादेवद्धि वाचिकं स्मृतप् ॥ विधामादाय यज्जप्येस्तदानं मानसं द्विजा: । इति ॥

अथ दानसामान्येतिकतेन्यता ।

तत्र दानरधिकारस्तु चतुर्णामपि वर्णाना स्त्रीणां च । वर्णानामाश्रमाणा च चातुर्वेण्यं युधिष्ठिर ।

दानधर्म . इय जलवा व्यासेन गापितम् ।

इति न्यासोक्तः। स च निपादस्थपतिवद्वैदिकप्रश्रपत्विष समन्त्रक एव स्त्रीशृह्यो-रविरुद्धः।

मद्रनात्ने जातुक्रण्यः-

णविकारी भवेच्छूद्रः पूर्वधर्मे न वैदिके । पूर्वधर्मास्त्रवेच स्मृत्यन्तरे—

वहिबेंदि च यहानं वत्यौतिकमुदाहराम् । तत्रैव व्यामोऽपि---

अन्तर्वेदां च यहानमिष्टं तद्भिष्टीयते । इति ॥

अय पात्रम ।

याज्ञवल्यः— न विदाया केवलया तपसा बाडिय पात्रता । यत्र प्रतिमेमे चोमे तद्धि पात्रं प्रचक्षते । इति ।।

न्यासः— प्रयमं तु गुरोर्नानं दस्ता ख्येद्रमनुकमान् । तवोऽन्येषां तु विद्याणां द्वात्यात्रानुरूपवः ॥ भवित्यपुराणे—

सिन्नभागस्वितान्त्रियान् सीहिन्नं विद्यति स्था । भागिनये विशेषेण तथा परभून्गृहागतान् ॥ नातिनामेशस्त्रेतान्सुमूर्योति दीयते । सित्तम्य स्वरोद्दं सीर्यं नरके प्रमेत् ॥ विद्यारिकामाता ।

विध्यु,-

मानुष्वहा खता चैत्र तथेत्र च चिनुष्वता । भारतामहो भागिनेयी भागिनेयत्तपैव च ॥ दीहित्रजैत्र प्रामाता तेषु दत्तपिहासूचम् । स्रोभक्षेत्र कामाता तथे दत्तपश्चातुम्यते ॥ मातापित्रोगुरी स्तित्र क्रितीते चोपकारिति । दोनानापविशिष्टेम्पी दावस्यं सूर्विमिस्टाता ॥ व्यास:---

थितुः शतगुर्णं दानं सहस्रं मातुरेव ध । धनन्तं दुहितुरीनं सोदर्ये दत्तमश्चयम् ॥ एतत्प्रशंसामात्रम् ।

ducas

द्धः---

सममत्राहाणे दानं द्विगुणं त्राह्मणतुर्वे । सहस्रगुणमाचार्ये स्वनन्तं वेदपारगे ॥

व्यासः---

ब्रह्मयीजससुरपत्री मन्त्रसंस्कारवर्जितः । जातिमात्रोपभीवी च भेदेदबाद्यणः स तु ॥ गभीयानादिभिर्श्वचस्त्रयोपनयनेन च । न कमेदिल चाघीते स भवेद्राद्यणवृद्यः॥

सधा-

वेषार्चनपरो नित्यं वित्तार्थी वस्तरत्रयम् । असौ देवलको नाम ह्व्यक्रवेयेषु गर्हितः ॥

यतु बृहस्पतिना--

र्ग्डे समगुणं दानं बैदये तु द्विगुणं स्पृतम् । खत्रिये त्रिगुणं प्रोक्तं माद्यणे पद्गुणं स्पृतम् ॥ इति शुद्रावीनामिप पात्रतोक्ता, साऽमाच्छादनपरा ।

अन्नाच्छादनदानेषु पान्ने नैव विचारयेत् । अन्नास्य श्रुचितं पान्नं विवस्तो वस्तरस्य च ॥

क्षि विष्णुवर्मिकः । अपात्रायाऽमश्रकं दानम्—
 मश्रव्रे तु यद्दानमपात्राय प्रदीयते ।
 दात्तिकृत्य दस्तं तु ओतुर्तिहां निकृत्ति ।।

ृ दातुानकृत्य इस्त तु आतुाजहा ।स इति शातातपोक्तः । तथा—

यस्य वेदत्रा वेदी च विच्छियेते त्रिपूर्वम् । स वे दुर्माद्राणो नाम यत्रा वे दृपछीपतिः । इपि ।। अपात्रभिद्यर्थः । प्राणिनां तत्र पश्चलं शिक्सायुज्यकारकम् ॥ फ्छं दत्तहुतानां च बृनन्तं परिकीर्तितम् । मनुजै: स्थापिते छिट्टे क्षेत्रमानमिदं स्पृतम् ॥ स्वयन्तुति सहमं स्यादापे चत्र तदर्बकम् ।

বথা-

गृहे दश्युणं दानं गोष्ठे चैत्र शताधिकम् । पुज्यतीर्थेषु साहसमनन्तं शिवसन्निधी ॥

मासरो—

शालमामसमुद्धाः शैलपनाङ्काणिहतः । तिग्रते यत्र बसुधे तत्येत्रते बोजनत्रयम् ॥ द्वारक्त्याः शिला देवि मुद्रिता मम् मुद्रया । सत्रपि ज्ञीयते सत्याखेत्रे द्वारशयोजनम् ॥ इत्यादि ॥ काशीराण्डे—

जन्यन्न बरकुर्त कर्म त्रतं दानं तभी जभः । गङ्गातदेषु सत्सर्व कृतं कोटिगुणं भवेत् ॥

मारस्ये—

अभिद्वीत्रगृहे चैत्र यदस्यमपि दीयते । तदनन्तपळं सर्व भवतीति विनिष्ययः ॥ इति देशाः ।

, प्रतिमहे देशनिपेधः ।

দাখ-

. न सीधें प्रतिगृह्दीयात्त्राजै: कप्टनतैरपि।

ब्रह्मपुराणे—

प्रवाहमविष कृत्वा यावदास्तचतुष्ट्रयम् । षत्र न प्रतिगृहीयात्यापै: कष्टगतैरपि ॥ दानधर्मे—

भाद्रशुरुचतुर्देश्या यावदाक्रमते जलम् । चादद्वर्भ विज्ञानीयाचदुर्ध्व शीरमुच्यते ।)

मास्त्वेऽपि— सार्देहस्वश्रवं याध्द्रभेतस्तीरमुच्यते ६ स्कान्दे-

तीराहच्यृतिमात्रं तु परितः क्षेत्रमुच्यते । इति ॥ इदं च गहायाम् । गर्भप्रतिप्रहनिषेशः प्रसिद्धनदीषु । प्रसिद्धतरग-ण्डक्यादिषु तु तीरेऽपि । गङ्गायां तु क्षेत्रेपीति सर्वशिष्टाचारः ॥

अय दात्कृत्यम् ।

यनुः--

प्रभः प्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते । न सांपराधिकं तस्य दुर्मतैर्विद्यते फलम् ॥

फारवाचनः---छशोपरि निविष्टेन तथा यक्षोपवीतिना ।

देयं प्रतिप्रहीतच्यमन्यया विष्रत्वं भवेन ॥

स्मस्यन्तरे---

दशात्पुर्वसुखी दानं गृहीयादुत्तरामुख: । भायुर्विवर्द्धते दातुर्महोतुः श्रीयते न तन् ॥

हेमाड़ी-

नामगोत्रे समुधार्य सम्प्रदानस्य चात्मतः ।

संप्रदेयं प्रयच्छन्ति कन्यादाने तु पुंख्यम् ॥

शाखामध्यचारयन्ति शिष्टाः । वस्तादिना वित्रवरणं च सर्वन्ति मध्यदेशे।

तथा---

नामगीत्रे समुचार्य सम्यक्ष्यद्धान्यितो द्देत् । सङ्कीरयं देशकालादि तुभ्यं संपद्दे इति ॥ न ममेत्यपि कीर्तयन्ति शिष्टाः।

वाराहे---

सुस्तात: सम्यगाचान्तः कुत्तसन्त्यादिकक्रिय: 1 कामकोधविद्दीनश्च पाखण्डस्पर्शवितः ॥ दधादिति शेप: ।

ं गोत्तमः---

भन्सर्जोन्दकरं कृत्वा सनुज्ञं सत्तिलोदकम् । फळान्यपि च सन्धाय प्रदशाच्छ्रद्धयाऽन्त्रितः ॥ तथा-

नामगोत्रे समुद्यार्थ प्रास्त्रारते देवकीर्वनान् । उद्दुमुखाय विशाय दुरुवा सं स्वस्ति कीरेपेत् ॥ सदेवताकदेयकीर्वनाऽनन्तरं दस्वेत्यर्थः ।

देवल:--प्रदाय शासमुष्टि वा यस्तु श्रद्धासमन्त्रितः ।

महते पात्रभूताय सर्वाभ्युत्रयमान्तुयात् ॥ पात्राऽसंत्रियाने नारदीये---

मनसा पात्रमुद्दिश्य जलं सूत्री विनिश्चिपेत । विद्यते सागरस्यान्तस्तस्यान्ती नैव विद्यते ॥

' पात्राऽसिक्रधानेऽन्यवित्रकरं दासं देयम् ' इति धीम्यस्मृती । पात्राऽसिक्याने ' अप्सु देवं विनिश्चिन्' इति प्रद्विशान्मते । हेय-

पात्रासंक्रियाने नत्रैव विशेष चकः--

हरुयपात्रविक्षपेश्चरपरोक्षं दातुम्यतः । सं स्यायाद्रभवं पात्रं द्रव्यमाहित्यहैवतम् ॥

परोक्षे करियतं दानं पात्राभावे कर्यं भवेत् । गोत्रजेभ्यस्तदा दयाचर्भावेऽस्य वन्ध्रप् ॥

गोत्रज्ञाः पात्रस्य । स्कान्दे--

तरमात प्रणवस्वार्य कार्यो दानश्रतिपद्दी ।

याज्ञवल्क्यः---

प्रतिग्रहे सुतिचक्रिप्तक्षिवेदयानराभिपाः । हुए। दशगुणं पूर्वात्पूर्वदिते यथाक्रमम् श

राजा शास्त्रातित्रमवर्ती । 'न गहः प्रतिगृद्धीयाल्युन्धस्यीच्डास्त्रव-र्तिनः ग इति स्मृतेः । सद्दपनादः---

ष्मयायिवाहतं बाह्यमपि हुप्ऋतकर्मणः । धान्यत्र ब्रुखटापण्डपवितेभ्यस्त्रया जियः ।। न्त्रधा---

> चाण्डाको जायते यहाकरणाच्छ्रद्रभिक्षितान् । यज्ञार्थ उत्त्वमददद्वासः काकोऽपि वा भवेत् ॥

यहोदेशेन न याचेतेत्वर्थः। प्रकारान्तरेण उच्चेन यहे रूते न दोप.। अत एव झायते, वैदयादेर्यझोदेशेनाऽपि याचनीयम्, इति ।

अथ मतिमहीतृकृत्यम् । ॐकारमधरन्याको द्रविणं सक्तुकोदकम् । गृहीयादक्षिणे इस्ते वदन्ते स्वस्ति कीर्वयेत् ॥ पुराणान्तरे—

प्रतिपद्दीता सावित्रं सर्वेत्रैवानुकीर्वेयेत् । त्तस्त कीर्वयेत्साई द्रव्येण द्रव्यदेवताम् ॥ समापयेत्ततः पञ्चारकामस्तुरया प्रतिप्रहम् । तदन्ते कीर्तयेरस्वस्ति मतिग्रहविधिस्त्वयम् ॥

न्ताबित्रो 'देवद्भयत्वा ? इत्यादिः ।

व्यादिस्यपुराणे—

प्रतिमहं पठेतुचैः प्रतिगृह्य द्विजीत्तमात् । भन्द्रं पठेसु राजन्यादुषांश च तथा विशि ॥ मनसा तु तथा शृंहे स्वस्ति बाचनमेव च । सोद्वारं त्राक्षणे क्रुयांत्रिरोद्वारं महीवतौ ॥ चपाशु च तथा वैश्ये मनसा शृहजे तथा । इति ॥ " प्रतिप्रहश्च दक्षिणहस्तमध्ये कर्तब्यः--

< इस्तमध्ये ब्रह्मतीर्थे दक्षिणाघदणे च तत् श्रृति स्मर्गास् ।

न्या--

a

प्रतिप्रहत्य यो धर्म्य न जानाति द्विजो बिधिम् । द्रव्यस्तैन्यसमायुक्तो नरक प्रविपचते ॥ विधि तु भर्म्य विद्याय ब्राह्मणस्तु प्रतिबहै । • दात्रा सह तरत्येव महादुर्गाण्यसौ ध्रुवम् । इति ॥

चाद्यक्षयः-

प्रतिप्रहसमधीऽपि नाद्त्ते यः प्रतिप्रहम् ।

ये होका वानशीलाना स तानाप्नोति पुष्कलान् । इति ॥ अप्रत्याख्येयमादः स एव----

बुशाः शाकं पत्रो मत्स्या गन्धाः पुष्यं द्धि श्लितिः । मांसं शय्यासनाधानाः प्रत्याख्येयं न वारि व ॥

तया—
ग्वोदकं मूलकर्ळ जळमध्युदातं च यत् ।
स्वतः प्रतिगृह्दीचान्मव्ययाऽभयदक्षिणाम् । इति ।।
एवः काष्टम्, काम्युदातमयाचिवागतम् ।

वया चाहिसः—

नाश्चाम अञ्च वृत्तं भागाः श्रीरमयोदितम् । बुद्धं तर्के च सहाद्धं निष्टुचेतापि शूद्रदाः ॥ बरुद्धंत्रतातं धान्यं वाषीक्ष्मपतं जटम् । सत्त्रदोत्रतातं धान्यं वाषीक्ष्मपतं जटम् । सत्त्राचेत्रपि तहाद्यं यस गोष्ठगतं पयः ॥ क्ष्म

बृहस्पवि:--

विवाहोत्सवयहेषु स्वन्तरा मृतस्तके । " पूर्व सङ्गरितवं माद्यं न दोप. परिकीर्तितः । इति ॥

क्तन्न विवाहोत्सवयक्रेरियति 'यज्ञतिषु येयज्ञामहं करोति लासुया-लेषु व्हिबदुहेदयविशैषणमपि विवक्षितम्। बन्यमा विवाहोत्सवयक्षेषु इति वरिगणनं व्यये स्यात् । अवोऽन्यत्र पृथेसकस्तितस्य सूतकारी

हात माराजाः होच एवेछि ।

द्वाच पात । द्वाच्यातिकारीये-चोमाय वास:। क्षाय गाम्। वहणायाऽस्यः। प्रसायवये पुरुषम्। मनये तस्यम्। त्वंपुऽमाम्। पूणोऽविम्। निमेत्या बहरतराविमी। विश्ववे हरितम्। गाण्यवेत्सरोभ्यः स्वरालकृत्ये। विश्वेषम्या देवेष्ये धान्यम्। वाचेऽमम्। अञ्चला कोदनम्। ससुरायायः। वत्तानायाऽऽद्वीरसायाऽसः। वेश्वानाय स्थय् । इति ।।

ानायाऽऽङ्गारसायाः विष्णुवर्मोश्चरे—

क्षायं संवेदेवर्थं भूभिनं विज्युदेवता । कम्या दासतया दासी प्रामाप्तयाः प्रकीरिताः ॥ स्वा चैक्तकं सर्व कपितं वगैदेवतम् । स्विप्तमातया वास्य ज्युने या नैहत्ते स्वेत ॥ सोद्री पेनुविनिद्धिः द्याग्योग्रयादिस्य । सेत्र सु बार्क्यं विवाद्वताः चित्रकं वास्य ॥ स्वारण्याः पदावः सर्वे पिष्णा सायदेवताः । अलाशयांस्तु सर्वास्तु वारिधानी कमण्डलम् ॥ बर्मा च करकं चैव बाहणानि निवीधत । समद्रज्ञानि सर्वाणि वारुणानि दिजीचमाः ॥ **आग्नेयदैवतं प्रोक्तं मर्वलोहानि चाप्यथ ।** व्राजायस्यानि सस्यानि पकाश्रमवि वै द्विज ।। होयास्त सर्वगन्धा वै गान्धर्वाद्य विचक्षणै: ३ धाईस्पत्यं स्पृतं वासः सौम्या होया रसास्वथा ॥ पक्षिणञ्ज तथा सर्वे वायव्याः परिकीर्तिताः । विद्या हासी विनिर्दिष्टा विद्योपकरणानि च ॥ सारस्वतानि देयानि पुरतकादीनि पण्डितै: । सर्वेषां क्रिहिपभाण्डानां विश्वकर्मा त दैवतम् ॥ द्रमाणामध्य पुष्पाणां शाकैईरितकैः सह । कलानावधि सर्वेधां भधा नेवो वनस्पतिः ॥ मस्त्यमांसे विनिर्दिष्टे प्राजापत्ये तथैव च । छत्रं कृष्णाजिनं शस्यां रथमासनमेव च ॥ उपानही च यार्न च यश्चान्यस्माणिवर्जितम । तत्त चाह्यरसत्वेन प्रतिगृहीत मानवः ॥ शरोपयोगि यत्सर्वे शखनर्मध्यनादिकम्। रणोपकरणं सर्व विशेषं सर्वदैवतम् ॥ गृहं तु सर्वदैवस्यं यदनुक्तं द्विजोत्तम । विदेश्यं विष्णुरैक्ट्यं सर्वे वा द्विजसत्तमाः ।।

हेनाद्री यञ्चःपाठानन्तरं----'राजा त्या वरुणी नयतु देवि दक्षिणे अगुकस्पै अगुकान्तेनाऽस्ततःन-मश्यां वरो दात्रे मयो महामस्तु प्रतिमहीत्रे'।

ततः कामस्त्रतिः । 'ॐ स्त्रस्ति ' इति विशेषः ।

अथ द्रव्याणां भतिग्रहस्थानानि ।

विणुधमोंचरे— भूमेः प्रतिषहं क्षयंद्भूषं कुर्वन्श्दक्षिणम् । करं गृहीत्वा कन्यां च दासदास्योद्धिंजोचमाः ।।

कुनमण्डाः

करं तु इदि विन्यस्य धन्यों श्रेक प्रतिप्रहः । आहत तु गजस्योक्तः कर्णे वाऽश्वस्य कीर्तितः ॥ तथा चैकशपानां तु सर्वेषां च विशेषतः ।

तथा कर्णः-

28

प्रतिगृह्वीत तान्यह्ने पुच्छे छष्णाजिनं तथा । त्रान् एकझफान् । अत्र य्यह्मिणामेन्यफानां यह्ने इतरेपां कर्णे इति

तान् एकदाफान् । अत्र श्रद्धिमामिकशकानां श्रद्धे द्वरेषां द्धु क्ववस्था । क्लॉडजः पदावः सर्वे प्राह्याः पुच्छे विचश्चणः । गृह्दीयान्मदिषं श्रद्धे त्यरं वे प्रवदेशतः ॥ प्रतिमहमयोष्ट्रस्य यानामां चाधिरोहणान् । वीक्षानां मुष्टिमादाय स्त्रान्यादाय सर्वेतः ॥

प्रतिसहस्पाधुल यानाना चास्तरहणात् । वीभातां सुष्टिमादाय स्वान्यादाय सर्वतः ।। बजं दस्तत्त्तादारपारपिरमायाऽप्रवा पुतरं । आरुद्धोपानदी मध्य आरुद्धेव तु पादुक्तं ।। बमेश्रतो तु संस्कृत्य प्रविद्य च तत्ता गृहम् । अवतीर्य च सर्वाय जरुरस्य विद्या त्रा देवाराः ।। दंशायां तु स्था मासाइग्र तण्डे सर्वेव च । हुमोक्ष प्रतिगृह्धीयाम्मुङ्ग्यत्वकरो द्वितः ।। सामुशानि समादाय तथाऽऽमुख्य विस्नुगणम् ।

परिशिष्टे बु—

प्रतिगृहीत गां पुच्छे कर्णे वा हरितनं करे।

मूर्फिन हासीमंत्रं चैव प्रष्टेऽक्तरागर्देभी !!

अर्थ कर्णे सटे वाडपि अकारिका प्राप्ते

तुम्म निर्धाणक पर बहुजबनरात्सा ।।
अद्भ कर्ण सरे वाहीय अलगुरिहेब आस्थेत् ।
दारवासमं गृहं क्षेत्रं संस्ट्रश्वादाय काश्वनम् ॥
छ्कं च कतुरे श्रृष्टा सुगांक महिपादिकात् ।
सेमानव्यक्षिणांने पुरुष्टे संस्ट्रश्य परिण्यः ॥
देष्ट्रिणो इंदिलक्षेत्र तथा सुरक्षणाक्ष ये ।
ओजिस्त्रमां च सर्वेपामेय एव विक्रीः स्पृतः ॥
छतं च चामरं मुछे फळं संगृक्ष गौरवात् ।
प्रक्रांभावत्वी मन्त्रं वायवेद्यात्मीरुप्य वे ॥
वासस्वय समादाय कन्यां जीक्यंय वे करे ।
रिवेभार्या परपूर्वं प्रतिगृद्धीत पास्त्रसम् ॥

पुत्रमुरसङ्गारोप्यक्रतिगृङ्गीत दत्तकम् । रवं रथमुखे रमृष्ट्रा प्रतिगृङ्गीत झूवरे ॥ कृतमो अुगाधारं फासम्। युग्यकाध्वनवस्त्राणासङ्गुके प्रतिषदः । इति सामान्येतिकर्तव्यतानिरूपणम् ॥

अय परिभापा ।

वामनपुराणे--

सर्वेमङ्गलमङ्गस्यं वरेण्यं वरदं शुभम् । नारायणं नमस्कृत्य सर्वकर्माणि कारयेत् ॥

भविष्ये---

सङ्कल्पेन विना वित्र यस्किश्वित्कुरुते नरः । फर्ळ वाऽद्धमाल्पकं नरय वर्मस्याद्धैस्रयो भवेन् ॥

चसिष्ठः---

जपहोमोपनासेषु धीतवस्त्रचरो भवेत् । भरुद्वतः शुचिमानी भ्रद्धावान्यिजितेन्द्रयः ॥

न्याहादहरूयः--

यदि पाग्यमछोपः स्याज्जप्यादिषु फयश्वन । ध्याहरेद्वैष्णवं मन्त्रं समरेद्वा विष्णुमव्ययम् ॥

स एव--

रौद्रपितासुरान्मत्रांस्तया चैवाभिचारिकान् । व्याहृत्यालभ्य चारमानमपः रष्ट्रश्वान्यदाचरेत् ॥

सारवायनः---

विश्यमन्त्रातुद्रवणे कात्मारुम्भेऽवमोक्षणे । क्षयोवायुसमुरसमें प्रहासेऽनृतमापणे ॥ मार्भारमूपक्तपर्वे काकुष्टे कोषसंभवे । निमित्तेष्वेपु सर्वेषु कमे कुर्वत्रपः शृशेत् ॥

आरमाछम्भो हृदयस्वशेः । स च कर्मणि विहित इति केचित् । सम्बद्धारारे—

फर्जङ्गानामनुक्तौ तु दक्षिणाऽङ्गं भवेत्तया ॥ जन्दोगपरिभिष्टे—

यत्र दिइनियमो नास्ति जपादिपु कथश्वन ।.

विस्नस्तत्र दिशः प्रोक्ता ऐन्द्री साम्याध्यसन्तिता ॥ नवैव---

अन्तातीन ऊर्थः प्रह्वी वर नियमी यत्र नेद्दरः ! वदासीनेन कर्ष्ट्यं न प्रह्वेन न तित्रवा । इति ॥

तया— पश्चाशद्विमवेद्गता वद्धेन तु विष्टरः।

दक्षिणावर्तको ब्रह्मा बामावर्तस्तु विष्टगः ।। भथा—

कानन्तर्गिर्भिणं सामं कौशं दूिदलमेत्र च । प्रादेशमानं विशेषं पषित्रं यत्र कुत्रस्थिन् ॥ सधा—

सद्दीपवीतिना भाव्यं सदा यद्वशिखेन च ! विद्याखो व्युपवीतम्म यरकरोति न तत्कृतम् ॥

विष्णुवर्मीचरे — मन्त्रेणोङ्कारपूर्तेन स्वाहान्तेन विचक्षणः । . स्वाहानसाने जुड्याद्धपायन्त्रे मन्त्रदेवसामः ॥

द्यालक्ष देवदारुक्ष स्तिद्खेति याह्निहाः । कर्मप्रदीय--नाह्युलादभिका कार्या सिमस्यूलवया कस्पिन् । न वियुक्ता स्वचा चैव न सक्षीटा न पाटिया ॥

न विद्युक्ता त्यचा चैत्र न सकीटा न पाटिया ॥ प्रादेशामाधिका नौना न तथा स्याद्विशाखिका । न सपर्णी समित्कार्या होमकर्मेसु जानता ॥ वया—

प्रात्मपः समिनो माह्या असम् नोष्ट्रपटिताः । कान्येषु वश्यकतादा विषयीता त्रिपासतः ॥ विद्योणां विर्व्य द्वस्य वक्षा बहुत्तिराः कृताः । दीर्घाः स्यूटा पुणेतुष्टाः कर्मसिद्धिविनासकाः ॥ बायुपुराणे—

कण्डनं पेपणं चैव तथैवोक्षेखनं तथा । सक्टदेव पितणां स्यादेगानां तथिक्टयते ॥

पाण्याद्वतिङ्कादशप्रविपृरिका

भविष्यत्पुराणे--

भूमी स्थितेन पात्रेण विष्टच्येन च पाणिना 1 बामेन यदुशार्दूळ नान्तरिक्षे स ह्यते ॥ धनायुर्दाररेखासु सोमतीर्थ स मध्यमम् । स्राजादिह्यनं हेन करीन्यं वपनं तथा ॥

वपनं निर्वाप:।

कास्यायन:---

रसादिना चेर्सुचि वर्षप्रिका ।
देवन दीभेन सु इतते हिवः
स्वद्गारिण स्विचित तव पावके ॥
योऽनर्षिपि जुड्डोस्वय्री व्यद्गारिण च मानवः ।
मन्ताप्तिरामयावी च दरिद्रक्षेव जायते,॥
सम्मास्तिमदे होतव्यं नासिमदे कथ्यान ।
कारोग्यमिन्छताऽऽगुक्र श्रियमास्यन्तिकी तथा ॥
जुदुयुक्ष हुते चैव पाणिश्यूष्त्रवादिमिः।
म छुर्याद्मियमं सुर्यात् चयजादिना ॥
मुस्तेनेव धमेटसि मुख्यद्वयेगीऽप्यक्षायत ।
नामि मुम्नेनेति सु व्यक्षिकि योजयन्ति सन् ॥

थढ्वपरिशिष्टे---बाराञ्चपः सपूर्ये सु जुहुबाचो हुतासने । यजमानो भवेदन्नः सपुत्र इति प सुद्धिः॥

इति परिभाषाप्रकरणम् ॥

मात्स्ये---

होमो महादिपुत्रायां शतमष्टोत्तरं भवेत्। भष्टार्विशतिरष्टो वा ययाशक्ति विशीयते ॥ पश्चभन्नाः पश्चमह्याः ।

चतु.समे गार्डे---

कस्तरिकाया ही भागी चत्रास्थन्दनस्य च । कुडूमस्य त्रयक्षेत्र शशिनश्च चनुःसमम् ॥

शकी कर्षरः ।

कर्प्रं चन्दने दर्पं कुहबुमं च समांशकम् । सर्वतन्धविति ग्रीकं समलसरबङ्गम् ॥

द्रपः कस्तरी ।

सधा-

क्षर्परमगुरुश्चेत्र करत्री चन्दनं स्था । कङ्कोळं च भवेदेभिः पश्चभिवंक्षानदेशः ॥ छन्द्रीगपरिशिष्टे-

कुष्टं मासि इस्ट्रि द्वे मुरा शैक्षेयचन्दनम्। बचा चन्पकग्रसं च सर्वेपच्यो दश स्पृताः ॥

पारो---'

इक्षवलणराजं च निष्पावाजाजियान्यसम् । विकारवद गोश्चीरं बुसुम्धं बुद्दुमं वथा ॥ ख्यणं चाष्टमं तत्र सीभाग्याप्टकमुच्यते ।

तृषराजस्तालस्तत्पात्रम् । अञाजी जीरकम् । विष्णवर्गेत्तरे-

> मुक्ताफर्ल इरितकं वैद्वयं पदारागरुम् । पुष्परार्ग च गीमेर्द नीलं गारूत्वनं तथा ॥ प्रवालमुक्तायुक्तानि महारहानि वै नव ।

स्कान्दे---दिव क्षीरमधाञ्चं च माधिकं स्वर्ण गुहः। त्येवेग्रस्थाति रसाः प्रोका मनीपिभिः ॥

भविच्यत्पुराणे---बापः छीरं कुशामाणि दध्यश्वविद्यास्तथा । थवा. सिद्धार्थकाथेति हाघोंऽष्टाहुः प्रकीतितः ॥

धत्रैव--

सवर्ण रजतं वाम्रमारकृटं वधैव च ।

छोहं त्रपु तया सीसं घातवः सप्त कीर्तिताः ॥ वन्त्रमने—

रप्तांसि पश्चनणोनि मण्डडाँऽर्घ हि कारवेत । शास्त्रितण्डुलचूर्णेन शुरू वा यवसंभवम् ॥ रक्तः स्नुहुम्मसिन्दूरगिरिकादिसमुद्रवम् । हरितास्त्रोद्धवं यीतं रजनीसंमवं तथा ॥ मुरुणं दम्यवेदी, हरितं पीतरुण्णविभिक्षितम् , रजनी हरिद्रा । भविष्मस्राणे—

भावपन्तुराग-दृबी थवाङ्कुरश्चेत्र बालकं चूवपहवाः । हरिद्राहृपसिद्धार्थशिखिपग्रोरमत्वयः ॥ कहुमीपत्रवश्चेताः कौतुकाऽऽज्या नव स्वृताः ।

इति नव कौतुकानि ॥

न्दशाङ्गभूपो मदनरहे— पद्भाग उप दिगुणो गुडश्व छाक्षा वर्ष य नवस्य भागाः । हरीतकी सर्जरसः समांसी भागे हमेकं जिल्लं किलानम् ॥ यसस्य पत्यारि पुरस्य चेको भूपो दशाङ्गः कथियो सुनीन्द्रैः । रिलाजं सैलेयम् । पनो सुस्ता । पुरो गुगुलः । भविष्यस्पराणे विशेषः—

ब्रनुकट्रव्यवस्यद्वया देववायितमा जृतः। सीवर्णी राजवी वाजी वृक्षजा मार्विकी वधा ॥ चित्रजा पिष्टलेवोव्या निजविक्तानुरूपतः।

क्षामापात्यलवर्षन्ता कर्तव्या शाट्यवर्षितेः ११ असुष्ठपर्वयमृतिबितस्यबधिका स्मृता । इति ॥ तत्त्वदाताऽद्गदृशसाप्रतिमालस्थानि तत्र बद्दयन्ते । तुलाधिष्ठितदेवताप्रतिमानां तु लक्षणानि—

चिनेयो स्वामयस्थित्र्यस्थ् । याद्येगविद्यन्द्रार्ढसूयण ईदाः । ९ क्याल इति केगठः । श्वेतम्बरयमः सोमो गदापाणिर्वगृपदः । भावद्धरिणपृप्रस्थो चजनारी समीरणः ॥ स्कवर्णोस्त्रिनयना द्विभुजाश्चन्द्रमीलयः ॥ स्रतिलक्ष्य प्रकरेल्या कदा शाणवनद्वेताः॥

2 12

जिटिलास मध्येल्या ह्या बाणगतुर्दराः॥ शुभद्रमञ्चः सिन्दूरारूणसम्भः पद्मासनः पद्मकरो भूषिताङ्गौ नसनापरः सूर्थः। दमशुलो रसनाघरः, सन्देशपाणिर्द्विमुनस्तेज्ञो-सूर्तिगरोमहान्, विश्वकृषी।

पीतान्वरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजी देवगुरुः प्रशान्ती दण्डक-मण्डस्वश्चमूत्रपृग्तुरुः।

क्रमण्डले सुर्वं भैव मिक समिपि कमात् ।
फ्लप्यस्मित्तामाः करामाणि समन्तदः ॥
पाणपव्यमित्रामां करामाणि समन्तदः ॥
पाणपव्यमित्रामां कर्याम्य अपकल्यन्तः ।
सिक्षः च प्रसकं भैव कमादेवं कमण्डल्य् ॥
यक्षोपवीती हैसस्य एक्वकाम्रादुर्धमः ।
सार्थं मान्नं सुर्वं पर्वे कुण्डिका च मन्नापतिः ॥
विश्वे देवालु सर्वं परिले वाणपाणपः ।
कर्वं वा सामाणी तु सामारस्त्रपाणयः ॥
चुद्देशी सुर्वः सन्तः कालमा पुरिलोचनी ।
दुरुरवाद्वं स्थाति विश्वे देवा दृश्वः स्थानाः ॥

पुरुरवार्द्रवधेवि विश्वे देवा दश स्थूताः ॥
जगद्विचानृरूपं प्रभापतितुत्यम् । चतुर्भुरतन्बमात्रमस्याऽऽधिक्यं द्विषमः।

धर्मन्यनामा विशेषो गानकात्रवास्तितः । यो भत्ते सर्वभीनात्मा वरं जीवं च शोवक्ष्य ॥ गृहराः च पयोजं च चिन्तारत्नं महाशुचिम् ॥ पारां चकं किसत्यं गुण्डी च दश्यिः धरैः ॥ राम्भीतातुस्यः॥

षुरतिवृद्रपद्मस्याः तिनरः विण्डपात्रिणः । पीतान्वरः पीतन्तुः निरोटी चतुर्मुको दण्डपस्य द्वारी । पर्मासिष्कृ मोमसुतः सद्भानः सिंहाऽभिरूटी वरदो गुगम ।
पतुंचमञ्जवर्षः सिंतास्यः सिंतास्यः ।
पतुंचमञ्जवर्षः सिंतास्यः सिंतास्यः ।
पतुंदमञ्जवर्षः सिंतास्यः सिंतास्यः ।
पतुंदमञ्जवर्षः चर्मः कार्ये महावपुः ।।
पतुंदमञ्जवर्षे चर्मायाणः पुरन्दरः ।
हिन्तुनौ देवभिरयो कर्वन्यानभवाद्यः ।।
हिन्तुनौ देवभिरयो कर्वन्यानभवाद्यः ।।
हामयोः पुराक्षे कार्ये दिनेनीये क्या द्विण हिन्त ।।
वामयोः पुराक्षे कार्ये द्वेनीयो क्या द्विण हिन्त ।
विक्रणः पाशमृरसीस्यः मतीच्यां मक्राम्यः ॥
मिन्नः कनस्याणिक्ष पम्हास्तिसीस्यः ।
हिन्नुनः श्वेतमृर्विक्ष सर्वभूविहते रतः ।।
वार्षेद्वन ।

बरणस्तु पूर्ववत् ।

देशा पकोनपश्चाकादेवन्द्रसमतेगतः ।
आताः पुरुद्वतस्य नतः सूर्यवर्षतः ॥
क्रिरीटदारिमपुरकटकादिविभूपिताः ।
राज्ञुचर्यस्य । स्तर्याः सत् ॥
हरवागिद्वनुने च गदिनं ग्रीतविश्वस्य ।
पुरुप्पत्रस्य । स्तर्याभिद्वनुने च गदिनं ग्रीतविश्वस्य ।
पुरुप्पत्रस्य । ।
पर्यो अक्तकोकानां क्रिरीटी पुण्डकी गदी ।
सार्थः सुरुपो गन्धवां वीणावाषारस्यस्य ॥

जलेशः पृषेवत् । प्रवृक्षिणं वृक्षिणाभःकरावारभ्य नित्यशः । ब्रिष्णुः कौमीदकीपद्मश्रद्भचनैत्स्कृतः ॥ इति विष्णुलश्रणम् ।

त्रहावै उत्ते—

.पानकालेषु देबत्वं प्रतिमानां प्रकीर्तितम्। धेनृतामपि धेनुत्वं खुलुकं दानयोगतः ॥ पानुवं पानकाले नु धेनवः परिकीर्तिताः । विप्रस्य स्वयमाले सु द्रव्यं तदितिनिध्यः । इति ॥ विष्णुपर्योत्तरे--

हैमराजतताम्राव्य मृष्णया उक्षणान्विताः। यात्रोद्वाहप्रतिष्ठादौ कुम्भाः स्युरभिषेचने ॥

पश्चाशाङ्गलबेपुल्या चत्सेधे पोडशाङ्गलाः । द्वादशाङ्गुलमूलाः स्युर्भुसमष्टाङ्गुलं भवेत् ॥

पश्च च आशाश्च पश्चाशाः । पश्चाभित्रशतमङ्गुलानि नेपुल्यमिति केचिन् । आशा दश पश्चाशरङ्ग्रहमित्यन्ये । पश्चाधिका आशाः

पश्चद्दा ताबान्वेपुस्यं व्यास इति तु युक्तम् ।

. सथा---

कलशस्य मुखे ब्रह्मा भीवायां च महेश्वरः । मूळे तु संस्थितो विष्णुर्मच्ये मातृगणाः स्पृताः ॥ शेपास्त देवताः सर्वा बेष्टयन्ति चतुर्दिशम्। पृथिव्यां यानि वीर्यानि कलशे निवसन्ति हि॥ महाः शान्तिम पुष्टिम मीविश मतिरेव च । भरवेदश्च यजुर्वेदः सामवेदस्तयैव च ॥ अधर्ववेदसहिनाः सर्वे कलशसंस्थिताः । इति ॥

पदित्रदारमते-यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्कुस्तथैव च ।

इयामाके चीनकं चैव सप्तवान्यमुदाहतम् ॥

मार्कण्डेयपुराणे---ब्रीह्यस यवाधैव गोधूमाः फहुकास्तिलाः ।

वियद्भवः कोविदाराः कीरदूषाः सवीनकाः ॥ मापा सुद्रा मसूराव्य निष्पाचाः सकुलस्यकाः ।

मादक्यञ्चणकाञ्चैव राणः सार्दशः स्मृतः ॥ कोरदूपाः कोद्रवाः । सतीनकाः कलायाः । स्कान्दे---

यत्रगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्गुतृत्वकाः । मापा मुद्रा मसूराश्च निष्पावाः इयामसर्पपाः ॥

गरेपुकाश्च नीवारा खाडक्योऽय सतीनकाः । भगकास्त्रीनवाधीव भान्यान्यष्टादरीव सु ॥

देवामाः देवामाकाः ।

व्यासः—

सुवर्णे परमं दानं सुत्रर्णं दक्षिषा परा । सर्वेपामेव दानाना सुवर्णं दक्षिणेष्यते ॥

'परेत्युक्तेः पुरुपाहारीपथिकं तण्डुलादिकमपि दक्षिणा ' इति हेमाद्रिः।

यत्तु---

अन्येपामेन दानानां सुवर्ण दक्षिणा स्पृता । सुवर्णे दीयमाने तु रजतं दक्षिणेप्यते । इति ॥

तन्मूलं मृग्यम् ।

सुवर्ण रजतं ताम्नं तण्डुला धान्यमेव वा।

नित्यभाद्यं देयपूजा सर्वमेतददक्षिणम् ।

इति ज्यासेन केवळमुवर्णेदाने दक्षिणापर्युदासाध । अयं च पर्युदासः केवळमुवर्णेदान एव, न तु भुवर्णेत्रहाण्डादिदाने इति भवनादयः।

देयद्रव्यवृतीयांशं दक्षिणां परिकरूपयेत् । अञ्चक्षदक्षिणे दाने दक्षांशं वाऽपि शक्तितः ॥ वुलापुरुपदानादीन्यधिद्धत्य ভिद्मपुराणे—

वृक्षिणां च शतं साद्धे तद्धे वा प्रवापयेत् ।

मस्तिजां चैव सर्वेषां दश निष्कांश्च वापयेत् ॥ भविष्योत्तरे—

भावत्यासर—— द्येयं निष्करातं पार्थं दानेषु विधिरुत्तमः ।

मध्यमस्तु तद्रथैन तद्रथैनाऽधमः स्मृतः ॥

मेध्यां च फालपुरुपे तथान्येषु महस्म च। एवं वृक्षे रपेऽण्डे च घेनोः कृष्णानिनस्य च॥

अशक्तरपापि करामेऽयं पश्चतीवर्णिको विधिः। युद्धे करपपादपे । रथे हिरण्यात्यरथे हेमहस्तिरथे च । अण्डे

श्रहाण्डे । धेनोः सुवर्णकामधेनोः । अतोऽप्यस्पेन यो दद्यान्महादानं नराधमः ।

प्रतिगृद्धाति वा तस्य दुःरतग्रीकावर्द् भवेत् ॥ अन्येषु महस्सु तिळगर्मादिषु जपाभिषेकमभिनाय, ভिद्वपुराणे—

भएपप्रिपलोन्मानं ददादै दक्षिणां गुरोः ।

होतूणां चैव सर्वेशं जिसललसुदाहृतम् ॥ अध्येतृणां सद्देन द्वारपाना सद्देतः।

कर्य च गुर्शेद्वारमाण्डदारपाळानामखाँदेत्विणाविभागोऽसुकः विभागविशेषेषु दानान्तरेष्वपि द्रष्टव्यः । गृहपरिशिष्टे 'दक्षिणाऽसमें मुखाना फळाना मक्ष्याणां दक्षिणो ददावि । इति ।

अथ द्रव्यमानम् ।

याज्ञवल्क्यः— ' जाटसूर्वेमरीचिखं त्रसरेणु रशः स्मृतः ।

ं जाटस्वमशास्त्रम् त्रसरण् रजः स्थतः । तेऽष्टौ स्थितस्तु तास्तिस्त्रो राजसर्वप चच्यते ॥ गौरस्तु ते त्रयः पद् ते यत्रो मध्यश्च ते त्रयः ।

गरिस्तु स त्रयः पद् व यया मण्यम् च त्रयः कृष्णलः पृथ्व ते मापस्ते सुवर्णस्तु पौडश् ॥ पर्व सुवर्णाश्रत्वारः पृथ्व बाऽपि प्रकीर्तितम् ॥

पर्छ सुवर्णाश्चत्वारः पश्च बाडापे प्रकातितम् द्वे छप्पाछे रूप्यमायो घरणं पोडशैव ते ॥

शतमानं तु दशभिषरणैः वल्मेव तु ।

निष्कः सुबर्गाश्चत्वारः । इति ॥ धरणपुराणी पर्याची । तथा शतमानपर्छ । पूर्वोकाश्चत्वारः सुबर्गा

राजतो निष्कः इति ।

'कार्षिकःतामिकः पण' १ति वाम्रस्योन्मानम् । पळचतुर्यांग्रेन

क्षेणीनितः कार्षिकरताम्रसम्बन्धी पणो अवित । कार्षाणावकाञ्च । सम्दर्भनदेऽभि-बोड्यापणः पुराणः । 'पणो अवेस्काफिणीयपुर्तनेण पत्थादवैअनुभिवराद्यकैः कार्षिणी चैका वित विधाय देशादिभेदेन पणादिव्यवसुर्वित तेकः।

अथ यान्यादिमानम् ।

भविष्यखराणे--

पट्टर्य सु मस्त्रते द्विशुणं सुट्य मतम् । पतुर्तिः सुद्यतैः प्रस्थः प्रस्थावत्यारः सादकः ॥ भादकेरतैत्रसुर्मित्र द्वोणस्य कथितो सुन्धैः । सुन्मी द्वेणद्वयं सुर्थः सारी द्वोणास्य पोटसः ॥

द्रोणद्भयस्येव शूर्ण इति संक्षा । गोपये— पश्चश्चकको मापस्तैयतुपष्टिभिः परम् ॥

परोद्वीतिकाडिः प्रस्थी मागधेषु प्रकीतिनः । ' बार्ड हेस्तेश्रव्यक्तिश्च द्वोणः स्याचतराहकः ॥ विष्णुवर्गोत्तरे---

पलं च सुडवः प्रस्थ आढको द्रोण एव च । बान्यमानेषु बोद्धस्याः क्रमशोऽमी चतुर्गणाः ॥ द्रोणै: पोडशभि: सारी विशस्या कुम्भ उच्यते । कुम्भेख दशभिर्माहो बान्यसंस्या प्रकीर्तिका ॥ विश्रत्येत्यत्र द्रोणैरिति संपद्धयते । तथाच, कुम्भो द्रोणद्वयमिति पक्षादिशिविद्रोणमितः सुम्भ इति पक्षान्तरम् । पलसहस्रमितः सुम्भ इत्यपि पक्षान्तरं क्षेयम् ।

वाराहे--

पलद्वयं का प्रस्ततं मधिरेकपलं स्मृतम् । अष्टमुष्टि भवेरिक चिरिक चित्रही तु 'पुरकलम् ॥ पुष्तळानि च चल्वारि बादकः परिकीर्तितः। चतुराढकौ अवेद्दोण इत्येसन्मानलक्षणम् ॥ पतत्पक्षाणा शक्तिदेशकाळाद्यपेक्षया व्यवस्था । बन्त्वा सीनीलकण्ठाल्यः परिभाषादिकं पुरा । हानाधौपयिकं प्रण्डमण्डपादि वडत्यय ॥

तत्र भूमानस् ।

आदिरयपुराणे---

[^] जाळान्तरगते भानौ यत्सूक्मं दृश्यते रजः । प्रथमं तत्प्रमाणानां त्रसरेणुं प्रचस्ते ॥ त्रसरेणुस्त विज्ञेयो अधी ये परमाणवः । • त्रसरेणवस्तु ते हाष्टी रथरेणुस्तु स स्मृतः ॥ रथरेणवस्त तेऽष्ट्री च वाळाग्रं तसमृतं वृधैः । बारामाष्टकं रिया तु युका रियाएकं तथा ॥

अष्टी युका यवं प्राहुरङ्गु हु यवाष्टकम् । अन्यशावि-

> युकाएक यत्रं प्राहुवैवानासुद्देखिया । अष्टभिश्चाङ्करं विधिग्यवानामुत्तमं भवम् ॥

सारिभोग्यमं प्रोक्तं पट्मिः स्वात्रभाष्ट्रस्य । इति ॥ इत्तरश्च स्वेदित्या व्यानः प्रावेश स्वयतं । अह्नस्य प्रवेदित्या व्यानः प्रावेश स्वयतं । तातः स्वतो मध्यमया गोर्कणव्याप्यतामया ॥ कत्तिस्य वित्तरस्य द्वादशाङ्क् व्यानः । स्वत्तरि विद्याविद्येष स्वयः स्यादङ्गुलानं तु । क्रिक्तः स्यतो द्विरत्यत्त्व द्विष्यवाध्यदङ्गुलः ॥ पण्णव्यक्ष व्यित्येष स्वरंणः प्रकीतितः । सन्तरेणव्यानं त्याविद्येष स्वरंणः प्रकीतितः । सन्तरेणव्यानं त्याविद्येष स्वरंणः प्रकीतितः । सन्तरेणव्यानं त्याविद्येष स्वरंणः स्वर्धातितः । सन्तरेणव्यानं त्याविद्येष स्वरंणः स्वर्धातितः । सन्तरेणव्यानं त्याविद्येष स्वरंणः स्वर्णाविद्ये स्वाः ।

षष्टी धनुःसंद्वाणि योजनं परिकीर्तितम् । विद्युषमर्भेषदे---

30

यदुरपश्रमधावनाति नरः संबद्धरं ट्विजः । एकगोचर्ममात्रं तु मुबः प्रोक्तं विषश्रगैः ।। वृहस्पतिः—

... दशहरतेन दण्डेन प्रिसदण्डानि वर्तनम्। दस तान्थेन गोचमे ब्राह्मणेश्यो ददश्ति यः॥

इति भूमानम्।

मार्जनवननाचन्यतमप्रकारेण यथोचितं भूभिः संशोध्या । तत्र मण्डपम्यलं सिद्धान्यकारारे—

मण्डपम्यलं सिद्धान्वज्ञरारे— स्थलादकी इंगुलोच्छ्रावं मण्डपस्यलमीरितम् । इति ॥

सण्डर्ष प्रष्ठत्य कपिक्रप्रचात्रे— जन्द्रायो इत्तमानं स्वास्मुसमे च मुझोमनम् । इति ॥ ततो दण्डत्रयनिर्मितदौषेत्रिक्रोणाकारकन्त्रे दण्डामाभ्यां मुनि न्यस्ते यन्त्रमुळात्तिर्यदण्डोपरिळान्द्रसम्बोमारबङ्गीममत्रातं सूत्रं यया तिर्ये-

न्द्रपृष्टा प्रचण्डामास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रं सूत्रं यया तिर्वेः स्पष्टमाध्यचिद्धे पवेचया निस्ना सूत्र्योक्षा च्या साननीयेत्यादिक्षा-स्यताखरीत्या तां समीठत्यः च मण्डपाणुष्युकां प्राची साथयेत्। एवं समायां शुवि द्वादशाङ्गुळवासार्ह्यमेषं तन्मध्ये पापरं नशाङ्गुळं व्यासा-स्विमित युनद्वयं कृत्या तन्मध्ये द्वादशाङ्गुळं पृथक्ष्मृळं स्व्यमाप्रमुखं शक्षुं निभाव नशाङ्गुळपुनरराज्यं चनको दिशः प्रकल्प्य तासु चतक प्ररुच्यः पश्चदशाङ्गुळाः शळाष्मः श्वदृष्वप्रदेशां पूर्वोद्वे यत्र स्वरुति सा प्रत्यक्षः यहापराहे सा प्राष्ट् । सून्यमानीकानाधि तु परिवेन्डिप तिम्मित्र पृत्ते शह्चळायानित्यमप्रवेशयोधित्रं कृत्वा पूर्वापरिवनच्छायामदेशनिर्ममन-पिद्धयोनन्तराजिमिटेकिचतुराधेमोभीवम्म पूर्वितनच्छायामदेशनिर्ममन-नत्ताल्याः पावच्छायापरीयन्त्रादिना क्षास्त्रा वाभिष्ठिकोन्निर्मन-त्वास्त्रातान्गुणयेत् । पिटिभिक्ष हरेतः । वत्रो छच्चशिन प्राच्यास्य पूर्वितनकृतापगमिषदादुत्तत्वयण क्षत्तरिमम्बिक्षायने वश्चिणरिममङ्गु येत् । तदुपरि पूर्वेद्धायाप्रयेकपिद्वीपरि च धृते सूक्मा प्रार्थी भवति ।

दिग्ज्ञानोपायान्तरं च शुस्ये-

कृत्तिका श्रवणः पुष्यक्षित्रास्यास्योपेदन्तरम् । पतत्माच्या दिशो रूपं युगमात्रोदिते सवि ! इति ॥

ष्मतार्य गुरूपदेशः । पत्नी सुन्तारत्मा निरुक्तं काहारौ यद्ग्वा तद्रत्मेण युगमात्रमुपरिगर्तं कृत्तिकादिनक्षत्रं द्युः निकक्तं ताभ्यां प्राह्मस्वयदेशयोः सुद्धं पापाणद्रयमवक्ष्यद्वयं वा भूगे प्रक्षियः गविरुद्धयोः प्रायोक्तुरं देशमिति । एवत्रेन धृषं हृद्दोदीची साम्या । चित्राक्षारत्मतराख्यानार्थे तु निक्काद्वयनेकेन च वण्डान्तरेण व्यक्ता-कारं चन्त्रं कृत्वा दण्डं च मण्येऽद्वयेत् । निक्काद्वयान्तौ तु तथा प्रक्षणादिता परसर्वं योजनीयी । यवैक्तेन्य प्रयक्षेत्र युगपद्य द्वयमि दश्यते । एवं ट्यूः मिठिनाशिक्षान्ताद्वण्डमण्याद्वाय पापाणावक्ष्यौ प्रक्षेत्रस्वी-। इति ॥

अय मण्डवादिलक्षणम् ।

तत्र पश्चरात्रे---फत्तीयान्दशहरतः स्थान्मध्यमो हादशोन्मितः । तथा पोडशभिहरतीर्थण्डपः स्थादिहोत्तमः ॥

९ लाधिकव्या इति के पाठः । २ पृथु इति क पाठः ।

प्रतिष्ठासारसङ्घ हे—

मण्डपः कराह्स्ते स्म सर्वेलश्चणसंयुतः । दशद्वादशहस्तो वा द्विदिवृद्धमा वतः कमान् ॥

छिद्रपुराणे तु पुरुपदानप्रकरणे---

विदादस्तप्रमाणेन मण्डपं बृटमेव ना । अथाष्ट्रादस्तरमाणेन मण्डपं बृटमेव ना । अथाष्ट्रादस्तिन क्टाहस्तेन ना पुनः । इति ।)

विश्वविद्यां । अव्यक्तम्य विकामित्रां विश्वविद्यां में स्टर-द्वाऽऽकारकल्यामेतिः कार्यमेन्ये विस्तराकार्युतः हृदः। हृदोऽस्ये। विस्तर् शृङ्किस्यऽभिधानानुसारान् । मयसलभोपरि समववार्ध्य-रितो मण्डर इति हेमाहिः। संप्रति हृद एवाद्रो लोकानाम् । समैव

च मण्डपभ्रमः। "
प्रहाहत्तमण्डपस्यैकमेदालङ्गण्डक्स एकाभ्रिविधानपक्षे चोपयुक्तो
भवति । इति मदनरत्ने ।

पञ्चरात्रे---

कुषेत्रेणावयानेषु चतुर्दरीं स मण्डवान् । सारदाठमथान्त्रम्भान्तदान्त्रयोदजुन्समान् ॥ मण्डपाद्वीविद्गान्वेदसङ्ग्योदजुन्दसमान् ॥ मण्डपाद्वीविद्गान्वेदसङ्ग्योदजुन्दासमन्त्रितान् । बिद्याप्रमाणेत्र चत्र सूत्रविधानतः । कह्वविद्विद्यं द्वारं चतुरसुल्युद्धितः ॥ मण्यमोप्तमनोवेदी भण्डपस्य निमागतः । चतुर्योदगेष्टिजृतित्वस्याक्षिसस्यच्योतिषे वा ॥ सवैवादश्योते वा इष्काभिः प्रकस्ययेन् । इति ॥,

चूडा सिखा । विश्वकाभिति । तेषां चतु स्तरभागां शिरासाभः प्रीत-चिष्ठग्राण्युभयवश्चित्रद्वयोपेवानि विश्वकास्यानि तिर्वेकाष्ट्रानि विधे-यानीरवर्धः । वाद्य इत्यादि । बादी मध्यस्यभ्यप्यपुर्व वित्यस्य बद्धाराविधौ मण्डपश्चेत्रविस्तारपर्योगभीठपरिभितस्यन्त्रत्वीपारीन तुल्या-नवाद्वाद्वायिहकरणपूर्वकं पण्डस्त्यभाणा द्वादशस्तरभा निलेखा इत्यधः । तदेवं पोदशस्तरभवा संवयते । तेषु चल्तारो मण्डपायामार्छ- मितोन्द्र्राया अष्टद्रता नवहरता वा अवन्ति । अथममध्यमोत्तमरूपे-प्यष्टहस्ता एते चत्वारः। शारदातिलके--

पोडशस्तम्भसंयुक्तं चत्वारस्तेषु मध्यगाः **।** अष्टहरतसपुरक्वायाः संस्थाप्या द्वादशाधिकाः ॥ पश्चहस्तप्रमाणास्ते निन्द्रिद्धा ऋभवः शुभाः ।

इत्युक्तत्वादिति । तथापि मध्यमस्तम्मेषु चृहास्वेव तिर्यकाष्ठनिर्वशः नम् । वाह्येषु तु चूहातु स्तम्मकणेषु वैत्यनियमः । सर्वे च, 'पञ्चमांडसं न्यसेष्ट्रमी सर्वेसाथारणी विधिः ' इत्युक्तत्वात् सूत्रपश्वमांद्रीन निखेयाः। सर्वेऽपि दशाङ्खलस्ववेदनयोग्यस्पील्या विषेयाः।

करुपयेदित्यादि । कनिष्ठमण्डपे द्वारचतुष्टयं द्विहस्तविस्तारम् । तथा मध्यमे चतुरङ्गुलाधिकद्विहस्तविस्तारम् । एवमुत्तमेऽप्राङ्गुलाधिकद्विहस्त-बिस्तारम् । मध्यमोत्तमयोतंदीस्यादि । मण्डपमध्यश्रिभागमाना वेदिः स्वायामनृतीयचतुर्थपश्चमसप्तमनवमैकादद्याऽन्यतमेनीचा ।

तुळापुरुषे तु मारस्ये---

सप्तहरता अवेद्वेदी मध्ये पश्चकराऽथवा । इति ॥

सिद्धान्तशेखरे— चतुरस्रा चतुरकोणा वेदी सर्वफलपदा ।

तशगादिप्रतिष्ठायां पश्चिनीपद्मसन्निभा ॥ राह्मं स्यारसर्वतीभद्रा वेदी राज्याभिषेचने । विवाहे श्रीपरी वेदी विशद्धस्तसमन्यिता । इति ॥

'द्वारदेहस्या बहिर्हस्तमात्रे द्वारदााखा निखेया ' इति नियन्धान्तरे ।

भवायण्डं तु 'हस्तद्वयं यहिस्त्यवस्था वीरणानि निवेशयेत् ' इत्यक्तम् । मारस्ये---

> द्वारेषु फार्याणि च बोरणानि चलार्यपि क्षीरवनस्पतीनाम् । इति ॥

अयमर्थः-पूर्वद्वारे अश्वत्थशाखे, दक्षिणे चदुम्मरशारो, पश्चिमे कमात्पञ्चपद्सप्तहस्तीचाः । तासामुपरिकृतचृडासु वियक्फलकमुभयतः । सच्छित्रं चूडान्यस्तच्छित्रं निदध्यात् । वद्विहरतमयममण्डपे । अङ्गल-

प्रविष्ठासारसङ्गद्दे—

भण्डपः चलाहानी वा सर्वल्युणसंयुतः । दशदादशहरों वा दिदिवृद्धश रातः श्रमान् ॥

टिङ्गपुराणे तु पुरुषदानप्रकरणे-विश्वसत्त्रमाणेन मण्डपं कृटमेव वा 1

भयाष्ट्रादशहस्तेन फलाइस्तेन वा पुनः। इति ।।

विदातिहस्तोऽप्युक्तः । मन्यस्तम्भविष्ठकोपरिगतैश्रतुर्भिरष्टभिर्शः स्ट्रः

हाऽऽकारफलशातीतः काग्रेमेंचे शिराराकारयुतः बूटः । बूटोऽस्वी किरतरं शृह्वमित्यऽभिधानानुसारान् । मध्यस्तम्भोषरि समसयाच्छान , दिती मण्डय इति हेमाद्रिः। संप्रति कृट एशाद्रो छोकानाम्। तत्रैव ख भग्डपश्रमः ।

। दशह्रतमण्डपस्येकमेपालङ्गण्डपस् एकाभ्रिविचानपर्दे चौपयुक्ती

भवति १ इति मदनरस्ने ।

पश्चराह्रे-

हुर्वद्विष्णवयागेषु चतुद्वीराँख मण्डपान् । सारदारमयान्दनभान्ददान्तुवीरज्नसमाम्।। मण्डपाडों चिछ्तान्येदसङ्ख्यादश्रुदासमन्यितान् । बलिकामुर्घेतस्तैयां स्तम्मद्वादशकं पुनः ॥ षाद्यपीठप्रमाणेन सत्र सुत्रविधानतः। क्टपयेद्विकां द्वारं चतुरहुलवृद्धितः ॥ सन्यमी समयोवेंदी मण्डपस्य जिमागतः । चतुर्याशोच्छितस्तस्याधिसप्तपञ्चतोऽपि वा ॥ नवैकादशहीने वा इष्टकाभिः प्रकल्पयेन् । इति ॥,

चुहा शिखा । विक्रिमिति । तेषां चतु स्तम्भानां शिखाभिः प्रोत-न्द्रिज्याण्युमयविद्यद्वद्वयोपेतानि विज्ञाख्यानि विर्यकाम्रानि विधे-यानीत्वर्थेः । बाह्य इत्यादि । आदी मध्यरनम्भचतुप्रयं विन्यस्य सद्वाहापरिभौ मण्डपश्चेत्रविस्वारपर्यायपीठपरिभितसूत्रतृतीयाशेन तुल्या--तरद्वाददाचिहकरणपूर्वकं पश्चहस्तप्रमाणा द्वादशस्तम्भा निखेया इत्यर्थ: । तदेवं पीडशस्तम्भवा संपद्मते । तेषु चत्वारी मण्डपायामार्छ- मितोच्छ्राया अष्टहस्ता नक्हस्ता वा भयन्ति । अधममध्यमोत्तमरूपे-ष्यष्टहस्ता एते चत्यारः ।

शारदातिङके—

पोडशस्तम्भसंयुक्तं चत्वारस्तेषु मध्यगाः । अष्टदस्तसमुन्द्रायाः संस्थाप्या द्वादशाधिकाः॥

पश्चहस्तप्रमाणास्ते निन्द्धिता वरमनः शुभाः ।

इत्युक्तस्वादिति । तत्रापि मध्यमतनगेषु नृटासीव तिर्वेकाष्ठनिवेकः नम् । यह्येषु तु चृत्रासु स्तमकर्णेषु वैत्यनियमः । सर्वे च, 'पण्यमांडहां न्यसैङ्मी सर्वेताधारणो विधिः ' इत्युक्तस्वात् सूत्रपण्यमांशेन निर्वेवाः। सर्वेऽपि तृशाङ्गस्व्युव्यद्यनयोग्यस्थीस्या विधेयाः।

करूपयेदित्यादिः किनाप्तमण्डेचे द्वारण्यपुष्टयं द्विहस्तविस्तारम् । तथा मध्यमे चतुरङ्काधिकदिहस्तविस्तारम् । एवमुत्तमैत्र्याङ्काधिकद्विहस्त-विस्तारम् । मध्यमोत्तमयोदेदीत्यादि । मण्डपमध्यप्रिभागमाना येदिः स्वायामप्रतीयच्छपेष-कामसुमनवभेकादशाऽन्यतमेनीवा ।

वळायुरुपे त सारस्ये—

सप्तहरता भवेद्वेदी मध्ये पश्वकराऽथवा । इति ॥

सिद्धान्तरोपारे---

चतुरका चतुष्कोणा वेदी सर्वप्रसम्बद्धाः । तबागावित्रतिद्वायां पश्चितीपद्मसनिभाः ॥ राम्नां स्वास्तर्वतीभद्राः वेदी राज्याभिषेवने । विवादै श्रीभरी वेदी विद्यद्धस्तमन्यता । इति ॥

'द्वारदेहरूम विहर्षहरुमात्रे द्वारहात्मा निष्यम ' इति निजन्भान्तरे । मतराण्डे तु 'हस्तद्वयं बहिस्त्यक्ता तोरणानि निवेसयेत् ' इत्युक्तम् ।

मात्स्ये-

द्वारेषु कार्याणि च तीरणानि चलार्यपि क्षीरवनस्पतीनाम् । इति ॥

अयमर्थः—पूर्वद्वारे अश्वत्यक्षात्ते, वृक्षिणे चहुम्बरहात्ते, पश्चिमे इश्वताखे चत्ततो बटशाते । शाराश्च अध्यसम्बर्गात्तमगट्येषु रुमारपञ्पयद्सतहस्तोत्राः । वासासुपरिकृतचृदासु वियमक्ष्ठरुस्यवः सिच्छद्रं यूडान्यस्तिच्छं निवृष्यात् । विद्वहस्तम्यममण्युरे । अङ्गद्ध- प्टकाधिकं,दिहस्तं मध्ये । सार्खे इस्तद्वयमुच्छे । तिर्थरफलकोपरि मध्ये मण्डपेप क्रमाचतुरहुलाः ,सार्वचतुरहुलाः पश्चाहुलाव कीला निवे-इया: । तिर्थनफलकं कीलाश्च तत्तरकाष्ट्रजा एव ।

यद्वास्तुशास्त्रे---

मस्तके द्वादशांशेन राष्ट्रचनगदाम्युजम् । वागादिकमयोगेन न्यसेनेपां खदारुजम् ॥

द्वादराांशोऽत्र फलकस्य चतुरङ्गुलादिरेबोक्तः । श्रद्धचत्रत्रादाम्युनक-

र्णं वैष्णवयागविषयम् ।

हैबयागे सु ते कीलाश्चिश्लाः स्युः । विश्लाकारस्य चैर्व—'मध्य-कीको नवाझुळो बृनः सपादटाहुळविस्तारः। तमुमयतोऽन्यौ कि वि-क्रिको । दैर्व्यमभ्ये शूलस्य मूलाङ्ग उद्भयं विले प्रविशति इत्यव्रममण्डपे । मध्यसे स्वेकादशाङ्कुळ उच्छायः । पादीनम्यङ्कुळविस्तारः । न्यङ्कुलो विलयनेशः । उत्तमे त्रयोदशाहुलमुच्छ्रायः सपादभ्यहुलो दिस्तास्त्र-तरहाली विलप्रवेशाः । इदं च विद्वलमते-

शहेन चिहिताः कार्या द्वारशाखासु मस्वके । श्लैतवाह्यक्षेत्रेंच्ये तुरीयाशेल विस्तृतिः ॥ क्रजुँदै मध्यशृद्धः स्यात्किश्चिद्धकं च पश्चयोः। प्रथमं तत्समाङ्यातं ब्यह्नुलं रोपयेत्तथा । इत्याविकोक्तम् ॥

ध्यामलाभे एकवृक्षणानि वोरणानि । नत्याप्यभावे शमीतृमजानि । पत्रक्षितेशतमन्त्राह्म अग्निमीळे, इपे त्या, अग्न आयाहि, शंनी देवी इत्यतसन्धेयाः । मध्यत्तमभचतुष्रयोपरि च मुरजाऽऽकृतिकान्धे दिगिव-विभावरम्ब्राष्ट्रक्योतामकाष्टाष्टकेनोञ्जतता कार्यो । 'कदै: सद्भिस्तु संज्ञाचा विजयाधास्तु मण्डपाः ' इत्युक्तवात् । द्वारवर्जे सर्वतो मण्डप भारकाराः । अयबिजयभद्रविश्वरूपमुरूपपुरुषपुरुषन्वकसुप्रसन्नाः । एते-Sप्रहारतादयी द्विहानवृद्धिती शावच्या: । यदा सण्डवद्वयं क्रियते, तदा तत्र प्रथमभण्डपपरिभितमन्तरमुत्सूच्य दितीयी मण्डपः धर्तेच्य इति वारनुसाक्षे ' एवं यदा धामामे मण्डपः कियते सदा सद्धामपरिमाण-मन्तरसुरसुज्य परवी मण्डपी विशेषा इति ।

मण्डपे पताका उत्ता: । मात्स्ये--खोकेदावर्णा परित: पताका मध्ये ध्वजः किङ्किणिकायुवः स्यात् । इति ॥ सङ्गहेऽपि—

> सप्तहरताः पताकाः स्युः सप्तमाशेन विध्तृताः । स्रोकपाटानुवर्णेन नवमी तुहिनप्रभा ॥ पीतरक्तादिवर्णास्त्र पश्चहरता ध्वजाः स्मृताः । द्विपश्चहरतेदेण्डेस वंशजैः संयुतास्वया । इति ॥

लोकपालबर्णाः---

इन्द्रः पीतो यमः स्यामो वरुणः स्फटिकप्रभः । छुदैरस्तु सुवर्णोभो हाप्तिश्चापि सुवर्णभः ॥ तथैव निर्वरतिः स्यामो वासुर्पृतः प्रशस्यते । ईशानस्तु भवेद्रकः एवं ब्यायेकमादिमान् । इति ॥

गारुडे तु पताकानां प्रकारान्तरमुक्तम्--

पश्चहस्ता ध्वजाः कार्या वैयुत्त्येन द्विहस्वकाः । सप्तहस्ताः पताकाः स्वृश्विशस्यङ्गलशिस्तृताः ॥ दशहस्ताः पताकानां दण्डाः वश्चारविश्विताः । सिन्दुराः कर्षुरा यूत्रा पूसरा सेयसिकासः ॥ हरिताः पाण्डुनणीक शुद्धाः पूर्वोदितः कृतान् । पर्व नर्णाः क्रामाः कार्याः पताकाः पाकशासस्त । इति ॥

कत्र समयतुरस्रमण्डपसाधनम् । मण्डपादिश्वासप्रमाणां रण्कुं द्विगुणीक्ष्यं सामेबीभयवात्पाशाभ्यां सह लष्टमा विभव्यः, पश्चमांशानते
स्थाया यप्टांशान्ते शर्कर्व च चिह्नद्वयं कृत्वा मण्डपादेः प्राचीसुवधान्दद्वये शस्टुद्वयं निखाय, रज्यन्तपाद्यौ तथीः शह्कोत्पस्य करणचिह्नं दक्षिणस लाकुच्य शह्कुचिह्ने सह्कुं निखाय ततः कर्पणचिह्नसुस्तत लाकुच्य शह्कुचिह्नं शाहकुं निखाय व्यत्यासं कृत्य शह्कोत्स्वयः प्रवृत्विद्विणीच्ययोः क्रमेण कर्पणचिह्नमाकुच्य शह्कुन्दि पाशान्वावासन्त्य पूर्ववद्विणीच्ययोः क्रमेण कर्पणचिह्नमाकुच्य शह्कुन् द्वयं निहत्त्यात् । तत् देशानोक्षयादिवहकुषु प्राद्योक्षण्येन रज्युवेष्टनान्मण्डपादिचतुरस्तं क्षेत्रं सिद्धं मति।

मध्यवेदीसाधनम् । मण्डपसूत्रं प्रागायतं दक्षिणोत्तरायतं च त्रेवा विभज्य तेन नवभागो मण्डपः संपद्यते । मध्यमे नवर्मेऽदे तन्माना वेदिका यजमानहस्त्रोच्छायां च विधेया । तथाच शास्त्रातिङ्के---

चतुरस्रीकृतं क्षेत्रं पश्चमा विमजेत्स्यी: । । स्यतेरपुरस्तादेकांशं कीणार्थार्थप्रमाणतः ॥ भ्रामयेत्कोणमानेन तथान्यद्पि मन्त्रवत् ।

सूत्रयुग्मं ततो द्धालुण्डं योनिनिमं भवेत् । इति ॥ अञ्जोपपत्तिः । प्राव्दिगतञ्यसङम्बः सप्तदशाङ्गङानि, एको यवः, एका युका रिश्ला पश्च । भूनतु इष्टचतुरलमध्या । उदक्सूनं चतुर्विश-त्यद्वस्यम् । उपरिवनास्पत्र्यसेऽपि भूः सैव । बालम्बस्तु द्वादशाऽह-स्वकृष्ण् । प्रतादेव्यासाद्वयोस्वहुलानि अष्टी यवाश्रतार इति । योतिमध्यस्त्रपृद्धपहुङानि । एक्ट्से पश्चाऽहुङानि, एको यत्र, एका युका, पन्ध लिक्षाः। द्विहस्ते सप्ताहुलानि । द्वौ यदौ, द्वे युके, एका दिक्षा । जिह्ततेऽष्टावहुलानि सप्त यवाः, तिस्रो युकाः। चतुर्दाते दशाहुक्ति, चत्वारो यवाः, विस्तो युकाः हे विश्वे। वश्वहस्ते एकादशाहुलानि, यवचतुष्टयम् , एका युका । पहुस्ते द्वाद-शाङ्गलानि, चरनारी यनाः, सप्त युकाः, विस्ती लिक्षाः । सप्तहरते त्रवीरशाङ्गलानि, पश्च बवा', कप्टहरते चतुर्रशाङ्गलानि, यवचतुः ष्ट्रयम्, मुकाश्रवसः, हे लिखे । नवहस्ते पश्चदशाहरूति, यवप बम्, यूराचतुष्टयम्, सप्त छिशाः। दशहरने पोडशाङ्गलानि, ही यवी । विस्री युकास्तिको हिसाः । एवं पोडशहरते विशत्यङ्गलानि बवचतुष्ट्य पड्यूराः, बतस्रो लिशाः ॥

रामरत-इष्टचतुरस्रक्षेत्रमध्यरेताया द्वित्तवस्यधिक शतमंत्रात्स्ट्र-त्वाष्टार्विशर्दशान् मध्यसूर्वं प्राच्यामकोनविशर्दशैश्चोभयतः श्रोणि सव-व्यक्ति सर्वित्रमोणि चतुर्योशक मर्कटेन स्वेण वा पश्चिमभागे एतार्ढद्व प्राह्मस श्रोणिस्त्रस्य बिरिस्य वृत्तादेदयगारामान्त्रयोवद्वित्रप्रास्त्रये चिह यावन् सूत्रद्वयान्त योन्याकारं धार्यमित्याह । तत्फलस्वादेऽवि विरूपत्वादयुक्तम् ॥

इदं चोद्रगमं कार्यम्। तच मध्यरेखापश्वमाशवृद्धानुसीच्या पृताया

· थार्द्धचन्त्राभं कामिके—े

चतुरसे प्रहैर्भके स्यक्ताऽऽदान्तो तर्दशको । मध्ये सप्तांशमानेन कुण्डं राण्डेन्दुवर्ष्ट्रमात् ॥

अयमर्थः-इष्टप्रमाणचतुरस्रमध्यरेता नवचा विभव्याऽऽरान्तिमी भागी परिमृज्य तत्र चिहुदुर्थं कृत्वीपरिचिह्ने तिर्यद्वक्षिणीत्तरं सूर्व दस्वीपरिचिहापश्चिहं याबद्वृत्तेन सूत्रेण कर्कटेन वा भ्रमाद्वतार्द्ध ज्यासूत्रजातकोटिकमर्द्धपन्द्रं कुण्डं कुर्यात् इति । मर्द्धन्दी न्यासाद्धी-कुलानि । एकस्मिभेकोनविशत्यद्वलानि एको यवः एका युका पश्च लिक्षाः । द्वयोः सप्तविशत्यहुलानि पश्च युकाः द्वे लिक्षे । त्रिपु त्रपाक्षिशदङ्गुलानि एको यन हे युके पहिश्वाः। चतुर्पु अष्ट-त्रिशदङ्गुलानि ह्वा यना तिस्रो युकाः हे लिखे। पश्चसु हिप्तता-रिशदहुलानि । सप्त यनाः । यूकाश्रतस्तः । तिस्री लिक्षाः । पर्सु पद्चत्वारिशद्कुलानि, सप्त यथाः द्वे युके । सप्तसु पश्चाशद्कुलानि, पच्च बनाः, द्वे युके चतस्रो लिशाः । अष्टसु पञ्चपञ्चाशदङ्खानि, एको यव, द्वे युके, तिस्रो-सिश्वाः। नवसु सप्तपश्वाशदङ्खानि, पत्थारी यनाः । दशसु पडहुलानि, पत्थारी यवाः । एवं पोडशसु पद्-सप्तत्यङ्गुळानि । पञ्च यवाः । अत्र रामेण—' चतुरशीत्यभिकत्रिशत्या विभक्तस्येष्टक्षेत्रव्यासस्यैकोंशोऽधिकस्त्यात्यः क्षेत्रफलसंवादार्थम् ' इत्यु-कम् । स चैकांश इप्रक्षेत्रव्यासम्बद्धविशाशस्य पोडशांशी भवति । पक्रहस्तचतुरसे तु सार्द्धयवभितः । यवं द्विहस्तादिष्वप्युद्धम् । इदं चौद-गर्म कार्यम् । तदुक्तं मदनग्रले-'व्यगमत्वं चीद्द्यमध्यरेखाया नवधा विभागेन संपादनीयम् ' इति ॥

यतु शारदातिलके—

चतुरस्रीकृतं क्षेत्रं दशवा विमर्वोहुषः । एक्प्रेमंत्रं रष्ठवेदशयन दर्वे च तन्त्रवित् ॥ च्यासूत्रं पातयेदशे वन्मानाद्श्रामयेतवः । अर्द्धचन्द्रतिमं कुण्डं रमणीयमिद् भवेत् । इति ॥

तत्र भूयान्ध्रेत्रफलविसवादः । कामिकोक्ते त्वल्पः ।

अथ त्रिकोणम् । 'इष्ट्चतुरसमध्यस्त्रस्य चतुर्विशिविरंशाः । तत्र

मृतं च प्राच्यामष्टमांशोनैकांशसदिवान् सार्दिसतांशान् श्रोणि च पार्श्व-यो: 1 प्रत्येकं सपादान् पर्वज्ञान् संबद्धपं बद्धितश्रीण्यन्तयोविद्धितप्राक्-स्त्रान्तं यावतस्त्रद्वये दत्ते समभुजं व्यक्तं मदित ।

यथोक्तं शारदाविछके---

चतुर्द्वामीदिते क्षेत्रे न्यसेदुमयपार्श्वयोः। एकैक्मंदातनमानाद्वतो खान्छयेत्ततः ॥ स्वद्वयं युषः कुर्यालयसं कुण्डमुदाहृतम् । इति ॥

इरं तु कि चित्सलज्यभिचारि । अवीऽस्माभिर्धिका पृद्धिक्का । राममते तु 'मध्यमूत्रं दशभिरंशैः संबद्धर्य सनैकॉड्सः स्वाष्टमांशीनः श्रोणिसूत्रस्रोमयतः पश्चवश्चांशदृद्धिः १ इति । वतु विपमसुमत्वादुपै। स्यम्। इदं च निर्मती प्रायमं पश्चिमयोनि व्यन्तगुनाः । यक्तिमन् पर्वित्रादक्र्युलानि चलारो यक्षः । द्वयोरेकपश्चाशदक्युलानि पश्च · यवाः । त्रिपु त्रिपष्टाहुलानि एको यवः । चतुर्पु त्रिसप्तत्यक्पुलानि वका । १२३ १२४८-छुजान पञ्च यकाः । वर्ष्ट्र एकोननश्चर्गुङानि चर्चो यवाः । समसु चतुर्न-बत्यश्युजानि चत्वारो यवाः । षष्टश्च श्युक्तरस्रवार्गुजानि एको यवः । नवसु नवाधिकरासाह्युळानि यवत्रयम् । दशसु पश्चाद्शाधिकशसाङ्गु-लानि यवद्रवम्।

अथ वर्ष कामिके-

कर्णार्थाष्ट्रास्तंन्यासादृशं कुण्डमिहोच्यते । इति ॥ अयमर्थः—कर्णार्थस्य योऽप्टमाहोोह्गुब्द्यययवाधिकमेकहरते सस सन्यह्न्यासं त्यागं कत्वा विशिष्टयवन्यूनपश्चदशाह्गुडात्मऋग्यासार्थेन षृत्तं कुण्डं भवति ।

शारदातिलकेऽवि-

अष्टादशांशे क्षेत्रेशं न्यसेदेकं वहिर्बुधः ।

भामयैत्तेन मानेन वृत्तं कुण्डमनुत्तमम् । इति ॥ सन्यत्रोभयत्रापि क्षेत्रफलविसंवादो धोष्यः । एकांशस्य पश्चविद्यां-शसहितव्यासपोडशांशाधिकव्यासार्वमिनककटेन सूत्रेण वा छतं मण्डलं वृत्तकुण्डं भवति । ' इष्टचतुरस्रव्यासपौडशांसाऽधिकव्यासार्द्धमितेन कर्कटेन सूत्रेण वा कृतं मण्डलं यृत्त्कुण्डम्'। प्रागमं पश्चिमयोनि प्रतीच्यां वृत्तव्यासादांह्गुलानि । एकस्मिखयोदशाङ्गुलानि थव- चमुष्टवम् । द्वयोरेकोनविद्यस्यपूर्णान एको यवः । त्रिष्ठ प्रसोधि-द्वारवङ्गुळानि ववचतुष्टवम् । चर्छु सर्ह्यविद्ययङ्गुळानि एको यवः । पश्चमु जिसदङ्गुळानि द्वो ववे । पट्मु प्रविद्यसंगुळानि एको यवः। समसु पर्चात्रवदङ्गुळानि सम यवाः । अष्टस्वष्टीत्रवदङ्गुळानि द्वी सम्बन्धात्रवि सम यवाः ।

व्यय पदस्यप् । 'इष्टचतुरस्मपयसूत्रस्य चतुर्विरातिमंशान्कस्ता तस्यूत्रं त्रिभिरंशैः प्राच्यां वर्द्धयेत् । तनैकोऽशः स्वाष्टमांशोनः तावच प्रतीच्यां संबद्धर्य चदुर्द्धेन ष्टुर्च इत्वा सावतैव कर्कटेन उदीचीमारभ्य पट्स स्थानेष अद्भेत् र इति । अञ्चेकहस्ते सावदेवं फटम् । मध्ये दीर्घचतुरक्षम् । तदी-घेभुभः पश्चविदास्यकुरुति पड्यवाध्य । प्रमन्योऽपि । अस्पगुमस्तु, चहुरेशाक्नुलानि सेत यवाः तत युकाध । तत्र फर्छ, पश्चाशीत्यथिकानि ात्रकार प्रमाणित कृति । 'चतुरस्त्रीर्येषुप्रसंद्ये स्थले तु भुज पत्र भूः । स्वत्यपस्तु स्वचतुर्थासः सप्ताऽस्तुद्याना अयो यदाः पश्च युकाश दिते । सरस्त्रं, पश्चमत्त्वस्तुरात्रानि चरवारी थवाश्च । अपरञ्चलेऽप्येवम् । फलत्रययोगे पश्वशतपद्सप्ततिश्च । यतु विष्णुमूलभमृतिभिर्वहुभिः फळसंवाद्यपि ज्यस्रद्रययोगेन बहिर्निर्गतासिकं पडसमुक्तम् । सद्युक्तम् । अन्तरबाह्यास्त्रयोगेन द्वादशास्त्रताद्वादशभुजतापत्तेः । वहिस्तना पवा-स्ता नान्तर्गता इति चेत् । तथापि वक्रमुजतायां मानाभावः । चतुरस्र-श्यकादावि फलसंवादेन कदाचित्तथापत्तेश्च । यतेन रामाग्रुक्तमष्टाल-मि प्रत्युक्तम् । पडिसिमुजाङ्गुङान्येकदस्वादिकमेण दशहस्तपर्य-नाप असुत्तम् । पहालमुजाह्याखानकहत्तात्वनमण दशहत्तपप नवम्। पत्तुदेशाङ्गुखानि सम् यवाः । एकोनियस्त्रमुखानि । पर् यवाः । विशत्यह्युखानि । पद् भवाः । एकोनियस्त्रमुखानि । यद यवाः । प्रयक्तिसद्भगुखानि । दी यवा । वर्दिसदिस्मुखानि । यवपशुण्यम् । एकोनचत्तारिसद्भगुखानि यवस्यम् । द्विचतारिसदस्मुखानि एको यव: । चतुःशत्वारिशदङ्गुलानि पश्च यवाः । सप्तचत्वारिशदङ्गु-छानि एको यवः।

कथ पदान्। इष्टचतुरसमम्बस्यस्य चतुन्त्रिशतिरसाः । तत्र द्वादराभिर्-रैरेकं द्वत्तं क्रत्या तदुपरीशपचामाशाधिकान्साद्धोन्त्रीनंसान्संबद्धपीऽपरं दृत्तं क्रत्या तत्र दिख्य विदिख्य तदंतरालेषु चसूत्राण्यास्कालयेन् । ततोऽन्त- र्वृत्तरेलाप्राक्त्यमस्त्यात्तरेकान्तरितमस्त्याः सृतद्वयं निकोणाकारे णाऽऽस्ताळ्येत् तदन्तराल्यस्त्रवसम्तुत्रविद्वेतरेत्मातमस्यं यावत् । तर्वेकसूत्रं समाशतया गप्येऽद्वियत्वा सृत्राद्वीयतकदेटनोटिमेकां मध्याद्वे परां च सृत्रारम्भक्यस्ये संस्थाप्य त्रिकोणमध्ये अमगादेकसस्यं, यहि

ष्ट्रंतरेखागतित्रकोणान्शत्तसमादेव च सूत्राह्वाभिकोणाद्वहिर्पर्र सस्य कुरतान्तर्मस्याभिकोणाद्वहिर्पर्य सस्य प्रन्ताऽन्तर्मस्याभिकोणाद्वहिरप-रिसुदार्द्वच्याकमेकं वहिमेत्याभिकोणान्त. अव. सूत्रार्द्वच्याकमपामिति संस्प्रकोटिकमुपर्ययोगायेन चतुर्द्वयं कार्यम् । प्रमण्यानुवेऽपि कृत्वः सूत्रद्वयान्तरे वकार्य पदाव्यवस्य मन्ति । एकान्यानि पत्राणि अवः

सुद्रद्वयमार्गने वजामं पदार्डवरात्र मजि । एवम-मानि पत्राणि खवः इत्या श्रष्टक्रुएसक्षेत्रकरियवण्युविहारचंत्रमण्ये त्रिभिरंदार्व्यामार्देन मध्ये तद्विहेस पदारुप्यासार्वेतिक हे युत्ते कार्ये । तत्रान्तवृत्ते विस्तारे तहुते-नोचवायो सहसार्व्यासार्वेतिक हो युत्ते कार्ये । विदेशेत सु वेसरा इति । तथा च कामिके---

> चतुरस्नाष्टभागेन कर्णिका स्यादिभागशः । सद्बद्धिस्त्वेकमागेन वेसराणि प्रवस्त्येत् ॥ मृतीवे द्रसम्यानि चतुर्थर्स्नकोटव ।

९ । दशहस्त एकोनपश्याशदस्युटानि ४९ । पश्य ययाः । चतस्रो युकाः । सप्त लिखाः । द्वयमेकं वा यालात्रम् । पश्च रचरेणवः । पर् त्रसरे-णवः । त्रयः परमाणवः' इति । भूस्तु तृतीयवृत्ताष्ट्रमांशस्य ज्यारूपा । सा चैकदस्ताविषमेण दशहरतान्तम् । नवाऽष्ट्रगुलानि । एको यवः । तिस्रो युकाः । पड 'लिक्षाः । भीषि बालामाणि ॥ १ ॥ द्वादशास्युलानि । सप्तयवाः । सप्तयुकाः लिखाद्वयम् ॥ २ ॥ पश्यदशाङ्गुलानि । यत्रत्र-यम् । एका युका । सप्तरिक्षाः । चत्वारि वारामाणि ।। ३ ॥ बष्टादशा-क्गुलानि । यबत्रयम् । युकात्रयम् । चनस्रोलिक्षाः। पद्वालामाणि॥४॥ र्विशत्यस्युलानि । चत्वारी यवाः । द्वे युवे । तिस्री लिक्षाः ॥ ५ ॥ द्वाविद्यासम्प्राक्षाति । त्रयो यवाः । सत्त्रयुक्तः । पद्वक्षिणः । पद्वाका-प्राणि ॥ दे ॥ बतुर्विद्यस्यम्गुलानि । यवद्रयम् । युकात्रयम् । एका किसा । त्रीणि यालामाणि ॥ ७ ॥ पथविद्यासम्बद्धालानि । सम्यवाः । पह्यूकाः । चतलो लिखाः ॥ ८ ॥ सप्तर्विशस्य हुगुलानि । चस्यारी पगाः। तिस्त्री युकाः । तिस्त्री लिखाः ।। ९ ॥ एकोनिविद्यद्युगुलानि । एको चवः । एका यूका । विक्षात्रयम् । पद्मारामाणि ।। एतरपदारुण्डम् ॥ अधेतरफरम् । तत्रैकरिंगन्पत्रे उपस्तिने महति त्रयन्त्रे तायहन्त्रोऽस्यु-लानि दश । त्रयो यगः। सप्त यृकाः। त्रीणि वालामाणि॥ पश्व रथरे-णवः । पश्च श्रसरेणवः । चत्वारः परमाणनः । इति ॥ भूस्तु नवाइग्र-ळानि । एको ययः । तिस्रो युकाः । पर्छिशाः । त्रीणि वालामाणि । द्वी रथरेणू । प्रयस्त्रसरेणवः । सप्त परमाणवः इति ॥ सम्बेन सङ्ग्रस्य-र्थाणमे फलम् 'पश्चाशदङ्गुलानि । सप्त ववाः । द्वे युके । पड्डाला-माणि ॥ द्वी रयरेण् । एकलसरेणुः । पत्वारः परमाणवः । इति ॥ **ण**भरंतनेऽस्पत्रयसे भूः सैव । छम्बस्तु चरवार्यहुगुलानि । घरवारी यवाः । झतस्रो युकाः । सप्त लिक्षाः । एकं वालामम् । पश्च स्यरेणवः । एकस्त्रसरेणुः । सप्त परमाणवः । इति । पूर्वोक्तभूम्यद्वेनैतहम्बगणने फलम् ' एकविशतिरङ्गुलानि । पश्च युकाः । पश्च लिक्षाः । पश्कं वालामम् । पश्च रशरेणवः (पट् श्रधरेणवः । त्रयः परमाणवः । इति । च्यसद्वयप्रतेकीकरणे 'द्वासप्ततिरस्युलानि पत्रापवकेतायां तु तावस्यैव भूस्यञ्यते, तावस्येव संगृहाते इति गणितं क्षेत्रफळं विहितम् । आष्टाना-मपि पत्राणां क्षेत्रपळमेळनेऽब्गुलानां पद्सप्तत्यधिका पश्चशती॥५७६॥

भविष्यपुराणे— ं सुन्धते वारतिनमायकम् । सुरिमानं दातार्वे तुन्धते वारतिनमायकम् । सद्गे स्वय द्वीतस्ये तुर्याद्वण्डं करात्मकम् ।। द्वित्तवमसुने तव स्त्रादेणे प्याकरम् । सददसारमञ्जूषकं कोटिहोमेषु नाभिकम् । इति ।।

थनु झाखाविङके--

पु जन्मविष्यः एकहस्तिमितं कुण्डमेकल्ये विषीयते । स्त्राणा दशकं यावचावदस्तेन वर्द्धयेत्र ॥ दशहस्तिमितं कुण्डं कोटिहोमेऽपि शस्यते । इति ॥

वत्तु स्कान्दे---

. कोटिहोने बहुईस्तं चहुरसं समन्तरः । योनिकस्द्रयोगेने वर्ष्याहृत्यिमेसरुद्ध । द्वि च स्त्रादिहोमेस्करुत्वादिक्षम्यक्तं, कोटिहोमे इसद-स्त्रस्य । तद्ययोचित्रप्रीक्षादिचित्रस्यहरूत्व्यविषयं चृत्रादिक्षम्यस्थि प्रकारिक्षम् सेकम् ।

जय सातम् ।

मोहबृहोत्तरे—

चतुर्विक्रीकां भागमङ्गुलं परिचल्य तु ॥ चतुर्विक्राङ्गुलं हस्तं सुण्डाना परिचल्पेयेत् । हरतमार्गं सनेचियेगूष्वेमेरालया सह ॥

पिङ्गलमते— ग्वातादेकाङ्गुलं स्वत्त्वा मेरालानां स्थितिभेषेत् ।

तथा---

सर्वेशमेव कुण्डानामेका वा विस्न पत्र वा । कुण्डलक्रमविवृत्ती—

कष्यह्यालाद्वद्दिः कार्यो मेललेका पडह्याला । इति ॥ च्युलिक्षह्याल्य वाडिंगे तिकः सर्वत्र शोभनाः । इति ॥ मेललानित्य कार्ये कोणसामयमाक्यालैः । ...

कोषाखलार: । रामासय: । यमी ही । चतुर्तिस्रकृगुरुत्वं च विस्तारे, वयताया च । जत एव स्वरदाविलके वेसलामानं प्रकृत्य-- विस्तारोत्सेयनो क्षेत्रा मेरालाः सर्वतो सुवैः । इति ॥

राजन । ' तिस्पामि ज्यस्गुलोचतेव। विस्तारस्य चतुर्शितव्यस्गुलः इत्युक्तम्।

,अथ योनिः ।

तत्र स्वायम्भुवे—

: मेखलामध्यती चीनिः कुण्डाडाँ ज्यंशविस्तृता । मञ्जूष्ठमानीष्ठकण्ठा कार्याऽत्रस्यदलाकृतिः ॥

सुण्डाद्धां दीयाँ । ज्यंत्राविस्तृता मुछे समेऽश्वरमद्धवस्याः । सस्पाद्यामानी ओप्टकण्डौ यस्याः सा अङ्गुप्तमानोधकण्डा । जोष्ठः कृष्ड-मन्ये प्रविद्धं योज्यमम् । कष्ठो योनिमेस्टरेरयेके । तथा च भुवि वेष्टिता योतिः कार्यस्यर्थः । मेस्टलात चर्चो आगः इत्यपरे ।

वैछोक्यसारे---

दैध्यांत्सूर्योद्वला योनिस्ट्यंशोना विस्तरेण चु । पकांगुळीडिन्द्रता सा तु प्रविद्याभ्यन्तरे तथा ॥ शुरुमद्रयसमायुक्ता बाऽश्वरयदलबन्मता । अङ्गुप्टमेसललायुक्ता मध्ये स्वाज्यपृतिक्षमा । इति ॥

त्र्यंशोता योनिदेष्यात् । अष्टांगुलेवि यावत् । कुम्मद्वयेन वृत्तार्द्ध-द्वयाकारेण मृत्यदेशे समायुका ।

शारदातिलके—

भूछादारभ्य नार्ङ स्थायोत्या मध्ये सरव्यकम् । इति ॥ प्रागप्तियाम्यकुण्डानां प्रोक्ता योनिवदद्युरी ॥ "पूर्वामुखाः स्पृताः शेषा यथाशोभारामन्विताः ।

प्रागप्तियोनिसुण्डानामिति पूर्वोक्तस्वायम्भुवयपनाद्योनिकुण्डे योनिः कार्यो इति केपित् । वस्तुतस्तु नवार्ता चतुरस्वादि पक्ष पतस्य साव-कारस्वाद्वित्रीपनिषमात्र यौनिकुण्डे योनिनेव कार्या द्वति ।

त्रेळोक्यसारे—**'**

नवपस्यापि कुण्डस्य योनिर्दश्चदछे स्थिता । इति ॥

तथा-

दशस्था पूर्वयामे तुन्जरस्था पश्चिमोत्तरे । दाक्षं दक्षिणम् । जलं पश्चिमम् । एवं च होतारोऽपि पूर्वेशक्षिणकुण्ड-

योहत्तराभिमुखाः । पश्चिमीत्तरयोः पूर्वाभिमुखाः सिध्यन्ति ।

होत्रभे योनिरासामुपर्यश्वत्यपत्रवत् ।

इति तत्रैवोक्तः । आसां मेखलानामुपरीत्यर्थः ॥ एवमेव रूपन जारायणादयः । शारदायाम्—योनिकुण्डे योनिमन्जकुण्डे नामि च वर्जयेत् । इति ॥

सिद्धान्तरीखरेपि 'योनौ योनि न कुर्नीत 'इति ।

दारदातिङके—

कुण्डानां करुपयेदन्ते नाभिमम्बुजसन्निर्भाम् ३ वत्तत्तुण्डानुरूपां च मानमस्या निगचते ॥ मुष्टिरलेक्हरवानां नाभिरुत्सेषवो मवा । नेत्रवेदाङ्गलोपेता कुण्डेप्वन्येषु बर्द्धयेत् ॥ यवद्भयक्रमेणैव नाभि प्रथगुदारभीः । इति ॥

मैत्रवेदाङ्गुङोपेता चवतायां स्यंगुला विस्तारायामयोखतुरङ्गुहेरवर्धः द्वितिहस्तारिकुण्डेषु द्विद्वियवद्वद्विस्तु विस्तारायामयोः पद्यांशविस्तार परा। उचतायां द्वादशांशपरेति रामादयः।

शारदातिलके---एकमेव भनेत्हुण्डमीशान्यां वैष्णवाब्वरे । इति ॥

বিশ্বহর্দা---

'साताधिके अवेद्रीगी हीने धेनुधनश्रयः। बत्रकुण्डे तु सन्तापो मरणं छित्रमैराले ॥ मेखडारहिते शोकोऽभ्यधिके वित्तसह्यः। भार्याविनाशनं घोकं कुण्डे योन्या विना कृते। अपत्यध्वंसनं प्रोक्तं तुण्डं यत्रण्ठवर्जितम् । इति ॥

सिद्धान्तशेखरं— मानदीने महाव्याधिरधिके शत्रुवर्द्धनम् ।

योनिहीने त्वपरमारो वाननुष्ठः दृण्ठवजिते ॥

नचैव---

स्यण्डिलं चाडिप कुर्वीत सुर्सिक्षेः सिक्तैः सितैः । हर्स्तमार्थे प्रविस्तारं सुसमे ज्यङ्गुलोक्षतम् ॥ अन्यान्तोऽपि—

नित्यं नैमिचिकं होमं स्थण्डिले वा समाचरेत् । इस्तमानेण तत्तुर्वोद्वालुकानिः सुरोभनम् । इयङ्गलोत्तेषसंयुक्तं चतुरतं समन्तवः । इति ॥ इति श्रीशङ्करभट्टातमभट्टनीलकण्डकृते दानमयूर्वे पण्डमेलकानिर्णयः ॥

अथ पोडशारचकम् ।

तत्र गुरुवेंद्यां मैंथ्ये त्रिहरूव्यासं चतुरसं प्रसाध्य प्रागपरदक्षिणी-त्तरनवनवरेखाभिस्तचतुःपष्टिकोष्ठकं कुर्यात् । तत्र कोष्ठानि प्रत्येकं नवाङ्गलानि संपद्यन्ते । ततो यहिरन्त्यपङ्किषु चतुर्दिश्च मध्यकोछानि परवारि चत्वारि मार्जायित्वा तदुपर्युपान्त्यपद्भिपु पार्श्वयोस्तमधं त्रधं स्यक्ता प्रतिदिशं मध्यकोष्ठद्वयं मार्जयेत् । तेन चतुर्दिश्च पर्पद्कोष्टानि पावारि द्वाराणि सिद्धधन्ति । ततो मध्यस्थितपोडशकोष्ठानि मार्ज-येन् । ततो पाद्य एकैकं कोणकीष्ठं विहाय कोणकोष्ठद्वारपीठान्तरालव-नीन्यवशिष्टानि पश्च पश्च कोष्टानि मार्शयेत्। तथाच मध्यचतुरसः नीठस्य पादाः सिद्धपन्ति। तती मध्याचत्यारि गृत्तानि कुर्यात् । तत्राचे चरवार्यङ्गरहानि व्यासः । द्वितीयेडद्री । तृतीये चतुर्विशतिः । चतुर्थे पर्दिशतिरिति । तथतुरङ्गुलं वृत्तं कर्णिकारूपं पीतेन रजसा पूरियत्वा कर्णिकाविरेरां सितेन रजमा निर्माय तद्वहिरष्टाङ्गलात्मके वृत्ते पीतरक्तस्तिरजोभिः संपादितम्ञमध्यामाणि पोदश केशराणि संपाद तत्कसराविभरेराां सितेनैव रजसाऽहुळोत्रतां संपाय चतुर्विशाहुळात्मके तद्वहिर्दृत्ते सितरमसा अष्टदिस्वष्टौ पत्राणि रशामाणि कुर्यात् । ततो दलान्तरे रेखां सितंन रजसा विधाय दलान्तराणि कृत्णेन रजसा पूरियत्या तद्वदिरेकाञ्चलान्तरं बहिर्षृत्तरेखां सितेनैव रजसा संपाद्य पृत्त-द्वयान्वरं परिवो दलामतलारसन्धिचिहैः योज्यामा विभाग प्रतिभाग यवाफारान् पोडश फीटान्डयामपीतारणद्येतरजीभिः फल्पयित्वा तद-न्तरा यथायोगं रज्ञोभिः पृरयित्वा बद्वद्धिः सिवपीवारुणद्यामद्दिताः

शक्रपूरवोऽदिहरोगोत्रः सुको वै भागवस्तवा । शनिः फारवप एवाँच राहुः पैठीनसिन्द्रया ॥ फेतवो त्रैमिनीयाद्य प्रदा छोकदिवावहाः ।

दामोदरीये प्रहान् प्रकम्य--

वर्णस्पगुणैर्युक्तान्व्याहत्याऽऽवाहयेसु सान् । तप्रेव—

भातुं तु मण्डलकारमद्वैषद्भाद्भार्टीत विश्वम् । श्रद्धारकं त्रिकोणं च धुनं वाणार्कीत विदुः ॥ पद्माकारं तुर्के कुशोबतुष्कोणं च आगेथम् ॥ दण्डार्कीत हानि राहुं सकराकारमेव च ॥ राहुगाकारात्वागं चेतुस्थापवेदनपर्वताः ॥

राह्याकाराँस्तथा वेत्त्स्थापयेदनुपूर्वशः । प्रहाविरूपाणि मारस्ये—

पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भसमहातिः । सप्तादनरथसंयुक्ती द्विमुजः स्यात्सदा रविः ॥ इवेत: इवेतास्वर्धरो दशादव: दवेत्रमूपण: । गदापाणिद्वियाहुअ कर्तव्यो वरदः शशी ।। रक्तमाल्याम्यरघरः शक्तिशुलगराघरः । चतुर्भुनी सेपनाही बरदः स्याद्धरासुतः॥ पीतमाल्यान्यरघरः कर्णिकारसमञ्जतिः। खद्गचर्मगदापाणिः सिहस्थो बरदो व्रघः ॥ देवदैत्यगुरू वद्रस्पीवश्वेती चतुर्भुत्री । दण्डिनी वरदी यी हि साक्षसूत्रकमण्डस् ॥ इन्ट्रनीळशुतिः श्ली बरदो गृप्रवाहनः। वाणवाणासन्धरः कर्तस्योऽर्भमुतः सदा ॥ कराळवदनः खड्गचर्मश्ङी वरप्रदः। नीटसिंहासनस्यञ्च राहुम्तत्र प्रशस्यते ॥ धुम्ना द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः । गृधासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः ॥ सर्वे किरीटिनः कार्यो प्रहा लोकहितावहाः। भङ्गलेनो निष्ठताः सर्वे शतमष्टोत्तरं सदा । इति ॥ केतूनां बहुत्वे एकभेव देवैतात्वप्---

बद्धपराज्ञरः---

मध्ये तु भारकरं विद्याच्छशिनं पूर्वदक्षिणे । दक्षिणेन धरासूनुं बुधं पूर्वोत्तरेण तु ॥ उत्तरेण गुरुं विद्यात्पूर्वेणैव सु भागवम् । शनैश्वरं पश्चिमस्यां राहुं दक्षिणपश्चिमे ॥

पश्चिमोत्तरतः फेतृन्स्यापयेद्नुपूर्वशः । मुखानि मास्त्ये---

देवानां सत्र संस्थाप्या विश्वतिद्वीदशाधिका । **कादित्याभिमुखाः सर्वे साधिप्रत्यधिदेवताः** ॥

शुकाकी प्राक्तुको हेयो गुरुसीम्यावद्दसुरही। प्रत्यकृतुलः शनिः सोमः शेषा दक्षिणतो मुर्गाः ॥

इति स्कान्वात् । सूर्यः प्राइमुखः । पूजायां संमुखतातुरीधात् । प्रत्यक्षुयः इत्यन्ये ।

मधिवेबताः प्रत्यधिदेवताश्च ।

मारस्ये---

भास्करस्येदवरं विद्यादुमां च द्यक्षिनस्तथा। रकन्दमङ्गारकस्यापि सुधस्यापि तथा हरिम् ॥ म्ह्याणं च गुरोर्विद्याच्छुश्रस्यापि शचीपतिम्, ! शनैश्वरस्मापि यमं राष्ट्रोः कालं तथैव च ॥ केतूनां चित्रगुतं च सर्वेशमधिदेवताः । अग्निरापः क्षितिर्विणुरिन्द्रश्चेन्द्री च देवता ॥ प्रजापतिस्व सर्पाध्व वद्या प्रत्यधिदेवताः ।

एतेपां कश्चणानि विष्णुधर्मोत्तरे---पश्चवको पृपारूढः प्रतिवकं त्रिलोचनः।

कपालशुलुखट्टाङ्की चन्द्रमौक्षिः सदाशियः ॥ अञ्चसुत्रं च फमलं दर्पणं च कमण्डलुम् । षमा विभर्ति इस्तेषु पूजिता निद्शैरपि ॥ कुमारः पण्युखः कार्यः शियण्डकविभूपणः । रक्ताम्बरधरी देवी मयूरवरवाहनः॥

वरूणोऽन्त्रपतिः स्कृषिणां मध्यसम्बद्धाः । बांधुविनायकादिपःवके उद्यः । सोमो मदेषु । वनन्तः प्रत्यधिदेव-तासु । त्रिनायकादिस्थापनं महेश्य उत्तरतः इति संप्रदायः । दक्षि-पप्तिवनायक्योत्तरपूर्वेषु यद्याजमभित्यन्ये ।

राहुमन्दिदिनेझानामुत्तरस्यां ययास्त्रम् । गणेशदुर्गा वायुश्च राहुकेत्वोश्च दक्षिणम् ॥ आकाशमिवनौ चेति पश्चैतानस्थापयेद्युषः ।

इति बचनातुसारेणेति भट्टाः रूपनारायणञ्ज । पूजाप्रकारमाह बाह्यन्क्यः—

यधावर्ण प्रदेशानि शसासि छुमुमानि च । गन्धाश्र बछयश्रैव धूपो देयोऽत्र गुग्गुलुः १।

मास्ये—

धूपामीदोऽत्र सुरभिरपरिष्टाद्वितानकम् । शोभनं स्थापयेत्प्राज्ञः फलपुष्पसमन्वितम् ॥

धुपे विशेषो हेमात्री स्कान्दे-

रदे: हुन्दुरुकं भूनं शक्षितस्य घृतास्रवाः । भौमे सर्जरसं चेव अगरं च दुपे स्मृतम् ॥ सिद्धकं गुरवे दयाच्छुके विस्थागुत स्मृतम् ॥ गुरगुलं मन्दवारे तु लाक्षा राष्ट्रीक केतवे॥

कुन्दुरुकं सहकीनिर्यासः । सर्वः शालः । सिद्धंः इति मध्यदेशे प्रसिद्धम् । प्रित्वागुरु विस्वफलनिर्याससहितमगुरु । । मन्द्यारे शनै-धराय । लाह्या राहवे केतुभ्यम्म ।

गन्धे विशेषमाह—

दिवाकरकुनाम्यों हि दापवेद्रकचन्द्रनम् । चन्द्रे च मार्गवे चैव सितवर्ण प्रदापवेन् ॥ कुटुमेन च संयुक्तं चन्दनं जीवसीन्ययोः । अगुढं चापि परस्यो राहवे त्वर्कमेषु च ॥ अदुदेवताना तु-

पुरपाणि सितवर्णीनि चन्दनं च विटेपनम् । एतेपां गुम्मुलुभूंषो नैवेदां घृतपायसम् ॥ वासांसि शुक्रानीति संप्रदायः। प्रहयलीनाह—

गुडोदनं रवेर्दवास्तोमाय वृत्तपायसम् ।

- मङ्कारफाय संयावं शुवाय श्रीरपष्टिके ॥
दण्योदनं शु जीवाय शुक्राय च मृतीदनम् ।
स्पोदाराय फ़सरमाजं मांसं च राहवे ॥
विजीदनं च केत्रध्यः सर्वेमक्ष्रैरापार्यमृत

कत्र सर्वभक्षेरपार्चयेत् इत्यन्यविष मोवकावि वेयम् इति वामोवर-ठमकुरः। सँयायो गोधूभनूर्णसाधिको घाटास्य इत्यिप स एव। तण्ड-रुमसराममिति रूपनारायणः। इत्यरं तिरुतण्डलं द्वन्यसाधितम्।

चित्रीवनम्--- •

तिलतण्डलिमश्रं स्यादमाक्षीरं तु शोणितम् । फर्णनासागृहीतं स्यादेतिशिज्ञौदनं स्मृतम् । इति दामीदरः ॥

कणनासागृहात स्यादतासत्रादन स्पृतम् । इति दामादरः ॥ याज्ञवल्ल्यः—

शक्तितो वा यथाळानं सत्कृत्य विधिपूर्वकम्। यूजयन्ती महानेताँह्यमन्ते सक्छं फछम्॥

रूपप्ता महानवालम्य चक्क कर्ना
्यज्ञ प्रश्नीयमहोदयादी वर्णकरगुणीकाञ्चाहत्वाऽऽत्राहयेतु तानिविवयनात् म्र्रे भूरादित्यमावाह्यामि म्र्रे युवः व्यादित्यमावाह्यामि
म्राद्यमावाह्यामि म्राद्यमावाह्यामि म्राद्यमावाह्यामि इति
व्यस्तसमस्वन्याहृतिभरावाह्यामि म्राद्यमावाह्यामि क्षाद्यपगोप्त
कार्यसमस्वन्याहृतिभरावाह्य, भगवत्वादित्य नक्षत्राभिपते कार्यपगोप्त
कार्यसम्पर्यागुर्वेदस्य ज्याद्यपोपमाङ्गशुर्व द्विभुज्ञ पद्याभवहस्य सिन्द्यवर्ण
गात्याम्यरागुर्वेदस्य व्यवस्यामिष्ट्यस्यविवस्याङ्गासस्य भारवत्तेनीनिषे
विक्रोक्यावाद्या हिदेववामयमूर्वं नसस्य सम्ब्राह्यप्यावाद्याचेद्याम्
तेन सप्ताद्यीरपाहनेन मेर्क प्रदक्षिणीक्ष्येत्रामच्छाऽप्रिक्ताभ्यां सहेस्वादिविद्याणीस्यि मुक्तान्यदान् व्यवाह्येदिति वन्मूर्वं विद्युदय कार्यम् ।

वामनप्रन्थे-

साचार्यप्रमृतिस्यव्य महाचैनफळं ततः । सिमदाज्यचरूणां च तिल्हीमफळं ततः ॥ प्रक्षात्ये ग्रुम्भपूष्मायां चार्चनस्य फळं च यस् । लोफपालगणेदााचास्तत्र या अहुदेवताः ॥ तासां जपफडे वद्धर्युद्धीयाज्ञखर्युंकम् । ततस्तेभ्यो यद्यादाकि दावल्या दक्षिणा वर्तः । इति ।। इति महपूनाविषिः ।

अय पुण्याह्वाचनम् ।

त्रिकाण्डमण्डनः—

गर्भाधानादिसंस्कारेष्टिष्टापूर्वेक्तुष्वपि । दृद्धिश्राद्धं पुरा कार्ये कर्मादौ स्वस्तिवाचनम् ॥

व्यास:---

90

संपूज्य गम्यपुष्पाधैर्याक्षणान्सास्त याचयेत् । धर्मकर्मणि मङ्गल्ये सङ्घामेऽद्भुतदर्शने । इति ॥ गृक्षपरिशिष्टे—

हबहितवाचनमृद्धिपूर्वेषु सत्कर्मणञ्चान्तयोः क्रुयोत् । सारवलायनः—

दैविके तान्त्रिके चादी ततः पुण्याह इप्यते । इति ।।

चच रुपनारायणीय इत्यम् । श्रीनिषकान्त्राद्यणान्भोगियत्वी दृशुराजुयदेव्य वासादिक्षिः परितोष्य पुण्याद्दं भवन्तो हृष्टन्तु इति हाद्वरणान्त्रमानाः शाद्युराक्षिः स्थायेन् । वत्ते श्राद्यणाः ॐ पुण्यादः
मिति त्रित्रेषुः ।ततः 'दर्शति भवन्तो हृष्टिवित दृति हित्रस्यायेन् ।
ॐ खातीति त्रित्रेषुः । ततः 'माद्यि भवन्तो हृषन्तु ' इति त्रिः
आवयेन् । 'मद्यात्राम् ' इति त्रिः भवन्तो हृषन्तु ' इति त्रिः
आवयेन् । 'मद्यात्राम् ' इति त्रिः भवित्यनाम् । तत्तः 'माद्यणानोत्रन परित्रिष्य पुण्यादं स्थिति स्थितित्वार्ष्यः ।
स्थिता प्राप्यित्या इत्यादिना योभायनेतीयम् ।

ин.—

पुण्याहवाचनं देवे श्राह्मणस्य विधीयते । एतदेव निरोक्कारं सुर्यात्स्त्रियवेदययो: । इति ।।

यह्पमृष्यपिरिष्टे तु ' ब्रबनिहनजानुषण्डळः फमळसुद्धळसदशम-चाँछ हिरस्याभाय दक्षिणेन पाणिना स्वर्णपूर्णच्च्यं भारतिबता, तीर्घा नागा नयो निरस्काणि विष्णुप्रसन्ति च तेनाऽऽशुभमाणेन पुण्याह् दीर्पमायुरस्तु । क्षित्रा बापः सन्तु । सौमनस्यमसु । ब्यक्षं चारिष्टं पासु । गन्धाः पान्तु । सुमङ्गस्यं चास्तु । पुष्पाणि पान्तु । सुन्धियमस्तु । अक्षताः पान्तु । शायुष्यगस्तु । साम्बूळानि पान्तु । ऐश्वर्यगस्तु । दक्षिणाः पान्तु । आरोग्यमख् । दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिखुष्टिः श्रीर्थशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चारत् । यंकृत्वा सर्ववेदयह्मियाकरणकर्मारम्भाः गुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोद्धारमादि कुला ऋग्यजुःसामाशीव-चनं पहापिमतं समनुदातं भवज्ञिरनुद्यातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिप्ये । बाच्यताम । ॐ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य, सविता पश्चातात, नवी नवी भवति जायमानः, उवा दिवि दक्षिणावन्ती अस्यः इत्येता ऋचः पुण्याहे सुयात् । व्रतनियमतगःस्वाच्यायकतुदमदानविशिष्ठानां सर्वेशं बाह्मणानां मनः समानीयताम् । समाहितमनसः स्मः । प्रसीदन्तु भवन्तः । प्रसन्ताः स्मः । शान्तिरस्तु । पुष्टिरस्तु । तुष्टिरस्तु । श्ववि-रस्तु । अविध्तमस्तु । आरोग्यमस्तु । आयुष्यमस्तु । शिर्व फर्माऽस्तु । कर्मसमृद्धिरस्तु । धर्मसमृद्धिरस्तु । पुत्रसमृद्धिरस्तु । धनभान्यसमृद्धिः रस्तु । इष्टसमृद्धिरस्तु । अरिष्टनिरसनमन्तु । यस्पापं तस्प्रतिहत्तमस्तु । यच्छ्रेयस्तदस्तु । उत्तरे कर्मण्यविद्यमस्तु । उत्तरोत्तरमहरहरमिवृद्धि-रहतु । इतरीचराः क्रियाः क्रुमाः शोभनाः प्रवर्तनताम् । तिथिकरण-मुहुर्तनश्चत्रसंपदरतु । तिथिकरणमुहुर्तनश्चत्रमहरूत्राधिदेवताः प्रीयन्ताम् । तिधिकरणे सहरानञ्जे समहे सदैवते त्रीयेताम् । दुर्गापाञ्चास्यी भीयेताम् । अभिपुरीमा विश्वे देवाः श्रीयन्ताम् । इन्द्रपुरीमा मरुहणाः भीयन्ताम् । वसिष्ठपुरीमा ऋषिमणाः श्रीयन्ताम् । मादेश्वरीपुरीमा ष्ठमामातरः प्रीयन्तःम् । अहम्धतीपुरीगा एकपत्त्यः प्रीयन्ताम् । विष्णुपरीताः सर्वे देवाः मीयन्ताम् । ब्रह्मपुरीयाः सर्वे वेदाः मीयन्ताम् । विण्युद्रोगाः सर्वे देवाः शीयन्वाम् । माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः श्री-यन्ताम् । बसिष्ठपुरीमा ऋषिमणाः श्रीयन्ताम् । अरुवशीपुरीमा एकप-रन्यः श्रीयन्ताम् । ऋषयच्छन्दांस्याचार्या चेदा देवा बङ्गाश्च श्रीयन्ताम्। यदा च ब्राह्मणास्त्र प्रीयन्ताम् । स्त्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् । भगवती ऋदिकरी प्रीयताम् । भगवती वृद्धिकरी भीयताम् । भगवती पुष्टिकरी भीयताम् । भगवती हुष्टिकरी श्रीयक्षाम् । भगवन्तौ विश्लविनायकौ श्रीयेवाम् । भगवान्स्वामी महासे-

संपूज्य मधुपकेण कतिकाः कर्म कारयेत । - सपूज कारपेत्कमें किरिवेपरेव युज्यते ॥ इति बचनात् । तती बदाबप्नन् इति मन्त्रेण,

42

संपा-

चेत बद्धी बली राजा दानवेन्द्री महावलः । "

तेत त्वामित्रभामि रहे मा चळ मा चळ । इति ॥ सनेत च पीतस्वं यज्ञमानवत्पत्नीगुर्शत्मग्द्वारपाळानां इस्ते रक्षार्थ कारत च नावव्य जनावनवाकासुद्धात्मपूर्वात्मावाना इसा रक्षाय वहान्ति मध्ये देशे । ततो योर्चादिगोटश ब्राह्यादिसा च मातृः श्रीव छ्ड्मोर्चृतिमेंवा स्ताहा प्रश्ना संस्वतीति वसीद्धीरादेवताव्य संपूरा स्विश्हमिक्डं वा युद्धिश्रादं कुर्वात् ।

स्त्र रूपनारायणीये विशेषः--अमीकरणमध्ये चाऽऽवाह्नं चावनेजनम् । विण्डाक्षे प्रदुवीत विण्डहीने निवर्वते ॥

विण्डनिर्वापरहितं यत्र व्यादं विशीयते । रबचाबाचनलोपोऽरित विकिरस्तु न छिप्यते ॥, कक्षय्यं दक्षिणा स्वस्ति सीमनस्यं यथास्थिति । इति ॥ तक संक्षिप्य प्रयोगः---

सरववसुसंहका विदेरे देवाः। अभूभूवःस्वः इदं वः पाद्यम्। एवं सर्वत पाधम् । मातृपितामहीप्रपितामद्याः नान्दीमुख्यः, अत्मुर्मूवः स्वः इदं वः पाद्यम् । पितृपितामहमपितामहाः नाम्दीमुखाः भूभुँतः स्वः इदं वः पाराम् । मातामहत्रमातामहबुळप्रमातामहाः नाम्बीमुखाः सपन्नीकाः भूर्मुवः स्वः इदं वः पाद्यम्। माचमनम्। सत्यवसुसंग्रमानी विश्वेणां देवानां भूर्भितः स्वः इदमासनम् । मुरासनम् । नान्दीधादे क्षणौ नीवेताम् । ०० क्या।प्राप्तुता सवन्नौ।प्राप्नवावः। सातृ पितासहीप्रपितासहीनां नान्दीसुः सीना भूभुँनः स्वः इदमासनम् । सुसासनम्। नान्दी श्रादे क्षणी वियेदाम्। क्र तथा । प्राप्तुनां भवन्ती । प्राप्तावः । वितृषितामहप्रिपतामहाना नार्द्धियानी मुसुनः स्वः इर्मासनम्। सुखासनम्। नान्दीयाद्धे क्षणी

क्रियेवाम्। ॐ वया। प्राष्ट्रवा भत्रन्वी । प्राप्तवावः । मातामहप्रमातामहृतः द्वप्रमातामहाना सक्तीकानो नान्दीगुरामा मुर्भत्रः स्त्रः इद्रमासन्त् । सुनासनम् । नान्दी आहे धणी जियेताम् । ॐ तथा। प्राप्ततां भवन्ती। पाप्तज्ञनः । वतो गन्धादिदानम् । सत्यबसुसंबदेग्यो विश्वभयो देवेभ्ये इदं गन्यादार्चनं स्वाहा ,संपद्यतां वृद्धिः । मातृपितामहीप्रपितामहीस्यो नान्दीमुसीभ्य इर् गन्धावार्चनं खाहा संपद्मवां वृद्धिः । पितृपितानहम-पितामहेभ्यो नान्दीगुरोभ्य इदं गन्धाधर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः। मातामहप्रमातामहबुद्धप्रमातामहेश्यो नान्दीमुखेस्यः पत्रीसहितेस्य इरे गन्धाद्यचेनं स्वाहा संपद्मतां, षृद्धिः। ततः परिवेषणं कृत्वा गावत्र्या प्रोक्ष्य, 'पृथिवी ते पात्रम्' इति पात्रमाङभ्य, सत्वनसुमद्भिक्र्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो युगमधाहाणभो अनपर्याप्तमञ्जनमृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः । मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीम्यो युग्नत्राह्मणमोः जनपर्यातमञ्जनमृतल्पेण स्वाहा संपदावां वृद्धिः । पितृपितामहप्रपिताम-हे भ्यो नान्दी मुरोभ्यो युग्मवासणमी जनपर्याप्रमन्नममृतकृषेन स्वाहा संप-यतां वृद्धिः । मातामहत्रमातामहबुद्धप्रमातामहेम्यौ नान्दीमुखेम्यः सप-बीकेभ्यो यामश्रास्याभोजनपर्यातमत्रममृतक्षेण साहा संप्रातां वृद्धिः । 'स्वरित न इन्द्री बुद्धश्रवाः' इति पाठः। अनेन नान्दीश्रद्धिन क्योंहुदेव-नाः भीयन्तां वृद्धिः। पुरुषमुकादिनपः। नान्दीयादं सुनंपनप्। सुगोलिः समस्त । शिवा बापः सन्तु । सीमनस्वमसु । अन्नर्व चारिष्टं चानु । नान्दी-मख्यो मातरः पितामद्यः प्रपितामद्यः प्रीयन्ताम् । सान्दीयायाः पितरः

पेरे सुस्वाय, तत्वताद्वय वामवाही बल्लाटार्य । तद्याद्वये वामगाहावेब सोमाय । तद्याद्वये वामगाहावेब सोमाय । तद्याद्वये वामगाहावेब सोमाय । तद्याद्वये वामगाहावेब सिमाय । तद्याद्वये वामगाहावेब सिमाय । तद्याद्वये वामगाहावेब विद्वये । तद्यादे वासवोप्यते इति वासवोप्यतियः, वतो परङ्क्षद्वहिरीसामादिषु पर्ववये, विदार्थ, प्वनाये, पापाक्षये । तदा पूर्वादेषु करूनदाय, व्यर्थये, जुन्मकाम, विदिष्टापर एवादिषु करूनदाय, व्यर्थये, जुन्मकाम, विदिष्टापर एवादिषु कर्माद्वाय स्वर्थ । तदा व्याप्त प्रवाय प्रवाय । तदा वस्ताविद्वया प्रवाय । वसा विद्वया मावद्वय सदा । तदा वसाविद्वयाना माव यते सिरो मनेत, इति प्राय्वया । तदा वसाविद्वयाना माव यते सिरो मनेत, इति प्राय्वय । तत्व वदुन्यतादियाभिचिलाव्ये स्वर्वान्यत्व । विद्वाया स्वर्वाय वद्यापाय स्वर्वाय व्यवस्वय व्यवस्य व्यवस्वय व्यवस्वय व्यवस्वय व्यवस्वय व्यवस्वय व्यवस्वय व्यवस्वय व्यवस्य व्यवस्वय व्यवस्य व्यवस्वय व्यवस्य व्यवस्वय व्यवस्य व्यवस

इति वास्तुपूजा

मात्स्ये—

च्योपिनास्ततः सर्वे ऋरवैवमधिवासनम् । इति ॥

पारी—

हपनासी भवेदेवमहाको नक्तिप्रत्यते । सत्योऽिषवासनं बाऽप

हपारी विश्वको नरः । इति । अधिवासनं वैवस् । शुह्रवेरः सपरनीकः

सन्दिनको यज्ञमानः पूर्णकरुर्स गृहीन्ता, अदे कर्मीमः इत्यादि
मन्त्रपोपेण मण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविद्य देशका
हादि सहस्य मण्यप्रित संसूख मण्डपान्तः सर्वेतः सर्पणन् विकित्तः।

पद्य मन्त्राः—

यद्त्र संस्थितं भूतः स्थानभाश्रित्य सर्वदाः । स्थानं त्यक्त्या तु तस्तवं यत्रस्यं तत्र सप्तप्तुः । अपकामन्तुः भूतानि पिदात्याः सर्वतो दिशस् । सर्वेद्यामविदोधिन महाकर्षः समरस्ये । इति ॥" ततः कुरोः पश्चमञ्चेन सर्वत्र आपोहिष्ठा इति तृचेन प्रोक्षयेत्। सतः स्वस्ति न इति मन्त्रं पठेत्॥ •

अय द्वारपूजा।

पूर्वद्वारे द्वारियये नमः कर्ष्य देहस्यै० अधः । वामदक्षिणस्वरमयो-गणेशाय० रक्षन्दाय नमः । द्वारिश्यत्कछञ्जद्वये गङ्काये० यमुनाये० । दक्षिगद्धारे द्वारिश्यये० कर्ष्य देहस्यै० आधः । स्वरूपमे। पुण्यस्त्वार । क्ष्मित्व । करहाद्वये गोदाये० कृष्णाये० । विक्षिते व्यर् र्ष्या । देहस्यै० आधः । स्वरूपयोः निस्त्वे० चण्डाय० । करुशद्वये रेवायै० साये०। उत्तरे द्वारिश्यये० कर्ष्यम् । देहस्यै० अधः । स्वरूपयोः महाकाळाय० मृद्धिणे नमः । करुशद्वये वाण्ये० वेण्ये० । इति द्वारपूका ॥

ततः पूर्वे वहिंहस्तमाने वटतोरणमाश्वर्यं वा सुदृढनामकं सुशोधन-नामकं वा शहाहितं लिमिनेळे इति मन्त्रेण न्यस्य संपूज्य राह-बृहस्पती तत्र न्यसैत्सम्यूजयेख । तत्रैकः कछशः स्थाप्यः । तत्र मही थीः इति भूमिपार्थना । जीपनयः सम् इति यवप्रक्षेपः । आजिज्ञ कठरोपु इति कछशनिधानम् । इमं में गङ्गे इति जलपूरणम् । राज्यद्वा-राम् इति गन्धं प्रक्षिपेत् । या जीवधी. इति सर्नीवधीः । काण्डारका-ण्डात् इति वृक्षीः । अश्वत्ये वः इति पञ्चपहवान् । स्योना प्रथिवि इति ' सप्त मदः। थाः फिलनीः इति फलम् । स हि रहानि इति रह्मा। हिर्ण्यरूपः इति हिर्ण्यम् । युवा सुवासाः इति वस्तादिना वेष्ट्येत् । पूर्ण दिन इति धान्यपूर्णभत्रमुपरि निद्ध्यात् । तम धुवाबाहनं पूननंत्र धुवायनमः धुवमार । तती दक्षिणे औदुम्बर् धार्स वा सुमद्र विकट् वा धनाहितं तौरणम्, इपे खोर्जे त्या इति निवाय चन्द्रनादिचर्वितं फता मूर्य कहारकं च वत्र न्यसेत् । ततः पूर्व कलकं स्थापित्या सत्र धराभावाद्याचेयेत् । ततः पश्चिमे द्वासमीदुग्रारं वा सुकर्ममु भीमं वा गदाद्वितं घोरणं अम्र कायाहि इति न्यस्य चन्द्रनाहिना चर्चितं कृत्वा शुक्तं वुधं च तत्र न्यतेत्। ततः पूर्वतरहल्हां स्थाप-यित्वा तत्र वास्पत्यावाहनपूजनादि । वत्र वत्तरे नैयप्रोधमाश्वर्ष पालाइं वा सुहोत्रं सुप्रभवपद्माद्भितं तौरणं शंबी देवीरिति निवाय पुजितं फुत्या सीमं फेतुं शनि च वत्र न्यसेत्। ततः कटशं स्थाप-

वित्वा तत्र वित्रेशस्य आवाहेनपुष्रनादि । ततः पुर्वद्वारे द्वारद्वाखाः द्वये कटराद्वयं रध्यक्षतादिशुकं पूर्ववस्थापयेत् । रेरानतं कटशद्वये न्यस्यार्वयेत् । तत्र पूर्विमन् अस्येदिनाद्वरिनतौ द्वारेकं वा मान्तिस् क्तनपार्यत्वेन त्यामहं वृण इति जाये कं वृत्वा-ऋग्वेदः पद्मपत्रास्त्रो गायत्रः सोमरेवतः । अभिगोप्रस्तु विवेन्द्र शान्तिपाठं मरो हुरु । इति युत्वाऽप्रि-सीव इत्यादिना पृत्रयेष, । ततः-एग्नेहि मर्गाडमस्तिद्धसाध्यर्भिष्टुतो यञ्चधराऽमरेश । संबीज्यमानोऽप्सरमां यणेन रक्षाऽध्यरं नो भगवः न्नमस्ते । यो इन्द्र, इहाऽऽगच्छेह विष्न इवीन्द्रं साङ्गं सपरिवारं सायुर्व सम्रक्तिक द्वारकट्से जानाहा, भातार्मिन्द्रभिति पूम्कित्या, जाह्यः शिशान इति मन्त्रेण पीतां प्यानां पीतं प्यानं च समुच्छूयेन्। वतः, पेरायतस्यं पीतवर्णं सहन्त्राशं किरीटिनं । दक्षिणवामहन्तस्यवस्रीत्पः लिमन्द्रं न्यारमा, इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो विज्ञहम्तो महायलः । यतयज्ञा-थिपो देवसाम नित्यं नमो नमः । इति नत्रा, इन्द्राय साङ्गाय सपिन-बाराय सायुवाय सशक्तिकायेर्व भाषभक्तविंह समर्पयामि, इति बहिंह द्यात् । वतः आयुन्याऽऽभेवकोणे गत्या पूर्वेवरकञ्च्यं, स्वापित्याः वत्र पुण्डरीकममृतं च संपूर्व-एयोहि सर्वाऽनसङ्क्यवाहः सुनित्ववैदिभिः वोऽभिजुष्ट । तेशोवता छोष्टगणेन सार्द्धं समाप्त्ररं पाहि करे नमस्ते । भो क्रमे इहागच्छेद तिछ इति साद्गादिकमींग्रे कल्सी आवाहा, स्वं मी क्रमे इत्यमि संपूर्य, अमि दृतिभिति रक्तां पताकां रक्षं व्वक्तं चीच्छूयेत् । तत', छागस्यं रक्तं दक्षिणवामक्रस्थ्तशक्तिकमण्डलुं यहीपनीतिनमप्ति व्यास्वा-आमेयः पुरुषो बक्तः सर्वदेवमयोऽन्ययः। धूमनेनुरमोऽन्यक्षस्तसै निर्द्ध नमो नमः। इति नत्ना, अप्रये साङ्काय इत्यादि एतं मापभक्तनिर्ध समपेयामि, इति बाँछ दद्यात्। ततः क्रुताचमनी दक्षिणे गत्त्रा प्रति-द्वारज्ञासं पूर्ववत्कळ्याद्वयं स्थापित्वा वामनं द्विगार्भं तहार्चयेत् । द्वारशास्त्र पूजनपुरु वा दक्षिणहारे ज्ञान्तिस्क तरत्वेन त्या कृषे इत्युवस्वा—कातरास्रो यजुनेदस्त्रियो निष्णुदैवत: । फाइयपेयस्तु विप्रेन्द्र फतिक् रहं में मखे भव। इति प्रत्येकं संप्राप्य, इरे खोलें त्वा इति पूजरेत् । ततः - एग्रेहि वैवस्तत धर्मराज सर्वाडमस्रिचित्रजममृति । शुभाग्रुमानन्द्शुचामधीश शिकाय नः पाहि सतः नमस्ते । भी अमेहास-च्छेद तिष्ठ इति साङ्गादि यममानाहा, यमाय सोममिति संपूच्य कृत्यां

पताकां फुटणं ध्वजं चायं गौरित्युच्छ्येत्। वतो महिपारूढं घृतदण्ड-पाशदक्षिणवामकरमञ्जनपर्वततुल्यस्पमित्रिसमञीचनं यमं ध्यात्वा, महामहिपगारुढं दण्डहस्तं महाबलम् । आवाहयामि यहोऽरिमन् पूर्वेयं प्रतिगृहाताम् । इति नत्वा, साङ्घाय यमायैतं मापभक्तवार्छ समर्पयामि, इति यस्ति दद्यात् । तत भाचम्य , नैर्ऋत्यां पूर्ववत्रुख्यां स्थापयित्वा असुद्गतं दुर्जेयं च संप्रय-पहोहि रक्षोगणनायफस्वं विशास्त्रे-वालिक्शाचसहै:। समान्त्ररे पाहि विशाचनाय लोकेश्वरस्वं भगवन्न-मस्तै । भो निर्फते इहायच्छेह विछ इति साङ्गमावाहा, असुम्बन्त-मिति संपूर्य नीलां पताकां नीलं ध्वतं च, मोपुणः इत्युरिस्ट्रस्य, नरा-रुडं राहगहरतं नीलवर्ण महावलं महाकायं बहुराश्चसयुतं निर्कति ध्यात्वा-निर्मति , यहगहरतं च सर्वछोकैकपायनम् । आवाह्यामि यशेऽरिमन्यूजीयं प्रतिगृद्धताम् । इति नत्वा, साङ्काय निर्मत्तेये एतं मापभक्तवाले समर्पयामीति विलि द्वात्। तव वाचम्य पश्चिमे गला प्रतिद्वारशासं कलशहूयं निधायाश्वनिद्गाजं न्यस्यार्थयेत्। ततः साम-गाष्ट्रिक्जी महिक्जं वा कृत्वा, पश्चिमद्वारं शान्तिसूक्तजपार्थत्वेन त्वां ष्ट्रण इत्यन्त्या-सामेधेदश्त विद्वाक्षी जागतः शबदैवतः। भारहा-ज्ञाल विवेन्द्र शान्तिपाठ मरो कुर्विति प्रार्थियत्वा, अप्रमायाहि इति प्रार्थिवत:-पश्चेहि यादीगणवारिशीनां गणेन पर्भन्यसहाप्सरीभिः। निधाभरेन्द्राऽमरतीयमान पाहि स्त्रमरमान् भगवन्नमस्ते । इत्युक्त्वा भी बरुण इहागच्छेह तिष्ठ इति साङ्गं वरुणमाधारा, तत्वा यामि इति संपूच्य दनेतां पदाका ध्यजं च इमं मे वरुण इत्युच्हिन्त्य, मरुतस्यं पादादस्त किरीटिन द्रोसवर्ण वहणं ध्यात्वा-पादाहस्तं च वहणं यादसा पविमीश्चरम् । भावाह्यामि यद्गेऽस्मिन् वरुणाय नमी नमः इति नत्या साङ्गाय वरुणायैवं भाषभचत्राले समर्पयामीति धार्ले देधात् । तत उपरष्ट्रस्य बायक्यां गत्वा पूर्वपत्नछशं स्थापथित्वा पुष्पदन्तं सिदार्थ च वत्र पृत्तवित्वा-एहोहि यहे यम रक्षणाय सृगाधिरुदः सह सिद्धसद्धैः । प्राणाधिपः कारुकवेः सहाय गृहाण पूर्ता भगवत्रमस्ते । भो षायो इहाऽप्राच्छेह विष्ठ इति साङ्गादि वायुमानाहा, तत वायपृतस्यत इति संपूर्य, वायोः शतं इति धूम्रा पताका ध्वमं चौच्छित्स्य, मृगा-रूरं चित्राम्यरधरं युवानं धरध्यभवरं दक्षिणनामहस्तं वायुं ध्यास्ता.

मायुपाकाशमं भैवः पवनं वेगवद्गीतम् । बाबाह्यामि यहोऽस्मिन्गूजेयं प्रतिगृह्यताम् । अनाकारो महीजाव्य यह्याह्यगतिर्दिवि ।

त्रमे पृत्याय जगती वायवेऽह नमामि ते ॥

इति नत्वा साङ्काय वायने एतं मायमकार्थाठं समर्पयामि, इति बर्लि इयात् । तत जाचन्योत्तरे गत्ना प्रतिज्ञालं कछत्तृयं स्थापित्वा सार्वभीत दिगानं न्यस्य पृत्रयित्वा अववैविदौ ऋत्विनी ऋत्विनं मा बृत्या बत्तरद्वारे सान्तिस्कर्मपर्यत्वे नाह त्वा वृणे इति उत्तरमा,

वृहभित्रोऽप्रवेनेदोऽसुपुभी रहदैवत । वैदारपायम वियेन्द्र शान्तिपाठं अक्षे कुर्य ॥ इसुक्त्वा प्राप्ये, शक्षो देवीरिति वृक्षयेत् ।

एहोहि यहेश्वर यहारक्षा विषरस्व नक्षत्रगणेन सार्द्धम् । सर्वेषिकीक्षिः पितृक्षिः सहैव

गृहाण पूना अगवजनस्ते ॥ भो: सीन इहानच्छेट विदेवि साङ्गार्दि सीममावाग्र, वर्ष सीम इति सप्य हरिवा पताका वर्षा चारपायस्त्रीति नयस, नरतुतपुण्यक-विमानस्य कुण्डळकेपुरहारकोभित वरदगदाभरत् सिणवामहस्तं ग्रुडटिनं महोदर स्पूळकार्य हर्ष्य पिक्नलेनं पीतविषदं शिवसर्त विमानस्थं

> तर्वनक्षत्रमध्ये तु सोमो राजा व्यवस्थितः। तस्मै सोमाय देवाय नशुक्रपतये नमः॥

क्षपेर ध्यात्वा ।

१ति नत्या साष्ट्राय सोमायैतं मापभववर्षि समर्पयामीति बर्षि द्यान् । सत् ईराम्यां गत्वाऽऽयम्य पूर्ववय्कटस सस्पाप्य सुत्रतीयना-मानं दिग्पत्रं मद्वर्षं च तत्र पुत्रविखा,

षद्मेदि विश्वेषर मक्षिश्लः कपालसङ्गङ्कष्टेण सार्द्धम् । खोषेन यक्षेषर यक्षसिद्धये - गृहाण पूमा मगवनमस्ते ।।

भी ईशानेहागच्छेह विद्वैति तमाबाहा, तमीशानमिति संपूज्य, श्वेतां संबंबणी वा पताका ध्वजं घ, धामिन्त्वा देव सवित. इत्युच्छित्स, वृपारुढं वरदित्रशुख्युवदक्षिणवामहस्तद्वय तिनेत्रं शुद्धरफटिक्चणमी-शास ध्याखा ।

मृपस्कन्थसमारूढं शुलहरतं विलोचनम् । जाबाह्यामि यहाऽस्मिन् पुजेर्य प्रविगृह्यवाम् ॥ 🦟 सर्वाधियो महादेव ईशानः शुक्त ईश्वर, ।

शुल्पाणिविंरपाश्रसासी नित्यं नमी नमः ॥

इति नत्या साझायेशानायेतं मापभक्तवाँले समर्पयामीति वल्लि व्यात् । तत बाचम्येशानपूर्वयोर्मध्ये गर्त्वा । 12

ब्ह्रांहि पातालधरामरेन्द्र नागाङ्गनाकिवरगीयमान ।

यक्षीरगेन्द्रामरलोकसहै-र्वनन्त रक्षाध्वरमस्मदीयम् ॥

भी अनन्त इहाऽज्यच्छेह तिष्ठेति साङ्गमनन्त्रमावाद्य, ' आर्थ गी 'इति संपूर्व, मेथवणी श्वेता पताका ध्वजं च 'बायं गी.'इत्युक्ट्रिक्य, भतन्तं ग्रमनासीनं फणसप्रकमण्डिसम् ।

पद्मशास्त्रभरोध्योषोदक्षिणकरहर्यं चनगदाधरोर्व्याधीवामकरहृयं नीछः वर्णमनन्त ध्यास्त्राः

मोऽसादनन्तरूपेण ब्रह्माण्ड सचरापरम् । पुणपद्धारयेनमूर्जि तसी नित्य नमी नम ॥

इति नत्त्रा साङ्कायाऽनन्तायैत मापमक्त्रारित समर्पयामीति पर्छि दशात् । तत काचन्य नैर्मरतपश्चिमयोर्मच्ये गत्वा,

पहाहि सर्वाधिपते सुरेन्द्र छोफेन सार्ख वितृदेवताभि ।

सर्वस्य घातास्यमितप्रभावो

विशाध्यरं नः सत्ततं शिवाय ॥ 🗻

भी श्रद्धतिहाराच्छेद विद्येति नशाणमावाहा, 'नशानशानम्' इति सपुभ्य, रक्षा पताका ध्यम च, ' ब्रह्मप्रधानम्' इत्युच्डिइत्य चतुर्मुखं इंसांस्टमक्षमारायुरायुष्टिघरोम्बोबोद्दिणकरदूवं सुवकमण्डसुघरोप्बो-घोवामकरदूवं रममुखे अटिलं न्छम्बोद्दं रक्तवर्णं श्रद्धाणं प्यात्या,

वेदायोनिश्चतुर्मृतिवेदावासः पितामहः। ग्रहाष्यक्षश्चतुर्वभारतस्मै नित्यं समी नमः॥

.

इति नता साङ्घाय त्रवाणे एतं सायमक्त्रार्थं समर्पयामीति तरिं द्वात । 'नैर्मत्यपित्रमान्वराखे जनन्वविष्ट्यानम्, इँद्रानपूर्वान्वराखे त्रद्धायिद्धानं च' इति रूपनारायणः। - वत सायस्य मण्डपमस्येऽत्युव-वण्डो दशहस्वदीपेविद्धस्विसम्वतः पण्डहत्तरीपोहस्विष्णारो वा महा-वन्नाः क्रिड्डिण्यादियुक्तः इन्द्रस्य कृष्ण इति स्थाप्यः। तत्रैव त्रव्यपृत्तत व । वते मण्डपपोड्यस्वपेत्र सर्वेश्यो देवस्यो नमः, वंशेषु कित्रो-स्यो नम, पृष्ट पत्रमेस्यो नम इत्यपेयेन् । वतः पूर्वेमारो चपित्रस्भू-मानुपविदयः

त्रै छोक्ये याति स्वाति स्वावराणि चराणि च।
त्रद्धविष्णुशिकः सार्वे रक्षा हुर्वन्तु वाति ये ॥
देवदानवगन्थवा चक्षराक्षसवत्रगाः ।
न्यवयो मनवो गावो देवसातर एव च ॥
सर्वे समाऽच्ये रक्षा महुर्वन्तु सुदान्विवाः ।
त्रस्ता विष्णुश्च वहस्य होत्याच्छो नणैः सह ॥
रक्षम्य गण्डपं सर्वे अन्तु रक्षासि सर्वेदाः ।
रक्षम्य गण्डपं सर्वे अन्तु रक्षासि सर्वेदाः ।

द्वार निर्माण कर अन्तु एकारत स्वयः। मुद्देश्यो ममक्रीडो क्यासेइति परित्या जैडोक्यर्यक्ष्य ध्यावरेश्यो भूतेश्यो ममक्रीडोक्यासेश्रम्भवर्यो मृद्देश्यो जमः। ' ब्रह्मणे क्यां दित्यावे दिवायः देवेश्यो क्याः। ' ब्रह्मणे क्यां दित्यावे क्रियेश्यो क्यां स्वर्था क्यां क्यां

सङ्करूप स्थापयेत् । तत्र मध्ये प्रद्वाणं ' ब्रह्मजञ्जानं गौतमी वामदेशो वद्या त्रिष्टुप् । ब्रह्मस्थापने पूजने च विनिक्षोगः' एवमुत्तरत्र । ' ॐत्रह्म-अञ्चानमः तत उदीचीमारभ्य नायबीपर्यन्तं क्रवेरादीन वाय्वन्तानष्टी छोकपासान । तत्र आप्यायस्य गौतमः सोमो गायत्री । व्य आप्या-थरव । सभि स्वाटजीगर्चः अनःशेष ईज्ञानो गायत्री । ॐ अभि स्वा देव सबितः । इन्ह्रं वो मधुक्तवा इन्ह्रो गायती । ॐ इन्ह्रं वो विश्वतः । कप्ति काण्यो मेघातिथिरधिर्मायती । ॐ कप्ति दुर्व पृणीमहे । यमाय सोमं यमो यमोऽनुषुष् । 💞 यमाय सोमम्। मोपुणो घोरः काण्वो तिर्न्तिर्गायत्री । ॐ मोपुणः । तस्त्रा यामि शुनःशेषी वरुणिन-ब्हुप्। ॐ तस्त्रा यामि । वायोः शवं गौतमो वामदेवो वायुरत्रप्दप्। व्यवारीः हातम् । वायुसोममध्येऽष्टी वसून् । जनवा अत्र मैत्रावरुणो विस्ति वसविद्वर्षटेषु । ॐ उमया अत्र । सीमेशानमध्ये एकावृश-रहान । आ रुतास: श्वाबाश्व एकावश रुद्रा जगती । ॐ आरु-द्रासः । ईशानेन्द्रमध्ये द्वादशादित्यान् । त्याञ्च सामदी मसयो द्वाद-शादिश्या गायती । ॐ रयातु अत्रियात् । इन्द्राप्तिमध्ये अधिनी, अधिना राहुगणो गौतमोऽश्विनावुरिणक् । ॐ अश्विनावर्तिः । अग्नि-यममध्ये थिश्वेदेवाम् संपेतृकान् । ॐ मासो मधुक्छन्दा विश्वेदेवा गायंत्री । ॐ मासः । यमनिर्नरतिमध्ये सप्त यक्षान् । अभित्यं नामदेवः सप्तयक्षाः प्रकृतिः । ॐअभित्यं देवं सविसारमोण्योः कविकत्तमधीम सस्यसवर रक्षवामिश्रियं मृति कवित् । ऊर्ध्वा यस्यामृतिर्भा निर्देश-बत्सश्रीमित हिर्ण्यपाणिरिमित्रीत सुकतुः कृपास्यः । निर्मतिवरुण-मृथ्ये भूतगागान् । आर्थ गौः सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री । ॐ आर्थ गीः । वरुणवायमध्ये गन्धर्वाप्तरसः । अप्तरसागितश ऋष्यशृङ्गी गन्धर्वाप्सर्सोऽतुष्टुप् । ॐ अप्सरसां गन्धर्वाणाम् । श्रद्धसोममध्ये स्वन्दनन्दीश्वरराज्ञमहाकालान् । कुमारं कुमारः स्कन्दस्त्रिन्दुप् ।) 👺 कुमारं माता। ऋषमं ऋषमी वैराजी ऋषमीऽनुष्टुष् । 👺 ऋषमंमा। फहुद्रायेति घोरः कण्यः शूलमहाकाला गायत्री । ॐ कहुद्राय० । त्रक्षेशानमध्ये दक्षादीन्सप्तगणान् । अदितिलोक्योनृहस्पतिर्देशोऽनु-प्टुप्। ॐ अदितिर्धात्रनिष्ट। श्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गी विष्णुं च । ताम-प्रिवर्णी सीभरिर्दुर्गा जिब्दुप् । अ तामित्रवर्णाम्० । इदं विष्णुर्मेधाति-

थिविंग्युगाँवश्री। ॐ इदं निग्युः । बद्धानिमध्ये स्त्रधाम् । उदीरतां शद्वस्वशिष्टुप् । ॐ उन्तरताम् ० सूनृताः । शक्वसमध्ये मृत्युरी-गान्। परं मृत्योः सङ्गुमको मृत्युरोगाश्चिष्टुप्। ॐ परं मृत्यो अनु-परेहि । ब्रह्मिन स्तिमध्ये गणपतिम् । गणानां स्वा गृत्सप्रदी गण-पतिजंगती । ॐ गणानां स्वा । ग्रहावरूणमध्ये अपः । शंनीऽम्यरीप सिन्यद्वीप आणे गायत्री। ॐ शत्री देवीः। त्रक्षवायुमध्ये मरुतः। महती यस्य राहुगणी गौतमी महती गायती। ॐ महती यस्य । मदाणः पादमुखे कर्णिकाधः प्रध्वीम् । स्वीना सेधातिथिर्भूनिर्गाँ॰ यक्षी । ॐ स्योना पृथिवि । तत्रैव गहुरिदनश: । इमं मे सिन्धुविध्मै-यमेथी गङ्गायमुनासरस्वत्यो जगती । ॐ इमं मे गड्डे यमुने । वसेव सप्त सागरान् । धान्नो चान्नो राजनितो वरुण नो मुख्य । यदापो अञ्चया वरुपेति श्रपापदे ततो धरुण नो मुख्य । मधि धायो मोपभीहिंसीरतो विश्वज्यका मुख्वेतो वरूण तो मुख्य । तदुपरि मेह नामा। वाह्य सोमादिसमीपे क्रमेणाऽज्युधानि । गर्दा त्रिशुर्छ वर्त्र क्षक्ति दण्डं राष्ट्र पाशम् अहुराम् । तद्वाद्ये उत्तरादितः । गीतमं भारताजं विश्वामितं कृत्यवं जमद्भि यसिष्ठम् अतिम् जस्यसीम्। सद्याही पूर्वादि पेन्द्री कीमारी बाह्यी वाराहरे चामुण्डां वैध्यावी माहे-श्वरी विनायकीम् इत्यप्रै शक्तयः । यसाः प्रतिसाच्य प्रत्येकं सह सा पुत्रवेत् । ततल्लास्यामेत्र वेद्या क्खालिखितवश्यमाणमण्डलेषु आदित्याः विदेवताः स्थापयेत्पृत्रयेव । ' अस्मिन्फर्भणि श्रहादिस्थापनं पुत्रसं ख करिल्पे' इति सञ्चल्य, प्रणवस्य बद्धा ऋषिः । परमात्माडिमिर्देवता देवी गायत्री छन्दः। व्याह्तवीनां श्रमेण जमद्विमसद्भाजमृगव तरपदः। मप्तिवायुत्यां देवताः । देवी गायत्री दैव्युत्णिक्रेशीनृहत्यद्यन्दांति मुर्याचाबाहने विनियोगः । केचित्तत्तन्मन्त्रानप्यावाहने औहुः । सत्र प्रह्मीठमध्ये बर्नुले प्राहमुखं सूर्यं रक्तपुष्पाक्षते.। बा ठ्रष्णेन हिरण्यस्तपः सर्विता त्रिप्तुप्। सूर्यावाहनै विनियोगः। ' ॐ आहःकोन रमसा'। · च भूमुव. स्व: / किञ्जदेशोडव कात्रयवसगोत्र सूर्व इहागस्टेड विदेत्यावाच, इह विद्वेति स्थापयेत् । एवं सर्वेत्र सन्त्रास्ते व्याद्वकीः रक्ता, 'इहागच्छेह तिष्ठ'इति स्थापयेत् । वत आग्नेये चतुरस्रे प्रत्यस्मुखं

सोमं श्वेतपुषाक्षतेः। धाष्यायस्व गौतमः सोमो गामनी । सोमा-बाह्० । ^{९४} आप्यायस्व वसुनातीरोक्षत्र धानेग्रसगोत्र सोम० सतो वक्षिण त्रिकोणे दक्षिणासुदं सीम रक्तपुष्णाक्षतेः। अग्निमृद्धी विरुपोडङ्गारको गायबी०। ॐ अग्रिमूर्घा० अवन्तीसमुद्रव भारद्वा-विरुपाइङ्गारमा गायान । २ जाग्रमुखा व्यवन्यस्थ्रत्व सारद्वा-वसमोत्र भीम । तत ईशाले वाणाकारे वुध्युद्द्युदं पीतपुष्पास्तैः । वस्युद्धपण्यं युपः सीम्यो घुषिकापुष् । २ वहुष्पर्थं माग्यदेशोद्धव ब्राज्ञेयसागित्र युप्त । तत वत्तरतो देश्वितुरस्ते वद्दसुद्धं वृहस्पर्वे पीतपुष्पास्त्रौः । यृहस्पते गृतसमदी भृहस्पतिकापुष् । २ वृहस्पते । सिन्धुदेशोज्ञय बाङ्गिरसगोत्र वृहस्पते । ततः पूर्व पत्थकोणे प्राक्ष्मुतं ह्यार्थ । मोजकदेशोज्ञय भाग्यसगोत्र शुक्त । ततः पश्चिमे पद्युपे श्चर्य । मोजकदेशोज्ञय भाग्यसगोत्र शुक्त । ततः पश्चिमे पद्युपे प्रत्यह्मुरं शनि शुरुणपुरपाक्षतैः । शमिप्ररिरिविटः शनिप्तरिणक्रः । के हानिम सीराष्ट्रक काश्यपसारोज हानैकर० । तती नैजेंस्ये हार्यो कारे बिक्षणासुतं राहुं कृष्णपुरवाक्षतेः । कवा नौ वामदेवी राहुयो-यमी राह्यानहरूक । के कथानक्षित्रक राहिनापुरोजय वैदीनसि न्त्रामि राहीः। तथा मायस्य व्यागास्त्रत्य दक्षिणासुरं केर्तु पूप्रपु-व्याक्षतेः। केर्तु मधुच्छन्दाः केत्रवी गायसीः। चेर्नु कुण्यः। अस्त-विदेससुरव नैभिनिसगोग केतोः। सर्वे वा छादित्याभिगुराः।।

अयाऽधिदेवताः ।

अयाऽपिदेशताः ।

वेतपुणाखतैः कमासस्यदिनां दक्षिणतः स्वाप्ताः । ' श्वस्यकं
विश्विष्ठ स्वार्थाः । विनियोगः विन्न शेषः । ॐ श्रम्यक्तः ।

ॐ शुर्मुवः स्वः देशदः 'गौरीमिमत्य विभिन्न त्राप्तः । आप्ताः । द्विष्ठ स्वार्थः ।

सोमन्द्रिये । 'ॐ प्रदान्दः । विज्ञोते । विद्याने विष्णुवः । विद्याने स्वाप्तः । विद्यानः । विद्याने स्वाप्तः । विद्यानः । विद्याने स्वाप्तः । विद्याने

वताः स्थापयेत् । ' अग्नि काण्त्रो मेबातिथिरग्निगायत्री० ? । ' ॐ अग्नि वता स्थापनत्। जात कार्या प्रमाणकार्यात्राच्यात्राच्यात्र्यः । 'ॐ असुमे०'। 'स्योना संभातिथिर्मृमिर्मायत्री'।'ॐ स्थोना प्रशिवि०'। 'इदं विष्णुमेंबातिथिविष्णुमीयती '। ' क् इदं विष्णुः ० '। 'इन्द्रश्रेष्ठाति गुत्समद इन्द्रसिष्टुप्'। 'ॐ इन्द्रश्रेष्ठानि०'। 'इन्द्राणी वृपाकपिरि-प्रतिक्षिद्धः १ ! (ॐ प्रजापती मानु १) ! भारती हिएलयामें प्रक्ता-पतिसिद्ध्यः १ ! (ॐ प्रजापती मानु १) ! भारती हिएलयामें प्रक्ता-पतिसिद्ध्यः १ ! (ॐ प्रजापते ०) ! श्रह्मश्रद्धार्ते गीत्मी वामदेशे गायत्री ० ! ! (ॐ जावं गी: प्रस्ति ० ! ! श्रह्मश्रद्धार्ते गीत्मी वामदेशे गायती० । ' ॰ मार्च तो: एत्रि० । ' म्यामहानं गायता वान्देशे महा विद्युप् । ' ॰ महामहातं । वान्देशे महा विद्युप् । ' ॰ महामहातं । वार्च गुळुप्पायतीर्वानायकः विद्युप् । ' । ' ॰ महामहातं । गायति । वार्च ग्रं गायति । वार्च । ' गायति । वार्च । ' गायति । वार्च । ' गायति । वार्च । महाम प्रवान । वार्च विक्षण जारासम् । पा जारासम् । ।ॐ दपी बदाव १ । किसिनाबिहानच्छतमिह तिप्ततम् १ हिन केतोई-क्षिणेऽभिनौ । 'दसानि विनायकादिस्थानामि' यिन्तामणी ।' विना-यकादीन्यश्व उत्तरत एवेवि संप्रदाय: इति । द्वानिहाहेदता: 'इति इन्द्रमवसुचारत जाम कान्या चमोडनुष्टुप्० १। ६ वर्ग यमाय सोमं ? भीपुणो घोटः काण्यो निक्तिवर्गायत्री० । (के सोपुणः परा० ! । 'त्वंनी अमे बामदेवी बरूणिकाष्ट्रप्०ा 'ॐ त्वं नी अमे०ः । 'तव बायो व्यक्षो बायुर्गायत्री० । क्या तव वायश्रतस्यते० । ्वर वाया व्यवः वाष्ट्राव्यवनः ' सोमो घेतुं गीवमः सोमसिस्ट्वर १ । 'ॐ सोमो घेतुं ०'। 'तसीसार्न गीवम ईसानी समरी० १ । 'ॐ समीसार्न्त १ । 'सहस्रदीर्मा नारा-षणोऽनन्त्वोऽनुष्टुष्० १। ६ ७३ सहस्रशीर्षा० १। ईशानपूर्वयोगेध्येऽनन्तम्।

'ब्रह्मज्ञीनं गौतमो वामदेवो ब्रह्मा ब्रिप्टुप्०'। 'ॐ ब्रह्मज्ञानं०' नैर्करत्यश्चिमयोर्मय्ये ब्रह्माणम् ।

अय वस्वाद्येकादश देवता: ।

'क्मया सत्र भैत्रावरूणो वसिष्ठी वसनस्त्रिष्टुप्०' । ' ॐजमया सत्र०'। इन्द्राग्निमध्ये ध्वाऽध्वरसोमावनिलानलप्रदयुपप्रभासाख्यानष्टी वसून्। ' त्यालु सामदी मत्स्यो द्वादशादित्या गायत्री०'। 'ॐ त्यानुश्चत्रियाँ०' इन्द्रेशासमध्ये धात्रर्यमभिन्नवरुणांशभगेन्द्रविवस्वत्पूष्पर्जन्यस्वपृज्ञवन्याः जबन्धयविद्वाख्यान् द्वादशादित्यान् । 'आरुत्रासः इयावादैव एका-दश रुद्रा जगती० । । भें बारुद्रास:० । अग्नियममध्ये बीरमद्रशस्त्रम-हाज्ञयायुतिगिरिक्षाऽजैकपादहित्रेकचाऽपराजितपिनाकिमवनाभीश्वरवि॰ द्वतिकवाछिस्थभावद्भगाख्यान् एकादश छद्रान् । 'गौरीमिमाय द्वीर्धतमा गोर्खादयो जगकी १। ६ ॐ गौरीमिमाय० । १ गौरीपद्मा-शचीमेबासावित्रीविजया जयादेवसेनास्वधास्वादामाव्लोकमावृध्तिपुष्टि-तुष्ट्यात्मञ्जलदेवताख्याः पोडश मातृः । निर्मत्विवरूणमध्ये मातः । सभैब गणपति, । 'गणानां स्वा गुस्समदो गणपतिर्जगती०'। 'ॐ गणानां स्त्राव'। ' महती यस राहुनको गौतमो महतो नायत्रीव। ⁴ = अ मस्तो यस्य ।। बायुसोमगृष्ये आवह्मवहोद्वहसंवहविबहपरावह्य-रिमहानिछाएयान् सप्त गरुतः । वैद्यामेव यथावकारां महादीन् पश्च स्थापयेत् । ' श्रह्मजञ्चानं गीतमो धामदेवो प्रद्वा त्रिष्टुप्० ' । 'ॐ ब्रह्मज्ञज्ञानं०'। 'इर्द विष्णुर्मेशाविधिरच्युतो गायब्री०'। 'ॐ इर्द विष्णु०' कहुद्राय 'घोर: कण्य ईश्वानी गायत्री० । ॐ 'कहुद्राय० ' 'अग्निरिस विश्वामित्रोऽकैखिष्टपु० ' । ' ॐ अग्निरिस० ' । ' वनस्पते गर्गो वनस्पतिसिष्टुप्० '। 'ॐ वनस्पते शत० ' एवं प्रतिष्ठाप्य पूजरे• रपोडशोपचारै: । पूजा च वचद्रणेर्गन्यपुष्पवासोभिसतत्तन्यन्त्रे: । एवं सूर्यादिद्वात्रिशहरादिकपालान्यम्बादीनेकादश चावाहा संस्थाप्य पष्टभिः पोडशमिर्वोपचारैः संपूजयेत् । तत्र बलाणि महबर्णानि । रविभीमयो रक्तचन्द्रनम् । चन्द्रशुक्रयोः श्वेतचन्द्रनम् । बुधगुवीः खुद्भमयुतम् । दानिराहुकेत्नां कृष्णागुरुम् । पुष्पाणि तद्वणीनि । भूपास्तु, सहकीनिर्वासम् । वृताकववान् रालमगुरूम्। सिट्कम्।

वित्वयुवासुरम् । सुरमुद्धम् । द्यासाम् । कामान् गायन्या दरसा, 'च्हीत्यस्य अति सर्वेषयो द्रीपान् दरसा सुद्धौदनम्, वायसम्, नीवारीदनं, श्लीरमुद्धशिदनं, दृष्योदनं, पृवोदनम्, विद्यमापद्धः समोदनम्, मासोदनम्, जिद्यमापद्धः समोदनम्, मासोदनम्, जिद्योदनं च कमासितेद्दयेन् । स्थिदेवनं वादिय्यात् वासो वाय्युष्पणि द्रवेशानि सुरमुद्धुष्यः नैवेषं वासादि ययाद्यासम् । सूर्योदिद्धानिहातातामन्येयां च सर्वेषां पूजापदाधाद्वासान्येकेवा वित्ते महवेदीदान्यां कद्यां संस्थाप्य वत्र वहणमावाद्य संपूर्यान्तिमान्येवनः। नवयाः—

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे बद्रः समाधितः । मछे तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्पृताः II कुक्षी तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा । भरवेदोऽथ यजुनेदः सामनेदो हाथर्वणः ॥ अदेख सहिताः सर्वे करुशे तु समाधिताः । अत्र गायत्रो साविती शान्तिः प्रष्टिकरी तथा ॥ षायान्त् यज्ञमानस्य दृश्तिश्चयकारकाः । देवदानवसंवादे मध्यमाने महोदधी ॥ चरपन्नोऽसि तदा पुरुभ विधृतो विष्णुना खरम्। रवत्तीये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे स्वयि स्थिताः ॥ स्विय तिष्ठन्ति भूतानि स्विय प्राणाः प्रतिष्ठिताः । शिवः स्वयं स्वमेशासि विष्णुस्त्वं च प्रशापतिः ॥ मादित्या बसवी रुद्रा विश्वे देवाः सपैनुकाः । स्ववि विद्वन्ति सर्वेऽपि यतः कामपळप्रदाः ॥ स्तरप्रसादादिमं यद्यं कर्तुमीहे जलौज्ञव । साजित्यं एक मे देव प्रसन्तो भन सर्वदा । इति ॥

ततः राज्युष्पमाछाशोभिवं विवानं वृष्ट्सविदेवत्यं सूर्योदिश्य इदं न ममेति वत्युग्य महवेगुपरि वद्मीयात्। तव पको होता परी महे-ति पृदेशुष्टं ह्वाँ महिवाणी दिश्वणदिशुष्टेषु यवासाखं होमास्माछनं कर्म सुरुं। तव पोक्सपबहानानारी मामादिकमा पत्यवेराविविद्वतं कर्ममछास्योत्सर्गोदी पत्थयुग्बीप्योऽव्येयम्, । तवाऽऽजार्थेगुरुषं होसा-नपूर्वेगोनेस्य प्रश्चं पत्तुरस्यं वा तवैश वयदुष्ट्यामपयेवमेवायान्योक्ष्यम् तिस्मिन्यदिक्कुण्डेणु च 'चतुर्शंच्हुण्डोवद्धोमावृत्तिः' इति केषित्। गुक्तं तु ' चतुःकुण्डोहोम एव विभव्य कार्यः' इति । तदा चैको होता परो ब्रह्मोत । विदिक्कुण्डचपुट्टे षष्टाम्बिका ऋतिकाः । ' तैत्वामयादि-कोणक्रमेण करमादिकालीयाः ' इति केषित् । ' अनियताः ' इत्यपरे । ' काचार्यकुण्डे तु प्रणयनयोग्याक्षित्राक्षान्यः । ' क्षाचार्यकुण्डे तु प्रणयनयोग्याक्षित्राक्षान्यः । ' क्षाचार्यकुण्डे तु प्रणयनयोग्याक्षित्राक्षान्यः । ' होमाहित्तिर्वमञ्च होमानुत्वातं वा ' इति परे ।

स्य फ्रुशासीयानामन्याघाने विशेषः । तत्र ' चक्षपी आज्येन इस्य-≈तमक्त्वात्र प्रधानं सूर्यसोमभौमञ्जवगुरुशुकशनिराहुकेतून् प्रहान् समि-श्वबाँउपै: प्रतिद्रवयम् । अष्टसहसाऽष्टशताऽष्टाविशत्यष्टान्यतमसंख्यमा ईश्वरोमारकन्द्विष्णुबद्धेन्द्रयमकालचित्रगुप्ताख्या अधिदेवताः । अगन्य-च्युभिविष्ण्यिन्द्रेन्द्राणीसर्पप्रजापतित्रकाख्याः प्रस्यथिदेवताः । विनाय-कदुगांबाच्याकाशार्वयान् पञ्च लोकपालान् । इन्द्राप्तियमनिन्हेतियरण-यायसोमेशानानन्तप्रक्षाख्यान् दश दिवपाळान्। ध्रुवाध्वरसोमापानिळा-नलप्रस्पूपप्रभासाख्यान् अष्टौ वसून् । धार्यधमित्रवरुणांशभगेनद्रविवस्व-त्युपपर्जन्यत्वप्दु विष्ण्याययान्द्वादशादित्यान् । यीरभद्रशस्भुगिरिशाजै-कपादहिर्बुक्यपिमाकितुवनाऽधीश्वरकपालिविशास्पतिस्थाणुभगाख्याने-कादश रुद्रान्, गाँयीदियोडश मातृः। गणपति प्रति होमो नोक्तः। आय-इप्रवहीद्रहसंबह् विवहपराबहपरिवहाल्यानसम् मरुतः । ब्रह्माच्युतेशार्फे-बनस्पतीन् पन्य चामुकसंस्यया समिववश्यियेद्ये १ इति । 'वसन माहित्यान् रुद्रान् मरुत इति समुदिनानामेवीहेरती युक्तः । इति बहनः । मन्न 'पह्होमसंख्यातोऽधिदेववाहोमेन्यूनसङ्घा' इति संप्रदायः। ततो यजमानी मण्डपमध्ये दक्षिणत खपविष्टः ' आधाराऽऽज्यभागदेवता भन्याधानीकप्रधानदेवताः स्विष्टकदाशुक्तराङ्गदेवताव्यतुर्ध्यन्तेनादिःयै-साम्य एतानि समिचिछचर्यादिद्रव्याणि होतुमुत्स्वये । इति त्यजेत् । 'बहुकर्तृके होमे प्रत्याहुतित्यागस्याद्यस्यादिति प्रयोगविदः'। ततो दोतारः स्वस्वशासीयैः प्रणवायैः स्वाहान्तैस्तरान्मंत्रैर्ऋषिदेवताछन्दःस्मर-णपूर्वकं सूर्यादिम्यः समिधर्वाज्यादि जुहुयुः। 'तत्र वस्वादित्यरुद्रमध्तां प्रत्येकं मन्त्राऽभाषात्त्रणवादिना चतुर्थीस्वाहान्तेन प्रत्येकं होमः ? इति केचित्। समुदितानामेव विधी अवणान्मन्तानुरोधायेति तु युक्तम्। तत्र प्रत्येकदेवतात्वपम् पश्चाशीतिदेवताः । समुदितपञ्च एकपश्चाशतः।

∢0

होमकाले भरवेदिनौ हारपाली पूर्वे हार्र चर्डमुखी राजिसूक रोहं प्रमाने सुमद्गुले शत स्ट्रामी इति सुकानि पटेताम् । यजुर्विदी दक्षिणे शाकं रोहं सीम्यं कीव्याण्डम् भन्यं सम्मित्ययायं च पटेताम् । पश्चिमे सामिबदी सुपर्ण विराजमाग्नेयं स्ट्रसंहिता ब्येष्ट सामर योधयेति च परेताम् । वत्तरेऽथंवेदिनी सीरं शास्त्रकं पौष्टिकं सुमहाराजं शत्र इन्द्रामी इति नत्क्त्रयं च पठेताम् । तत्र गुरुः सर्वकर्माध्यक्षी भवेत् ॥ अथ होममंत्राः । तत्र अस्वेदिना स्थापनमंत्राएवपिरेवतायुक्ताः । क्षय तत्त्वहैयत्यानि स्तानि जप्यानि । ह्याभीत्येकादशर्चस्य सूत्तस्य हिरण्यानुव व्यक्तिः सविता देवनाऽऽधायाः आखपादत्रवैऽप्रिमिनावरूणौ राजिल देवता त्रिप्टुप्उन्दः लाद्यनवस्योर्जगती सूर्यवीतये जपे विनियोगः । 'ॐ ह्याम्यप्रिं० देवं र । त्वं सोमेति त्रयोविहार्चस्य मुक्तस्य गीतमञ्जूषि, सीमी देवना । पश्चन्यादिश्चादश गायप्यः सप्तदः श्रुव्याक् श्रेपासिन्दुभः सोममीतये त्रपे विनियोगः । ' ॐ रवं सोम० गविद्यौ '। ' समिथाविभिति विश्वर्यस्य स्वस्य विरूप अहिरसोऽप्रि-गांयजी । भौमपीतये० १। 'ॐ समिधाप्ति० सोतिर' । 'वद्युष्य-स्विमिति द्वादशर्वस्य मृत्तस्य युश्वो विश्व देवा नवसी द्वादशी व अगती मध्यभी बृहती चतुर्थी वष्ठी च गायत्री शेपास्त्रिष्टुभी पुचत्रीतवेव'। ⁶ॐ डर्युस्यध्वद् ० वीतये?। ⁶यस्त्रलम्भेत्येकादशर्यस्य वामदेवी नवाना षृहस्पतिरन्त्ययोरिन्द्रावृहस्पती दश त्रिष्टुम ख्पान्त्या जनती । यह-स्पतित्रीतमे० १ । के यस्तरतम्भ० मरावी १। शुक्रं व इति चतसूणां मरद्वामः पूरा भिन्दुष् द्वितीया जाती शुरूशीयवे० १ । ०३ शुक्र ते अन्यत्० संस्थभाम् । । अपयो हिष्ठेति नवर्चस्याम्यरीपसिन्धद्वीप-भापः सप्त गायम्यः पश्चमी वर्धमाना सप्तमी प्रतिष्ठान्त्ये हे अनुपूभी। शनिश्रीवये० '। ' के नापी दिष्ठा० वर्चसा '। ' क्या न इति पश्च-रसर्वस्य बामरेव इन्द्रो मायत्री नृबीया पादनिष्टन् । राहुप्रीवये०'। 'ॐ कया नश्चित्र० भिवोपरि'। 'बुज्जन्तीति दसर्वस्य मधुद्धन्दा काधानां तिमृणायन्त्ययोहिन्दुऋतुर्थीवष्ठबष्टभीनां महतः पश्चम्याः सप्तस्याधीन्द्रीमहत्तः गायत्री । केतुपीत्ये व । ६ २० युष्तन्ति स्रातं रसस० इति नवभइसुक्तानि ।

अथ होपीपन्त्राः। तत्र ऋगेदी।

अयाधिदेवतानाम् । 'इमा च्हायेत्येकाद्द्यर्थस्य कुरती कही जगती अस्ते श्रिपुमे च्हाप्रीतये०'। 'ॐ इमा च्हाय ० 'तथीं:'। 'आपो हिष्टाित नवर्षे पृथेचत् । उमाप्रीतये०'। 'ॐ इमा च्हाय ० 'तथीं:'। 'आपो हिष्टाित नवर्षे पृथेचत् । उमाप्रीतये०'। 'ॐ आपो हिष्टाित नवर्षा गृथेस्य मेवातियिद्यानां चत्तस्यामात्रीत्री पतस्यां स्विता द्वार्या स्विता द्वार्या स्वाधित्रये प्रवाद्या इन्द्राणीवरणान्याप्रत्यो द्वार्यावाष्ट्रयेथ्ये पश्चदस्याः पृथिवी वर्णा विव्युणावदी चक्तंप्रत्यो द्वार्यावाष्ट्रयेथ्ये पश्चदस्याः पृथिवी वर्णा विव्युणावदी चक्तंप्रत्ये वर्णा विव्युणावदी चक्तंप्रत्ये । 'ॐ मार्गुजा० व्हम्'। 'ॐ असो चेवा० वदम्'। 'अप आयाहिति विवर्युणाव्यती चल्यां स्वर्याव्यत्ये०'। 'ॐ अद्र आयाद्याद्वित्रियं । 'ॐ अद्र आयाद्वित्रियं राष्ट्रयः स्वर्यः वर्षाः प्राप्ताः व्यव्यावित्रे०'। 'ॐ इन्द्रं विश्वा स्वयद्वावेथं वर्णा स्वर्यावे वर्षाः । 'अप गार्यावेवित्रयं इन्द्राद्वाव्याव्यत्यावित्रयं प्रत्योवित्रयं वर्षाः प्राप्ताः प्रत्यावे वर्षाः । 'अप गार्यं गिरिति वितर्यणा सार्यद्वावामा वावत्री वर्षायं प्रस्ति वर्षायः प्रस्तिः । 'कं भावं गौः प्रक्रिक शुक्तः । 'कं परं मृत्योवे वेन'। ' 'कंष्र्यं वर्षाः सम्प्रतिवेवं ।' ' 'कंष्र्यं वर्षाः सम्प्रतिवेवं ।' ' ' कंष्र्यं वर्षाः सम्प्रतिवेवं ।' ' ' कंष्यं कंष्र्यं भावंपाः सम्प्रतिवेवं ।' ' ' कंष्यं कंष्र्यं भावंपाः सम्प्रतिवेवं ।' ' कंष्यं कंष्यं सम्प्रतिवेवं ।' ' कंष्यं स्ववित्रतिव्यं ।' ' कंष्यं स्ववं स्व

अय प्रस्यविदेशतानाम् । 'अप्ति दृष्विति हृद्यस्थैत्य सैश्वातिधिरिप्तिः प्रमुषा शाहे पादे निर्मध्याहृद्वतीयौ गायश्री श्रामिगीदवे० ' ।

'ॐ अप्ति दृष्वम् अनः । 'फस्पेति पश्चदृश्वेश्यरक्रात्रक्षेः
श्वानःशैष शाहायाः को द्वितीयाया अप्तिक्षातृत्या सिविता दृष्वाना यक् पस्तृत्वीयायास्तिस्तो गायन्यः शेपासिष्टुमः अप्प्रीतये० ' । 'ॐ कस्य दृत्तप् स्थान ' । 'स्थोना सेवानिधिः पृष्वित्री गायत्री भूमिगी-तये० ' । १ॐ स्थोना पृषिवि० प्रथः ' । 'सहस्वरीपेति पोदश्यस्य नारायणः पुष्पोऽनुषुत्रस्यानिष्ठप् विज्ञुधीवये० ' । 'ॐ सहस्व-राधिं० देवाः ' । 'कृत्याय क्षययः प्रयानसीमौ गायत्री । इन्द्र-प्रीवर्षे० ' । 'ॐ इस्यविन्दी० सदस् ' । 'द्वाः 'दानागिति पण्पायि-दृष्णोन्द्राण्यनुष्ठम् त्वस्या पथ्यपदा 'वृद्धः इन्द्राणीमीवये० ' । 'ॐ स्मा त्यनागि० सावतु ' । 'अगायते हिर्ण्यममः प्रजापतिसिन्द्यं प्रमापतिसिन्द्यं प्रमापतिसिन्द्यं प्रमापतिसिन्द्यं प्रमापतिसिन्द्यं प्रमापतिसिन्द्यं प्रमापतिसिन्द्यं प्रमापतिसिन्द्यं प्रमापतिसिन्द्यं प्रमापतिसिन्द्यं प्रमापतिसिन्दं स्थानामित्रवे० ' । 'ॐ स्मापतिसिन्दं स्थानामित्रवे० ' । 'ॐ सावतिसिन्दं स्थानामित्रवे० ' । 'ॐ सावतिसिन्दं स्थानामित्रवे० ' । 'ॐ सावतिसिन्दं स्थानामित्रवे० ' । ' कृतिसन्दिन्दं सन्दिनं सन्दिनं सिन्दं सन्दिनं सिन्दं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सिन्दं सन्दिनं सनिनं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सन्दिनं सर्पो अनुष्टुष् सर्पपीनये०'। 'ॐ कार्टिको नाम सर्पः० हनः'। 'प्रहा देवाना देवोदासिः प्रवर्तनो प्रहा विष्टुष् प्रहामीवये०'। 'ॐ प्रहार०रेभन्'॥

अय विनायकारिपश्चानाम् । 'बातून इति नवामां सुसीदः कृषो गणपितग्रीयत्री विनायकप्रीतये० ? । 'ॐ बातून इन्द्र० रन्तो '। 'जातवेदसे करवपी जातवेदाखिषुष् दुर्गामीवयै० '। 'ॐ जातवेदरि करवपीः । 'ॐ जातवेदरि त्रिता शे 'ॐ काणा दिश्च० दिता शे 'ब्लाइंट्रस्स बाकाशो गायत्री बाकारात्रीवयै० '। 'ॐ बादियतनस्य०। यथो जया प्रस्कल्योऽदिवौ गायत्री बादियते। 'शेक्वे० ?। 'ॐ प्रपो० इत् शेष्टिके हत्त्र'॥

क्य व्यक्तिकपालानाम् । 'इन्द्रं विश्वा इत्यष्टानां जेता मधुरुप्रन्यस् इन्द्रे । इन्द्रं विश्वा व्यक्ति । 'क्षिप्रः साम् मिति स्वानं सीचीकोऽप्रिकेषानरोऽप्रिकिष्टम् क्षिप्रभावरे । 'क्ष्या साम् मिति स्वानं सीचीकोऽप्रिकेषानरोऽप्रिकिष्टम् क्षप्रभावरे । 'विश्वानं साम साम प्रवाद्या कार्यस्य यमः प्रवाद्या कार्यस्य यमः प्रवाद्या कार्यस्य यमः प्रवाद्या कार्यस्य प्रवाद्या कार्यस्य प्रवाद्य कार्यस्य कार्यस्य प्रवाद्य कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य प्रवाद कार्यस्य प्रवाद कार्यस्य वाद्यम् विश्वानं कार्यस्य विषयस्य । 'कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य विषयस्य । 'कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य । 'कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य । 'कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य । 'कार्यस्य कार्यस्य भावत्य । 'कार्यस्य कार्यस्य । 'कार्यस्य कार्यस्य भावत्यस्य । 'कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य भावत्यस्य । 'कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य । 'कार्यस्य कार्यस्य कार कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य कार्यस्य कार कार्यस्य कार्यस्य कार वार्यस्य कार वार्यस्य कार वार्यस्य कार वारस्य कार वार्यस्य कार वारस्य कार वारस्य कार वारस्य कार्यस्य कार वा

राज्य वस्तादिनवानाम् । 'जावा जत्र' इति वसूतां होमवत् । 'इमा गिर इति सप्तदश्येष्य गात्सैगदः दुर्म जादित्यिज्ञपूत् आहित्य-प्रीत्वे०।'ॐ इमा गिरा० वीराः'। 'जाव इति पण्यदश्येष्य गार्त्स-मदः- पूर्वेन्द्रिकपूत् इंशानपीतवे०',। 'ॐ जातीपित० बीराः'। 'मको तस्वीद इशानां गोवधो गायशी महत्वीत्वे०'। 'ॐ महतो पत्रको सस्वीद इशानां गोवधो गायशी महत्वीत्वे०'। 'कार्त्स किसिट्य प्रक्षप्रीतसैव । 'ॐ हिरण्यगर्भे । र स्वीणाम् । 'सहस्रशीर्पं इत्यच्युतस्य प्राग्वत् । ' जातेपितः इत्रीशस्य प्राग्वत् । ' चित्रमिति पण्यां सुरसोऽकेसिस्युप् अर्थेप्रीतरेव । ' ॐ चित्रं , तैवानाम् ० चत् चौः ! । 'चनस्यतः इति विस्पृणां गर्भो चनस्यतिस्पृष्ट् चनस्यति-प्रोत्तये । ' ॐ चनस्यते चीह्नद्वी ० गुभाय । जावाहितयोरिष मातृगणस्योहोंमारूकणेपं न स्तः । एवं क्त्यवेदी हुत्वा विषष्ट इत्तरिमा- चित्रस्यतं पूर्णेह्तिवाग्भावि कर्मे क्रुर्योत् ॥

अय बजुर्वदिनः । कुश्किष्डकानन्तरं प्रधानहोपमन्ताः। 'आङ्ग-हणेल हिरण्यस्पः सन्तिता त्रिष्ठुण् सूर्यमीतये विलाखहोसे विकि-योगाः। 'ॐ आङ्गप्णेन पश्चनस्ताः'। 'इतं सूर्याय '। पतं सर्वत्र । 'इतं देशा नवणः सोमो चजुः'। 'ॐ इतं देशानं र राजाः'। 'आह्रि र्मुद्धाविक्तपोऽङ्कारकी गायत्रो०'। 'उद्युच्यक्त परमेष्ठो जुलिकुपू०'। 'यृह्यते गृस्तमदो गृह्यविकिष्ठुय्०'। 'आलाव्यज्ञापविरिधसरस-सीन्द्राः गृतो जातरी०'। 'शको दृष्यकृष्टव्यक्ताः शनिर्गावत्री०'। 'क्या नो सामदेवो राष्ट्रपायेशि०'। 'केशु मञुच्छन्दाः केतवो गायत्री०'।

कथाधिदेवतानाम् । 'त्र्यस्यकं विक्षिष्टो कृद्रक्षिपुद्'। कन्न प्रणी-कोदकं स्पृष्टीत् । 'श्रीक्षयुत्तरानारायण चमा निष्ठुत्'। 'यदकन्यो भाग्करतमद्रमिद्रीवेतमकोः स्कन्दिक्षपुद्'। 'किंग्गोररास्त्रप्रक्षो विस्त्रुयाजुः'। 'ॐ विग्गोररास्त्रभ् वे स्वा'। 'आ न्नायन् विद्यम्या विद्यायाजुः'। 'ॐ वाजायास्त्रभ् वे स्वा'। 'आस्वयमो भारत्य-जमद्रिमिद्रीयस्मको यमकिष्ठुप्'। क्षत्र प्रणीतीद्देकस्यस्तः, । क्यापिद्रस्य वस्यस्वापुर्येणः काल्वेजनुष्टुप्'। क्षत्रापि प्रणीतीद्देकस्यसः, । विज्ञापि प्रणीतीद्देकस्यसः। 'चिजानवीर्मस्यविज्ञनुमो जगती'। 'ॐ चिजा-वसीः क्षीय ॥

मध्य प्रत्यिचेत्रवात्ताम्। 'अप्ति वृत्तं विरूपोऽप्रिगोयमी'। 'अप्त-नगर्वृहस्तिः आप. पुर उत्पिह्नः'। 'श्योता चेत्रातिशः प्रविष् गायनी'। 'दे कियुगेवातिविर्विणुगायनी'। ' त्राताः गाग्ये हन्द्र-सिष्ठपुर्। 'अदित्ये वृष्णद्वार्यवेण हन्द्राणीखन्नः। सदित्यासा। 'प्रजापते वरुणः प्रजावतिश्चिष्टुष् रे। 'नमोऽस्तु देवाः सर्पा मनुष्टुष् रे। 'नम

प्रभापतिर्मेद्या त्रिष्टुप् १

अप विनायकादिपश्चानाम् । गणानां प्रभाषतिर्गणपतिर्यञः '। 'ॐ राणानां स्वरः। 'अस्वे प्रजापतिर्दुर्गाऽनुष्टुप् । 'वातो वा गन्धवी वात विष्णक् । ' अर्था अस्य समियो प्रभाविराकाश संस्थार १। ' अधिनो अधिरधिना यजुः' । 'ॐअधिनोर्भे०चामि ॥

कथ दिक्याञ्चानाम् । ' बातारं गार्ग्ये इन्द्रश्चिन्दुप्'। अभि दर्ते विक्रपोडिमाँगाँगी '। 'असियमी मागवजमदमिदीर्घतमसी यमिछ-प्ट्यू । । अत्र प्रणीतीद्रकस्पर्शः । " एप ते वरुणी निर्मतिर्यज्ञः ।। · ॐ एप ते निर्मते० पस्त्र १। ' प्रणीतीदृषस्पर्शः । ' इमें में शुनःशेपी करुणी गायती । 'भेंड्से में बरुण० । 'बाती वा गन्धर्या क्षात किया है। 'बर्थ बन्धुः सोमी गायत्री '। 'वभीशानं गीतम ईशानी जगती '। प्रणीकोदकस्पर्शः। ' नमोऽस्त देवा अनन्तीऽनुष्ट्रप् ।। ⁴ ब्रह्मप्रभापतिर्वद्या त्रिष्टुप् ^१ ॥

अय वस्त्रादीनाम् । 'स्वर्मा देवा वस्तवस्त्रिष्टुप् '। 'यहो देवानां · 'बन्स आदित्यिक्रिन्दुप् '। ' य एतावन्त्रय परमेष्टी क्ट्रोऽनुन्दुप् ।। • महती यस्य गीतमी महती गायश्वी ? । • आवद्यान्यन्नापतिवद्या यज्ञः । ' इदं विष्णुर्नेधारिधिरच्युतो गायशी '। ' मानस्तीके हुत्स ईशी काती । ' चित्रं देवानां कुत्सोऽर्वनिष्टुप् । ' सर्व हि प्रजापति-र्बनस्पतिर्यज्ञः १। ६०% वर्षे दि स्वा० रुद्देम १। इति होममन्त्राः ।

भय जपमुत्तानि । 'विश्राडिति सप्तर्श्यस्यानुवाकस्य आधाया विश्राद् । ततन्तिसूर्णां प्रस्काण्यः । पश्चम्या अवत्सारः कादयपः। प्रत्या वेतः सप्तम्याः क्रुत्सोऽष्टम्या अगस्त्यः नवन्याः श्रुतकक्षसुरुक्षो दशम्याः प्रस्कृत्यः । अथ द्वयोः शुरुसः । अथ द्वयो जैमद्ग्निः । पश्चदृश्यः भूमेषः । पोडद्याः बुहसः । अन्त्याया हिर्प्यरूप आद्विरसः । पश्चम्या विश्वे देवा:। प्रायाः सोमोऽन्यासा सूर्यः। बाद्या पष्यमी जगती । द्वितीयादि-तिस्री नवमी दशमी व गायत्र्यः वयोदशीपच्चदस्यौ पष्यायृहस्यौ । चतु-देशी सवी वृहती । शेषाः सप्त त्रिष्टुमः । सूर्वशीववे जपे विनियोगः' । 'ॐविभाइन्ह्त्० पत्रवन् '। ' आपाई युद्धिति चतसूणां गौतम-·सोमिश्रिष्टुप् सोमगीतये० '। ' अभाषाडं बुल्मु० विद्यो '। अग्नि- र्मुह्र् विरूपाक्षोऽप्रिर्मायक्षी ' । ' वद्युखषस्य परमेष्ठयप्रिक्तिपुत् ' युषयीतये । 'यूहस्पते अतिगृत्समहो श्रद्धा त्रिष्टुत् । यूहस्पतिप्रीतये व' ' ' अत्रात्परिक्षुतः प्रजापस्यिक्षसस्यतीन्द्राहन्द्रो जगती ' । ' शत्रो देवी दृष्यह्डायर्थेण आपो गायती ' । ' क्यानो वागदेवो राहुगीयत्री ' । ' केतुं कुष्यत् म्युच्छन्दा अग्निगीयत्री ' । एते मन्त्रा एव सूकानि ।।

क्षयाऽधिदेवतानाम् । ^१पट्पष्टिमन्त्रात्मकरुद्रांध्यायस्य परमेष्ठी इरपि: । आद्यानां पोडशानामेकहरस्ववी वहुकद्र आद्यो गायत्री। तिस्त्रोऽतुरद्वभो हे जगत्यौ । नमी हिरण्यबाहव इत्यन्तर्किशद्यर्ज्ञीय द्राप इत्युपरिष्टाद्यृहती, इमा रुद्रायेति जगती, या ते रुद्रेत्यतुष्ट्रप्। भवी द्वे त्रिष्टुभौ । विकिरिदेखाचा द्वादशामुष्टुभः । शेपाणि त्रीणि यर्जूपि । रुद्रशीतुये० १। १३% नगरते रुद्र० दश्मः १। १ हवासह १ इत्यन्ताः पोडरीव रुद्रस्क्तमिति रूपनारायणीये । प्रणीतीवृकस्पर्शः । ' श्रीश्र ते उत्तरनारायणो नारायणसिन्द्रप्। उमाप्रीतये० '। 'यद-कन्दी भागियजनद्मिरीभैतगसोऽश्वसिष्दुप्। स्कन्दपीतयै० १। 'सह-स्तरीर्वेति योडशाना नारायणः पुरुषोऽनुष्टुबन्स्या त्रिष्टुष् । विष्णुप्री॰ तपै० १ । 'आव्रदात्रिति प्रजापतिर्वदा यगुः । ब्रदापीतपै० १। 'आशुः शिशानिमिति द्वादशानामप्रतिरथ इन्द्रसिष्टुप् । इन्द्रपीतये० '। 'यमाय स्या दृष्यक्ष्णायर्वणी यसो यजुः । यमप्रीतये० । 'ॐ यमाय० स्त्राहा '। प्रणीतोदकस्पर्शः। 'कार्पिरसि दथ्यङ्डाधर्वण आपोऽनुदुष्। फालप्री-तपे० । प्रणीतीदकस्पर्धः । 'चित्रावसी भरपयो राम्रिभैगती । वित्रगुप्तपीतये० १ ॥

अध प्रस्विधदेवतानाम् । 'अस्या जरास इति सप्तरक्षाचेय आद्यास स्वस्ता दृष्ट्यम् विद्युपः विद्योगाया विरूपः दृष्ट्यम् गायशी । वृतीः याचा गीतमी मित्रावरुणौ गायशी । यद्युध्यो विरूपः दृष्ट्यक्षणौ गायशी । पद्युध्यो विरूपः दृष्ट्यक्षणौ गायशी । पद्युध्यो विरूपः दृष्ट्यक्षणौ गायशी । पद्युध्यो विरूपः विरूपः । अध्यया भरद्वाजोऽप्तिकिर्दृयु । साम्या भरद्वाजो विद्युदेवा गायशी । दृष्ट्या अधाविधिपितिर्गायशी । प्रस्ता साम्या भरद्वाजो विद्युदेवा गायशी । पद्युध्या अधाविधिपितिर्गायशी । प्रस्ता साम्या भरद्वाजो विद्युदेवा गायशी । पद्युध्या साम्या भरद्वाजोऽप्रिक्षिप्रदृष्ट् । पद्युदेवा विरोदेवा मरविद्युष्ट् । त्राथोद्वया सम्द्वाजोऽप्रिक्षिप्रदृष्ट् । पद्युदेवा विरोदेवा साम्या विद्युष्ट् । साम्या

स्वारुनुतोधातकः सविवा त्रिष्टुत्। अग्निमीतवे० ।। 'आवो हिप्तेति तिस्णा सित्युद्धीत आपो आवती। अलीवये० ।। 'स्वोता प्रिथिवि वस्वज्ञाविष्णाः प्रिश्वी गार्वती। अलीवये० ।। 'स्वोता प्रिथिवि वस्वज्ञाववृत्ताः प्रिश्वी गार्वती। प्रिवित्रियोकः ।। 'सहस्वतीणां नारावयाः पुरुषी-रसुद्धितः ।। 'स्वाद्धः विद्यान्ता प्रतिकार्वेद्धाः ।। 'स्विद्ध्ये रास्ता वस्वज्ञव्यान्त्यः अत्रित्वान्त्र्यः वस्त्र्यान्त्रयः ।। 'स्विद्ध्ये रास्ता वस्वज्ञव्यान्त्रयः अत्रित्वान्त्रयः ।। 'स्विद्ध्ये रास्ता वस्वज्ञव्यान्त्रयः अत्रित्वान्त्रयः ।। अत्रावितित्रयं त्रित्वान्त्रयः ।। स्विप्त्यान्त्रयः स्वि व्युत्वान्तित्रियं वस्त्रयः स्वित्वान्त्रयः । स्वान्त्रवित्रयः स्वर्धान्त्रयः । स्वित्यत्रयः सर्वान्त्रयः सर्वान्तिन्त्रयः ।

अथ बिनायनादिएश्वासाम् । 'गणाना स्वा प्रभापतिर्गणपतिर्गुः । गणपतिप्रोतरे०' । ' करवे अभ्यक्ते प्रभापतिरखोऽगुन्दुप् । दुर्गामी-स्वे०' । निमुन्दान्ता यति चणामाचाया गुरुवन्दीः द्वितीयामा. पुरुव-भीदानसीति विद्युण प्रभापतिः परुपान्वस्य साहित्ता । ' उत्त्वां वीयान्दुन्दुप् पश्चमी भिन्दुष् सेचा गावश्यः । बाबुसीत्ये० । ' उत्त्वां कास्य समित्र इति हास्सामा प्रभापतिरमित्रिण्यः । आकासाविर्वे०'। ' या वा कस भेशानिथिरश्चिनी गावश्यः। अधिको. प्रतिर्वे०'।

वय दिश्पाळामाम् । 'काग्र शिराम दिव डाद्दाचैनन्त्रम्' प्राप्ततः । 'काग्र वर्षाच डाद्दाचैनन्त्रम्' प्राप्ततः । 'काग्र करास दिव सम्दर्शचैवामेषं गानन् । 'काग्र दण्यद्वाच्याचे स्मा चन्नु । सम्मीत्रेवः । 'क्याय दणहाः । प्राप्ति सम्प्र प्राप्ति स्थाः गुनः प्राप्ति स्थाः गुनः दण्या दणहाः । प्राप्ति त्राप्ति स्थाः गुनः दण्या दण्या । प्राप्ति स्थाः गुनः दण्या वरणो गामत्री त्रित्वः । वरणो गामत्री त्रित्वः । वरणो गामत्री त्राप्ति स्थाः गुनः स्थाविष्ठः । 'नितुत्वः नयाविष्ठि स्थायवीयम् ' प्राप्ता । आयाविष्ठिः । प्राप्ति स्थायवीयम् स्प्राप्ति स्थायवा प्राप्ति स्थायवा प्राप्ति स्थायवा । प्राप्ति स्थायवा प्राप्ति स्थायवा । स्थायवा प्राप्ति स्थायवा । स्थायवा ।

कप बतादीनाम् । सुगा वो देवा वसविधिदुप् । बसुप्रीतरो० । 'ॐ सुगाबोदेवा० गे 'इमा गिरो गृत्सवद ब्लाद्विविक्षदुप । बादिरय-प्रीतरे० '। 'ॐ इमा गिरो७ '। ह्याध्यायो सेन्द्रं प्रावत् । शुक्रको-विश्वेति पण्णा सत्तर्ययो सहत ब्लान्तुर्यी गोण्णिक् पन्धानी ज्ञाती रोपा गापस्यो मरूकोतये । १ ॐ शुक्रक्योतिश्च ० । आत्रवान् प्रजापतिर्मेद्धा यन्तुः । शहाप्रीतये । १ ॐ श्वात्रम्हन् ० १ । 'साहस्रशी-वित शैष्यते १ प्रायत् । 'ब्हाच्यायो रोहे १ प्रापत् । 'तिशास्ति सारदार्थमार्क १ प्राप्त् । 'बारपते बीहङ्का श्वापतिर्वेनस्पतिर्देन-पद्धा । वनस्पतिर्मात्वे० १ । 'ॐ वनस्पतेवीङ्को० । ततो न्याहृतिहो-मादिश्चरिमान्ते याजुपं पूर्णाङ्गित्राम्मावि कर्म कुर्यात् ।

अय सामगाताम् । कुशकिष्डकातन्तरं मधानहिमे मन्त्राः । 'कुतुर्वे मस्काः सूर्ये गायमी'। विकानवहीमे विनियोगः । 'क् उद्घर्वे रायमी सिकानवहीमे विनियोगः । 'क उद्घर्वे रायमी सिकाः सीमी गायमी ? । 'क सिक् यापित सीमः सीमी गायमी ? । 'क सिक् सीम् योपित । ' कि सिक्यानकरो सारमिर्धेची यृह्वीत ? । 'क सिक् सीम् मुंबां । '। 'का विकानवही सारमिर्धेची यृह्वीतिष्यपुर् ? । ' के सिक्यानकरो सारमिर्धेची यृह्वीतिष्यपुर ? । ' कुरस्ते यरिदीयाऽप्रतिरयो यृह्वितिष्यपुर ? । ' कुरस्तेत्र यरिदीयाऽप्रतिरयो युह्वितिष्यपुर ? । ' कुरस्ते यरिदीयाऽप्रतिरयो युह्वितिष्यपुर ? । ' कुरस्ते सिक्यान्य । ' । ' के स्वानक्षित ? ।

श्रवादिदेवदानाम् । आवो राजानं वायदेवे कहाक्षादुप् । ।

'ॐ लाघो राजानं ० २) ' श्रापो हिष्टा सिन्धुद्रीप एमा गावजी० । ।

'ॐ लाघो हिष्ठा० २) ' स्वोना प्रधिवी सेवाधियिः स्कन्द विण्यह्र० १) ।

'ॐ स्वोना पृथिवी० २ । ' दुई विष्णुचे विविधिर्विष्णुगावजी० १।

'ॐ दुई विष्णु० १ । ' त्वमिरस्तर्था गीवनो प्रका वृद्धी १ । ' ॐ त्व-सिरस्तर्याः १ । ' इन्द्रमिदेवचा चक्कतुथिन्द्रशिष्टुपु० १ । ' ॐ त्व-सिरस्तर्याः १ । ' त्वादं मीं: सावदाशी यमो गायधी० १ । ' ॐ त्वावानं ० । गीः० १ । ' शायं गीः सावदाशी यमो गायधी० १ । ' ॐ त्वावानं ० । । गीः० १ । ' दिन्द विष्युगाविज्यामो जगवी० १ । ' ॐ त्वावानं ० ।

नाय प्रत्यविदेवतानाम् । अप्ति दृतं अरद्वाजोऽप्तिर्गायत्री० । 'ॐ अप्ति दृतं० ।' । यदुत्तमं गीता भाषित्रदृष्णः १/ॐ यदुत्तमं०'। 'प्रिव्यन्तरिक्तं विद्युः प्रिव्युक्तिक् ''। 'ॐ वृद्धिव्यन्तरिक्तं०'। 'सदस्प्रीपर्यं नारायको विद्युत्तादुष्णः १ 'ॐ वृद्धस्प्रीपर्यं । 'पद्या-'श्रुतो एप्पे कृषोय इन्त्रो गायत्री० र । 'ॐ वृद्ध कृषी० '। 'पद्या- ष्टका वसिष्ठ सन्हाणी त्रिप्टुब्॰ गा 'ॐ एकाष्टका॰ गा 'ग्रजापते न व्यक्षिरण्यार्भे प्रजापतिषिष्टुब् गा 'ॐ ग्रजापते न॰ गा तरेदि न्त्रायम बसिष्ठ सर्पाकारुप्० गा 'ॐ तरेदिन्दावसु॰ गा 'एप प्रकारजापतिप्रका द्विपदा गायत्री॰ गा 'ॐ एप प्रकार '।

क्य विनायकादिपधानाम् । 'बात्नो गौरिवीवी गणपिगा यनी० । । 'ॐ बात्न० । 'इम स्वोम मुस्सी दुर्गा आगती० ? । 'ॐ इम स्वोम० । 'बाणाविद्युरिन्द्रो बायुर्विष्णर् ० ! 'ॐ हाणा-दिग्तु० । 'बारित्स्तस्य मियनकाम आवादी गायत्री० ? । 'ॐ बारित्स्तस्य० ? । 'य्यो ख्या प्रस्कण्योऽस्विनी गायत्री० ? । 'ॐ बारी ख्या० ? ।

अय छोकपाळानाय्। 'त्याभिद्ध मरद्वाज इन्द्रो पृह्वी०'। 'ॐ त्वा मिद्धि०'। 'अमिर्द्वाणि कोनोऽप्तिगायत्री०'। 'ॐ जमिद्वगरिण '। 'साकेतुर्ण यमी समीक्ष्युर्थ'। ॐ नाकेतुर्य० । 'वेरवा होत्यादियां किन्तरितित्याद्ध्यं । 'ॐ वेरवाहि०'! 'इम से युष्कको वक्षणे गायत्री० । । 'ॐ द्वा से वक्षण०) 'त्वात्वावाद्य प्रतिचिनिकाशीयो वायुर्गायत्री० '। 'ॐ वात्वावाद्यु०'! 'स्वादिष्टया गम्भीर सोमो गायत्री० '। 'ॐ व्यतिष्टया० '। 'तहो गायत्रीचि रह हेशानो गायत्री० '। 'ॐ व्यतिष्टया० '। 'तहा नायत्रीचि रह हेशानो गायत्री० '। 'ॐ व्यतिष्टया० '। 'तहानो अच्या ज्वाना अनस्त क्षायुष्ठ । ' 'ॐ व्यतिकार्याक्षात्र । ' 'श्वस्त्रवात्र महा। प्रदा

किरदुप् । 'ॐ साना अभ्या । ' नवस्तान महा । ह्या । विद्युप् । 'ॐ महानहानः । ।

बार बरादीनाम् । 'वनित नामते वानदेवो वसदो दिराद् । । 'ॐ सामि नामते । ' आदिलेरिन्द्रमग्द्वान जारित्यो सिराद् । । 'ॐ सादिलेरिन्द्र । । आदो राजान 'वानदेवो रहासिन्दुप् । । 'ॐ बावो राजानः । 'पश्चाना अग्रस्थ आदारसनमन्त्रो सृहवीः । । 'ॐ वसाना अग्रस्थ । '। महाम्मान द्वसा नहा निद्युप् । । 'ॐ नहा ज्ञानाः । ' । दे विष्णुभाविषित्वणुगोवजीः । ' ॐ वन्द्रप् । । क्षाव प्राप्त सोमाय सोम 'देशानो पृद्यीः । ' ॐ क्षावा सोमायः । । सोमस्य । ' 'इन्द्रायमद्वने गौरीविवर्षो गायत्रीः । ' ॐ इन्द्रायमद्वने गौरीविवर्षो गायत्रीः । अ्क वनस्यतेवीद्वद्वीः ।

'इति सामगानां होभमन्त्राः होममंत्राएव सामगानां जप्यानि सूक्तानि । । विशेपस्त प्रहेपु सौन्ये प्रकीचितव्यमिनि द्वादश्चिस्याद्यानां तिस्तृणां वाजिलान्द्रप् । शेपाणामादित्यो गायत्री सोमी देवता सोमप्रीत्यर्थे० । ' ॐ प्रकान्यमुद्दाव ') एकाददासामारिमकायां कद्रसंहितायाम् । सावी• राजानमिति वामदेविद्यादुप् । तद्वी गायेति चतुःसाम्री वर्गस्य रहो गायत्री । त्रयाणामाज्यदोहसीम्नां वैश्वानरिक्षण्डुप् । त्रयाणां देवजनसामां पूर्वयोक्त्रोन्स्यस्य विश्वेदेवा उत्कृतिः । सर्वेपां रुद्रौ देवता । मुद्रधीत्यर्थप्० । ' अ आवीराजा एकादशसामासिकायां रकन्दसंहितायाम् १। वामन्द्रैरिति जवाणां स्वामअनोविश्वा सह-ध्यशिति त्रयाणां कत्त्वो बृहती । प्रसेनानीमिति त्रयाणां क्रस-लिप्टुप् । पवित्रं त इति द्वयोरादित्यो जगती । सर्वेपां स्कन्दो देवता । स्कन्दगीतये० १। ' आमंद्रे १। नवसामारिमकायां विध्या-संहितायाम् । इदं विष्णुर्विष्णुर्गायत्री । प्रश्लस्य पृष्ण्यो विष्णुर्जगती । प्रकाव्यसुदाने इति वराहस्य वाजित्सिप्रप्०। सहस्रदाीर्पं शङ्क्रचर्गाः सयोः पुरुपप्रतयोः पुरुपोऽनुष्टुष् । सर्वेषां विष्णुर्वेनता । विष्णुपी-स्पर्थम् । ' इमे विष्णुः ' । विनायकस्य ' अवदंरिति दशसामाः त्मिकायां विनायकसंदिवायाम् । अद्देशिति द्वयो रहद्वश्रक्षिप्रप । सुत्राणास इति द्वयोः पृथिती त्रिष्टप् '। कातून इति चतुःसामवर्गे भारायोगिरिवीत सन्त्ययोरपाठनैणवश्चतुर्णी गायती । सुज्यमाणा इति द्वयोराग्रस्योक्ष्णोराध्योद्विसीयस्य वर्गस्य पप्तस्याऽमिर्वहती । सर्वेषां विनायको देवता । विनायकप्रीत्यर्थम्० । । अदुरुपत् । । सोमस्य प्रकाल्यमुशनमिति प्राम्बत् । द्वादशर्चम् । ईशानस्य रुट्राणाम् । आयौ राजानमिति रुद्रसंहिता प्राग्वत् । जच्युतस्य वेरेणवीसंहिता प्राग्वत् । . अन्येषां कु होभमन्त्रा एव । इति सट्टचरणसदनोमापतिरूपनारायण-दानसागराचाः । 'वैषां गीतिरस्ति ते गीतिसंहिता एव जप्या' इत्यर्पित एव । स्काजपानन्तरं व्याहृतिहीमादिवहिर्जृडिकाहोमान्तं पूर्णाद्वतिप्रारमाविस्वशास्त्रीकं सामवेदी कुर्यात् ।

अधायर्ववेदितः । प्रधानहोमे मन्त्राः । 'विषासदिस्यर्वादित्यो अगवी।होमे विनियोगः '।एवं सर्वेत्र । 'शक्ष्ममपर्वा सोमोऽनु-एटुप्'।'त्वया मन्यो ग्रह्मा भौमस्विष्टुप्'।'व्हाजानो विभजन्त विष्णुर्वेशः पद्दिरः'। 'बृहस्पितिर्गि कृष्ण मृहस्पितिसन्दर्भ'। 'शुक्तेऽस्वथर्वा शुक्तेऽन्तर्द्धप् ''सहस्रगङ्ग्यायणः शनिसिन्दस् '। 'दिन्यं वित्तं कीशिको शहस्त्रिन्द्दप् '। 'यस्ते प्रशुरपर्या वेतन-सिन्दुष् '॥

कभाभिदेवतानाम् । 'मा नो चितन्त्रका कैथरोऽजुरुष् । आपो-हिप्ता सिन्धुद्रीप उमा गावती । 'अमिरियमन्यो महा स्कन्द्र-चित्रुष् । 'मनदिष्णुरपर्या विष्णुर्ययोगी । 'प्रहाननामनपर्या प्रजा निरुष् । ' स्नेत्रे केलेन्द्रोऽजुरुष् । 'यः प्रथमो मजा यमिष-चुष्ठा । 'रिहेषः कालोऽपर्यो कालोऽजुरुष् । 'यंतातार्व कीशित-विश्वानोऽजुरुष्

अप प्रत्यिष्ट्रेन्दानाम् । 'सामत्नामे प्रवादिमि पिरन्तुप् '। ' हानो-देनी प्रकार आपो गायमो ?। ' सूर्येमीवर्गवा सूनिस्तुप्तुप् '। ' इदं विष्णुपत्य विष्णुगोवनी ') ' इता जुपस्य महोन्द्रोप्तुप् यो ' मेत-पादावयम्त्राप्यतुप्तुप् "। ' नक जावास्यवयो प्रतापितनुसुद्ध् ग । ' सर्गोतुसर्योवनी स्थाः पर्विषः श। 'से दिवासमयने प्रकारितनुष्तु ग ।

अप विनायकादिपश्चानाम् । 'तिर्छहम द्रविणीया विनायकोऽनु-पुद् १। ' प्रवताप्रितयार्था दुर्गा त्रिन्दुप् १। ' क्रानिस्टि वायवे त्रह्मा बायुत्तुपुत् ।। ' हान्यन्तापर्या जाकाद्यस्त्रिप्टुप् । ' संवेतपप्यो-ऽद्विरा अदिकावनुत्वप् १।

क्य रिक्तालाताम् । 'इन्त्रमिन्द्रमहोन्द्रम् सन्दुष् ।' 'कार्देभेनीति महाप्तिनिष्दुष् ।' 'परो मृत्युत्तमक्षा यमस्तिष्दुष् ।' 'कार्पेने तिन्तै-दिरपर्वे निर्करितरादुष् ।' 'ये प्रधानकुरूतपर्यो परुणिस्दुष् । 'यायोः सन्दित्तपर्यो वाद्विष्टुष् ।' ।' य उत्तरते विद्यापर्यो कार्नात्तरपु । 'धाता दरात्विद्वार हैसानी गायत्री'। य कारने विद्यवसर्य कारन्तः पद्विः ।' श्वा परं युन्यवाष् । कार्यो ब्रह्मा विद्युप् ।

काय वस्तादीनाम् । 'याननद्ववस्त प्रदा वस्त्रविष्ट्यु ।।' शादित्यो प्रद्वा ब्यादित्यित्रपुर्य । 'हर्न अलाप प्रदार स्वरिष्ट्यु । ।' मन्ता-मत्तेप्रयो मन्त्रविष्टुप् । । 'हम ब्रह्म ब्रह्मा ब्रह्मिट्युर् । । 'तरिक् प्रोपेद्यारस्युतो ब्रह्मा बायनी । । 'हद्रमलाप ब्रह्मेसिस्टुप् । 'वस्त्रो विराजो ब्रह्माऽर्रुखिष्टुप् १। वनस्पते बीड्बङ्गोऽथवा वनस्पतिखिष्टुप् । इरयथर्पविदो होममन्त्राः ।

क्षथ सुन्हानि । 'विपायिहं सनेहमामित पण्णाम् अववां सूर्यो जगती । सूर्यमितये जपे विनियोगः' एवमयेऽपि । 'शक्ष्ममिति पत्तुर्गामययो सीमोऽनुष्डुप् '। 'त्वया मन्यो इति समानां महा भीमित्रपुप् । 'सोमस्याशो इति चुर्णामयां शुपोऽनुष्डुप् । 'महाद्भिज्ञेय दल्लम्य महा यहस्पितिष्ठुप् '। 'शुकोऽसीअयवां शुक्रीऽनुष्डुप् '। 'माणाय नम इति तिस्तृणां महा शनिषिद्रुप् '। 'राहुराजानं महा राहुन्विद्रुप् '। 'यसे प्रश्नुरिति नृषस्याययां केतयः स्निष्डुवाद्ययोरन्स्याऽनुष्डुप् ग

क्याधिदेवतानाम्। 'मा नो विदक्षिति चतम्णां ग्रह्मा नद्रस्मिः दुव्। 'कामिरिव मन्यो मह्मास्करद्विष्टुव्'। 'यत इन्द्र इति पश्चानाम-पन्नी विष्णुसिद्धुव् अन्या गायत्री। विष्णुपीतवे '। 'म्रह्ममङ्गातमिति सप्तानामधर्मा प्रमा त्रिष्टुव्') ' 'इन्द्रो ज्यातीवि शृषस्य मह्माद्विः, प्रास्तिद्वुव्, । इंद्रतीतवे०'। 'क्षी गृरसुदिति नृषस्य मह्मा यमसिष्टुव्। यमगीतवे०'। 'क्षीहितः वास्त्र इति ह्यीरपर्वा कालोड्डान्दुव्'। 'क्षवर्वोङ्क्तरस्तिदिति चतस्यणामधर्मा वित्रगुप्तसिद्धुव्'।

णय प्रवाधिदेवतानाम् । ' अभेमैन्य इति तृत्तस्य प्रवापितिष्टुप् । । ' शामे देवीति चत्रस्यां प्रवाप्तित्वप्तं । गायमे । । ' सत्यं वृह्द्वतामिति प्रवा प्रितिव्यत्यः । ' याव द्रम् दित्य चार्यं वैज्यवं भाग्यत् । । ' राष्ट्रा प्रवाप्ते विवयं वैज्यवं भाग्यत् । । ' राष्ट्रा प्रवापते विवयं व अववंद्राण्यत् । चार्याने प्रवापते व स्वदित्या प्रवापते विवयं अववंद्राण्यत् । ' प्रवापते न स्वदित्तं व्योप्रवा प्रभापतिकिष्टुप् । ' शरम् केस्यष्टानामध्यां सपाः पद्भिः । ' व्यापते ।

षय विनायकादिपश्चानाम् । 'निर्व्हसमिति चतरहणां द्रविणो-दा वितायकोउनुस्द्रप् । 'वृतनानितमध्यं दुर्गारिद्रप् । वायोः सवितुरिति द्वरोरपर्भा बायुक्षिष्ठप् । 'पुरं यो श्रद्धण इति चतरहणां प्रवाजाशोऽनुस्द्रप् । 'जिन्ता प्रक्रणेयस्य मताऽधिनी चिरन्द्रप् । अय कोक्यास्त्रानाम् । वज्ञेन्द्राप्तियमानां वृत्यस्त्रपः प्रासुक्ता एव ।

'यस्यासो कासनीति तिस्रुणां ब्रह्मा निर्कृतिसिष्टुप्'। 'उदुत्तमं ब्रह्मा वरणसिष्टुष्'। 'बायोः सविदुरिति चायवीयो द्वपुचः' प्राग्वन् 'शकं भूमोरित चलकः। सोमस्य मानो विदक्षिति चलकः इंशस्य'। 'शेवनकेरयष्टातो, रभेवस्य' । 'श्रह्मज्ञ्ञानमिति श्रह्मणः सप्त'। एतानि पूर्वतत्।

अथ वस्वादीनाम् । वस्त्रादित्यक्र्रमहतां होनमन्त्रा एव । 'ब्रह्मन-ज्ञानमिति सप्त ब्रह्मणः '। 'यत इन्द्रे इति पश्चाच्युतस्य '।' मानोऽविद-भिति चतस्र ईशस्य ' 'विपासिहिमिति पडकेस्य '। एतानि पूर्ववत् । वनस्पतेहींममन्त्रा एव । सतः स्वस्वशास्त्रीयं स्विष्टकृद्भयातानहोमादिना पूर्णाहुतिप्राग्नावि होपं कर्म कुर्युः । ततो यज्ञमानी मण्डपप्राग्द्वारकल्या-सभीपे 'त्रावारमिन्द्रं गर्ग इन्द्रखिण्डुप्"। इन्द्रपीत्यर्थे वलिदाने विनि-स्वापं जाताराज्य मार्च क्यांच्या स्वाद्भाय सपरिवाराय योग: 1 'के प्रावारिमन्द्रम् । 1 क्टाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुष्पाय सहाविकावासे स्वीपं भाषमध्यस्य समुप्यापि न समः 1 इति मापभक्तवर्षि दस्वा, 'भो क्ट्र दिशं रस्, वर्षि सस्न, मन्, सकुटुन्यस्य मायु कर्चा क्षेमकची शुभकची शान्तिकची पृष्टिकची तुष्टिकर्तो भव ⁹ इति प्रार्थयेत् । एवमाप्रेय्यादिषु होमोक्तरस्यादिमन्त्रै-बंहिदानं प्रार्थनं च । एवमधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितेश्यः सूर्यादिप्रहे-भ्योऽपि होमो कैरतत्तरमन्त्रैविनायकदुर्गावारवाकाशवास्तोक्पतिक्षेत्राधिः पविभ्यक्तत्रमम्त्रेहोंमोचैरेत । तत आचार्यो यभगानान्वारव्यः सुचि भवित्ववाद्यान्य व्यवस्था ना नात्रक्षा विकारण्याच्या प्रश्नित पूर्वास्य स्वर्धेत विवार्धे स्वर्धेत व नात्रिक्ष विकारण्याच्या यहीत्व पूर्णाहर्षि श्रुद्धवादा । तत्र मन्त्राः । 'समुद्राद्धितित तृष्यस्य गीतमारे वास्त्रवे अपितः सिद्धुप् । पूर्णाहुती विनिद्योगः १ । च्यस्येऽपि विनिद्योगः । 'सूर्वीनं दिवो भरद्वाजो वैधानरिखष्ट्रच् । धुनरिप्रवेसुन्द्रादित्याखिष्टुच् । पूर्णा वृद्धिविधेदेवाः शतकतुरचुप्टुच् । सप्त ते लग्ने सप्तवानिप्रजनती । धार्म ते वामदेव आपी जगती १। के समुद्राद्भिं । के मुपान दियो । के पुनात्वारुद्रा० के पूर्णार्विक । के समते अप्रेठ । के धाम तेठ कृषि स्वाहा ' इति । यभमानस्तु " इदमप्रये वैश्वानराय वसुकद्रादित्येश्यः दावत्रववे सप्तवतेऽप्रयेऽक्ष्यत्र न सम । इति त्यजेन् । कावीयानां स 'मुद्धानं दिव इत्येव पूर्णोहुतिमन्यः"। 'आप्रय इहं न मस् " इति स्यागः। सामगाना हु प्रजापतिर्श्विपर्गायनीठन्द इन्द्रो देवता।यशस्त्रामस्य यजन नीयप्रयोगे विनियोग. १। 'पूर्णहोमं यससा जुहोसि योऽस्मै जुहोति वरः मम्मे दरावि । वरं वृणे बहासा भामि लोके स्वाहा ' इत्यनेन स्रुनेणैव

होमः । इन्द्राय इदं न ममेरित त्यागः । यतो यसोधौरया हीन्यामीति सङ्कल्य वडामानी वसीसिर्ता चुड्यान् । मन्त्रास्तु, धाप्तिमीळ इति नवानां मधुच्छन्दा वाह्मापीयत्री । वसीसीर्तायां विनियोगः । विण्णोर्ज्ञ क्षिति वण्णां दीर्थतमा विण्णुर्विष्णुर्य् । वाते विविदिति पण्यद्वानां गृरसम् । रहित्र पण्यद्वानां विविद्यानां । यो विविद्यानां विविद्यानां । विविद्यानां विविद्यानां विविद्यानां । विविद्यानां विविद्यानां । विविद्यानां विविद्यानां विविद्यानां । विविद्यानां विविद्यानां विविद्यानां विविद्यानां । विविद्यानां विविद्या

सुरासवामभिषिभ्यन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः । बासुरेबी जगनाथस्तवा संदूर्पणो विभाः ॥ प्रमुख्यानिरुद्धः भवन्तु विजयाय ते । आखण्डलोऽग्निभेगवान्यमो वै निर्मतिसाया ॥ यरुणः पवनश्चैय धनाष्यक्षस्तथा शिवः । व्रक्षणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥ कीर्तिर्रुश्मीर्धितिमेंचा प्रष्टिः श्रद्धा किया मतिः। सुद्धिर्रुजा वपुः शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्च मा**तरः** ॥ एतास्तामभिषिभानत देवपतन्यः समागताः । भादित्यध्यन्त्रमा भौगी सुधजीवसितार्फजाः ॥ ^{*}महास्त्रामभिविधन्तु राहुः केतुश्च सर्पिताः । देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसप्रवागः ॥ भरपयो मनवो गायो देवमातर एव घ । देवपल्यो हुमा नागा दैत्याञ्चाप्सरसां गणाः ॥ मन्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानी वाहनानि प ! भौपत्रानि च रत्तानि कालस्यावयवास्य वे ॥ ·िस: सागराः शैलासीर्थानि जलदा नदाः ।

पते त्वामभिषिधन्तु सर्वरामार्थसिद्धये ॥

्र कर तच्छेयोराष्ट्रणीमहे ? इति । ततो वनमानः स्नात्वा ग्रुकमात्वारक्षण्यस्य आचार्याशीनसम्पूर्व तेश्यो दक्षिणां दवात् । कत्राचार्याय धेवः । ब्रह्मणे कृष्णोऽनह्मन् । एवं सदस्यत्विग्रद्वारपाणदिश्यो ययार्शाकः ।

र सदस्यात्वग्द्वारपालाादभ्या ययाः - तथा—-

68

महानुद्दिश्य देया: । ततः शाच्या माह्मणान् भोजयेत् । सङ्क्रस्यये-द्वाइश्यते । ततो दोनामायेभ्यो भूयती दक्षिणां दयात् । मण्डल्द्र-बतानां प्रद्यीद्देशतां चोत्तरपुत्रां छत्ता, यान्तु देवणाः, आस्त्राति मित्रुयोणे 'धनियु महाणस्येण' इति ता चत्यात्य विस्तृय मण्डपादीन् प्रतिमादीक्ष सश्चेत् सम्भारानाचायीय मित्रपत्ता, 'सस्य स्मृत्याणः, प्रमातातु दुर्वतो क्षेत्रित परित्या कर्मेश्वरपर्णण छत्वा विमाशियो गृद्दीत्वा साक्षमाहृत्य मुद्दश्चतो सुक्षोतिक सर्व शिवस् ॥ इति जोमहृत्यक्षमुत्तानाजीक्ष्यक्ष्यते दानसमुक्ते दानपरिभाषाप्रयोगः।

अय दानानि।

मास्त्ये- अथातः सम्प्रवह्यामि । इत्यादिना पोडश महादानानि । यथा-

ा यथा-आर्च तु सर्वेदानामां तुलापुरुपसंज्ञितम्। हिरण्यगर्भदानं च श्रद्धाण्डं तदनन्तरम्॥

मरपपादपदानं च गोसहस्रं च पश्चमम् । , हिरण्यकामधेतुञ्ज हिरण्याश्वस्तपेव च ॥

हिरण्याश्वरयस्तद्वद्वेमहस्तिरथस्तथा । पञ्चटाहुरुकं तद्वद्वरादानं वयैव च ॥ द्वादशं विश्वचकं च ततः करपलतास्मकृम् ।

ः सप्तसागरदानं च रत्नघेनुस्तवैव च ॥ महाभूतघटरतद्वत् पोडशः परिफोर्तितः । ससादाराच्य गोवित्समापवितिस्तराहो

सरमादाराच्य गोविन्दशुमापतिविवायकौ ॥ महादानमध्यं खुर्याद्विमैश्लेवानुमोदितः । इति ॥ तथा—

पोडशारिलमात्रं तु दश ह्वादुश वा करान् । मण्डपं कारयेद्विद्वान् चतुर्भद्रासनं वुधः ॥

' भद्रासनानि द्वाराणि ' इति केचित् । ' कुण्डसमीपान्यासनानि ' इति परे ।

तथा---

सप्तहस्ता भवेद्वेदी मध्ये पञ्चकराऽयवा। तन्मध्ये तोरणं कुर्यात्सारदारमयं दृढम् ॥

पोडशहस्तपक्षे सप्तहस्तदशद्वादशहस्तयोः पश्वहस्तेति। सा च पूर्वमेन निर्णीता । सस्यां मध्यगत्तप्राक्त्यूत्रं पूर्वपश्चिमयोः शाके हुदीदेवदाराधी-पणीियत्वकदम्बनाञ्चनादीनामन्यतमिर्मितं सप्तहस्यं चतुरसं स्तम्भः द्भयं निष्यम् । ईस्तद्भयं भूमो स्तम्भयौरन्तराञं हु इस्तचतुष्टयम् । तयौरुपरि हस्तमिता चुडा। इस्तमितं त्यक्त्वा व्छित्रं वा कार्यम्। प्रमुत्तरङ्गोऽपि स्तम्भसमातीयकाम्रवस्तिः पञ्चहस्तः। तयोवितस्तिमात्रं रयक्तवा कृतविकः स्तम्भजृहयोर्वितस्तिमात्रजुद्धास्तकराभ्यां वा स्तम्भ-बिलवीर्निषेदयः । तदेतत्तोरणम् । उत्तरङ्गमध्येऽधीमागे लीहं कटकमकुरा वा कीछेन निवेश्य तदुत्तरङ्ग काष्ट्रारपडहु लावलम्बियुलावलम्बनाय। हुला तु पूर्वोक्ता काष्ट्रमयी दशाहुलसूत्रवेष्टनस्थूला चतुर्भिः सार्देवी चतुर्मिः र्हरतेरींघी बर्तुला प्रान्तयोगीय्ये च पडहुकोन्मिता चतुरसा कार्या। तस्यां च तुलावहीये पृहुद्वयं चतुष्टयं वा निवेदपान्तयोर्मध्ये च पृहुत्रयं पडहुत तिवेदय मध्ये चान्ये चतुर्विद्यतिर्वन्था विवेदयाः सौवर्णाह्याः। त्तरयाः पडक्करुयौरन्तयौरघोभागे बल्डिशकृति ध्वकद्वयं निवेश्य तन्मध्ये घोर्ध्वमाग प्रम् । ततस्वाश्रवलानां दशाष्ट्रपदशतेः क्रमात्मधानगुःसार्वः त्रिप्रादेश्च्यासवर्तुंहे पश्चचतुरुयङ्गुलोच्छितप्रान्ते ताप्रवतुर्वेहयान्थिते फलके हौद्दाभिषिद्दस्ताभित्रावस्त्रीयः यद्धलाभी रज्जुभिवर्तुलान्तयोः रवलम्बयेत्। यथा फलक्योभूमेख विवस्तिमतमन्तरं भाति । हेमा-द्रिरूपनारायणादिभिश्च काष्ट्रमये कलके चक्के। तथा---

ष्टुर्भास्तुण्डानि चरवारि चतुर्विञ्च विचञ्चणः। सुमेयलायोनियुतानि सानि सम्पूर्णकुमानि सहासमानि । सुवाप्रपावद्वयसंयुवानि सपासप-प्राणि सविप्रसाणि।हस्तप्रमाणानि विलाज्यपुष्पपूर्णेपदागानि तुर्दाभ- नानि। पूर्वोत्तरेहस्तमिताऽय वेशी महादिदेवेश्वरपृजनाय। 'विस्तारायामो • च्छायहरतमिताः इति केचिन्। विनस्युच्छाया इति हेमाद्रिः। तदुक्तं —

गर्तस्योत्तरपृर्वेण वितस्तिद्वयविस्तृताम् । बगद्वययतां वेदी वितस्युच्छायसयुताम् ॥

मास्ये---

48

द्विरङ्गुलीच्छितो वपः प्रथमः समुदाहृतः । बङ्गुलोच्छ्रायसंयुक्तं वप्रद्वयमथौपरि ॥ ब्यह्मस्तत्र विस्तारः सर्वेषां कथिती बुधैः । इति ॥

सथा-

अनेन विधिना यस्तु तुलापुरुपमाचरेत् ॥ प्रतिलोकाथिपस्थाने प्रतिमन्बन्तरं बसेन् । विमानेनार्थवर्णेन किङ्किणी जालगालिना ॥ पुत्रयमानीऽप्सरोभिश्च ततो विष्णुपुरं व्रजेन् । क्ल्पकोटिशतं यावत्तरिमेंहोके महीयते ॥ कर्मेक्षयादिह पुनर्भेवि राजराजी भूरासमीसिमणिरश्चितपादपीठः। श्रद्धानिवती सवति यहसहस्रवाजी दीप्तप्रवापशिवसर्वमहीपछोकः ॥

यो दीयमानमपि पश्यति भक्तियुक्तः कालान्तरे समरति बाचयतीह लोके। यो वा श्रणीति परतीन्द्रसमानलोकं

प्राप्नोति धाम स पुरन्दरदैवजुष्टम्। इति ॥

अथ तुलापुरुपदानप्रयोगः । तत्र अधिवासनात्पृत्रेदिने फूरीकभक्ताः दिरिधवासनदिने यममानो देशकाछी सङ्कीत्य व्रहाहत्यादिसर्वपापनाः शपूर्वकसर्वमन्बन्तरकाठावच्छिन्नसर्वेठोन पालस्थानाधिकरणक्वासोत्तर् कालाप्सरोगणाभिधितकालस्णितकद्विणीगणमण्डिताकेवर्णविमानकर्णवै-कुळ्भुवनगमनानन्तकस्पकोटिशवाबधिपूषायुक्तविष्णुपुरवासोत्तरास्त्रिल-भुपाळमीळिमणिमाणिक्यमालोपरश्चित्रचरणपीठत्वविशैषितराजराजत्व-श्रद्धानुविद्धयज्ञसहस्रयाजित्वप्रदीप्तप्रवापारीपमहीपाछविजयकामी विष्णु-प्रीतिकामी वा यः मुलापुरुपदानमहं प्रतिपादियये इति सङ्गल्य,

एकस्यां प्रतिनायां गोविन्दं, परायागुमायविविनायकौ च गोविन्दाय
तम वतायविविनायका-भां नम इवि प्रंपूर्य, विप्रत्यं च संपूर्य,
विप्रात्तां गृहीत्वा, पोटश मातृः सत वसीयांश्य संपूर्य, नास्तीश्राद्युः
प्रयाद्वायनत्युः तिबद्धारपाञ्चरणवदीयकपुष्कंपूनताति पूर्वोहे इत्यारपराहे गुरुसहितो मण्डपपृमां छत्यात् । तव ऋतिवतः प्रतिकुण्डमेकैर्क
कटशास्य पूर्वाकेमेन्टेः स्थापयेषुः । पं कटशस्थापवं गुरः हुन्यात् । शेव दे । तव ऋतिवतः त्यरवङ्गवेऽमि स्थापयेषुः । गुरुस्तु महावेथां गोडः
हार्गः महस्यां च सर्वतोभद्रं विकित्य वहेवतासस्यामेत्र वेद्यां मित्रान्त्र्यः स्वार्यक्षयः संप्रया नवस्वविद्यां प्रतिनान्त्रः
हार्गः महस्यां च सर्वतोभद्रं विकित्य वहेवतासस्यामेत्र वेद्यां मित्रान्त्र्यः
हार्गः सर्वत्यां च सर्वतोभद्रं विकित्य वहेवतासस्यामेत्र वेद्यां मित्रान्त्रः
हार्गः सर्वत्यां च सर्वतोभद्रं विकित्यः वहेवतासस्यामेत्र वेद्यां मित्रान्त्रः
हार्गः सर्वाविद्यानस्यन्त्रेकपः स्वक्तांप्रत्यक्षायाः
हार्गः स्वत्यां स्वत्याः सूक्तपाठान्त्राम्यक्रत्याः विश्वत् । महिनान्तः
हार्गः सर्वत्याः सूक्तपाठान्त्राम्यक्रत्याः विद्यस्याविद्याणिहितिः
प्रात्तन्ति सर्वते स्वतं ।

भूमिर्भूमिमगान्माता भूमिर्मातरमप्यगात्। भूपाम प्रनेः पञ्चभियोऽस्थान्द्वेष्टि स भिषवाम् ॥ इति भूमि स्ट्रशेत्। ततस्तोरणस्पर्शः।

दुलायहस्य पूर्वस्यां सुप्रभं नाम नोरणम् । महावीर्थे महाकायं सुवर्णसदशप्रभम् ॥

महावीथ महाकाय सुवणसटशत्रभम् ॥ अत्र द्वारे रिथतः शैलो मास्यवांख्य महात्रुतिः ।

भग द्वार रियतः राजा माल्यवाच्य सहायुग्तः । यहोहि सुनम योरण, तुलायहं रख, निर्म नाशय । 'स्रिमीके' इस्यामाहनम्।

वक्षिणाझां गतं यस्य भीमाख्यं नाम तोरणम् । महावीर्य महाकायं भिन्नान्त्रनसमप्रसम् ॥ सन्तर्भारे स्थितः होत्री विकासे नाम सन्तर्भः

क्रांचार निर्माणिक क्रिक्यों नाम महाच्छः । एहोहि-भीमतीरण इत्यादि पूर्वेवत् । 'इस स्वा ! इस्याबाहनम् ।

पश्चिमां दिनामाश्चित्व सुदंष्ट्रं नाम तोरणव् । तत्र द्वारि स्वितः शैलो गन्धमादनसंहकः ॥

पश्चेहि सुदंप्दूतीरण इत्यादि । ' वम्र भायाद्वि र इत्यावाहनम् ।

उत्तरस्यां दिशि तथा विकटं नाम वीरणम् । महावीर्ये महाकायं ग्रुहस्फटिकसन्निभम् ॥

महावीये महाकायं ग्रुहरफटिकसन्निभय् ॥ सत्र द्वारि रियतः शैकी हिमबांध महागुतिः । नानि। पूर्वोत्तरेहस्तमिताऽय वेदी यहादिदेवे धरण् जनाय। 'विस्तारायामो• च्छायेहस्तमिता' इति केचिन्। 'वितस्युच्छाया' इति हेमाद्रिः। चहुक्तं—

गर्तस्योत्तरपूर्वेण वितस्तिद्वयविस्तृताम् । वप्रद्वययुवां वेदी वितस्त्युच्छ्रायसंयुताम् ॥

मास्ये—

44

द्विरद्वस्त्रीच्छ्रितो कप्रः प्रथमः समुदाहतः । बाह्यसेच्छ्रायसंयुक्तं वप्रद्वयमयोपरि ॥

ह्यहुत्स्तित्र विस्तारः सर्वेषां कथितो तुषैः। इति ॥ तथा—

भाग अभिन विभिन्न थातु तुआयुरणमाचरेत् ॥ प्रतिकोशाधिपस्थाने प्रतिमन्दन्तरं वसेत् । विमानेनार्थवर्णन किङ्किणोशालमाकिना ॥ पूप्यमानोऽप्रसारिम्य ततो विल्युपुरं प्राप्तेत् । कृत्यकोतिशतं वाववासिंहोये महीयते ॥ फर्नश्रुपादिह पुनर्युवि राजराओ

भूपास्त्रीसिक्षणिरश्वितवाद्द्यीठः । भद्धान्दितो भवति यहसहस्वयात्री दीप्तप्रतापत्रितसर्वमहीपसोकः ॥

थी दीयमानमपि पत्रयति भक्तियुक्तः कालान्तरे स्मरति वाचयतीह स्रोके।

यो वा शृणोति पठवीन्द्रसमानलोकं प्राप्तोति धाम स पुरन्दरदेवजुष्टम्। इति ॥

स्थ तुलापुरपदानाययोगः । ततः स्विधासनात्मृबैदिनं स्वैकस्तराः दिरिधवासनदिने वनमानी देशकाळी सद्दीर्थे श्रवहत्यादित्ववैपापनाः शर्वेकसवैमन्वन्यरकाळाविच्छनसवैळीकपाळस्थानाधिवरणकवासोत्तरः स्वाजस्योगणाभिष्ठितकाळरणारेकद्विणीगणमिष्टताक्वर्णविमानकरणवै-प्रस्तुवनगमनानन्वरक्तकोटिराताविष्यृत्वापुर्विक्युप्रस्तासोत्तरास्त्रिकः मृण्यासीलिमणिमाणिक्यमालोपरि त्ववस्तुप्रस्ताप्तिक्वरम्यान्तिकरम्याने विण्यु-प्रदानिवद्यसादसम्बानिकरणदीप्रकाषाद्येषमहीवाळविश्वकामी विण्यु-प्रीतिकामी स्व सः तुलापुरुष्टानामहं प्रतिकादियन्त्व दृति सङ्गरस्य

एकस्यां प्रतिमायां गोविन्दं, परायासुमापतिविनायको च गोविन्दाय नम उमापतिविनायकाभ्यां नम इति सुंपूज्य, विप्रत्रयं च संपूज्य, निमातां गृहीत्वा, पोडल मानृः सप्त वसीर्घाराश्च संपूर्य, नान्दीश्राहपु-ण्याद्वाचनगुर्शृत्विद्धारपालत्ररणतदीयमधुपर्श्वपृत्तनानि पूर्वाहे छत्वाड-पराहे गुरुसहितो मण्डपपूना कुर्यात् । तत भतिवनः प्रतिकृण्डमेकैकं कसदामपि पूर्वे किर्मन्त्रेः स्थापवेयुः । ' कलशस्थापनं गुरुः कुर्यात् ' इति परे । सत प्रतिवज्ञः स्वस्वग्रुण्डेऽप्ति स्वापयेयुः । गुरुस्तु महावेद्यां पोड-शारं महवेयां च सर्वतीभद्रं विख्लिय सहैवतारतस्यामेव वेयां प्रतिमास वा सर्यादिवनस्पत्यन्वैकपश्चाशदेवताव्य संपृत्य नवमहवेदिकछशस्याप-नतद्भिमन्त्रणानि प्राग्यरहत्वा सर्वेकर्माप्यक्षतया तिप्रेत्। ऋत्विजस्तु महादिहोमसूक्तप्रपद्वारा सूक्तपाठान्त्राग्वरकृत्वा श्विष्टकृदादिपूर्णाहुति-प्राक्तनं कर्म कुर्यैः ।°

> भूमिर्भूमिमगान्माता भूमिर्मातत्मप्यगात्। भूवाम पुत्रैः पशुभियोंऽस्मान्द्वेष्टि स भिषताम् ॥ इति भूमि स्प्रशेत् । ततस्तोरणस्पर्शः । वुलायहस्य पूर्वस्यां सुप्रभं नाम तोर्णम् ।

वुद्धानस्य हुन्या जुन्म स्वाधीय महाकार्य सुविधानस्य स्वाधीतः । अत्र द्वारे रिभवः शैलो माल्यवाद्य सहासुतिः ।

पद्योहि सुप्रम शोरण, तुलायसं रक्ष, वित्रं नाशय। 'अग्निमीळ' इस्याबाहनम् ।

दक्षिणाञां गतं थस्य भीमाख्यं नाम तोरणम् । महाबीर्य महाकायं भिन्नाञ्जनसमप्रभम् ॥ भन्न द्वारे श्थितः शैलो विन्य्यो नाम महाचलः । पक्षेहि भीमतीरण इत्यादि पूर्ववत् । 'इपे त्वा ' इत्याबाइनम् । पश्चिमां दिश्वमाश्चित्य सुद्धूं नाम चौरणम् ।

तत्र द्वारि स्थितः शैलो गन्धमादनसंक्षकः ॥

एहोहि सुदंप्ट्रतोरण इत्यादि । ' सप्त आयाहि ' इत्यावाहनम् । उत्तरस्यां दिशि तथा विकटं नाम तीरणम् । महावीर्थे महाकायं शुद्धस्फटिकसिन्नम् ॥ तत्र द्वारि स्थितः शैलो हिमवांश्र महाशुतिः।

पहेरिह विकटतीरण इत्यादि। 'शं नो देवी ? इत्यावाहनम्। पूर्वोदिद्वारनामानि---

पूर्व द्वारं वितानं स्थादक्षिणं पुष्पकं भनेतू । पश्चिमं तु घनं नाम नामद घोत्तारं स्पृतम । इति ॥

इ.सुरः कुमुराश्चश्च पुण्डरीकीऽथ वामनः । शह्दुकणे, सर्वनेत्रः सुमुरः, सुप्रनिष्टितः ॥ मद्या नागश्च पूर्वोदिरीलेषु ध्वमनायकाः ।

' इत्तुद्द्वादिवाय पूर्वज्ञाच नमः' इति गन्यादि द्यात् । एवं हुतुः दाक्षविवाय, इत्यादिदशः ज्ञान् शदेवान् पूनवेन् । शुरुपेन्नातसः दित गुलपूरी माणमचर्गाञ्ज् नादाय तुर्वनादं कारयेन्मण्डपर्देद्वारदेशे ।

पद्योहि सर्वागरसिद्धसान्यै-

। रभिष्टुवी वन्नघराऽमरेश । संवीज्यमाजीऽप्सरसा गणेन

रक्षाध्वरं नो भगवनमस्ते॥

इवीन्द्रमावासः 'इन्द्राय नारः ' इवि संपूज्य, इन्द्राय साङ्गाय सप्-रिवाराय सायुभाय सम्राचिकाय एवः पुण्यादिसहियो मापसकारिली समेवि वर्षित न्याल् । एक्सफोप्यादिज्यकादिस्य । मन्त्रास्तु—

एक्कोहं सवाऽगरहन्यवाह मुनिप्रवीरैरमितोऽभिजुष्ट । तेजीवता छोक्रगणेन सार्द्ध ममाध्युरं रक्ष कवे नमस्ते ॥ एहोहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरचित दिन्यमुर्वे । ्राभाशुभातन्दशुचामधीस शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते ॥ पद्मिति रक्षोगणनायकस्त्वं विशाखवेतालपिशाचसहैः। ममाध्यरं पाहि शुभाऽधिनाथ छोकेश्वरस्त्वं भगवनगरते ॥ एक्षेहि यादीगणवानिभीनां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः। · विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि स्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥ एगोहि यहे मम रक्षणाय सुगाऽधिरुद्धः सह सिद्धसङ्घैः । प्राणाधिपः फालकयेः सहाय गृहाण पृत्रां भगनत्रमस्ते ॥ पश्चेष्टि यहेश्वर यहारक्षां विधासन मधानगणेन सार्वम । सर्वेषियोभिः विवृधिः सद्देव गृहाण पूना भगवनमस्ते ॥ एखेरि विश्वेश्वर नः स्विश्ङकपालसद्वाङ्गकरेण सार्धम् । छोकेन भूतेश्वर यहासिङ्घै गृहाण पूनां भगवनमस्ते ॥ एटेहि पातालघरामरेन्द्र नागाङ्गनांकिश्ररगीयमान । यक्षोरगेन्द्रागरलोकसार्द्धमनन्त्र रक्षाध्वरगरमदीयम् ॥ प्रहोहि विश्वाधिपते सुनीन्द्र छोफेन सार्द्ध पिनृदेवताभिः । सर्वस्य धातास्यभितप्रभावी विशाध्यरं नः सततं शिशाय ॥ त्ततः पूर्वस्यां दिशि किश्विज्ञुमिमुपलिष्य वत्र--

त्रेलीपये वानि भूतानि स्थायनाणि पराणि च । महाविष्णुदिवैः सार्द्ध रक्षां क्षत्रेन्त्र सनि मे ॥ देवदानवरान्थवी यक्षाराखसपत्रताः । सपयो सनयो गावो देवसातर पत्र च ॥ एते ममाध्यरे रक्षां प्रदुवन्तु सुदान्तिताः । महा विष्णुस रहस्र क्षेत्रणालो गणैः सह ॥ रक्षान्तु मण्डयं सर्वे प्रनृतु रक्षांसि सर्वतः ।

ग्रैको स्वाधिभ्यः स्थावरेश्यो भूतेश्यो नमसैकोक्यस्येभ्यरेश्यो भूतेश्यो नमः। देवेश्यः, राजोध्यः, गर्क्योश्यः, यद्येश्यः, राह्यसेश्यः, पन्नमेश्यः, स्विश्यः, मनुष्येश्यः, गोश्यः, देवताश्यः, श्रद्यो, विष्णवे, रद्राय, संत्रपाद्ययः, गणेश्यो नम इति संपूत्र्य भाषभक्तरितं द्यातः। ततः सापार्यमस्विको यज्ञमानश्वरणौ प्रश्लास्य वेद्यासुपविश्य योडसारे देलमयुम्बः

da!−

900

तुलां संस्थाप्य सस्यां दक्षिणप्रान्तादारभ्य सुर्ग्णादिधातुरम्धेषु सूत्रयन्धेषु वा चतुर्विदातिदेवता आवारा पूजवेत् । ताश्च- ईशः, शशी, मारुतः, हरू:, सूर्य:, विश्वकर्मा, गुरु:, क्यिद्विरोऽमिः, प्रतापतिः, विश्वदेवाः, कगद्विभाता, पर्भन्यशस्मा, धिनृदेवताः, सौन्यः, धर्मः, अमरराजः, अश्विनोः, तुरुशः, भिन्नानरणौ, मरुद्रणः, धनेतः, गन्यर्वः, जरुशः, विणुः इति। ततितत्तपु प्रतिमासु गोविन्दसूर्यधर्मराज्ञानावाहा संपृष्य गोविन्द-प्रतिमां द्वादशाङ्गलमुकादामा सुवर्णश्यस्यया वा तुलामध्ये च लम्बयेत्। सर्वेवर्षराजी तु तुलासमीप एव स्थाप्यो । ततः सर्वे ऋतिकः शान्ति पठेयः । सतो यज्ञमानः कृताभिवासनास्य साङ्गतासिद्धये गुर्वेल्पिमान पकेश्व इमां दक्षिणां संबद्दे इति शतया दक्षिणां छण्डलीपत्रीतफः टफाजुलीयवासांसि च द्यात् । द्विगुणं गुरवे । तहिने यजमानगुर्वर्ति-गुद्वारपाछानामुपवासोऽशकौ नक्तम्। जागरश्च मृत्यगीतादिना। एवं पूर्वेशुरशक्ती सची बाऽधिवासनं कृत्वा परेशुः क्रवमित्यकर्मा यज्ञमानः स्वस्ति वाचयेत्। ऋत्विजः पूर्ववस्वस्वकुण्डे पूर्णाहृति खाखशाखया जुहुद्यः कर्मशेषं समापयेषुध्य । अत्र प्रहाद्धिणा पूर्णपात्ररूपा नास्ति । अधिवासनदक्षिणातुळाद्रव्यदानेनान्यरिसद्धेः ३ इति पितामहचरणा-नामाशयः । ततो क्रित्निमः पुत्रपत्रीयुवं यजनानं प्राकृतुसमुद्रकृत्यं था पुरुषद्वारमहसमीपस्थकलकोदकैरभिविश्वेयुः स्वस्वशासीयैवेन्त्रैः

पौराणैश्च । ते तु प्रदर्शिताः 'सुरास्त्वाम् ' इत्यादयः । यजमानस्तु सर्वेदिष्यनुरिप्तः स्नात्वा ग्रुष्टमाल्याम्बरधरः पुष्पाश्वरिष्ठं गृहीत्वा सफलको तोरणाऽवल्लिकां तुलां त्रिः मद्क्षिणीहत्यातुमन्त्रयेत् । नमसे सर्वदेवानां शक्तिस्वं सत्यमाश्चिता । साधिभूता जगदात्री निर्विता विश्वयोगिना ॥ एकतः सर्वसस्यानि तथाऽनृतरातानि च । धर्माधर्म हतां मध्ये स्वाधिताऽसि जगहिते ॥ स्वं तुले सर्वे मुतामां प्रमाणभिष्ट् कीर्विवा । मां तोलयन्ती संसारादुद्धरस्य नमोऽलु ते ॥ योऽसी तपत्राभिषो देवः पुरुषः पश्चविदाकः ।

नमो नमस्ते गोविन्द तुळापुरुपसंद्रक । ां हरे सारयस्वारमानस्मात्संसारसागरात् ॥

स एपोऽभिष्ठियो देनि त्ययि तस्मान्नमो नमः ॥

इति तस्त्रतिमामनुमञ्च-सतुलं गोबिन्दं संयूत्र पुत्रस्तं प्रशिक्षणीरूत्य साम्ब्रुचर्मक्वयालं हती हैसी धर्मराजस्यू वयोत्रामरक्षिणकराभ्यामा-हाय वुलामच्यायलम्बितं गोबिन्दं पर्यतः । वुलोत्तरिक्षस्य आरुद्योप-विशेत्तत्र प्रावृक्षतः ।

, माल्ये-

ततोऽपरे तुलामागे न्यसेयुर्द्धिजपुद्भवाः । समादभ्यविकं यावत्काश्यनं चातिनिमेलम् ॥ पुष्टिकामस्य कुर्योत सूमिसंस्यं नराधिप ।

युषु 'पूर्व द्रव्यत्यासः पश्चासदारोहणम्' इति गोपथे सन्नानापुराण-चसु 'पूर्व द्रव्यत्यासः पश्चासदारोहणम्' इति गोपथे सन्नानापुराण-चननिरोमान् अथर्षशासीयविषयम् इति दानसीख्यादी । गोदीहं

यावस्थितदुदीरयेत्।

नमस्ते रावेभूतानां साधिभूते सनावित । पितामद्देन देवि स्वं निर्मिता परमेष्टिया ॥ स्वया धृतं कातसर्वे सह स्थायरजङ्गमम् । सवैभूतासभूतेशे नमस्ते सवैवारिण । इति ॥

बहिपुराणे हु मुहूर्तमात्रावस्थानमुक्तना—

जपेन्मन्त्रीत् पौराणान्पुनन्तु नेति च तृषम् । यया पवित्रमतुलमपत्यं जावयेदसः ॥ तथा ध्वेन पवित्रेण सुवर्णे तु पुनातु माम् ॥ रुद्रस्य सुमहत्तेजः फार्तिकेयस्य संभवः।

यथाप्रिदेवताः सर्वाः सुवर्णे च तदारमकम् ॥

स्था--थरकुतं में स्वकारेन मनसा बचता तथा । . हुएकृतं यसुवर्णस्यं यातु मुक्ति परा ग्रुमाम् । इति ॥

मात्सर्ये-

वतोऽवतीर्थं गुर्पेष पूर्वमर्द्धं निवेदयेत्। इत्तिक्योऽस्तरमर्द्धं च ह्यादुरकपूर्वनम् ॥ गुरुते मामरत्नानि कात्तिक्यक्व निवेदयेत्। बातेर्यं प्रयोगः । वेदिपश्चिमत चपवित्य सुवर्णारेद्वद्वोद्वेत प्रोद्य

अलाञ्चतहुन्यानीदाय मासपञ्चतिष्यावुहिस्य ' एकैतसन्यन्तरकाल इत्यादिराजराजन्तकायोऽहम् ' इत्यन्तं प्रागुक्तं महाप्रयोगगुनस्ता तथा सिततृतीयायां नार्यः सौभाग्यदास्तुस्यः । कुष्कुमेत्,प्रयच्छन्ति स्वणेत गुडेन वा ॥ न तत्र मस्रा होगो वा एवमेव प्रदापयेत् ।

विश्वामित्र:---

स्तित्ये रातुणा मत्ते सुवर्णेत्तोल्येचतुम् । सोममदे तु रीप्येण यथा दानं तथा राष्ट्र ॥ प्रवर्षेत्व सुखे दुक्त दरमः पश्चिद्दतः । ब्रह्मेणस्त्रायेतदािं भीयवां विद्यः ॥ द्र्युमार्थं जलं त्यसु निश्चियेद्विजसस्य । प्रीयन्तां पिनरः फास्ये सालं बैब विद्यावदः ॥ स्रवणं सिन्धुने लक्ष्मी, भीयता पार्वते सुद्धे । गर्नेगुँडैकं वासोधिः सौभाग्यं लब्ले परम् ॥ मीयता विश्वभाभीति दानामकोऽभिशीयते ।

मुद्धापुरपने राजन्यानि तत्त्वरमं परम् ॥ सर्वपपित्रद्धाद्धास्म मुक्ति चारचपुनर्भनाम् ॥ स्वपपित्रद्धाद्धास्म मुक्ति चारचपुनर्भनाम् ॥ स्वपपित्रद्धायेवर्भिग्नीयवा विश्वपिति रूप्ये ॥ पिवरः गीयन्ता-मिति कारये । गन्भगुडनासस्मुद्धायां पावेती ॥ स्वणे विश्वपाती

भारमनुत्ये भुजनी वा राजने रहामेव वा । भारमनुत्ये भुजनी वा राजने रहामेव वा । ्यो तदाति द्विजारयेश्यसस्याप्येतस्त्यं भनेत् ॥ इस्युक्तस्तरत्नुलयामपि सुवनेतुलफ्कयेव । इति फर्तन्यताऽपि सैवेदि केचित ।

इति रूप्यादितुस्रपुरुपः ।

अप नानारोगझदिस्तुलाविधिः।

तुञ्जपुरुष्यातस्य शृष्णु सुजुत्त्वविद्यम् । षयः लोदं मदातव्यं सवेरोगोपसान्तये ॥ कारतं व यद्यपेर देय तपुं वात्तीविकारते । स्पपात्तरं च सीतं स्वाचानं पुढे गुदानये ॥ पित्ततं स्वपिते च सत्यं मद्रमेहयोः । सीवर्णः सवेरोतिए मुखान्तस्यानेस्नम् ॥'

फलोज्ज्यं तथा देथं महणीदारुणे रुजि । 🦠 🖰 गौडं भस्मकरोगे च पौगं तु गण्डमालके ॥ आदलं चामिमान्धे च रोमोत्पाते स पौष्यक्रम । नाहरं काधजम ।

मधुद्रवं तथा देवं कासश्वासज्ञहोदरे । घतोज्ञवं तथा देवं छर्दिरोगोपशान्तये ॥ क्षीरं वित्तविनाञ्चाय दाधिकं भगवारणे । लावणं वेपनाशाय पैष्टं बहुविनाशने ॥

क्षत्रं च सर्वरोगस्य नाशने स्प्रतमेव च । भत्र तत्तत्तराताने तास्ताऽधिदेवताः पूज्याः । ताश्च गारुष्टे---छोटे महाभै(य:। कांस्पेडियनी पूरा च । सीसके वायु:। तासे सूर्य:। पैचले छतः । रीच्ये पितरः । सुवर्णे सर्वदेवताः । फले सोमः । राडे आपः । तान्युले विनायकः । फुसुमे शन्धवाः । जाङ्गुलेऽग्निः । मधुनि यक्षः । पृते मृत्युक्षयः । क्षीरे तारागणाः । वृधि सर्गः । पिष्टे प्रजापतिः । अप्ते सर्वेदेवता इति । **अथ** प्रताहित्लाविधिः ।

कवियुक्ता महोहत्री तुरुवा हुद्रुपस्य च । न संतापो इदि भ्वेत्सीरस्य तुख्या सदा ॥ सर्वकासप्रदाः सर्वाः सर्ववापश्चयद्वराः । यो ददाति तुलाः सर्वाः स गौर्यालयमाप्तुवान् ॥ मन्त्रेण ददाादिभगन्त्रितां तु सङ्गुटामेक्तमां द्विजेश्यः । स्यादि गौर्याः सदने सुपुण्यं न शोधरीर्गत्यसुपास्तुते पुनाम् ॥ ह्वं तुले सर्वभृतानां प्रमाणं परिकीर्तिता । मां तीलयन्ती संसारादुद्धरस्य नमीऽस्तु ते ।) इरवारुह्य क्षणं रिथत्वा चिन्तवित्वा हरवियाम् । • अवस्य तती द्यादर्थपाचमपापि वा ॥ गुर्त संपूज्य विधिवत्सर्वाछङ्कारमूपणैः । • विसर्भयेत्रमस्कृत्य भौजियत्या विधानतः ॥ होपं द्विजेश्यो दात्रव्यं स्तीभ्योऽन्येभ्यस्त्येव च । , इष्टबन्धुविशिष्टानामाश्चिताना बुदुन्यिनाम् ॥ क्दलीदलसंखो तु पश्चिपण्डां हिमाद्रिजाम् । कर्पुरत्य तुलां पूज्य कुइ हुमेन लमेल खाम् ॥ गुडं वा यदि वा खण्डं छत्रणं वाऽपि तीक्षितम्। थी दशादातममा तत्या नारी वा पुरुपोऽपि या । प्रमान्त्रचन्नवरस स्यान्नारी स्वात्पार्वेतीसमा ॥ ष्टलादानस्य सर्वस्य विभिरेप उराहतः ॥

> इति रूप्यादितुलादानविधिः । अय रूप्यादितुलादानमयोगः ।

का वर्षिमाञ्चलको चित्रासुष्ठी दश्यते वर्षे नेथ्यम् । अय सुवर्णियाः इत्याणां दुव्यदानवर्षामः । तय इत्यवेदां न क्रमेदः । तत्र स्ट्येण दुव्यवा सुवर्णनुख्यस्त्रव्यवः । इति वत्रेल्यवाऽपि पद्गे सैन । रत्नदुक्त्यामपि सदेव मत्त्रम् । स्ट्येण प्रवृत्तमेद्वानाः । विष्तुत्वः रक्तपित्तनाः । तानेश्य दुव्यवाः । क्रियेण वत्रमानाः । वशुष्याद्वानाः । सदिवारस्तराः । त्रोदेन स्वेतेदः सदेशिरताः । पृतेन वर्ष्ट्रवायदेनाः । गुदेन प्रकृतिस्ताराः । नत्त्रद्यः सीमार्यं च । व्यत्र च वरियस्तिस्त्रपिक्षण्याविक्तास्त्रान्ताः ।

द्विविष्ठोक्ती होयम् । छवणेन सीभाग्यं छावण्यं च । मधुना सीभाग्यं कासन्धासजलोद्रनास्य । तैलेन प्रजामाप्तिः । शीरेण पित्तनाशः सन्ताप-तिवृत्तिश्च । दश्ना भगन्दरनाद्यः । शर्कर्याऽसापत्न्यम् । अत्रेत सर्व-रोगनियुत्तिः । पिथेन दृद्धनाशः । बाम्रादिफलेन सङ्गहणीनाशः। पूरापरीर्गण्डमाछातादाः । कुद्धमेन सौभाग्यम् । तिळैः पापनादाः । पुर्वर्वेद्वरोगनाशः । ताम्बूलेन सुद्धतीगम्यम् । चन्दनेन सौन्दर्यम् । गन्धेन सौभाग्यम् । बक्षेः सौभाग्यं वक्षप्राप्तिश्च । कद्विराप्तिमान्धनाशः । सर्वेबिप्युप्राधियां । इति फलोहेसः ॥ अथ तत्तद्रव्यदेवताः । स्व्यस्य पितरः । रत्नानां विष्णुः । पित्तस्तस्य भौमः । ताम्रस्य सूर्थः । कांस्यस्य पूपाश्वितौ । त्रपुणी विष्णुः । सीसस्य वायुः । छोदस्य महाभैरवः । घृतस्य मृत्युकायः । गुडस्याऽऽपः । स्राणस्य विश्वधात्री । मधुनो यक्षः । तैलस्य विष्णुः । क्षीरस्य सारागणः । दश्नः सर्वाः । अत्रस्य सर्वदेवनाः । विष्टस्य प्रजावतिः । फलाना सोमः . पूनफलानामपि सोमः । कुद्भुनस्य गौरी । तिलानां विष्णुः । पुष्पाणां गन्धवाः । वाम्यूलस्य विनायकः । चन्द्रसस्य गम्धस्य च गम्धर्वाः । बस्राणां वृहस्पतिः । काष्टानां वन-स्पतिः । इति देवताः । [तत्र रूत्यकर्परतुखयोः सुवर्णतुखाफस्रमेत्र, इतिः कर्त्तव्यताऽपि पक्षे सैव । रत्नतुलायामपि वदेव फलम् । फलेपु रोगेपु च विशेष इति केचित्। तत्र बक्षे गन्धे कुद्रुमे लग्णे गुढै मधुनि च सीभाग्यम् । बस्नेषु बस्तप्राप्तिश्च । स्थणे स्रावण्यं च । सहकुमे मर्नऽवि-योगश्च । तेले वहुलाः प्रजाः । सर्वरोगेषु लोहम् । यह्मणि कारयम् । मर्शस खपुः। अपरमारं सीसम्। कुछे ताग्रम् । रक्तपिने पिचछर्। प्रदर्भेह्यो रूप्यम् । सर्वरीगेषु मृत्युनिवारणार्थे च सुवर्णम् । महण्यां फलम् । भरमके सर्वरोगेषु च गुडः । गण्डमालासु पूर्वकरम् । अप्रि-मान्दी काष्ट्रम । वायुजे रौगनाको पुष्पम् । कालश्वासजलोहरेषु मधु । छदीं घृतं हे जो इद्धवर्थं च । पित्ते क्षीरं सन्तापनिवृत्त्वर्थं च । भगन्दरे द्धि । कम्पे छवणम् । दृदुणि पिष्टम् । सर्वरोगेषत्रम् । शईरवाऽ-' सापत्न्यम् । चन्दने सौन्दर्यम् । सर्वासु वा तुलासु सर्वाणि फलानि । भय तत्तरमञ्ज्ञामस्य तत्तद्रीगनिष्टृत्तिकामस्य वा वत्तद्र्द्यमुखा होया । मध तत्तहरुवेषु देवताः । छोहे महाभावः । कांस्ये पूपाऽश्विनी च । सीसे वायुः । तान्ने सूर्यः । विचले सुतः । रूप्ये निवरः । सवणे -

सर्वदेवताः । पछै स्तीमः । गुडं आपः । वाम्बुछे विनावकः । पूर्व

दानमध्सः ' 208 गन्धको । काम्रेप्निप्तः । मधुनि यक्षः । घृते मृत्युख्यः । श्रीरे शारा-गणः । द्भि सर्पाः । पिष्टे प्रशापितः । अत्रे सर्वदेवताः ।] 'तुला तु शाकेह्गुदीदेवदारुत्रीपणीतिस्वकद्ग्नकाश्वनादिकाष्ट्रमयी सार्द्धचतुरस्रहस्ता दशाह्गुल्स्ववेष्टनस्यूला वर्तुला प्रान्तयोगेध्ये च पडझुरुमिता चतुरस्रा कार्यो । तस्याः पडझ्गुलयोरन्तरयोरघोमार्ग यडिशाकृतिकटकद्वयं निवेश्यम् । मध्ये चोध्वेभागे एकं तस्याः समान न्तराश्चमुविंशतिबन्धा घातुमया निवेश्याः। एकं फलक्द्रयमपि पश्च-चतुःसार्द्धत्रिप्रादेशमितं व्यासदृषं चतुरसं वा पश्चचतुरुपद्गृस्तोच्छि। तप्रान्तरम्यनार्थे जिभिज्ञतुर्भिको परकैर्युतं कार्यम् ।

अध सांप्रदायिकः प्रयोगः । अध कर्ता मासप्रशासुहिस्य अमुकः कामोऽसुकरोगिनिवृत्तिकामः सर्वत्र 'गौरिसदनसुपुण्यप्रामिशोकतुर्गति-तिवृत्तिकाम वृथरपाप्तिकामो बाऽसुकतुलादानं करिप्ये इति सङ्ख्य गणेशपूत्राचार्यवर्णतस्पूत्रवानि कुर्यात् । स्वस्तिवाचनमातृकापूत्रना-भ्युरियक्षभाद्धान्यपीति केचित्। वत आचार्या दभेष्यासीनी दर्भान्धार-धमाणः प्राणानायम्य करिष्यमाणतुरुद्धाननिर्विधवासिष्यर्थे गणपतिः पुत्रनं खस्तिवाचनं च करिष्ये इति सङ्गल्य 'गणेशपृत्रनं फुला स्वरितवाचनं ब्राह्मणैर्वाचियत्वा पुनर्देशकाली श्रम्यता पुत्रीकतत्तह्रव्येषु क्षों क्षां कामनां रोगनाशं चोहिल्य ' अमुकफलकामीऽमुकद्रव्यवुलादानं १६४) इत्सापनाः भग्यः राजायः। उत्तराताः व्यवस्थाः विश्वस्थाः विश्वस्थाः विश्वस्थाः विश्वस्थाः विश्वस्थाः विश्वस अथवा पूर्वोत्तां महाभैरवादिकां तत्त्वद्वव्येवतां गोविन्तं सूर्वप्रमाणाः च प्रतिमाण्युद्धयं संपृत्र वुळां गन्यादिभिरत्युद्धयः तत्त्यां सातुसयेषु सूत्रमयेषु सा चतुर्विश्ववित्रम्थेषु देववासत्तन्नामभिन्नतुरुप्यैन्तमभोऽन्तेन। रोषाद्य पूजवेत् । साअ ईशः १ शशी २ मास्तः ३ रुद्रः ४ सूर्यः ५ विश्वकर्मो ६ गुरुः ७ अद्विरीग्री ८ प्रजापतिः ९ विश्वेदेवाः १० जगद्विधाता ११ पर्जन्यशस्य १२ पितृदेवताः १३ सौन्यः १४ धर्मः १५ अमरराजः १६ अधिनी १७ तुळेशः १८ मित्रावरुणौ १९ मरुहणाः

२० धनेशः २१ गन्धर्वः २२ जलेशः २३ विष्णुः २४ इति । ततस्तुला-

करिच्ये ' इति सङ्कल्पयेत् । सनेत्र ' विष्णुपीतिकामी वा " अस्मि-न्कर्मण्याचार्यकर्म कर्तुमाचार्य त्वां वृषे ? इत्याचार्य वृत्वा गत्थासङ्काः शादिभिः पूजयेत्। तत आचारीः-यद्वसंस्थितं भूतम्० इति सर्पपान्ति-कीर्य, 'शुक्षी वी हच्या ' इति लृचेन, 'एतोन्विन्द्रम्' इति लृचेन, ' आपी दिष्ठा इत्यादिक्षिः कर्मेमुवं संप्रोह्य, 'स्वस्त्ययनं ताह्यमिति सक्षद्वयं

मुत्तरङ्गादिषु वद्धा फलकद्भै तथाऽनलन्नयेयथा भूमेर्नितरितमात्रमुचं । भवेत्। गोविन्दप्रतिमा च देमशृह्वख्याः मुक्तादान्ना सूत्रान्तरेण वा द्वादशाद्गुलेन तुलामध्येऽबलम्बनीया । ततो यजमानः पुष्पाव्यलि गृहीर ग तुरुां ति प्रदक्षिणी कृत्यानुमन्त्रयेत् ।

नमस्ते सर्वदेवाना शक्तिस्त्रं सस्यमाश्रिता । साक्षिभंता जगदात्री निर्मिता विश्वयोगिना ॥ एकतः सर्वसत्यानि तथाऽनृतशतानि च । धर्माधर्मे हतां मध्ये स्थापिताऽसि जगद्धिते ।। सं तुले सर्वभूतानां प्रमाणमिह कीर्तिता । मां सोल्यन्ती संसाराहुद्धरस्य नमोऽस्तु ते ॥ योऽसी सत्त्वाधियो देवः पुरुषः पश्चविद्यातिः । स एपोडोंबेष्टितो देवि स्वयि तम्माश्रमी नमः । इति ॥ ममो नम्हो गोविन्द तुलापुरुपसंदक ।

त्वं हरे , सार्य रामानस्वात्संसारसागरात् ॥ इति गौनिन्दमनुमन्त्रय पुनस्तुला गोबिन्दं च संपूत्र पुनः प्रदक्षि-णीरुत्य सर्थ दक्षिण करे धर्मराजं च बाम आदाय तुलावलस्त्रितं गोबिन्दं पत्रयञ्जलरशिक्ये प्राज्ञमुख उपविशेष् । ततोऽपरे शिक्ये साचा-

र्यादयो द्रव्यं न्यसेयुः । ततो गुहुर्त गोदोहनमात्रं वा श्यित्वा पठेत-नमस्ते सर्वभृताना साक्षिभूते सनावित । पितामहेन देवि लं निर्मिती परमेधिना ॥

स्वया पूर्व जगरतवे सह स्थावर महत्वम् । सर्वभूतारमभूतेरी नगस्ते सर्वधारिणि । इति'॥ ततोऽवधीर्थ देशकाली समृत्वा अमुक्रमचक्रमोऽमुक्ररोगनिवृत्तिकामः सवेत्र गौरीसदनपुण्यप्रापिशोकदुर्गविनिगृत्तिमाग ईधाप्रीतिमानो वा इरमात्मसमतो लिवममुकद्रव्यममुकदैववमाचार्याय बाह्यपेश्यक्ष संबद्दे इति दद्यादेतिर्मन्त्रैः ।

िते च---भगम्यागमनं चैत्र परदाराभिमर्शनम् । रीप्यस्थास्य प्रदानेन वानि नस्यन्तु में सदा ॥ असुरेषु समुदूतं रजतं पिनृबह्मम् ।

तस्मादस्य प्रदानेन रुद्रः संप्रीयवा मम ॥

इति रजतस्य।

परापनादपैशून्यादमस्यस्य च भक्षणात् । वरप्रजातं च यस्पपि वाश्रदानाट्यणस्यतु ॥

इति ताम्रस्य । यानि पापान्यनेकानि मया कामकुवानि च। कांस्यस्यास्य प्रदानेन चानि नदयन्त मे सदा ॥

इति कास्यस्य।

यानि पापान्यनेकानि मया कामक्रतानि च । लोहस्य तु प्रदानेन वानि नश्यन्तु मे सद्म ॥

इति छोहस्य ।

घृतं गावः प्रसूयन्ते घृतं गोप्यः प्रतिष्ठितम् । घृतमित्रा देवता घृतं में संप्रगृहाताम् ॥ घृतमिर्घृतं सोमस्वन्मयाः सर्वदेवताः । घतं प्रयच्छतः प्रीता भवन्त्यखिल्देवताः ॥ कार्य तेत्रो यदुद्धिं प्राज्यं पापहरं स्मृतम् । भाज्यं सुराणामाहारः सर्वमाज्ये प्रतिप्रितम् ॥ माज्यं तेशोमयं चैत्र माज्यं तेशोमर्थ सदा । तस्मादाज्यपदानेन कतः शास्ति प्रयच्छ से 11

इति घृतस्य ।

तथा रसानां प्रवटः सद्दैवेश्वरसो मतः । मम तस्मात्परां छक्ष्मी ददस्य गुड सर्वदा ॥

इति गुडस्य।

यस्माद्श्ररसाः सर्वे लवणेन विनाऽपि हि । अस्वादवस्तुवद्दानाद्वः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ 1वि खबणस्य **।**

यस्मात्पित्वां श्रादे च पीतं मध्वमृतोपमम् । तस्माचस्य प्रदानेन रक्ष मां दुःखसागरात् ॥

इति मधुनः।

वैञं पुष्टिकरं नित्यमायुष्यं पापनाशनम् । अमाद्गुस्यहरं युज्यमतः दातित प्रयच्छ मे ॥ इति तैलस्य।

 अल्ह्स्मीवार्णं निर्देशं सुसौभाग्यविवर्धनम् । श्रीरमङ्गलमायुष्यमतः शान्ति प्रयेच्छ मे ॥

इति श्रीरस्य ।

कामधेनोः समुद्धतं विष्योः प्रीतिकरं परम् । दधि तस्यं प्रदास्यामि वर्ल पृष्टि च देहि मे ॥

इति दधः ।

अगृतस्य कुछोत्पना इक्षुधारा हि शर्करा । सर्वत्रीतिकता निस्यमतः आस्ति प्रयच्छ मे ।।

इति कार्करायाः। अन्नमेत्र यतो सन्धीरक्षेमव जनाईन: 1

अर्ज ब्रह्मऽखिलत्राणमस्त् मे जन्मजन्मनि ॥ इस्पेन्नस्य ।

विष्टेऽलमन्त्रएव

इदं फर्ळ मवा वित्र प्रभूतं पुरतस्तव । तेन में सफलावासिर्भयेजन्मनि शन्मनि ॥

इति फलस्य। यद गुदङ्गसंख्यां कुङ्कमादिनिलेपनम् ।

पार्वेदपाः पार्वतित्रीरये तुम्बं दास्ये सदश्चयम् ॥ इति कुर्कुमस्य।

तिलाः पापहरा नित्यं विष्णीदेहसमुद्रवाः । तिलदानेन सर्व मे पाप नाशय केशव ।। इति विद्यानाम् ।

द्वादयन्ति मनी यस्मात्तस्मात्सुरमयः स्पृताः । इत्ता दद्त मे नित्यमत्याद्वादं सती श्रियम् ॥

इति पुष्पाणाम् ।

ताम्यूछं श्रीकरं भद्रं प्रहाविष्णुशिवात्मक्य । भारव प्रदानाहहााचाः शिवं ददव पुण्कसम् ॥ इति साम्यूङस्य ।

चन्द्रनावासमन्द्रारसखेष्टं दारकार्धित । चन्द्रतस्य प्रदानानमे सान्द्रानन्द्रकरो अव ॥

इति धन्दनस्य ।

जटामांस्युद्धयां देवीमेणनाभिस्युद्धवाम् । भत्तयाऽद्धं संप्रदास्यामि मम सन्तु मनोरयाः ॥

इति पस्तुर्याः । शरणं सर्वभूवानां छजावा वारणं परम् । सुवेपश्रीरायं यस्माद्वासः शान्ति प्रयन्छ मे ॥

इति वस्तस्य । सोमोजवानि दारुणि, जातवेदः प्रियाणि च । तस्मवेषां प्रदानेन श्रियं देहि विभावसो ॥

इति काष्टानाम् । इत्येवेभैनैस्वसङ्ख्याणि दस्या तसहेववास्यः शेषकरपयेत् ।

ययाः— अनेन रूप्यशनेन पित्तरः श्रीयन्तामिति वदेत् । ,

रत्नैविण्युः । विक्लेत्,भीमः । ताम्रेण सूर्यः । कांस्वदानेन पूपा-श्विनी । अपुणी दालेन कियु । सीसार्य दानेच बायुः । छोहदानेन महाभैरवः । घृत्दानेन 'मृत्युक्षयः' । गुहदानेनाऽऽवः । छवणदानेन विश्वषात्री । मधुरानेन वशुः । वैहरानेन विष्णुः । श्रीरदानेन तारा-गणः । प्राप्तिरिष क्षेत्रः । बाधादिष्तिः स्रोतः । बुहुरुमदानेन गौरी । विट्यांगेन विष्णुः । पुरायानेन गन्धवीः । साम्यूख्यानेन विनायकः । परद्भदानेन गन्धवानेन च गन्धवीः । बखदानेन मृह-शातिः। इन्यनदानेताऽप्तिः। एवं देवताभ्यः सङ्कल्पयेन् । क्षाचार्यादः बस्य कामस्त्रीते पठित्यां मृद्धीयुः । तत काचार्यः पृशेवाहिवदेवतानामु-सरपूर्वा कृत्वा 'यान्यु देवगणाः ' इति अक्रेण विसर्वपेन् । तती यमः मानसाः प्रतिवा आचार्योय द्यान् । आचार्यानुमत्या तोहितं प्रन्यमः श्येश्यो दीनानायभ्यो दंशान् । तत आयार्यादिश्यो दक्षिणां दत्ता भूगसी च दस्ता श्रीन्वाद्यणान्भोजयेत् । तवो विष्णुसमरणं कृत्वाऽिन्छदं बाचवित्या सुद्रगुतस्तुष्टो सुन्त्रीत ।] ब्याचार्यस्तु तत्तर्वता गोविन्दं सूर्य धर्मराजमीशादीय संपूच्य, 'डिच्छ ब्रह्मणस्पते ' इत्युत्वाप्य, ' यान्यु देशगणाः ' इति विस्त्रीत् । सत्रे यज्ञमानः प्रतिमादिमाचार्यकरे प्रति-पास शीन्वित्रान्संभीत्व भूतसी वृक्षिणा उत्तात् । इति श्रीमीमांसफः सङ्करमहात्मननीडकर्ण्यनं दानमभूने क्ष्यादिनुडादासप्रयोगः ॥

अथ हिरण्यमभेदानम् ।

मारस्ये--

जधातः संत्रवस्यामि देगदानमनुत्तमम् । साझा दिएवयाभीस्य महापातरुनासनम् ॥ पुण्यं दिनसथासाच जुळापुरुपदानवत् । पद्मित्रपृथानस्यस्यापन्छादनादिकम् ॥ स्वर्यदुर्गेपियसङ्गस्ट्रोफेनासग्रहनं नतः । स्वर्यदुर्गेपियसङ्गस्ट्रोफेनासग्रहनं नतः ।

छपोषितः उपकान्तोपवासः ।

पुण्याहवाचनं कृत्वा तद्वस्कृत्याऽभिवासनम् । प्राह्मगैकप्रयेत्हण्डं तपनीयमयं शुमम् ॥ द्वात्मप्रश्रुत्वेत्त्रपूर्वः देशद्वात्त्रपर्वेतम् । त्रिभागद्दीनविद्यारं प्रशस्तं सुरजाकृति ॥

प्राह्मणेर्गुर्देश्विमः सह यज्ञमानः । इति स्वमारायणः । उहुरख 'तैरेवानचेत् । इति महनस्वादे । इत्यं हिरव्यमभेष्मगङ्कोति क्षण्योज्ञागमञ्चरित्याष्ट्रयुक्षकमञ्जुतम् । त्रिमागेति, स्वायराम-रिशरङ्काञ्चलसारम् । सुरनो एउड्डः । वश्चकि मन्ये किन्यस्यकुम् इति उहुरः । 'मूलम्यामेषु सगम् । इति बाचस्यविमिधाः । द्वान-सागरे हु सितारमित्यस्यागे 'आग्यशीराभियृरित्यम्' इति पाटः । तत्र हुस्याभ्यामाभ्यक्षीराभ्यामेकदेशे वृरितमित्यदेशेः । 'अमिरमागे । इस्येरेकदेशवाधिस्वात् ।

> दशायाणि सरलानि धात्रं स्वी तथैन व । द्देमनाळं सपिटकं वहिरादित्यसंयुतम् ॥ तथैत्रावरणं नाभेरपत्रीवं च काष्यत्रम् । •पार्झतः स्थापयेत्तद्वस्तैमं दण्डं कमण्डलुम् ॥

दराष्ट्राणि दरारपण्डामि । लफ्ताणीति वा पाठः । 'तन अप्राद्धा-राणि सुर्गण्यंण्डानि । इति हेमाद्रिः 'असाणि । इति हामोदरः, ताति च तनेत । 'राद्धानेन्द्रारिक्टण्डणाद्यानामहास्त्रस्तरहुक्विसास्त्रामि हरा । रह्मानि पण्ड प्रसिद्धानि । 'विटक्कं अञ्चूणः श्री हेमाद्रिः । 'रशकारा वर्णसानण्डः' इति दामोपुरः । 'दानं नाकस्त्रे-दनार्थम् , सूची कर्णवेशार्या, सारेरावरणं वाषाकारम् ,'उपनीतसुपन-

यनार्थम्, दण्डकमण्डल् समावर्तनार्थीं, वतानि दशाखण्डादीनि हैमानि । इति हेमाद्रिः । नालोपबीतदण्डा एव हैमाः, अन्यतु प्रक्र-तमेव भाग्नम् १ इति तु युक्तम् । स्त्रेपु सर्वेरप्यदेमत्वाङ्गीकारात् । अत्र ' अस्ताणीत्यतेन रत्नादिदशकमेशोच्यते ? इति दानसागरः । ' दशाश्रा-स्ताणि च ' इति रूपनारायणः । 'दशान्तानि 'इति भूपाछः । दशाद्वीन ? 'इवि पाठे स्वविशेषणं चेदम् । पश्च स्वानीत्वर्धः' इवि विद्याधरः । मादित्यसंयुत्तमादित्यप्रतिमायतम् ।

तथा—

पद्माकारं पिथानं स्यात्समन्तादङ्गुलाधिकम्। मुकावलीसमोपेतं पद्मरागद्दलान्वितम् ॥ तिलद्रीणोपरिगतं येदीमध्ये वतोऽर्थयेत्।

पात्रमुखादेफाङ्गुछेन समन्ताद्थिकमष्टदछक्रमलाकारं पिथानं स्यात् । द्रोणः परिभाषायां क्रेयः । कुण्डद्देममानं तु यावता ततुक्तप्रमाणं संप-धते वाबद्वाद्यम्। छैद्वे तु---

हुर्योत्सहस्रक्वेण स्वधःपात्रं हिर्ण्यतः। तर्खेनादेपात्रं हु सहस्रेण द्वयं हु था ॥ त्रिपादं वाद्धेपादं वा सपादं सार्द्धमेव वा । द्विगुणं वा प्रकर्तेन्यं यथालाभं तु वा भयेत्।। सद्रक्षमं वा सत्छत्वा खणेपादैस्तु वेष्टयेत् ।

इति देममानशुक्तम् ।

ततो महालशब्दैन महाघोपरवेण च । सर्वीपचुद्रकेनैव साधितो वेदपुद्वतै: ॥ शुक्रमाल्याम्यरघरः सर्वोभरणमृचितः । इममुकारवेनमन्त्रं गृहीतकुमुमा खिक्तः ॥

वशासीमन्त्रणसन्त्राः प्रयोगे लेकाः ।

प्तमामन्त्रय शन्मध्ये माविद्ययास्त सद्दृष्ट्मुराः ॥ मुष्टिभ्यां संपरिगृद्ध धर्मराजचतुर्मुखी । जानुमध्ये हितः कृत्वा तिष्ठेदुच्द्रासपश्चक्रम् ॥ तथा--

गर्भाषानं पुसवनं सीमन्तीश्रयनं तथा ।

दुर्गीहरैण्यार्भस् वतस्ते द्विजपुहुवाः ॥ रामाचानादिग्रहणमनवजीभस्योगळ्शणम् । प्रजावजीयपुत्राभ्यां सेवर्गः तत्रं भावतेत् । दूर्यारसेन स्त्रीच्यं व्याहृत्या च पृवाहृतिः । इति हेमाही याहुजीकः ।

गीतमङ्गलशब्देन गुरुनस्थापयेचतः । जातकर्मादिकाः कुर्योक्तियाः पोक्का चापराः ॥

जातकर्मोदिका अपराध्य किया: कुर्यात् । तेन वीडश संवधन्ते इस्तर्थः । एवमेव हेमाद्विरूपनारायणादीनामाश्चरः । तेन गर्भाधान्यंसव-नसीमन्त्रोभयनानवलोमनानि गुर्वाचन्यतमः कुर्यात् । ततो गुरुर्वजमा-ममुख्यापयेत् । ततो जातकर्मनामकरणमिष्कमणानप्राशनवृद्धोपनयनः बेद्धतचतुष्ट्रगलमावर्गनोद्धादाः कार्याः । हेमाद्री तु जातकर्माविषु प्राचान पर्येन्द्राप्तेयसौन्यवतच्युप्रयगौदानसाहित्येनीह्नाहत्यागेन द्वादशस्त्रस् क्तम् । जातकमीविषु विवाहिषत्वशक्षित्रपश्चयक्षप्रवेशेन आदत्यागेन च पोडश चानरा इति यथाश्रुतमेव योज्यमिति मदनदामोदरी । पते च जातकर्मांचाः संस्कारा यजमानशास्त्रवेति सबीराची गरी। कर्त-अपरशक्तकशास्त्रवेति परः। युक्तं तु—'समावर्तनोद्वाहप°वपहा यजन मानेनैव खद्याखया कार्याः । इतरे ह्र गुरुणा यजमानशाखयैव र इति । फिलाखेतिकर्तव्यवयैव तेषां फलजनकरवस्य वल्दमत्वात् । कर्मान्त-रखे तु जातकर्मादीयां मानाभावः । सर्वेश्यः कर्मभ्यो दर्शपूर्णमासा-विस्यत्रेवाऽऽदयातामायेन प्रकरणान्तरायोगात् । त्रेवातत्रीया दीक्षणी-येतित्रत् वात्येव जावकर्मादीनि दानाङ्गवया विनियुग्यन्ते । कर्मान्तर-क्षेडपि चैतेषां जातकमादिविक्रिक्तिलोन फलिशासीयैवेतिकर्तव्यक्षा प्राप्नोति न गुरुशासीया तेन गुरुरेव यजमानशासीयो भवत्यसिन न्दाने । कैष्ययनसिद्धशानवस्त्रात् , जवैगुणंयाय । सत्र इव समान-करना यभमानाः । ते च संस्कारास्तरकमोनुष्यानपूर्वे तत्तरप्रधानमन्त्र-पाठमाञ्चेण कार्याः । स्वीशृहकर्तृके मन्त्रवर्जमतुष्यानमाञम् । सत्र क्षिया जातकर्मनामकरणनिष्यमणात्रप्राशनचुडाकर्मेषिशाहास्यसंस्कार-पद्कम् । तत्राऽपि विवाहः समन्त्रकः । शूद्राणां तु एते पर्पश्च महा-यहाश्चेत्येकादशानुस्थानरूपा एव इति सर्वे नियन्त्रकृतः । शिष्टासा वैवर्णिककर्तृकेऽप्यमन्त्रकानुष्यानमेवाचरन्ति । युक्तमेव चेदम् । सर्व-

अन्यत्कार्यम् । विवादे सप्तप्त्रीकमणपरिणयनयोर्निवृत्तिः प्रति-माया असंभवात् । अन्येव्वपि संस्कारेषु याधितं छुप्तः इति दिङ् । पोडराक्रियामावात् 'सीसद्योर्हिरण्यगर्भदाने अवधिकारः ' इति केपित् । तन्न ।

नरो वा यदि वा नारी एवं ब्रह्मत्मसंभवम् ।

यः करोति महायुष्यं तस्यापि न्द्रणु यस्कटम् ॥

इति हेमाद्रौ हिर्फ्यमभैनकरणे विष्णुवनिकेः खीणामिकारायनमात् । आतमसंभवं हिर्फ्यमभैन ' 'खीराद्रास्यु सध्योण' इति
सान्या बहुर्यति । तथा 'सूच्यादिकं च गुरवे दस्वा मन्त्रमिर्म
अपेत् । मन्तः प्रयोगे हेव ।

चतुर्धः कटदोर्भुवस्ततस्ते द्विजपुद्भवाः । स्नानं कुषुः प्रसम्राद्धाः दिन्याभरणभूषिवाः ॥ देवस्य स्थितः मध्यण स्थितस्य कनकारने । चतुर्भिः दुण्डसभिष्येः कुषुः कारवेषुः । मध्यः प्रयोगे । तत्ते दिरण्याभी च तेम्मी द्याद्विकाणः ।

अन्नापि सर्दिगाचार्याणा दानद्रव्यविभागस्तुलापुरुपवद्वान्तव्यः।

ते पूजाः सर्वेमावेन बहवो वा तदाक्षया । तत्रोपकरणं सर्वे गुरवे विभिवेदवेत् ॥ पादुकोपानहच्छत्रचानगरसन्धात्रनत् । मार्मे वा विषयं वापि यचान्यदृषि संभवेत् ॥

विषयो मामसम्हः । अन्यद्रतारि । मामारिकं च तुलापुरुषवदः प्रापि दक्षिणात्लेनान्नेति । अत्राप्यारमालद्भारं गुरवे दखात् । इति हिरण्यसर्भेदानविभिः ॥

अधैतत्मयोगः ।

देशकाको सङ्घीर्य ^६ सक्तककिक्कुपनिवृत्तिसंभावितनस्कृतिमहरू पित्रादिषुक्रपत्रविविध्यव्युषुत्रचौत्रमयौत्रादिसमुद्धरणपृश्चेत्रसिद्धसङ्घते-विक्तवासरोगणकरुकोठ्यवामरमाळावोत्रमानस्वैकैक्यन्त्रस्वसम्बाद-रिक्क्षमत्रेकोठ्याकुप्तिवाद्योत्त्रस्वात्रम्यक्रमेद्रस्वत्रम्यक्रमद्विक्यस्व वक्रमोठद्वं स्वो दिल्ल्यगर्भदानं प्रतिसद्वित्यवे १ इति प्रतिक्राय सुक्ता- पुरुषद्वद्दीक्षिन्दीमार्पतिविनायुक्ष्मुक्षाविमाह्यमहणमालूप् नाभ्युद्दिक्षमान्द्वपुण्याह्वाचनान् नार्वादिवरणमधुपकँदानमण्डपपूज्यानुवादिविनिमोतान्तं स्वयंत् । अत्र गुरुपेममानदास्त्रीय एव । वतो गुर्वावयां पोहशोपरिस्यादिन तिस्योपार्वे । ततः गुरुपेममानदास्त्रीय एव । वतो गुर्वावयां पोहशोपरिस्यादिन तिस्याद्वयां पोहश्यये हैमं पृष्वे नियाय कुण्यैक्ष्ये भृत्यविद्यादि एप् पृरियव्या । सुर्वावयां नियानं सुर्वावयां । सुर्वावयां नियानं सुर्वावयां । सुर्वावयां विद्यावयां विद्याव

नमी हिर्ण्यमभाँय हिर्ण्यकवचाय च । सप्तलीकसुराध्यक्ष जगतामे नामो नाम ॥ भूलोंकमसुलालोकासता गर्मे रथाशिवताः । क्रसादसरसा पंचा नामले विश्वचारिणे ॥ नामते अवनाधार नामले भुवनाश्रयः । समी हिर्ण्यामांव गर्मे वस्य विताबद्धः ॥ स्वास्थ्रये भूलासा अनुले कर्णे वस्यशियाः । समानमासुद्धराहोथदुःखसंसारसागरात् ॥

ततः पात्रे पुष्पान्तर्कि प्रक्षित्य समङ्गलयोपं तत्र प्रविद्येत् । गुर्हेरिकः अस्तु पात्रं विभागेनाऽऽङ्गाद्वेत्यः । यनमानस्य वन्नेष्टकृत्यो दिश्यान्त वार्षेत्रः करात्र्वदेतः मन्त्रवर्धेद्वयः । यनमानस्य वन्नेष्टकृत्येतः विद्यान्तिः करात्र्वदेतः करात्रवर्धेद्वयः वृद्धिका सात्रवेदे । त्रात्रे विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यान्तिः विद्यानिः व

'पश्चिमे चतुरो वेदाः' इति वाक्यादङ्कानि वेदस्याते, ⁽ प्रधान नीय-मानं हि तसाङ्कात्यकर्षति ' इति न्यायात्याप्यानि । छोकपालरू-पाण्याह विश्वकर्माः—

उमारूपं देवीपुराणे-

चतुर्भुजा द्विबाहुर्वा द्विनेत्रा वा विश्लेषना । कुण्डलालद्वताद्वेन्दुश्लराऽऽभरणान्विता ॥ गोरोचनानिमा गोरी खरितका नवयौवना ।

स्वतिका वाहुश्यां हुन्तै विदिश्चं हृतस्वतिकाकारेत्यथैः । गौरी च हिल्लानभागे । रूपनाहायणीये व्व 'अक्षसूत्रकमण्डलुकराभयहस्ता' इसुक्तम् । रूपमोरूपं—

पाशाक्षमालिकाम्मोजस्विणित्रियाम्यसीस्यसोः । पद्मासनस्यां कुर्वति त्रियं त्रेलोनयमातरम् ॥ गौरवर्णां सुरूपां च सर्वालङ्कारसृषिताम् ।

रीपमपद्मकरव्यमं वरदां दक्षिणेन तु ॥ ' कर्षेदक्षिणकरे पासाक्षमाले । कर्षावामे पद्माहकुरौ । अधोवाम-दक्षिणयोहमपद्मवरसुद्रां दस्वीति चलुईसीव ? इति दामोरटः ।

बसुहर्ष—

प्रसन्नवद्नाः सौन्था घरद्दाः राक्तिपाणयः । , पद्मासनस्या द्विभुजाः कर्वन्या वरदाः सद्दा ॥ दामोदरीये निगमे-

मापो ध्रवश्च सौम्यश्च चरश्चेवानिखोऽनलः।

प्रत्युत्रम् प्रभासम् वसनो नामभिः स्वताः । इति ॥ पद्मासनस्या द्विभुनाः पद्मार्भभकान्तयः ।

पद्मासनस्या द्विभुजाः पद्मगभाभकान्तयः करादिस्कन्धपर्यन्तं नीलपङ्कजधारिणः ॥

फर्मादस्कन्धपयन्तः नालपङ्कनधारणः ॥ अधःसंस्थितमेपादिरासयः प्रावृताङ्किकाः ।

जयस्तास्यतमधाद्याचाः माधुलाङ्किकाः । मेपादिराशिस्ते वामोदरीये 'मेध्युणकर्कटसिस्तृश्चिकमीनाः स्वना-मातुरुपाः । वाणुषरी दश्यति सिक्षुत्ताः क्टद्रबण्डसस्यक्यरी हमारी कृत्या । कुलाहस्तो सरस्कुलः । कुणास्योऽश्वज्ञचनो मकरः । घटशिरा नरः कुन्मः । (१) 'प्राकुलाङ्किकायोऽक्षायन्तिक्षत्रवरणः । इति वामोदरः ।

इन्द्राचा द्वादशादिस्यास्तेजोमण्डलमध्यगाः।

इन्द्रादिनामानि इरिवंशे—

इन्द्रो विष्णुर्भगस्यष्टा वचणोंऽशोऽर्थमा रविः।

पूरा मित्रो यमश्रेष पर्जन्यो द्वादश रम्बतः । इति ॥

मरुतस्तु---

धावत्क्रव्यस्याहरः वरवा व्यवधारियः। ऊत्तरभाग्निक्वित्रादिशितमाः मासुकाः। श्रष्टादश घान्यानि प्रत्येकं

द्रोणपरिमितानीति केचित्।

पूरेंगानन्तरायनं प्रशुम्नं पूरेरक्षिणे । प्रकृति दक्षिणे देशे सङ्कर्णणसतः परम् ॥ पश्चिमे पहुरो वैदाननिरुद्धमतः परम् ।

पश्चिम चतुरा वदानानरुद्धमतः परम् ॥ श्राप्तमुत्तरतो हैमं वासुदेवमतः परम् ॥

समन्ताद्गुइपीठस्यानचेयेत्काञ्चनान्युयः । स्यापयेद्रस्रसंबीनान्यूणेकुम्मान्दशैव तु ॥

अनन्तश्चयनस्यरूपं विष्णुधर्मोत्तरे— वेबदेवस्तु कर्तन्यः शेषमुग्रश्चतुर्भुजः ।

एक: पादोऽस्य कर्नव्यो छहम्युत्सद्गात: प्रभो: ॥ समा करञ्ज कर्तेत्य: हायभोगाङ्गसंस्यत: ॥ एक: करोऽस्य कर्तव्यस्तत्र जानी प्रसारित:॥

कर्तव्यो नाभिदेशस्थरतया वस्तापरः करः ।

१ संशोधनार्थं गृहीतेषु सर्वेषु पुन्तकेषु पन्ताक्षेत्र स्वरूपं नास्ति ।

दानमग्रहा

१२४३

नाभिसंभूवकमछे सुग्यासीन, वितामहः ॥ नारुरुपो तु कर्वन्या पदास्य मधुकैदमा । ।शहुचकगदादीनि मूर्तानि परितो न्यसेन् ॥

प्रशुप्तस्त्रणं पश्चारामिषु— दक्षिणोर्ध्वेदरे एवा द्वाच्छद्वमवःदरे । चक्रमूच्यं तथा बामे गद्दां द्वाच्या बुधः ॥

्यापेपुपुरावा प्रदासी रूपमान्विश्वमोदकः । इति ।। प्रकृतियद्यस्वयक्तरूपिणी, तथापि तत्स्थाने स्व्वभीत्रतिमा निनेदया । तद्यक्तं मार्क्णवेयपुराणे—

सर्वस्वाचा महालक्ष्मीसिरांगा परमेश्वरी । मातुलिङ्ग गरा खेटं पानपार्त्रं च विश्वरी ।। नार्ता लिङ्ग च योगि च रिश्नवी नृप मुद्धीन ।

सङ्क्ष्मेंजरूपं विष्णुवर्गेषरे— शासुदेवस्य रूपेण कार्यः सङ्क्षेणः प्रसुः । स तु शुक्रपुः कार्याः नीटवासा यद्वमः ॥

स तु शुक्रपण काया नाटवासा यदूचमः ॥ गदास्थाने च शुशकं चरस्थाने च लाङ्गलम् ॥ वेदलक्षणं महाभूतपटे वक्षतं ।

तथा—

ष्ट्रच्या चतुर्भुजं दक्षे झरसङ्गी तयोत्तरे । धतु सेटघरं वीरमनिषद्धं प्रचक्षते । इति नारदीये ॥ कप्रिप्रतिमा प्रागुत्ता । बासुदेवप्रतिमाऽपि नारदीये—

बाम्प्रोतमा प्रागुणा । पासुर्वजातमाऽाप नारद्वाय— बाम्प्रदेव, श्लिवः शान्तः सिताटनस्थञ्चसुर्भुनः । योगमूर्वार्द्धशहुन्त्र हदेसाऽपितहस्तकः ॥

यागमूदादराद्वश्च हदसाऽापतहस्तकः ॥ धारपेदुत्तरे चक्रं करे वै दक्षिणे गदाम् । इति ॥

एताश्च प्रतिमाः प्रकृतदानपरिमाणाःत्रुपकार्याः । एतान्युउँपीठस्थाः मर्चवेत् । पूर्णेतुरमानस्यापयेदित्यत्र समन्तादित्यनुपन्तनीयम् । तया—

> दशैव घेनवो देयाः सहेमाम्यरदोहनाः । पादुभोपानहच्छयचामरासनदर्पणैः ॥ मदयभोज्यान्नदोषश्चभळमारयानुष्ठेपनैः ।

होमार्थिवासनान्ते च सापितो वेरपुद्गनैः ॥ इममुचारयेनमन्त्रं त्रिःकृत्वाऽयः,प्रदक्षिणम् ।

सहेमाम्बरेति । हेमश्ह्रवः स्वत्साः कांस्यतोहनाः । एताध्य दक्षि-वाधिमुप्तरुत्याः । सवित्ये तु. सुवर्णमेव दक्षिणार्वमुप्तरूप्यमिस्युक्तम् । इसमुद्यारपेरिति । ब्रह्माण्यं जिन्नस्वित्योहत्य मन्त्रं, पठेत् । तत्र मन्त्रः प्रयोगे होयः ।

दवं प्रवान्याऽमरविश्वमभै वशाहिजेभ्यो दशचा विभव्य । सामद्वयं तत्र गुरोः प्रकल्यं समं यज्ञैन्द्रेयसकुकरेग ॥ सम्भागकेप्रमिति । गुरोर्भागद्वयं प्रकल्याधिशद्यभागानामेकैकं भागं त्रेशा विभव्य च्युक्तितिसंवर्षेत्रेय क्रस्तिगादित्यः समं दयात् । दानवान्त्यं कुछावरेष क्षेत्रम् ।

।गनायम ग्रुकानदुन कामग्र् स्थार—

स्वस्पे च होभं गुरुरेक एव कुमार्वेशकामिविधानपुराया । स एव संपूर्यक्रमोऽस्पविसेयोक्तन्याभरणादिकेत ॥ स्रत्र सहस्ररुक्त्र उत्तमस्तर्देत सन्यस्वददेतायमः। स्वयमपञ्चे स्पसं ज्ञेयम् । स्वितिवस्त्रीमिकै स्वस्पत्रियके। एकामिविधाने

क्षत्र सहस्ररकरम् उत्तमस्तर्द्धतः सन्यमसर्द्धतामाः। अवसमग्री स्वरुपंत्रं होवम्। विद्यक्षिपन्निर्मिते स्वरुप्तमिष्येकः। एकामिविधाने प्रतीच्यां युपं सुण्डसिति वरिभाषायामुक्तम् । एक एव गरस्तिगष्टकं विनेत्यथेः।

इत्थं च एतद्रस्थितं पुरुषोऽत्र कुर्यो-द्वह्मण्डदानमधिगम्य महिमानम् । निर्मुत्तकस्पायित्रद्वद्वर्षामान्यः ॥ सानस्यक्रपायद्विपति सहाप्यतिक्षः ॥ सम्तारवेत्पितृभितामत्तुप्रयोग्न-समुद्रियातियिक्वरसताप्टकं यः । मझाण्डदानसम्बद्धिक्यापत्रकेत्य-मानस्येये जनविज्ञस्यस्यविषम् ॥ इति बद्याण्डदानम् ॥

अथ मयोगः।

यजमानो देशकालौ सङ्गीत्वं 'सक्लपावरश्यपिनृपितामह्यपिन तामहपुत्रपै।जनन्युप्रियाविभिष्ठअपुरुपञ्चतारणविल्होमसङ्ख्यावः कारोपमानु कुलपानकौधराकलीकरणसन्तारणपनन्दपूर्वकाऽप्सरःसङ्गसहि॰ त्रिमानकरणक्षुरररिषद्गाप्तिकामोऽहं खो श्रद्धाण्डमहादानं प्रति . पाद्यिच्ये ' इति सङ्कल्य तुलापुरुपश्चनवत्यारम्भोपश्चासी गोविन्दादि-पुनादिमंडपपुनाचार्यदिविनियोगान्तं विदृष्यात् । तत भाचार्यो वेदिर-चित्रपोडशारचकोपरिस्थतिलक्षीणोपरि ब्रह्माण्डं स्थापवेन । एतत्वागाः दिदिह्य दिगाजाष्टकरोकपाराष्ट्रकप्रतिमाः स्वापितवा पश्चिमायां वैदञ्ज-शुष्टवतदद्भपट्रक्षपतियाः स्थापयेत् । ब्रह्माण्डोपरि शित्रोमाच्युतल्ह्मीसू-र्थप्रतिमां मध्ये चतुर्मुखप्रतिमां मध्य एव समन्तादप्रवसुद्रादशादित्यमः रहणप्रतिमा नवरद्वानि चेति स्थापयित्वा काशयवस्रेण महााण्डं वेष्ट-थित्वा प्रत्ये हे द्रोण रिमिनान्यष्टादश घान्यानि परिती निधाय प्राच्या-विविञ्च गुहवीठेच्यन=नश्यनप्रशुक्तप्र कृतिसङ्घर्षणवेद् चनुष्टयानिहसानि-बामदेवप्रतिमारकं च निचाय स्थापितप्रकाण्डादिव्यतिमाः व्रमेण नाम-मन्त्रगवाद्याचियस्या पश्ति दशपूर्णकुरभारसवसारस्थापयेन् । ततः पादु-कोपानच्छा बामरासनदर्पणभस्यभोज्य कलमास्यदीपानुहेपनामत्रैः सह कांस्यदोहनादियुक्ता - दश धेनूरपहरूय ब्रह्माण्डोपरि वितानं ब्रभी-यात् । ततः कुण्डसमीपस्यं कुम्भस्यापननवग्रहस्यापनाविपूर्गोहुस्यभिः पेकारतं हुलापुरुपवत् । एवमिभिषिको यसमानः शुहुवेपोऽश्वलि बद्धा वद्याण्डं त्रि.प्रदक्षिणीकृत्व-

> नमोऽस्तु विश्वेश्यर विश्वेशम जगस्तवित्रे मृगवन्नमत्ते । सप्तर्षिकोकामरभूतवेश गर्भेण सार्द्ध विवस्तिसक्षाम् ॥ ये दुःक्षितास्ते शुक्तिमो भवन्तु प्रयान्त्य शुप्पानि चराचराणाम् ॥ त्यद्दानराजाह्तवरावकानां ब्रह्माण्ड दोषाः ग्रस्त्यं प्रजन्तु ॥

इति पठेत् । वतो यममानः पश्चिमव उपिदेश्य गोर्शकेन सह प्रज्ञाण्डं दशभा विमन्त्राऽऽनायाँच भागद्वयं भागाष्ट्रकपृत्याको द्यात् । व्याऽपृक्षकाठे ' कम्कणावकश्चयकाम द्रव्यतं सद्भान्तवयुक्ता प्रज्ञा-प्रक्षेतावत्वित्वित्ववर्षातं विक्रितेषाणेषि स्थापिवमेतसम्बापस्त्रपुतं युम्पर्य गुर्वेत्वरूष्यः संबर्दे १ इति गुर्वेतिहत्तेषु मत्रे निश्चित् । प्राक्तायाकं प्रदाप्यं न्यूष्ट्र प्रतिगृद्धीयुः । ततः 'कृतेवद्रसाण्यद्यानयिन प्राप्तिदं विरूप्यमानेव प्रामादि च गुर्वे संप्रदे १ 'रित स्यान्। कृतिवामदिक्योऽवि ययादाकि हिर्ण्यं द्याव् । क्ल्परेयुश्च्यक्ष व गुरुरेव खशाखर्या पश्चिमायां वृत्तकुण्डे ह्वनादि कुर्यात् । श्रहाजापका-दयोऽपि प्रयोगान्तरवत्कार्याः न ऋत्विजः । ततो महवेद्यां महादिपूज-नादिविसर्भगान्तं गुरुः कुर्यात् । इत्येकाव्वर्थपक्षः ।

इति ब्रह्माण्डदानप्रयोगः ॥

अय कल्पतस्दानम् ।

मात्स्ये---

कल्पपादपदानारूयमतः परमञ्जनम् । महादानं प्रवस्थामि सर्वेपातकनाशनम् ॥ पुण्यं दिनमधासाच तुलापुरूपदानवत् । पुण्याह्वाचनं कुर्याह्रोकेशावाहनं सथा ॥ भरिवड्मंडवसंभारभूपणाच्छादनादिकम् । काश्वनान्कारयेद्वश्वाज्ञानाफलसमन्वितान् ॥ नानाविद्रङ्गवन्त्राणि भूपणानि च कारयेत् ।

नानाफलानि स्त्रीपुरुपतीगजनाजिमणिकनकरजतभक्ष्यफलादीनीवि

फेचिस् । फलान्येवेत्यन्ये ।

शक्तितिश्वपळादृष्वैमासहस्रारप्रकल्पयेत् । भर्द्ध यलप्रसवर्णस्य कारपैत्करूपपादपम् ॥

करपपादपदानार्थमुपनलप्रमुवर्णस्याद्धेन ब्रह्मादिप्रसिमासहितं करूप-पादपं कुर्यात् । द्वितीयार्द्धं तु चतुर्द्धा विभाग्येकैहभागेन खखदेवताप्रति-मासहितान्सन्तानादीन्कुर्यात् ।

गडप्रस्वोपरिष्टाच सितनस्रयुगावृतम्।

व्रक्षविष्णुशिवीपेतं पश्चशासं सभारकरम् ॥ प्रस्थो द्वार्थिशत्पळः परिभाषायां दक्षितः पोडशपलो वा । मधा-

दिपतिमाः प्राग्दर्शिताः । कामदेवमधलाध सफलनं प्रकल्पयेत् ।

विष्णुवर्मोत्तरे-

कामरेवरत कर्तव्यो रूपेणाऽप्रविमी शुवि । अष्टबाहुः प्रकर्तञ्यः शहुपदाविभूपितः ॥ चापपाणकरश्चेव महीदृष्टिवस्त्रीचनः । रति: प्रीतिस्तथा शक्तिभेंदशक्तिस्तयोग्जला ॥ चतस्यस्तस्य फर्चेच्याः पत्न्यो रूपमेनोहराः । चत्तारुत्र परास्तस्य कार्या सार्योस्तनोपगाः ॥ देशैः च मद्भरः कार्यः पत्त्वत्राणमुग्ते महान् । इति ॥

दामीदरीये स-

चापेपुशृकाशदेवो रूपत्रान्विश्वमोहकः । इत्युक्तम् ।

अधस्तादिति वद्यादिभिरप्यन्वेति ।

सन्तानं पृत्रेतस्तद्भनुरीयाशेन क्लप्येन् ।

तुरिवेडियोड्यराईस्य बर्तिना गुडम्स्वीपरिगवरां सितवस्रयुग्मशा-स्नापश्वक्रमशान्त्रितसं चोक्तम् । सन्दाराहिष्वपि वस्रगुगगचन्त्रीते ।

मन्दार दक्षिणे पार्श्वे व्रिया साई पृवोपरि । पश्चिमे पारिजात सु साविश्या सह जीरके ॥ सुरभीसंयुत नद्गतिलेयु हरियन्द्रनम् । सुरीमारोन कुर्गीत सौन्येन पटसयुतम् ॥

तुर्गायाम् अस्य तान्य राज्युन् । । (पश्चाप्येतं सूक्षाः स्वाप्येतं सूक्षाः समावश्चात्रिकतं स्व्वारामिकाताभ्यामप्यन्वितं । (पश्चाप्येतं सूक्षाः समावश्चात्रिम्यापैकारिकार्यान् स्वति सावश्चारिकार्यः स्वाप्येतः स्वप्येतः स्वप्येतः स्वाप्येतः स्वप्येतः स्व

: आप्रातमाचा । हरण्यनमस्त । साम्या तु म पद्मासना च सावित्री साक्षसूत्ररूमण्डलुः ।

इत्युक्स्बा—

सबस्सा सुरभी धेतुरागता प्रमुतस्तनी ।

इति सुरभीलक्षणम् । घृतादिकमपि प्रस्थपरिमित माहाम्।

कौशेयनसम्बीनानितृपास्यपद्धान्यसान् । सपाष्टी पूर्णपट्यान्पादुकाशनभाजनम् ॥ दीपिकोपानहच्छत्रचामरासनसमुतम् ।

परुमास्ययुन वद्भदुपरिष्टाद्वितानशम् ॥ तथाष्टादशः धान्यानि समन्तादुपशस्ययेत् ।

अञ्चनभाजनं भीज्यपूरितमाजनम् । धान्यानि प्रत्येकं द्रोणप-रिमितानि ।

> होमाहिवासनान्ते च स्नावितो वेदपुद्धवे । त्रि प्रदक्षिणमाष्ट्रत्य मन्त्रमेतमुदीरवेत् ॥

क्षभिवासनान्ते प्रातः पूर्णाहुत्यादिकर्तोन्तरं पुण्याह्वाचने कृते हुण्डा-भ्यारी कळरीः स्नापित इत्यर्थः । मन्त्रः प्रयोगे होषः ।

> एशमामन्त्र्य वं द्वाहुर्ये क्ल्पपाद्गम् । चतुरुर्यश्चापि क्लियस्यः सन्तानादीनप्रकल्पयेत् ॥

'कुण्डन्तुष्टयसम्बन्धिभयोऽष्टभ्य ऋत्विग्भ्यः सन्तानार्दाशकुरो दयात्' इतिगदनः । ' वतुर्णासेन न्तत्विजां सन्त्रनरणम् ' इति हेमाद्यादयः । जापकाविभ्योऽन्यैव दक्षिणा देखा ।

स्वरूपे स्पेकाप्तियल्ज्याँद्वरोसेवामिष्णानम् ।

न विक्ताराटचे द्वर्शीत न च विस्तयवान्भवेत् ॥
कानेन विधिना यात् महारानां नियंद्वेत् ।
कानेन विधिना यात् महारानां नियंद्वेत् ।
कासोरिमः, विरिद्धाः सिद्धारणिकत्रीरः ।
मूतान्भव्याश्च मतुजास्तारपेत्रीमसंमितान् ॥
स्तुयमानो दिशः एछे पुज्यीजमणीजनात् ।
विमानेनार्षवर्णेन विष्णुलोकं स गण्यति ॥
दिवि करणतां निविद्धारात्राजो भेवेततः ।
सारायणाक्योचने नारायणवरायणः ॥
सारायणाक्योचने नारायणवरायणः ।
सारायणाक्योचने नारायणवरायणः ।

इति कल्पपादपदानविधिः।

अथ प्रयोगः।

द्वभं सत्ये स्थापितवा सुद्दास्ते सद्दारकामनितमया सह निर्मितं सितववतुगान्तितं सत्तातं पूर्वतः स्थापित्वता सर्थे पृत्वभाषोपित् श्रोप्रतिमान्तितं मन्त्रादं दिश्चणतः स्थापित्वता स्थिभे शिष्ठमत्योपिर सार्वित्रोप्रतिमान्तितं पृर्वत्रतात्वातं स्थापित्वता तित्रत्यसोपिर सुर-श्रीप्रतिमान्तितं हरिन्यन्तं स्थापित्वता सर्वे प्रात्वपन्त्रादि (स्थापित् । तथा प्रार्च्यायदिव्हं क्षेरीयवत्तारिक्षुध्वन्यूष्टेक्टवान्त्यपित् । पादु-कोपानच्छ्यतिहर्षः स्थापित्वता प्रत्येकं होणमित्रवान्त्यान्त्रिति । कोपानच्छ्यतिहर्षः स्थापित्वता प्रत्येकं होणमित्रवान्त्यान्त्रिति । कोपानच्छ्यतिहर्षः स्थापित्वता प्रत्येकं होणमित्रवान्त्यान्त्रिति । स्वार्वान्तिहर्षाय मन्त्रात्यकः सावित्रीयदिवाय पारिजातावकः सुरमीसिहताय हरिपन्दनावकः 'इत्येदंत्रकारेण यथामेष्वमानाहान्ता-पुष्तिः संपूर्य विकानं योगीयात्। वतः बुण्डसमिष्क्रमसाननप्तदा-दिस्यापनामृतिवृत्योद्वत्यानियंकान्तं सुलापुरुपन्त्रत्। प्रवामितिक्रय वस्त-विकानक्षतिव्यान्तिः

> नमस्ते करुपकृक्षाय चिनित्वार्धेत्रदायिने । विश्वमन्ताय देवाय नमस्ते विश्वमृद्धेये ॥ यस्मारक्षेत्रेव विश्वमात्रा परापुर्त्वाक्षरः । मूर्वोर्मुर्वे पर्द वीत्रमनः पहि स्वायव ॥ स्वमेवाऽम्यवर्षेत्रमनन्तः पुरुषोऽत्रययः । सन्यानार्थेरुपेतः सन्याहि संसारसामरान् ॥

स्युक्ता पुष्पाचि क्षित्वा नत्या विद्यविद्यतः मास्मुलोऽदेश स्यापुक्ता 'वर्षणावरूपयेलादिनारावणुस्यापिकातः' इत्यन्त वस-रिते, अमुक्तीप्रायेलादिविराण्यविद्यार्थाते, युव्यं गुरु हर्म कस्य-ग्यारं मुख्येस्वायिकाविष्णुचित्रभारक्रम्यियं गुड्यस्पेपरि स्थित् सिवप्रस्युमान्यिवं कीशेवसंवीतं कटलाप्टकेष्ट्रमास्यक्रम्याद्वास्त्रमान् अन्तिविक्रीपानच्यत्रादिसद्वितं स्वित्यातं संपद्दे इति गुरुद्दत्तं असं स्थित् । गुह्य स्वीत्रात्वर्यृष्टेकं 'देवस्य सा' इति प्रतिगृह्य कामासुति देते, । वत 'वत्रमतिवार्योश्यदं हिरण्यं मामास्तारिकं च दक्षिणां तुम्यं गुरुदे संवद्यं १ इति वानि दचात् । एवं 'पृत्रेतो गुडम-स्वीपरि रिवतं सद्वारकामप्रविमान्वित्रमुख्यस्वरुप्यपुष्टरणान्वितं सन्तानं तुभ्यं वहूनायस्विजे संभददे । इति । तती विक्षणतो धृतः प्रस्योपरिस्यं मन्दारं श्रीयुत्तं यजुर्विद्यत्विजे, पश्चिमायां जीर हस्थं सावित्रीप्रतिमास्वितं पारिजातं सामशासिने, उत्तरतिस्तलप्रस्थोपरि स्थितं मूळे सुरभीप्रतिमान्त्रितं हरिचन्दनमधर्वविदे दत्त्वा चतुभ्योंऽि युवर्णमामरत्नादि शत्तमा दक्षिणां दयात् । जापकादिभ्यः प्रयाद्यात्। यहा गुर्वादी-सन्तोष्य सदनुक्तयाऽन्येभ्योऽपि ददात् । ततः भाषार्थः पुण्याह्वाचनान्ते पुनर्भहादिपूजां कार्यित्वा पीठादिदेवताविसरी क्रयात।

इति कस्पपादपदानविधिः।

अय गोसहस्रव् ।

मास्ये---

अथातः सँवषक्षामि महादानममुत्तमम् । गोसहस्रदानाख्यं सर्वपापहरं शुभव् ॥ पुण्यां तिथिमधालाच युगमन्बन्तरादिकम्। पयोग्रतं त्रिरात्रं स्यादेकरात्रमथाऽपि वा ॥ छोकेशाबाहनं कुर्वानुलापुरुषदानवत् । पुण्याह्बाचनं क्रुयांद्वीमः कार्यलयेव च ॥ परस्विक्ष्मण्डपसंभारभूपणारछादनादिकम् । युपं लक्षणसंयुक्तं वेदिमध्येऽधिवासयेत् ॥

गोसहस्राद्विनिध्कन्य गयां दशकमेव वा इत्यादि । पश्चीवर्त दाना-स्पूर्वम् । युपश्च पुष्टः सुरूपो नीरुग्माद्यः । यनु कैश्विद् । जनसम्बन्धः कलुरमुज्जलायतकम्बलम् ' इत्यादीनि वृषीरसरीयकम्ये वास्त्वे उसानि टक्षणानीर3क्तं तत्र मूर्वं गृग्वम् । गोसहस्राद्विनिष्कस्येति इशोत्तर-गोसहसादित्यर्थः । तथाच दशाबिकं गोसहसादित्यर्थः । तथाच दशा-थिकं गोसहस्रं क्षेयम् । तत्राप्यधिवायनीयं गोदशकम् । सहस्रमायु त नावइप पेतुत्वादर इति विवेक इति केचित्।

गोसहसं विदः छुर्याद्रसमास्यविभूवितम्।

सुवर्णशृङ्गाभरणं रौष्यपादसमन्तितम् ॥

बहिः कुर्यानमण्डपाद्वहिरासादयेत् । अन्तः प्रवेश्य दशकं वसमाल्यैः प्रपूजयेत् ॥ सुवर्णपण्टिकायुक्तं तासदोहनिकान्वितप् ।

सुवर्णतिलकोपेतं हेमप्टेरलङ्कतम् ॥ कांक्षेयवद्यसंधीनं माल्यगन्यविम्पितम् ।

हेमरत्नयुतैः शृद्गैश्रामरैश्रापि शौभितम् ॥

पादकोपानहच्छत्रचामरासनसंयुतम् ।

, सुवर्णचिक्टिकेरयत्र सुवर्णशब्दोऽशीतिगुश्वापरिभितहेमपरः । सरुटप-युक्तसुवर्णशब्दस्य , तथैव प्रसिद्धेः । अस ' शृद्धे दशसौवर्णिके ' खुराः पञ्चपताः, ' पञ्चाशत्पलं दोहन्पात्रमित्यन्यत्रोक्तं भाक्षम् । इति वे चित् ।

· यथाराकि ' इति परे । । पादुकोपानहादिपञ्चक प्रत्येकं गोदशकसं-

भीषे स्थाप्यम् । गवा दशकमध्ये स्यास्याध्वनी नन्दिकेश्वरः । कौश्यवस्त्रसंवीतो मानाभरणभूवित: ॥ • छत्रणद्रौणशिखरे मास्येञ्चष छसंयुतः । कर्वस्तिनेत्रो द्विभुजः सीम्यास्यो नन्दिकेश्वरः ॥

षामे त्रिश्रटमृरक्षे चाक्षमालासमन्वितः। उन्दे इति शिथवं इत्यर्थः।

हुर्यात्पल्यातादूर्ण्ये सर्वमेतदशेवतः । शक्तितः पलसाहम्बत्रितयं याबदेव तु ।

⁴ साभरणनन्दिकेश्वरनिर्माणाऽर्थमेतद्वेनमानस् ² इति हेमाद्री । ¹ गोभूदणाद्यवेतन्मव्ये ¹ इति दानसागरादौ । ⁴ गोशते वे दशाहोन सर्व-मेतरप्रक्षयेत् । गोशतास्यं महादानं सप्तरशमिति दानसौद्ये ।

पुण्य दिनमथासाच गीतमदुलनिः।वनैः। सर्वीपय्युद्दकरनानस्नापितो वेदपुद्धवै: ॥ इममुकारवेन्यन्त्रं गृहीतरुसुमाखाङिः ।

मन्त्र, प्रयोगे लेय: । इत्यामन्त्र्य ततो दशाहृग्ये नन्दिषेश्वरम्। सर्वेषशरणीपेतं गोयुगं च विचक्षण. ॥

भारिकस्यो धेतुमेनैका दशकाद्विनिरेद्येत । गवा शतमये ने ना तर्ही वाडम विश्वतिम् ॥ दश पञ्चाऽपवा दद्यादन्येभ्यस्तश्नुहाया ।

अन्ये ऋत्विञ सद्दासीनाञ्च विज्ञाः । सर्वपक्षेषु द्विगुणा गुरवे देयाः ।

. नैका बहुभ्यो देवक्या यतो दोपकरी सवेत् । यहगस्त्रेकस्य दात्रवयाः श्रीमदारोग्यत्रस्ये ॥ . श्रावयेच्युशुयाद्वाऽपि महावानानुकीर्वनम् । तदिने बहाचारी साबदीच्छेद्विपुळां श्रियम् ॥ भनेन विविना यस्तु गोसहस्रप्रदो भवेत् । सर्वपापवितिगेंक: सिद्धचारणसेवित: ॥ विमानेनार्कवर्णेन किङ्किणीजालमालिना । सर्वेषां लोकपालानां लोके संपूज्यते नरैः !! प्रतिमन्यन्दरं तिप्रेरपुष्पौत्रसमन्यितः । सप्तळीकामतिकस्य ततः शिवपुरं अजेत् ॥ शवंमेकोत्तरं चद्रस्पितृणां वारपेद्बुधः । मातामहानां तद्वश्च पुत्रपीत्रसमन्वितः ॥ याबलक्षराचं विद्येदाजराजी भवेचतः। राश्वमेघशतं कुर्याच्छित्रस्थातपरायणः ॥ बैध्यवं योगमास्याय ततो मुख्येत वन्धनात् । इवि ॥ इति गोसहस्तदानविधिः।

मान्येक्षुमळादिसंयुर्व प्रामुक्तं र्नादेकथरं स्थापवेदपुषयेत्, वरिर वितानं वश्रीवात् । ततः हण्डसंबीपस्यकुम्भस्तापनमहामापनमूणीहृत्य-भिषेकान्तं तुळपुरुष्यत् । वतो यत्रमानः पत्रात्सिक्ता पुष्पाण्यादाय सुष्पं मोरसस्याः

त्त्यों को विश्वमूर्तिययो विश्वमातृभ्य एवं च । होकाधिकाधिकाभ्यस्य रिह्मिण्यो मणी नग्यः ॥ गामामङ्गुष्ठ विष्ठनित सुवतार्थकविश्वादः । महात्त्रसार्थ्य देवा रोहिण्यः पान्तु मानदरः ॥ गावो मे जनदः सन्तु गावो मे सन्तु प्रश्वः । गावो मे हृदये निर्द्यं नग्यं मध्ये बसाग्यस्य, ॥ स्थानस्य हृपस्येण धर्मे एव समातनः । * जहमुर्त्यरिक्षानमन्नः पाहि समावतः ॥

द्दश्वाद्यवेष् । वतो भैदिपिद्धमभागे वर्णवेषय कुश्विवङ्गङान्याद्याय देशकालेकाराणाने ' (काङ्यपाव्ध्यानन्तरेस्वादिसंवारकोजनहारः) द्दर्यन्ते संकर् व्यापितः, ' एताः सुवर्णयेक्ष्मात्मव्द्वश्वाः सद्यप्तव्याप्तिः, ' एताः सुवर्णयेक्ष्मात्मव्द्वश्वाः सद्यप्तव्याप्तिः, ' एताः सुवर्णयेक्ष्मायङ्क्ष्यामात्मवत्वद्युक्ताः स्वरस्तत्वसुक्ताः स्वरस्तत्वसुक्ताः स्वरस्तत्वसुक्ताः स्वरस्तत्वसुक्ताः स्वरस्तत्वसुक्ताः स्वरस्ति । विद्याप्तिः विद्याप्तिः स्वरस्ति । स्वर्तिः प्रवर्षः प्रविद्याप्तिः विद्याप्तिः विद्यापतिः । स्वर्तिः प्रवर्षः । विद्यापतिः विद्यापतिः विद्यापतिः । स्वर्तिः प्रवर्षः । विद्यापतिः विद्यापतिः । स्वरस्त्रस्यः विद्यरकारसीयः क्ष्यकार्णवेद्यस्यः । स्वरस्त्रस्यः व्यवस्त्रस्यः स्वरस्त्रस्यः स्वरस्त्रस्यः स्वरस्त्रस्यः विद्यरकारसीयः क्ष्यकार्णवेद्यस्यः । सिद्यस्त्रस्यः स्वरस्त्रस्यः स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्यः स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्तर्यः स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्तर्यः स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्तरस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्तर्यः स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्तरस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्तरस्य स्वरस्त्रस्य स्वरस्ति स्वर्यस्ति स्वरस्त्रस्य स्वरस्ति स्व

इति श्रीमीमांसकभट्टराष्ट्ररात्मसभट्टनीलक्ण्ठट्टते दानमयुखे गोसहस्त्रदानविभि: ॥

अय'हिरण्यकामधेनुः ।

मारस्ये—

जयातः संवयक्षामि कामघेतुविधि परम् । सर्वकामपदं चुर्जाः सर्वपातकताशनम् ॥ छोक्तायाहनं तहसोमः कार्योऽधिवासनम् । पुत्रपुरुपवरहर्जाव्हण्यभण्यपदिकाः ॥ स्वत्येयकामिकव्हर्जाहरुवेश समाहितः।

कुण्डमण्डयेति गोविन्द् यूजावित्राद्मणमोजनान्त्रथमीणासुपलक्षणम् । गुरुरेवेरयृदिवक्तिययो, न जापकानाम् ।

काश्वनस्यातिगुद्धस्य धेतुं वस्सं च कारयेत् । उत्तमा पूछसाहलैसार्द्धेत तु मध्यमा ॥ कनीयसी तर्द्धेत कामधेतुः प्रकीर्तिता ।

यचिप यौषनादिवस्सहस्राणो गणः साहस्रस् , बहुवयनेन च सहहुस्व छक्त नवसहस्रं पछानीति भाति, तथापि कल्पतवीयपक्षेबहुत्क्वगेंऽपि समुख्य पद्मीचितः । खपनायनिमित्तवन् साहस्रीरिति ब्रुसाद्धरोपेन वैच्चेन् , चच्पत्स्यापि युडीनेपात आर्थः तेन चस्त्रहस्रोगेत्यधेः। स्पना-रायणहामोहरावयोऽप्येषम् । चस्त्रहस्राणीति काचिरकः पाठोऽप्रमु-मेवापि संवद्ति।

शक्तितक्षिपळादूर्वमशकोऽपि हि कारयेत् । गुडपेन्यतिषु 'यतुर्यक्षिम वस्तः स्यात् श्रह्यभिषानात् । ' अजापि क्लतसुर्वर्णचसुर्याम बस्तः कार्यः श्रह्मितस्यकृतः ।

येशां फुष्णाजिनं न्यस्य गुडमध्यसमन्त्रितम् । न्यसेदुपरि तां धेतुं महारत्नेरलङ्कृताम् ॥

हम्माष्टकसमीपेवां नानाफडसमिन्यवास् । तथारादरा घान्यानि समन्वास्यरिकस्ययेव् ॥ इतुदृण्डारुकं तद्वज्ञानाफडसमिन्यवस् । भाजनं चासनं तद्वतालदीहनकं वथा ॥

भाजनं भोजनपात्रम्।

कौरायवस्त्रद्वयसंष्ट्रताङ्की दीपातपत्राभरणाभिरामाम् । सचामरो १९०८किनी सघण्टां गणित्रिकापादुकरीप्यपादाम् ॥ 236

रसैश्च सर्वे: पुरतोऽभिजुंटां हरिद्रवा पुष्पकलैरनेकै: ।

कुण्डलिनी कर्णयोः कुण्डलयुताम् ।

अज्ञाजित्रस्युग्यस्टार्कराभिर्वितानकश्वोपरि पश्चवर्णम् । गणित्रिका अक्षमाला । दामीदरीये त गोडिकिकेति पाठः । पाद-किड्रिपीति तद्ये: । पादुकेति पादुकाः काष्टमय्यः, रौष्यं रौष्याल-द्वारः, तद्वयमि पादेषु यस्याः सा । अजाजी जीरकम् । कुस्तुन्तुरु-र्भान्याकम् । रसैर्मधुराम्छतिककपायकदुलबणरसयुवैर्द्रव्यैः।

कात्रत्तो महलवेदघोपैः प्रदक्षिणीकृत्य सपुष्पहरतः । आबाहयेसां गुडधेनुमन्त्रेद्धित्राय दशाद्य दर्भपाणिः ॥

आमन्त्रय शीसञ्जलस्पगुणान्विवाय विप्राय यः कनकधेत्रमिमां प्रद्यात् । प्राप्नोति थाम स पुरन्दरदेवजुर्छ कन्यागणैः परिवृतः पर्मिन्दुमौलेः ॥

विधायस्य स्वानमेकाभिष्ये । जापकादिभ्योऽस्यैव दक्षिणा । अने-कामिपसे तुलापुरुपरत्पश्चनयमिति केचित् । पश्चद्वेयऽन्येकःमै एव विमा-वेति हु युक्तम् । कामन्त्रणमन्त्रास्तु प्रयोगे हेवा इति ।

इति हिरण्यकामधेतुरानविधिः।

क्षथ प्रयोगः । तत्र यजमानोऽचेत्यातुक्त्या 'सर्वेपापभ्रयपूर्वकरः हुकत्यागणेत्द्रादिसेवितदिाववद्रप्राप्तिकामः श्री हिरण्यगर्भकामधेतुमहा-बानमहं प्रतिपाद्यिय्ये ' इति संदल्य गोविन्दादिमण्डपपुजादिगुवादि-नियोगान्तं बुलादानवरकुर्यात् श्युहर्वेदां थोडशारं विरच्य तदुपरि कृष्णाः किनं प्राव्यीवमुत्तरलोमकं न्याय बहुपरि गुडप्रस्थं च न्यस्य बहुपरि पळः व्याधिकययादाकि हैमी कामपेनुं सालद्वारां निर्माय तनुरीयभागनिर्मितं क्तं स्तनाभिमुत्दर्श्विणादिगवरिथवं विधाय पश्चरत्नासङ्घतां कौशेयद्रः व्यसंबीतां सीवर्णन्पुरह्वयमेत्रेयकसीवर्णेकुण्डल्ड्रयपण्टापाद्किङ्किणीकाः ष्ठपादुकाद्वयरीव्यपादचनुष्ट्रवामरणयुक्तां साझद्रोहनान्वितां सचामरां धेतुं स्थापित्वा तत्समन्ताद्वारिपूर्णेत्रस्माष्टकं, नानाप्रस्नानि, अष्टादशयाः न्यानि, इञ्जरण्डाएकं, भीजनभाजनपीठशीवच्छत्रपहुमद्रव्याणि, हरित्री पुत्पाणि, जीरकं, धान्याकं, शकेरादि स्थापयेम् । ततो वितानं वदा प्रतिष्ठापूर्वकं नाममन्त्रेण यथाशत्त्रपुषचारैः पूजरेन् , स्परि वितानं व बभीयात् । ततः कृण्डसमीपस्यकृष्भस्यापनपूर्णाहुत्यन्तमिभेकान्तं तुछा-; पुरुपनत् । प्रमाभिषिको यज्ञमानो गृहीतकुसुमाञ्जलिस्तां प्रदक्षिणी-रुत्योपविक्य,----

या छहमी: सर्वछोफानां या च देवेध्वविध्यता । चेतुस्त्रेण सा देवी मम शान्ति प्रयच्छतु ॥ देहस्या या च रहाणी शङ्कस्य सदा भिया । भेजुरूपेण सा देवी मम पापं न्यपोहतु ॥ विष्णोदेशित या छहमी: खाहा यो च विभावतोः । चन्द्रावैज्ञस्त्रक्तियां भेजुरूपाउद्धु सा श्रिये ॥ चन्द्रावैज्ञस्त्रक्तियां भेजुरूपाउद्धु सा श्रिये ॥ चन्द्रमें को स्वाच्यां सा चेतुर्वद्वास्त्रम् म ॥ हस्त्रीयी को स्वाच्यां सा चेतुर्वद्वास्त्रम् म ॥ स्वया या विज्ञसुक्यानां स्वाचा यहानुसाम्य या ॥ सर्वपायहां भेजुस्तस्त्राच्छान्ति प्रयच्छतु ॥

इति गुडधेनुमन्त्रैरावाद्य--

स्यं सर्वदेवगणमन्दिरमङ्गभूता

विश्वेश्वरि त्रिपथगोद्धिपर्वतासाम् । स्वहानशस्त्रश्चमस्त्रीकृतपातकीयः

प्राप्तोऽस्मि निर्दृतिमतीव परां नमामि ॥

लोके यथेप्सितकलातुबिधायिनी स्था• मामाद्य को हि भवदुःस्यसुरेति सस्यः।

संसारहु:राज्ञमनाय यतस्य कामं स्वां कामधेनुरिति देवगणा बदन्ति ॥

द्वामान्यविद्यादिकवित्यात् ' सर्वेषाण्यस्यपूर्वेकव्हर्यन्यायेन्द्रादिसेवितिद्वित्यदम्पतिकार्यः स्वर्ककार क्षेत्रपाश्यस्यपूर्वेकव्हर्यन्यायेन्द्रादिसेवितिद्वित्यदमाप्तिकामः स्वर्ककार क्षेत्रपाप्तिकामो वा गुरवे पूर्वोक्तस्त्य-व्यस्ताव्यक्षायाप्त्रवेतिमा कामधेतुं सुग्यं स्त्रसद्दे 'इति द्वात् ।
वतः ' क्षेत्रद्वात्मतिद्यामे मामस्त्यादि दिर्ण्यं वा संवददे न ममेति
पदेत् । सतः गुण्याद्ववाचनानन्तर सम्प्रानो महादि संपूप्तः गान्त्वस्यादिता वित्तर्येत् । मण्डवाष्ट्रवृष्ट्यं गुरवे निषेद्येत् । क्रमेसाह्नवासिद्वपर्ये माद्रणान्योज्ञधेत् ।

इति हिर्ण्यकामभेनुदानप्रयोगः ।

अथ हिरण्याश्वदानभ् ।

मार्स्ये—

अवाऽतः संपवस्यापि दिरण्याविविधि परम् ।
यस प्रसादाङ्ग्वनमनन्तं पद्धमन्तुते ॥
प्रवां तिथिमवाऽऽदारा इत्या श्राद्धण्याचनम् ।
लोकेतावाहनं खर्याजुलपुरपानवन् ।
लोकेतावाहनं खर्याजुलपुरपानवन् ॥
स्वत्वकृत्वद्धसम्प्रमुष्णाच्यादनादिकम् ।
हर्वप्येक रोधिषंजुकाद्धसम्प्राजिमकं ततः ॥
स्थापवेद्वेदिमप्ये तु स्वत्वाजिनम् ॥
सारिवहित्विष्याद्वेद्वयाजिनम् ॥
सारिवहित्विपद्यद्विषयाजिनम् ॥
सारिवहित्विपद्यद्विषयाजिनम् ॥
सारिवहित्विपद्यद्विषयाजिनम् ॥
सारिवहित्विपद्यद्विषयाजिनम् ॥
सार्विक्विपद्विषयाज्ञितस् ॥
स्वाद्विकीयाम् स्वतिक्विपद्विषयाज्ञितम् ॥
स्वाद्विकीयाम् स्वतिक्विष्यान्तम् ॥
स्वाद्विकीयाम् स्वतिक्विपद्विषयाम् ॥
स्वाद्विकीयाम् स्वतिक्विपद्विषयाम् ॥
स्वाद्विकीयाम् स्वतिक्विपद्विषयाम् ॥
स्वाद्विकीयाम् स्वादिक्वस्युताम् ॥

भारतेण्डसंयुतामिति दीर्घपाठः शय्याया विशेषणं चेति दामोदराधाः।

हस्वपाठेमाश्वस्येति हेमाछिमदनौ ।

सतः सर्वीपधिकानकापितो वेदपुद्गवैः । इम्मुवारवेन्मन्त्रं गृहीतवृत्तुमा चलिः ॥

मन्त्रः प्रयोगे क्रेयः। 'प्यमुवायं गुरवे तमर्थं विनिधेद्येत्'। शुरव इति सरिवसाय-पुरव्यणमिति स्ताकरपारिमाद्योः। गुरव प्रवेति बाचस्यतिमिश्राः। गुर्के चैदम्। चपरक्षणे सानामादात्।

तामभाः । युक्त परम् । व परक्षाणं वासानावार् । दश्या पाप्यवादानोकींकमञ्जेति द्याश्यत् । गोभिन्निक्मवतः सार्वस्तिकः परिपृत्तेत् ।। सर्वेशान्योषकरणं गुरवे विनिवेदयेत् । इसं हिरण्यायविधि करोति संवीज्यानी हिवि देवतेन्द्रैः ।

विज्ञक्तपायः स प्रशंग्ररारेः भागोति विज्ञैरश्चिवृज्ञितः सन्। इति ॥ इति हिरण्याश्वदानविधिः ।

कथ प्रयोगः । यज्ञमानः करोत्याणुक्त्वा 'सक्टटहरितनिष्टृत्तिसम् नन्तरशाश्चतसूर्देशेक्पातिपूर्वकृतेनत्रपूर्यमानवाविशिष्टावटोक्नमस्तो-तर्रासदपुत्रितत्वविनिष्टृविकृत्वोकपातिकामः यो हिरण्याश्चमहादान-

नमस्ते सर्वदेग्ध्य वेदाहरणळण्यः । वाभिरूपेण मामस्मात्पादि संसारसागरात् ॥ स्वमेव सप्तथा भूस्या छन्दोरूपेण भारतर । यस्माद्रावयसे छोकानतः पाहि सनातन ॥

इस्यामम्बय नामकृत्य अरोधारात्ते 'सक्तरेखादिवागुक्तसङ्करान्ते ' इमं हिएयात्रं कृष्णाजिनोपहिन्यलातिल्होणोपि स्थितं कीदोयन-स्रसंदीतमुष्योक्तमार्वण्डमतिमं द्याच्यामान्येशुक्त्रादिष्णेकुम्माद्यक्रावें प्रकासुत्रममुक्तगोत्राय गुरवे संत्रदे ' इति चस्रते जलं शिषेत् । 'दानमतिमार्थं मुक्लंद्रशिणां संत्रदे ' इति दक्षिणां दस्ता क्रारिया-दिश्यो गाः दाय्यागुक्तरुणं स गुरवे दस्ता पुण्याद्वाचनादिमद्दिसर्भ-नादान्तं कृत्या मादाणान्योगयेत् ॥

इति हिरण्याश्वदानप्रयोगः।

अथ हिरण्याश्वरयदानम् ।

मात्त्ये— ष्यातः संत्रप्रस्यामि महादानमनुत्तमम्।

जपातः संप्रवस्यामि महादानमनुत्तमम् पुण्यमभूश्यं नाम महापातकनागनम् ॥ पुण्यं दिनभथासाच कृत्वा त्राह्मणवाचनम् । " ठोषेशाबाह्नं सद्वचुलापुरुपद्गनवत् ॥ श्रत्विह्मण्डपसंभारभूषणाच्छादना दिषम् । ष्ट्रणाजिने तिलान्यस्या काश्वनं कारवेद्रथम् ॥ अष्टार्थं चतुरथं वा चतुत्रक सङ्ग्रास् । ऐन्द्रनीहेन सुम्मेन व्यवस्पेण संयुतम् ॥ स्रोकपालाष्टकोषेतं पद्मरागदलाऽन्यिनम् ।

तिला द्रोणमिताः। माभारामिपलाद्वे शक्तितः कारपेद्ववः ।

भारः परसहस्रद्वयम्---विया तुला पल्यातं भारः स्याद्विशविस्तुलाः ।

इस्वभिधानात् । ' एत्व सुवर्णमानपूराध्यप्रपुरपङोकपाळाश्वचनरक्षकसहितस्य ' इति निवन्षकृतः । दूवरो युगाधारकाष्टम् । छोकपाष्ट्यक्षणं ब्रह्माण्डे उत्तम् ।

च्लारः पूर्णकलका धान्यान्यशादशैव त । कौरोयबस्रसवीतमुपरिष्टाद्वितानवम् ॥ मास्येक्षुफ्छसंयुक्तं पुरुषेण समन्त्रितम् ।

पुरुपेणेष्टदेवताप्रतिमया समन्वितमधिवितम् । छत्रवामरकीशयवस्त्रीपानहपादुकाः । गीभिविभवतः सार्डे दचाय शवनादिकम् ॥

अधाष्ट्रवेन संयुक्त चतुर्मिरयवाशिथिः। द्वाभ्यामथ युव दद्याद्धमसिंहध्वजान्वितम् ॥

जष्टाऽर्थं चतुरश्च वेति काञ्चनाश्वपरम्। जष्टाश्वकेनेत्यादि तु प्रत्यक्षा•् श्वपर्मिति मेदः । तनाश्वद्वयपक्षे हेममर्यासहाद्वितध्वज्ञयुक्तस्य इति ' सव-शिष्टपश्चद्वये काश्वनाश्वोत्तेन्द्रनीलकुम्माद्वित्तव्वज्युक्तरथ इति व्यवस्था ।

यनु देमाद्री 'सप्तायकेन संयुक्तम्' इति फचित्पाठ. स सर्व-पुरतकविसंवादादुपेक्यः । पतेन यत्वेनविदेवत्याठालम्यतेनोत्तम् 'मष्टा-श्वमित्यनेन पौनरुनयामाबादुभयत्रापि हैमा एवाश्वा प्राष्ट्रा न कवि-दपि स्ताभाविकाः ' इति तद्रप्यपास्तम् । चतुर्भिर्थवात्रिभिरिहयस्य चतुरश्च वेत्यनेन पौनरुक्तयस्यापरिहाराच ।

भजरक्षातुमी तस्य तुरगस्थात्रधाश्विती ।

चकरश्री चकसमीवस्थावश्विनी कार्यी । सहस्रणमुक्तं तुलावाम्--

पुण्यकालं ततः प्राप्य पूर्ववत्कापिचो द्विजैः । त्रिःवदक्षिणमात्रस्य गृहीतत्तुसुमास्त्रतिः । इष्ट्रमास्यान्यरो द्यादिमे मध्यसुरीरयेत् ।

मकः प्रयोगे क्षेत्रः।

इति तुरायपदानमेवज्ञसभगसूद्वकारि वः करोति । स कञ्जपदटीर्वसकरेहः परमसुपित पदं विमाकवाणेः ।। देवीच्यानसमुखां विजितसभाव-माकस्य मण्डसम्बर्धसम्बर्धस्यः । सिकाङ्गमावनपद्ववीयमान-

द्धाङ्गनानवनपद्पद्पीयमान-बकारनुभौऽन्युभभवेन चिर्र सहास्ते ॥ इति हिरण्याऽधारधदानम् ।

ष्ठम प्रयोगः । यज्ञानानोऽषेदवानुस्त्वा ' वक्कक्कुत्रवटलिक्षुक्तिः

भवभवाभावपुर्वे प्रिपाक्षणियसम्बग्नानिकाने ' वृद्धीरयामास्ययुग्नम्

भावितित्रवन्द्रसम्बन्धः प्राण्यसम्बन्धानिकाने वृद्धीरयामास्ययुग्नम्

भावितित्रवन्द्रसम्बन्धः प्राण्यसम्बन्धः वृद्धान्यसम्बन्धः ।

प्रतियादियपे ' इति सङ्कस्य गोविन्दारियुगानव्यप्रसम्बन्धान्तर्वः ।

प्रतियादियपे ' इति सङ्कस्य गोविन्दारियुगानव्यप्रसम्बन्धः ।

स्वत्यं महत्वित्रक्वयदि । वतो गुर्देवो 'पोक्सप्रयम्भानुकितियमे ।

सम्बन्धः सम्बन्धः स्वतिक्रम्थानिकान्धापरिका वरुपरि मागुक्क्षरः

प्रमुद्धनादिभिष्टिमित्रकुर्मिकां ।

स्वत्यात्रक्षम्यम् ।

सन्दर्भावस्यकृत्यादिनाधिवान्धः ।

सन्दर्भावस्यकृत्यादिनाधिवान्धः ।

सन्दर्भावस्यकृत्यादिनाधिवान्धः ।

सन्दर्भावस्यकृत्यादिनाधिवानिकान्यपुर्वः ।

सन्दर्भावस्यकृत्यादिनाधिवानं सम्बन्धः ।

सन्दर्भावस्यक्षित्रसम्बन्धः ।

सन्दर्भावस्यक्षित्रसम्बन्धः ।

सन्दर्भन्यस्यक्षः ।

सन्दर्भन्यस्य । तत्यः 'हरम्यमित्रस्कुम्म्ययन्यपुर्वः व्यक्तिकान्धः ।

स्वमित्रद्भावस्यनिकात्रस्यक्षस्यमित्रस्कृत्यस्यम्यन्यस्यकृतिक्षः ।

स्वमित्रद्भावस्यनिकात्रस्यमित्रस्कुम्म्ययन्यन्वस्थित्वस्यित्वस्य ।

सन्दर्भनिकात्यविक्षस्यमित्रस्कुम्म्ययन्यन्यस्थित्वस्यक्षित्वस्यित्वस्य स्वरिक्षः ।

सन्दर्भनिकात्यविक्षस्यमित्रस्कुम्म्ययन्यन्यस्थित्वस्यविक्षः ।

सन्दर्भनिकात्यविक्षस्यमित्रस्कुम्म्ययन्यन्यस्थित्वस्यित्वस्यविक्षः ।

सन्दर्भिक्षस्यविक्षस्यमित्रस्कुम्म्ययन्यन्यस्थित्वस्यविक्षस्यविक्षस्यन्यस्य ।

सन्दर्भनिक्षस्यविक्षस्यमित्रस्कृत्यस्यम्यन्यस्य

समी समः पापविनाशसाय विश्वासम् वैदनुरङ्गमाय । भाजामधीराय भवाय जैने पाणीयशासक देहि शान्तिम् ॥ बस्यप्रकारित्यमरुद्रणानां त्यमेव धावा परमं निधानम् । यतस्तवो मे हृदयं प्रयातु धर्मेश्वानत्वमधीधनाशात् ।

'इति मन्त्रमुक्तवा पुणार्श्वाठ प्रक्षित्य नयस्ट्रस्वोपविश्वपादित्यानुक्तवा सक्ष्ण्यकुप्तित्यादिसद्वस्पान्ते 'गृष्टुंक्तिग्यो माद्यणेश्य इमं हिएण्याश्यर्य दैमानुष्य हैमण्युर्त्यं चा सर्वोप्यक्तसाहित्याई संगद्दे न मशे इति तदस्ते पुनमेर्जे स्थित् । 'क्ष्रतेवदात्यातिहार्यमेतान्सुवणाद्वस्य स्वाद संप्रदृदे ' इति वदेत् । जनाय्यस्युर्व्यते एकामित्रियानादिकं सेयान् । प्रणाह्याच्यदेवसावित्यमानां कृत्या प्रकृतिक्ष्रावणात्मानतेन् ।

इति हिर्ण्यान्धरथदानम्।

अय हेमहस्तिरयदानम् ।

माहस्ये-अधात: संप्रवक्ष्यामि हेमहस्तिरयं शभम । यस्य प्रसादाङ्गवनं वैष्णवं याति मानवः ॥ पुष्पा तिथिमधासाच तुलापुरूपद्दानवन् । विषवाचनिकं हुवीहोकेशावाहनं सुधः ॥ भरत्विड्मण्डपर्सभारभूषणाच्छादनादिकम् । अज्ञाप्युपीपितस्तद्वहाद्यणे सह भोजनम् ॥ ष्ट्रयास्पुष्यरथाकारं काञ्चनं मणिमण्डस्रम् । बलमीभिर्विचित्राभिश्रतुखनसमन्वितम् ॥ . स्रोक्षाराष्टकोपेतं शिवार्षत्रहासंयुतम् । मध्ये नागयणोपतं स्थमीपुष्टिसमन्वितम् ॥ ष्ट्रण्याजिने विल्ह्रोणं कृत्वा संस्थापयेहथम् । स्याऽष्टादश धान्यानि भाजनासन्यन्दनैः॥ दीविकोपानहच्छत्रदर्पणं पादुकान्वितम् । ध्वजे तु गरुडं धुर्यास्त्रूपराघे विनायकम् ॥ नानाफलसमायुच गुपरिष्टाद्वितानकम् । कौरोपं पश्चवर्ण च अम्हाननुसुमान्वितम् ॥ चतुर्भिः कल्दौः सार्द्धं गौभिरष्टाभिरन्वितमः। ' चतुर्भिईपमावद्गेर्मुकादामविभूपितै: ॥

स्वरूपराः फरिश्यां च युक्तं कृत्वा निवेदयेत् । कृत्यारवण्यास्वरूपेवामाराद्दिषं शक्तितः ॥ सथा मङ्गुळकृत्वेन स्नापितो वैद्युङ्गवे। । जि:प्रदक्षिणयाजूत्व गृहीवकुसुमाचारितः ॥ इमुधुवारवेनमञ्जं माञ्चणेज्यो निवेदयेत् ।

मन्त्रः प्रयोगे होयः। इश्यं प्रणस्य कत्त्रेस स्थप्रधानं यः कार्यस्सकलपापविमुक्तहेहः।

यः कार्यत्सकलपापावमुक्तवहः विद्याधरामरमुनीन्द्रगणाभिजुष्टं

प्राप्तीस्वर्धी पर्वमतीन्द्रयमिन्द्रमीलैः । इति ॥ पुज्यस्यः मीजस्यः। स चौपपोच्छाड्रिती अविते । इक्तरे होकः पाजाञ्जयाः। वपरिचनव्युक्तप्तीति दामीद्रः । लोक्साळहिवार्कमहाः स्क्षणानि माराकानि ।

नारायणप्रतिमा नारद्वश्वरात्रे-

नारायणं चतुर्वोहुं शहयके वयोषरे । दक्षिणे हु गदायके तील भीतृत्वतिभयम् ॥ यामे भीत्रेलकीहरता पुष्टिः वद्यकरा परे ॥ उत्तरे झहुमथः , उदिर चत्रम् । विश्वि उपरि गर्वा, वृद्यमध्, इति ।

बामे बामभागे । अपरे दक्षिणे भागे । गतहस्तु---

वपेन्द्रस्यामतः वक्षी शुक्काकाः कृताधारितः । सञ्चमानुगती गूमी मृद्धी च फणमण्डितः ॥ पश्चिमहुग्ने गरमीनातुङ्गगाती नराङ्गकः। द्विराङ्कशुक्तकः कर्तव्यो विनतासुवः। इति ॥ विनायकोऽपि—

षतुर्नुत्रस्किनेत्रद्रा कर्तव्योऽत्र गमाननः । नागवतोपवीतम्र शकाङ्कठवरिस्सः ॥ दन्तं दक्षक्ते एचाङ्किवीये पाकस्तुत्रस्य । मृतीये परशुं दयाश्वरीयं मोदकं वया । स्त्यर्थः ॥

पश्चपटादिसुवर्णपरिमाणं प्रजगरहविनायकाद्विप्रतिमासहितस्य

भवनत्वानमात्रं वा सोऽपि पापै: प्रमुच्यते पा सर्वटादिलक्षणं मार्वण्डेये-—

। इत्हरूप मान्य प्रवास स्वतः सानकाष्ट्रतम् । योजनाहाँ द्विष्टान्म्यस्य प्राम् ॥ सद्दर्धेन तथा खेटं तत्पादोनं च सर्वटम् । स्वा झूड्रमनपाय सुसमृद्धकृषीयत् । स्वेत्रीयभोगभूमये वसतियामसंक्षितः । यावनि टाङ्क्कतिस्त्राम्यस्वानि स्वी-भौसांवादेई हिन्नुसंग्रममानाि ॥ सावनि सङ्क्षसुरे स समाहि विदेन

ज्ञृतिप्रदानमिह यः दुवते मनुष्यः । इति ।।

व्यथ प्रयोगः । यज्ञमानोऽचेत्यादि 'सक्टपातकर्ध्यामग्दरगन्धर्यकि• त्ररसुरासुरसिद्धसङ्घ सेविनावधृतचामरविमानाधिष्ठानपूर्वकस्वीयामरताय-करवपूर्वकपितृपितामहादियन्धुसदितशम्भुपुरगमनानन्तौरवदेयभूलाङ्गलै॰ मुस्तोत्कीर्णरजःसहितहरूसम्बद्धवृपरोमसङ्ख्याचिरिष्टन्नशम्भुपुरिनवा-सकामः इवः पश्चलाङ्गलमहादानं प्रतिपादियय्ये' इति कृतसङ्कराः प्रक्त-तिबद्रोबिन्दादिव्जामण्डवयु जागुर्वादिविनियोगान्तं सर्वे कुर्यात् । तती गुरु, पोडदारि सारदादमयानि पंच इलानि युगयोक्तरञ्जुकालतीदासु-पाकरणयुतानि काश्वनीपकरणसहितानि काश्वननिर्मितानि पश्च हसा-नि त्लीताम्ब्लायुवकरणसहितां शब्यां गामेकां योग्ध्रीं परिकोऽधादश धान्यानि मण्डपाद्वहिगौसहस्रो चळश्रणान्वपानसाळक्कारान्सीपस्करान-धिवास्य वैद्युपरि विजानं बद्धा, ' इलम्बो समः ' श्रीत मन्त्रेण संप्रय कुः ण्डाभ्याशे कछशस्यापमादिवनस्पतिपर्यन्तप्रभानदोपान्तं संपाद्येत् । ततो गुर्नेझया चतुर्णामन्यतम ऋत्विक् खकीये पुण्डे 'पर्मन्याया-SSदित्येभ्यो रहाय जुष्टं निर्वेषामि 'इतितत्त्वदेवतायै प्रत्येकं चहं निरूप्य पपसि अपित्वा तेन पालाशसिमिङ्गः सौवेणाऽऽज्येन इयामतिलैश्च पूर्जे॰ न्यादित्यरहेरुयस्तहिद्भुवैर्मेन्त्रः प्रत्येकमष्टाविद्यतिर्जुहुधात् । सत्र भर्ग्वे-दिनाम् 'अच्छा वद् ' इतिपर्जन्यमन्त्रः। एवं यजुर्वेदिनाम् ' शक्षो वातः पवताम्'। सामगानाम् ' पर्जन्यः विता महिपस्य' इति। आधर्वणानाम् 'मिनन्दस्तनवाद्रशोद्धि' इति। भादित्यरुद्रशोख मन्त्रास्तत्तरुग्रसीयाः

सामान्यप्रयोगे पूर्वमुक्ताः। वैतः स्विष्टकृदाधभिपेकान्तं, ततो यजमानः सपुष्पे स्राङ्गलानि जिःपद्धिणीकृत्य— "

यस्मोह्याणाः सर्वे स्वावराणि चराणि च । पुरन्धराद्गे तिप्रन्ति तस्माद्रक्तिः स्विवादस्तु मे ॥ यस्माच मुभिदानस्य कठां नाहेन्ति पोडदीम् । दानान्यन्यानि मे सक्तिर्थे एव दृढा भवेत् ॥ इत्युस्त्वा पुर्वाणि हरेषु श्चिर्वा नत्वा च वेदिपक्षिमत छप्

ह्युन्तवा पुर्वाणि करेजु श्लिरंता नता व विद्विशिक्षमत उपविद्या ह्युन्तवा पुर्वाणि हरेजु श्लिरंता नता व विद्विशिक्षमत उपविद्य सपस्ती हं ग्रुक्तपुर्वदेवारोयमादिशक्षान्तवंकरूपकीर्यकारतेऽहुक्गुरवे वुश्यं भूमिसहिसानि धुरूप्यक्ष्यक्षात्र्यादिसर्वोषस्वरत्यहिसानि ग्रुवणेबारबा-क्षायान्ध्रभयिक्शानि हशानि संप्रदृष्ट हिस्त द्याल् । दिश्चणां क्र मस्तिक-क्षायन्तान्त्रस्यूनावेबलाविसर्जनिवानानिमित केचित् । पुत्रः पुण्या-द्वायनान्त्रस्यूनावेबलाविसर्जनिवामभोजनानि प्रकृतिवर्ष् ।

इति पश्चलाङ्गलदानप्रयोगः।

अथ घरादानम् । मास्ये—

 र्शभयस्यः

186

तथाष्ट्रांद्रश भान्यानि रसींख स्वर्णादिकान् । तथाष्ट्री पूर्णकस्त्रान्समन्तात्परिकस्पयेन् ॥ विमानके च कोशेयं फर्सानि विविधानि च

वितानकं च कौशेयं फटानि विविधानि च । इत्येवं रचयित्वा तमधिवासनपूर्वकम् ॥ एवयं कालमयाऽऽसाच मञ्जानेतासुदीरयेत् ।

मश्राः प्रयोगे क्षेत्राः ।

पवसुचायं तां वेची माहणेभ्यो निवेदयेत् । धराद्धे या चतुर्भागं गुरवे विनिवेदयेत् । होपं चैशाव करिकाम्यः प्रणिष च विवार्गयेत् । इति ।। ध्यक्तांत्रेत कर्तेच्या चतुरस्या सुशीभना ? ।

प्यहस्तन कतव्या चतुरसा सुशाभना । इति हेमाद्रिरुपनाशयणादिभिश्चतुरस्रोका । 'क्रिकोणा दानसौस्ये

इति हैनार्रिरुपनारायणाभिभश्रद्धरस्त्राका ! ° १८काणा 'दानसाव दामोदरीये च । 'परिमण्डला 'इत्यन्ये । अनेन विधिना यस्तु दशादेमधरां शुभाम् ।

पुण्यकाले तु संग्राप्त स परं थाति बैष्णवम् ॥ विमानेनाकेनले किश्किणीकालमालिना ।

नारायणपुरं गत्वा कल्पत्रयमसौ रमेन् ॥ पुत्रपीत्रपरीत्रांख्य सारयेरेकविंशतिम्। इति ॥

तुन्तरात्रकार्यक व्यवस्थात्रकार्यकार्यक्त । पृथिवाँ हैमी दुर्योदिखुके समझीपत्रयाः करणमासक्ने ज्ञानपूत्रीपातुः कारिगीमिति विशेषणम् । ज्ञानद्वीपासुसार्यकेरिय नानापर्वतसरोवराः पश्चितानुकारिस्वरसङ्गे मर्यादापर्वतन्त्रीमित्युक्तम् । तावता मेरोरकर-णप्रसङ्गे मध्ये मेरसमिन्दतामित्युक्तम् । ज्ञानद्वीपरुक्षणं विष्णुपुराणे—

नयवर्षे तु मैत्रेय जम्बूदीपमिदं मया । रूप्रयोजनविस्तारं सद्वेपारकवित्तं तव ॥ जम्बूदीपं समातृत्य रूप्रयोजनविस्तरः । मैत्रेय वरुपाकारः रिश्तरः श्लीदोद्दिपविद्तिः ॥ जम्ब्रुदीपं समत्तानां द्वीपानां मण्यतः रियतम् ।

त्तसापि मेर्केंनेय मध्ये कनकिर्तितः ॥ षदुरशितिसाहसैयों इनेरस्य चोच्छ्यः। प्रविष्टः वोडशायस्ताहानिसन्मृति विस्तृतः॥ मूळे षोडशसाहस्रो विस्तारसास्य सर्वतः। H21:---

मेरोश्चतुर्विशं तत्र नयसाहस्तविसूतः ।)
इलादुर्व महामाग्य चलास्त्रात पर्वेताः ।
विस्कृतमा रचिता मेरोजींशनायविस्तृताः ॥
पूजेण मन्दरो नाम दक्षिणे मन्यमादनः ।
विशास पश्चिमे पार्वे सुपार्यश्चीरतेः स्मृतः ॥
मर्योदायविस्तुताः म्रातः ।
स्रातः पश्चिमे पार्वे सुपार्यश्चीरतोः स्मृतः ॥
मर्योदायवितासु म्राताण्डे---

काठरो देवज्रस्य पूर्वस्यां दिशि पर्वती । तौ दक्षिणोरशरायासावानीलनियशायती ॥ कैलाती दिससंकीय दक्षिणे वर्षपर्वती । पूर्वस्थायतावेतावर्णनाम्बर्ध्यस्थाती ।। निश्कुरो 'जारिक्षेत्रेय कल्तर वर्षपर्वती । पूर्वस्थायतावेतावर्णनाम्बर्धनियाती ॥ निषयः पारिभावस पश्चित्र वर्षपर्वती । तौ दक्षिणोत्तरायामायानीलगियनायती ॥

इलाष्ट्रतस्योभयपार्श्वनिनी मीलानिपनी हो पर्वती देव्येण सभयो मती। सर्वाण्यस्यकानि महाण्डे—

> चतरं यरसमुद्रस्य हिमादेश्वैय दक्षिणे । पत्रहे भारतं नाम भारती यन सन्वतिः ॥ भारतं प्रधमं वर्षं ताः क्रिस्पुर्करं म्हात्तृ । हिस्वरं प्रतेनान्यं मेरोपेश्चिणवो द्विष्ठा ॥ रस्यकं चौत्तरे क्ये ताय चात्र दिर्णमयम् ॥ जत्ताः दुर्जिय क्यायं चेत्रानतं चमा ॥ मेरोः पूर्वेण अदायं चेत्रानतं चमा ॥ मेरोः पूर्वेण अदायं चेत्रानतं स्व प्रतिश्वो । नक्साहस्रमेत्रेपानेक्ष्यं दिस्स्वन्याः ॥

शय प्रयोगः। एर्दाऽदेत्यासुरस्या [।] धर्वपापाऽमद्भुतनिष्टृत्तिश्वित्रशुत्राये-कृषिदातिस्तुदुरुयोद्धारणपूर्वकिद्विणीमाल्यालिखायणीयामद्रत्यक्ता-रायणपुरगमनानन्तरकल्यन्नयाबन्धिमनारायणपुरनियासकामः भो परा-महादानमहं प्रयेपादयिक्ये । इति । प्रधानसङ्क्लादियोड्यारलिखनान्तं प्रकृतिवन् । बदुविर कृष्णाभिनसारतीय द्या द्रोणिमिशॅसिटशनासाय तदुपिर प्रागुक्तसभा सेरोड्यरि पूर्वीदिक्षमेण छोक्याङाष्टकोपेवां महारत्मयुतां बहुकहारित्यप्रतिमोपेवां घरां स्थापयेत् । तरपाश्च परितः प्रागुक्तसान्यकृश्माष्टकोपेवनानानिश्यकृत्यसान्नमृतीन् स्यापयेत् । 'वरायं नसः'वृति पूर्वदेपरि विवानं सारीया । वतः वण्डसमोपस्यक्त-स्मस्थापनारित्याहुत्यसियेकान्तं प्रकृतियत् । एवमिथिषको यजमानस्वां शिक्षदिकृषीहृत्य पुष्पाण्यस्यय-

शहरत वुराज्यसम् ।

मामते संबेभूगानां रसमेव भवनं यतः ।

मामी च समेभूगानामयः पादि यद्युन्यदे ॥

सद्य धारवसे यसमद्वयु पातीव निर्मेटम् ।

स्वपुन्यरा ततो माता तसमात्माहि भयारहम् ॥

स्वपुन्यरा ततो माता तसमात्माहि भयारहम् ॥

स्वप्नेट्यां प्रसारसमात्माहि संसारकर्षमण् ॥

स्वमेट यहसेगोनिकर् सिक्षे गौरीति संस्थिता ।

गायत्री व्रक्षणः पार्यं उद्योख्या चेन्द्री रही प्रमा ॥

सुद्धितृंदस्यती व्यावा मेथा सुनियु संस्थित ।

विश्वं प्राप्त स्थिता यामाचारी विश्वम्था गर्वः ॥

पृत्तिः दिवतिः स्वाम क्षीणी प्रत्यो सहुमती रसा ।

पद्यानिर्मूर्तिक्षः पादि देवि संसारसगराम् ॥

इस्पिसन्य पुण्णाणि प्रक्षित्य नत्वीरक्षुप्रतानग्रक्षणातुप्येद्दयाऽधेः सामुक्त्या सर्वेषापैद्धादिनारायणपुरित्वासकाम इत्यन्तं प्रतिज्ञावदुः वार्ष इसां क्रणाणिनन्यस्तिकोषरिविन्यस्तां एष्यपद्धापिक्वयाशिक हमसपरिकरिनित्वां जन्मुद्वीपातुकारिणी सर्योद्दार्थनेपन्यमेकनवयपेजो-क्रणालाप्रकरतीनर्वजपुर्वेषासामापविष्टियां परुज्यान्यस्तादिप्रतिमासु-वेतां बरा विष्णुरैवकां गुष्पभ्यमहं संगददे इति द्यान्। वर्धं तुरीयारां बाडड्वार्याय शिष्टप्रत्विन्यः। प्रकृषिक्वारा इति केचित्। सुपकर्तृके दाने प्रमादिद्विष्या, अन्यकर्तृके तु यथाशरिक सुवर्णस् । स्वस्ये दोकापिविचानमिति केचित्। प्राद्याणवाचनदेववाणूननविसर्मनिविक्यानि

इति परादानप्रयोगः ।

अधै विश्वचक्रदानम् ।

मासये—
अयातः संमनक्यामि महादानमनुसमम् ।
विश्वचन्निति ख्वाचं सर्वणप्रणादानम् ॥
सप्तीयस्य गुद्धस्य विषुवादि कारयेत् ।
श्रेपं पलसहस्य ।
श्रेपं पलसहस्य ।
स्राप्तिक क्रियं । स्राप्तिक क्रम्यसम् ॥
सम्राप्तिक क्रियं । स्राप्तिक क्रम्यसम् ॥

अध परुसहस्रण तद्यान तु मध्यमम् ॥ तस्याद्धेन फनिछं स्याद्विश्वचक्रमुदाहृतम् । स्टब्स्ट्रिशपठादृष्ट्यमहाकोऽपि निवेदयेत् ॥

वश्यमाणविश्वादिप्रतिमासहितस्य विश्वचकस्येदं मानम् । पोडशारं ततश्चकं अमन्नेम्यष्टकावृतस्य ॥

पाडशार ततश्चक अमन्नम्यष्टकावृतम् ॥ भरा माभिस्युद्रमुखा नेमिस्युद्रामाः श्रहाकाः । अमन्तीनां वस्रया-

काराणा नेमीसां प्रकावयवानामष्टकेनायुतं वेष्टितमिल्वर्धः ।

नाभिषये श्वितं विष्णुं योगारूढं चतुर्भुजम् ।

, नामपद्म १६वत विष्णु पामक्ट चतुनुम् । नामिपद्म नामिरुपाष्ट्रहरूपद्मकणिकायामिरवर्धः । अष्टमु वहेरमावरः व्यवस्थानाम् स्वतियोगात् । शहरानेद्रस्य सर्वे च हेरस्य स्थापः

णरूपदेवताष्ठकस्य समिवेशात् । 'शह्नचकेऽस्य पार्थे तु देन्यष्टकसमा-युतम् १। योगारुवं हत्यवेशायन्त्रियसंयुदाकारहस्तद्वयम् ।

कष्टी देक्योऽपि पश्चरात्र— विमलोस्कर्यणी ज्ञाना क्रिया चोगा तथैन च । प्रह्मी सस्या तथैशाना अधी च परिसो हरे। ॥

बरदा दश्रहरतेन बामहरतधृतायुधाः । प्रशस्तरुणीरूपा षष्टी देव्यः प्रकीर्तिताः ॥

वक्षो दक्षिणः, आयुधं चक्रमिति दामोत्रः।

द्विनीयावर्षे च्ह्रस्पृक्षेते जलकायिनस् ॥ श्रित्रमृतुर्वेसिष्ठश्च सहा ब्ह्रयव एव । सरवः कूरों बराह्म्य नरसिंहोऽय बामनः ॥ रामे रामश्च कृष्णश्च सुद्धः पर्हाते च ते कमात् । तृतीयावरणे गौरी मातृभिवेसुभिश्वेता ॥ चतुर्वे हार्द्वशिद्या वेदाश्चलार एव च । चत्रम् पण्यास्त्र प्रतानि वदायै हार्द्वते सु ॥ स्त्रेष्ठपाद्यक्षं पत्ने विकृत्यादद्वास्थिव च । शोरच रत्यस्त हुण्याजिने स्थापितद्रोणमित्रिखोपरि विश्वचकं संस्याप्य सस्याष्ट्रक क्रिकायां विष्णुं , सूर्वादिदलेषु ६ विमला उत्कर्पेगी झाना तिया योगा प्रही सत्या ईशाना ? इत्यष्टी । द्वितीयावरणे पोडशकोष्टेप 'जलशाच्यत्रिभृगुवसिष्ठवद्यकश्ययमन्याद्यवतास्वराक्रम्' इति प्रतिमापौ-स्त्रकम्। नृतीयावरणे गौरी अञ्चाणी रौद्री कौमारी वैष्णत्री वाराहीन्द्रा-णीकौशिकीरयष्टी, धुवाध्वरसीमानिलनलप्रत्यूपप्रमासाख्यानष्टी वस्त्। चतुर्धावरणे धात्रवेमिवित्रवरुणांदामगेन्द्रविवस्वत्पुपपर्शन्यत्वष्ट्रविण्वाख्यः द्वादशादित्यान्वेदंचतुष्ट्यं च । पश्चमावरणे पश्च भूताति प्रथिवी वरुणविहे-षायुविनायकारनकानि बोरभद्रशस्भुगिरिशाजैकवादहिर्बुक्र्यपिनाकिसुद-माधीश्वरकपाहिविशान्यतिस्थाणुभगाख्यान् , एकादश रुद्राह्य । पष्टावरणे लोकपालाप्टकम्, ऐराववपुण्डरीक्यामनहमुदान्तनपुष्पद्-न्तसार्वभीमसुपत्तीका. इति दिगानाष्टकप् । सप्तमाँवरणे खह्नचकरा-किवाशानकार्राश्क्रां हु की स्तुभचामरच्छत्रपूर्वे दुरुमदी पनुषम ह्याणि दन-क्रीवण्डाति । अष्टमाबरणे विष्णुरेज्यप्टकमळशाय्यऽत्रिमृगुवसिप्टमझः कत्रयपमस्यप्रतिमापोडशकं स्थापयेत् । चत्रस्य समन्ताद्धान्यरसद्र-व्यवूर्णेकुम्माष्टकवस्त्रमाल्ये ग्रुफलरत्नादीनि विवानकं च बाग्नीयात्। वती ' विश्ववकाय नमः ' इति पृत्रयेत् । ततः कुण्डसमीपे फलशस्थापनाः वियुगोहरयभिम कान्तं प्रकृतिवत् । प्राकृतमहादिहीमीत्तरं ' सकाथिष्टित-विक्वादिभ्यस्वत्तन्मन्त्रैर्वाममन्त्रैर्वाऽष्टाविसस्यादिसंख्यया होम कार्यः ' इति केचित्। ततोऽभिषिको यजमानी विश्वचर्क त्रिःपद्शिणी हस्य-

नमी निधनयांचेति विश्ववकातमने समा । परमानन्तरूज स्त्रं पादि नः पावकदैमान ।। तेमोमयोमिंद्रं मणास्त्रत्ता पर्वनित्त योगितः । इदि वस्त्रं मणास्त्रत्ता पर्वनित्त योगितः । इदि वस्त्रं मणासीते विष्याचेत्रः समान्यद्वत् ।। सन्दोन्याभाररूपेम मणासीत रिवतिस्त्रं ।। विश्ववन्तित्तं रच्यास्तर्यस्त्रापद्वतं परम् । आगुर्षे पाविवासम्ब भवाद्वतः सामतः ॥

इतिमन्त्रेरामन्त्र्य पुष्पाणि प्रश्चिष्य नमस्क्रन्य बेट्टिपश्चिमत छप-विस्य पूर्वेशं सक्ष्मेत्यादिमहासङ्कल्यमुक्त्वा इमं विध्यकं विध्याः ा देवताऽधिष्ठियं विश्वारैक्त्यं युष्मभ्यमहं संघददे इति द्वदात् । दान-त्रा तेष्ठार्थे सुवर्ण विक्षणाधिमागः प्राक्ठतः । स्वस्पेष्वेकामिविषान-त्रु भेति केचित् । पुण्याहवाचनदेवतावित्तर्भनन्नाद्यणमोजनानि द्वर्यात् ॥ इति विश्वयन्ननाम् ॥

अथ महाऋत्यलतादानम् ।

मास्ये— भधातः संप्रवस्थामि महादानमनुत्तमम् ।

महाकृत्यस्या नाम महापावकनादानम् ॥
पुण्यां विधिमधाऽऽसाय स्वस्या त्रायणवाण्यत्यः ।
महाविक्ष्यव्यव्यव्याद्यां स्वस्य त्रायणवाण्यत्यः ।
महाविक्ष्यव्यव्याद्यां से स्वस्य ।
महाविक्ष्यवाः कृष्यदेश पत्यत्याः द्याराः ॥
पामीकरम्याः कृष्यदेश पत्यत्यत्यः द्याराः ॥
पामीकरम्याः । नानापुण्यक्योपेवा नानापुक्षित्रभूपेवाः ।
पुण्यक्याद्याद्याति स्वस्यवः इति केविन् । हिमानि 'इत्यपरे ।
दैमस्यानां स्वस्यतः प्रथकत्याना योगासंभवात्यानि हैमानि । अगुकानि स्र कार्याद्यानि स्वस्यतः । देशानि । अगुकानि स्र कार्याद्यानामा स्वाराणि । इतिहरमार्थिकः । । कामवया पद्यप्रयादिक्याणि । इतिहरमोद्युक्तान्यः ।

विधायरसुरणीना भिधुनैष्ठवत्तीभिताः । हारानादिरसुभिः विदेहः करानि च विद्दृद्धेः ॥ सिक्षाः पश्चिमुद्धाः किमदः । विद्दृद्धाः । विद्दृद्धाः । विद्दृद्धाः । विद्दृद्धाः । विद्दृद्धाः । कोक्ष्याक्रासुर्वेशः । विद्दृद्धाः । विद्योगः । व्यवसायत्वार्वेषः च च च व्यवस्वयदिः न्यसः ।। कावसायत्वार्वेषः पदाशद्वारं च से ।

इभासनत्था तु गुढ़े पूर्वतः सुविशायुवा ॥ रमन्यमस्थितामयी सुश्याणिरश्यनते । याग्ये च महिवास्टा गदिनी तन्दुटोपरि ॥ गुने च नैज़ती स्थाप्या समङ्गा दक्षिणाञ्चरे । यादणी बारणीक्षीरे तुपस्या सागगदिनी ॥ पनारिनी च वायन्ये समस्या शहरोपति । सीन्या तिलेषु संस्याच्या शिद्धनी विधिसंस्थिता ॥ माहेश्वरी पृपाल्डा नवनीते त्रिस्ट्रिनी। गौल्जियो वरदास्वहरूर्वन्या बालसन्विताः॥

मध्ये दे तमे । बादविहरूगे। मध्ययोग्धो ब्राह्मयन्वराष्ट्री। अन्यान् सामने लोकपारसक्या । स्म पेरावतः। रजन्यजो हिदाद्वागः। निधिः करराकारः। गालकान्विताः कोडाधकाराः। सामय पथ्यकराकृष्यासहस्रात्मयन्वयेत्।

सप्रतिमादीनामेतन्मानम्-

सर्वासासुपरिशाच पश्चवर्णविचानकम् । प्रेनवरे दशकुमाश्च वससुमानि पैन हि ॥ शप्पमे द्व सुप्रचे न्नारिक्कोऽन्यातिवेच च १ वतो मञ्ज्ञस्यवेन नातः सुझाम्यराख्यः॥ किमस्रिकमाष्ट्रस्य मन्त्रानेवासुरीरचेन् ।

मध्यः प्रयोगे शेयः । इति सकलदिगद्गनावदानं भवभयस्दृशकारियः करोति। अभिमसफल्डेशनागलोके बस्ति पितामहबल्सराणि त्रिशस् ॥ विनुशतमध वारयेङ्गान्धेर्मनदुरितीधविनाशशुद्रदेहः । सरपतिवमितासहस्रसंख्यैः परिवृतमम्बुजसंसदाभिषम्यः । इति ॥ क्षय प्रयोगः । अग्रेत्यादि " सक्छवापश्चयविशुद्धदेहत्वपूर्वकदेवगण-सहस्रपरिष्ट्तप्रद्वाभिनन्यपितृशतभवाध्यिसन्वारणानन्तरमक्षीव्रशहस्त-शबधिकामितफ्टद्नागलो कनिवासकामः श्वः कल्पलतामहादानं प्रतिपाः द्विष्ये ! इति सङ्करस्य प्रकृतिबद्धौविन्दादिपुत्रामण्डपपूत्रागुर्वोदिविनिः योगान्तं सर्व पुर्यात् । ततो वैदिलिसितचकन्यस्तलवणकृतोपरि एका छर्ता स्थापित्वा सन्मुळे झाझी न्यसेत । छत्रणहूट प्रापरां छतां स्था-परित्वा सन्मूलदेशे 'आनन्सी शक्तिम् ' पूर्विदिकमात् 'गुडहरिहा-छानतन्द्रसप्तशीरसर्वराविसनवनीवरमाष्ट्रस्तामुलेपु पेन्द्रादिसक्तीः । संस्थाप्य परितो दश पूर्णवुक्सान् दश धेनुदेश बख्युगानि परसमास्य-भान्याशीनि च विन्यस्य छतासहिताः शकीः प्रतिष्ठापूर्वकं पूत्र-यित्वा ततः व्रण्डसमीयव्यक्तस्यावनादिकूर्णोद्दयमिपेकान्तं प्रकृति-षम् । प्रवस्थिषिको सञ्जमानः कत्पल्यास्थः प्रदेशिणसाबृत्य--

इवि कल्पछतावानम् ।

। मारस्ये-

मन्ता. प्रयोगे क्रेयाः ।

अर्थ सप्तसागरवानविधिः ।

अधातः <u>सं</u>प्रवस्थामि महादानमनुत्तमम् । सप्तसागरकं नाम सर्वेपातकनाशनम् ॥ कारपेरसप्तं कुण्डानि कार्ध्वनानि विचक्षणः। प्रोदेशमात्राणि तथा ररिनमात्राणि वा प्रमः ॥ क्रयोत्सप्तप्रखादूर्वमासहस्राच शक्तित,। सस्याप्यानि च सर्गाणि कृष्णाजिनतिस्रोपरि ॥ प्रथमं पूर्वेश्हण्डं खबणेन विचल्लाः। द्वितीयं पयसा तद्वभृतीयं सर्पिया पुनः ॥ चतुर्वे हु गुड़ेनैव द्राग पश्चममेव च । पर्व शकैरया सहत्सप्तमं सीधेवारिणा ॥ स्थापयेष्ठशणस्थान्तर्त्रद्वाणं काञ्चनं शुमप् । फेशबं श्रीरमन्ये च घृतमध्ये महेश्वरम् ॥ भारकर् गुडमध्ये च द्धिमध्ये सुराधिपम् । शर्कराया न्यसेहदमी जलमध्ये च पार्वसीय ।। सर्वेषु सर्वेररनानि धान्यानि च समन्ततः। तुलापुरुपरच्छेपमञापि परिकटपयेत् ॥ ततो बारणहोमान्ते स्नापितो वेदपुहुनैः । ति पदक्षिणमात्रतः मन्त्रानेतान्त्रीर्येन् ॥

्रदि ददाति रसामृतसंयुवाद्युचिरविस्मयवानिह सागरान् । १४-१९ अमळकाश्वनवर्णनयानसौ पद्युपैति हरेरमराचितः ॥ सक्त्यापविभौतिवराजितः पिनृपितामहपुत्रकळतकम् ॥

पुत्रसत्त्रत्रमिति वाचापविषिधः पपाठ । पुत्रस्वत्रक्रमिति रत्या-करदानोदरादपः । नरक्वोकस्याहुव्यप्यदे स्टिटित बीडिय नवेच्छित्रम-न्दिर्य, हरणादि । ' प्रादेशान्विकमासाणि ' इति तिर्यगूच्यत् । ' रतिस-ह्यप्योणि प्रादेशः परिकर्तित्वः । ' साद्यदेशाहुः प्रादेशः ' इति कस्य-सहः । इद्यादियस्यिमा स्थाण्डरानादौ इशिताः

क्य सप्तसागरदानप्रयोगः । यत्रमानोऽयेश्यादि (कळुम्ब्यसंत्रा-दिवतस्तित्रयासपृर्विष्वामध्युअकटमदिवस्यवन्युवंश्वस्यास्वरुवः विविष्टस्वायद्दिरद्वमादिकाः सः सास्त्रास्यासप्तरुदानस्य प्रविवाद्वियदे द्वित्वहरूवः गाँतिन्यासियुवादिमण्डपपृत्तासुविदिवित्वयोगार्वः प्रकारिवद्यस्य स्थापित्रः प्रवाद्यस्य स्थापित्रः प्रवाद्यस्य स्थापित्रः प्रवाद्यस्य स्थापित्रः प्रवाद्यस्य स्थापित्रः प्रवाद्यस्य स्थापित्रः प्रवाद्यस्य स्थापित्रः स्थापितः स्थापित्रः स्थापित्रः स्थापितः स्यापितः स्थापितः स्थापिति स्थापितः स्य

नमौ वः सर्वसिन्धूनामाधारेच्यः स्वातनाः । कारत्तां प्राणदेश्यश्च समुदेश्यो तसो नमः ॥ वीरोदयाजद्विधामामुरकावण्यनः साराग्येत युवन्धान्यक्ष्यम् ॥ श्चानंदयन्ति समुभिष्य यतो भवन्त-स्वस्मान्यसाज्यपविधानम् विध्वस्म ॥ स्रामास्त्रस्त्वसुवन्तु अवन्त एषः हो गोमारामुरसुवन्द्रणाल्यनानम् ॥ पाष्त्रवास्त्रविक्रमनुष्णायः जोकस्य विद्यति वस्तु ममावि छहमीः ॥ इति मन्त्रेत्तुमन्त्रय पुणाणि प्रक्षियः नोमकुस्य वेदिश्विमात वपविदय देशकालकीतेनान्ते सक्छकेलुप्ययेत्यादिगृहासङ्कल्यमुक्ता सप्तसा-१ गरान्त्रवादिप्रतिसासहितान्सीफरकरान्त्रिणुरीनवादिलुपुरुपनस्यपुरा-भीयभागस्यस्यया गुप्भभ्यात् संप्रदे न ममेति सुवर्णदक्षिणां द्यात्। स्वत्ये रहेकाभिरिति भेषित्। ततः पुण्याद्याचनमहादिपूनाविसर्भ-नमाद्राणभोजनानि सुर्यात्।

इति सप्तसागरदानविधिः।

अय रवधेनुदानविधिः ।

रव्रधेतुरिति दयातं गोलोक्फलर्दं नृणाम् ॥ पुण्यो तिथिमधासाच तुलापुरुपदानवत् ।

भारस्ये---भधारः संप्रवश्यामि महावानमनुत्तमम् ।

कोकेशावाहुनं तद्भवतो येर्नु मकल्ययेत् ॥
भूतो क्रणाजितं क्रवा करवण्रोणसंद्यत् ।
भूतो क्रणाजितं क्रवा करवण्रोणसंद्यत् ।
भेतं रक्रपर्यो क्रवा कर्इल्पविध्यूषंकम् ॥
भ्यायेरत्यद्यरागाणातेमकाशित्याखे द्याः ।
द्रव्यरागशतं तद्बद्वौणायां परिकल्पयेत् ॥
क्रवाटे मैमिककं क्रकामक्रवातं हशोः ।
भूद्यो बिद्रमशतं क्रकी कर्णद्वयोः रियते ॥
भाष्माति च उरङ्गाणि शिरो वक्रशतास्कम् ।
मीवायां नैत्रपटलं गोमेरकश्रतात्यकम् ॥
स्कृतीक्रवतं प्रदे वेद्दयेजावाभक्षं ॥
स्कृतोक्रवतं प्रदे वेद्दयेजाविभक्षात्यव्यामे प्रकृतो ।
सीनिक्षकं व्यारागः । 'वीनिक्षकं स्व कक्षारे व्यारागं प्रकृतो ।

इति वैजयन्तीकोशात् । शुद्धः देशमयाः कार्कः सुन्दं स्पृकामकीययम् । सर्वकानतेन्दुकानते च प्राणे कपूरचन्द्रतम् ॥ सुद्धानति च रोमाणि रीर्व्या नार्धि च कारयेत् । गारुस्पदातं बद्धस्थाने परिकस्पयेत् ॥

नथान्यानि च रस्तानि स्थापयेत्सर्वसन्धिषु ॥ धुर्योच्छर्कर्या जिद्धां गोमयं च गुडात्मकम् । तोमुग्रमाखेन तथा दिष्दुग्धं श्रह्मत्वः ॥
पुन्छामे पामरं दशासमापे तामदोदनम् ।
पुन्छाने च दैमानि भूषणानि च द्रापितः ॥
सारवेदनमेर्व तु चतुर्याग्नेन वस्तकम् ।
तया तर्वाणि धान्यानि पामश्रम्याः स्प्रताः ॥
सानापन्छानि सर्वाणि पध्यार्थे वितानसम् ।
पर्व विरायनं स्ट्रताः वद्वद्वोमाधिवासनम् ॥
पर्व विरायनं स्ट्रताः वद्वद्वोमाधिवासनम् ॥
परिवास्यो दक्षिणां दशादेतुमामन्त्रयेष्ठुषः ।
गुद्दधेनुवद्यमन्त्रयं इतं चोदाहरेसतः ॥

मन्त्रः प्रयोगे होवः ।

व्यंभन्डय चेरपमितः परिकृत्य भाषे द्याद्विनाय गुर्वे जरुपूर्यका ताम्। यः पुण्यमात्य दिनमत्र क्रजेपरातः पापैर्विग्रपत्युरित वर्द गुरारेः ॥ इति क्षक्ठविधिग्री रत्तपेशुमदानं विवरति स विमानं प्राप्य देशीर्थमानम्। सक्कल्रकुश्चको बन्धुभिः पुत्रपोत्रैः सह मदनसल्यः स्थानमञ्जेति शम्भोः। इति॥

क्ष मद्देनकरुः स्वात्मध्यात इत्याः। १४० ॥
अद्य प्रयोगः। विद्य वजानां कार्यसादि (सक्टककुतुष्यम्पदानवरूप्रवर्ष्यवर्ष्यवर्षुयवर्षुयवर्ष्यवर्षयः
स्वत्यवर्ष्यवर्षयः । इत्या सुक्रिक्तिवर्ष्यात्रवर्ष्यः
अञ्चाति ह्या द्रोत्याः च इत्या सुक्रिक्तिवर्ष्यः। अञ्चाति स्वत्याः
वर्ष्याति क्ष्यणं द्रोत्याचितं प्रयायं च च्यातः । स्व प्रकारोतिस्पर्यार्गार्थ्यः
वर्षाति क्ष्यणं द्रोत्याचितं प्रयायं च च्यातः। स्व प्रकारोतिस्पर्यार्गार्थ्यः।
वर्ष्यापात्रतेन नासाम् । स्वव्यतः । स्व प्रकारोतिस्पर्यार्गार्थः।
वर्ष्यापात्रतेन नासाम् । स्वव्यतं । स्व प्रकारोतिस्पर्यार्गार्थः।
वर्ष्यापात्रतेन नासाम् । स्वव्यतं स्वर्षायाः
वर्षातं रद्या । विद्वस्यतेन विष्यः । प्रतापात्रतेन किटमः । सास्तिवः
देशः सुरातः । सुर्वकानकर्ष्तान्यं दक्षिण्याणपुरम् । चरकान्यवर्

ताभ्यों वामप्राणपुरस् । कुट्टैसेन रोमाणि । स्टब्वेण नासिस् । गारुत्य-त्र तरोनाऽपानम् । रत्यान्वरेः सवैसन्वीत् । म्रकेरमा जिहाम् । गुडो गोमये । वाज्यं पूरे । पानरं पुरुष्ठामे । राष्ट्रपति । एवं पेनुसान् त्राप्त्रमहोदनम् । सीवर्णपुरुष्ठकीवेयकादीनि स्याप्ताति । एवं पेनुसान् नद्रस्थनपुर्धित्य धेनोक्तरता प्राह्मुख्यपुरवणाई वस्तं य स्यवेत् । दिष-द्वापदीत्तानि च वस्ते न संभवन्ति । समन्ताद्याद्या भाग्यानि कल्युप्पवसादीति पाऽप्रसाव । स्वाः प्राप्ति नमः । इति पूष-विसत्त । वितानं प्रभीयान् । तदः ग्रुष्टसतीप्रपष्ठज्ञास्थापनादिमङ्-विसत्त । प्रवासीपिको यज्ञानो स्त्येसुं चित्रप्रदक्षिणमावृक्ष्योपति-वेत् । मन्त्रास्तु—

> या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवे न्यवस्थिता । धेतुरूपेण सा देवी मन शान्ति प्रयच्छतु ॥

देहरथा या च रहाणी शहरस्य च या प्रिया । धेत्ररूपेण सा देवी मन पार्व व्यपोहत ॥ विष्णोर्वश्रसि या सक्षमीः स्वाहा या च विमावसी । चन्द्राकेशकशक्तियां धेनुरूप च सा श्रिये॥ ' चतुर्वेतस्य या लक्ष्मीयाँ लक्ष्मीर्धनदश्य च । रुष्मीयाँ लोकपालामां सा धेनुवरदाइस्य मे ॥ ' स्त्रधा या वितृतुख्यानां स्वाहा यहभूकां च या । सर्वपापहरा धेनुस्तरमाच्छान्ति प्रयच्छ मे ॥ स्वां सर्वदेवगणधास यदः पठन्ति क्ट्रेन्द्रचन्द्रकमछासनवासुदेशाः । • तस्मारसमसामुबनत्रयदेवयुक्ते मां पाहि देवि भवसागरपीड्यमानम् ॥ इति । ततः पुष्पाणि प्रक्षिप्य नगरकृत्य वैदिपश्चिमत उपवित्रयादीत्यादिमहा-संकल्पमुक्तवा 'इमां रलघेनुं वयारागमुखां पुष्परागधीणां सुवर्णतिलकाः टड्रुतां मुक्तंपरलादिरचितनयनाधवयवीपेतां साधनपद्मरागादिद्रव्यचतु-रचित्रवरससहितां परितः स्वापितधान्यपुष्पफलादिमती

थिरणुदैवतां गुरवेऽहं संप्रददे । इति । ' एकस्मा एव दखात् । इति भूपा-

एरलाकरादयः । हेमाजादयस्तु ' एकामिविधान एक्स्मै, अनेकामिपश्चे तु तुळापुरुपरद्विभागः " इत्याहुः । सुवर्ण दक्षिणा दवात् । ततः स्वस्या-दिवाचनप्रहादिपुजनविसर्जनश्राद्याणमीजनादि प्रवेतत्। इति रलबेनुदानप्रयोगः।

अय महाभूतघटदानविधिः। मारस्ये-

बद्यातः संप्रवङ्यामि महादानमनुत्तमम् । सहाभूतघट नाम सहापातकनाशनम् ॥ पुण्यं दिनमधासाच प्रत्वा ब्राह्मणवाचनम् । क्रत्विङ्गण्डपसंभारभूषणाच्छादनादिकम् ॥ हुडापुरपदलुर्योहोषे शाबाहने सया । कार्येत्काश्वनं कुंभं महारत्नचितं युवः ॥

महारत्नानि व्रह्मोकानि । प्रादेशादङ्गल्हातं वावत्कुर्योद्यमाणतः ।

श्चीराज्यपूरितं तद्वस्वस्पृष्टश्चसमन्वितम् ॥ पद्मासनगतास्तव ग्रहाविष्णुमहेश्वरान् । स्रोदपालान्सद्देन्त्रांश्च स्ववादनसमन्त्रितान् ॥ बराहेण धृता तद्वत्वत्वा कृती सपहुत्राम्। बहुणं जासनगतं काश्वनं मकरोपरि ॥ हतारानं भेपगतं वार्यु कृतसृपासनम् । सथाकाशाधिपं सुर्यान्मूयकस्यं विनायकम् ॥

बिन्यस्य घटमध्येतान्वेदपङ्कासंयुवान् । त्रस्वेदस्याश्चसत्रं स्याद्यज्ञवेदस्य पद्धजम् ॥ सामवेदस्य बीणा स्याद्धेनुं दक्षिणतो न्यसेन् । अधर्ववेदस्य पुनः सुन्सुवी दक्षिणे करे II प्रराणवेदी वरद. साक्षसूत्रमण्डलु. ।

अत्र कल्पन्नश्चमित्रमाप्रादेशादिपरिमाणसहितघटसंपारकस्वर्णमान-माधिक्म ।

परितः सर्वेघान्यानि चामरासनदर्पेणम् । मादुकोपानहरू उपमूपणाच्छादनादिकम् ॥ शप्या च जलबुरमाध्य पश्चवर्ण वितानकम्। **जलकुम्भाः पोडश** ।

रनात्वाऽधिवासनान्ते तु मन्त्रमेतमुदीर्येत् ।

मन्नः प्रयोगे होयः।

ን

इत्युगायै महाभूतघटं यो चिनिषेदयेत् । सर्वेदापविनिर्मुक्तः स बाति परमां गरिम् ॥ विशानेनार्फवर्णेन चितृवन्युसमन्तिवः । स्तूयमानी बस्त्रीकः पदं ग्रामीवि वैष्णवम् ॥ मोडरौतानि यः क्रुयांन्यहादानानि मानवः न सस्य युनराजुनिरिहः होवेऽभिजायते । इति

भग प्रयोगः । भगेरवादि संस्कलपायस्वय्वैकपितादित्यस्थ्यापुत्रक्षात्राह्मात्राह्मात्र भावत्राव्यक्षित्राम्यस्थ्यात्र स्वात्र स्विद्यान्यस्थ्यात्र स्विद्यान्यस्थ्य प्रकृतिवद्गी विद्यान्यस्य प्रकृतिवद्गी विद्यान्यस्य प्रकृतिवद्गी विद्यान्यस्य प्रकृतिवद्गी विद्यान्यस्य प्रकृतिवद्गी विद्यान्यस्य प्रकृतिवद्गी विद्यान्यस्य प्रकृतिवद्यान्यस्य प्रकृतिवद्यान्यस्य प्रकृतिवद्यान्यस्य प्रकृतिवद्यान्यस्य विद्यान्यस्य विद्यानस्य स्वत्यस्य विद्यानस्य विद्यानस्य विद्यानस्य विद्यानस्य विद्यानस्य स्वत्यस्य विद्यानस्य विद्यानस्य विद्यानस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्यस्य स्वत्यस्यस्यस्यस्य स्वत्यस्यस्य स्वत्यस्यस्यस्यस्य स्वत्यस्यस्य स्वत्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्

नमी वः सर्वदेवानामाधारैभ्यव्यवाचरे । महाभूवाधिदेवेभ्यः शान्तिरस्तु विवं गम ॥ यस्मान्न किश्विदप्यस्ति भहामूर्वेविना छत्तम् । भ्रह्माण्डे सर्वभूतेषु तस्माच्छीरस्तु मे सदा ॥

स्ट्राम्भसाम् पुण्याणि क्रिकृष्यः न्यस्ट्रस्य क्रेड्रिसक्रियः ज्यस्वित्राक्षे-स्याकुस्त्वा महासङ्करमुमार्थं ' इमें महामृतक्ष्यं महारत्वित्रामन्तः स्थित-सीवणेष्ठस्यक्रान्द्रिपाणवेदान्त्रारिमासहितं परितः स्थावितायद्यस्या न्यस्त्रमामात्त्रात्रात्रापूर्णकृतिस्ति विज्युत्तेत्वतं छुळापुरुगोक्त्राता-व्यस्त्रम्या युद्धेत्वित्रस्यो छुत्तन्यमहं संयद्दे न मम ' इगि तद्यतेषु दृस्या सुवर्णदक्षिणां द्यात् । स्वल्यतेकाप्रिविधासम् । देयविमासह्युक्षाकुष्यव- दानगर्भः

त्त्रेशा । ततः पुण्याहवाचनमहादिषुनानिवसर्जनमण्डपादिप्रतिपादनमास-णभोजनाशीयोदमहणमङ्गळाचारादीनि । इति महाभूतघटमहादानम् ॥ »

इति पोडश महादानानि ।

अय दश पहादानानि । कौर्य---

कनकाश्वतिला नागा दासीरथमहीगृहाः ।

क्रन्या च कपिछा धेतुर्महादानानि वे दश ॥ बिह्नेपुराणे शम उक्षण—

क्रोधादिकं सवा कर्ने कृतं सुनिवरोत्तमाः । कर्यः तस्माद्विसुच्चेऽदं पापात्माणिवधादिकात् ॥ ' इत्यन्ता धर्मवस्वकाः पापानां पावनं परम् ।

दानं चेह सुवर्णस्य ते समृजुर्महर्षेयः ॥

ध्यासः—

868

ज्यासः— सर्वोन्कामान्त्रयच्छन्ति ये प्रयच्छन्ति काश्वनम् । पतिक्षं भगवानित्रः विवामहसुवोऽझवीत् ॥

तनिवृत्राणे— व्यमारस्वश्ववया वातव्यं काश्वनं मानवैर्सुवि ।

नात, परतरं छोके सदा: पापविमोचनम् ॥ सुवर्णस्य सुवर्णस्य सुवर्णं यः प्रयच्छति । सर्वपापविनिर्सुसः स्वर्गेछोके महीयते ॥

भाधसुवर्णराज्देन हिरण्यमुक्तम् । द्वितीयेन च शोमनवर्णत्वम् । तृतीयेन परिभाणनिशेषः ।

सुवर्णद्वितयं दत्त्वा षश्चया गतिमात्रुयात् । दत्त्वा सुवर्णस्य शतं द्विजेम्य श्रद्धयाऽन्यितः ॥ श्रद्धान्नेमपुप्राप्य श्रद्धाणाः सह मोदते ।

व्रक्षकाव मनुपाप्य ब्रह्मणा सह भारत । सक्कदुवरितसुवर्णशब्दस्य पोटशागपिविशिष्टद्देमवाचितेति प्रागुक्तम् । सुवर्णदाने देयसुवर्णस्य नृतीयखनुर्यो चाशो दक्षिणेति पूर्व परिभावायाः

सुवर्णदाने देयसुवर्णस्य नृतीयञ्च सत्तम् । रजवनिति वैचित् । दानमन्त्रः---

हिरण्यगर्भगर्भस्तं हेमनीमं विभावसोः । स्त्रान्तवुण्यपत्तद्भतः सान्ति प्रयन्त्र मे ॥

फौसं-

पहेकं हिमुणं बादपि विशुणं शक्यमुक्तमात् । फनकं स्वास्तुयणेन ह्वास्यां त्रिभिः सदक्षिणम् ॥ यत्नाद्वो या तत्क्र्याद्विणा स्वाचयाद्याद्या । इति सुवर्णदानम् ।

आदिखपुराणे—

ब्राविरयोत्रयसंत्राती विधिमन्त्रपुरस्कृतम् । द्वादि का ध्वनं यो वै दुःस्त्रप्र प्रतिदृश्यि सः ॥ द्वास्युदितमात्रे यसस्य पाप्मा विकीयते । बायुपुराणे---

गुष्ता गुष्तार्द्धगात्रं वा नियतः प्रतिवासरम् । कनकं न्यस्य छिट्टे हु वजित्तस्यद्वमुत्तमम् ॥

সহ্যাত্ত---

श्रेणुष्टाबिहती द्वानं प्रवीपि तव बारत् । हातामानिति प्रीक्तं सर्वपापप्रणासनम् ॥ बादुष्टं श्रीकरं पुण्यमारोग्यं सन्वतिप्रदृष्ट् । श्रुक्तिहार्ते सार्यं संस्कृतकारणम् ॥ पुण्यकार्ते अर्थेतु जन्दस्यमहानितृ । -नित्यं या कारयेदानं जनमञ्जेतु विशेषतः ॥ प्रण्यदेशित् सर्वेतु गृहे देवाळतेतु च । यत्र सामनसम्पन्तिस्त्य दानं समानरेतृ ॥

तथा---

गन्येन मूर्मि शहता जडेन शास्त्रित्य मध्ये सिततन्दुर्देख । सरोश्हं सुन्दर्फेसराहर्य सर्काणिकं चायद्वर्ध विख्लिय ॥ तस्मिन्दर्रुप्ये शतमानपात्रं निभाय तस्योपरि तं विचिन्त्य । श्रद्धाणमीकं कमलासनस्यमाराष्यमन्तादिकिरादरेण ॥ विमं तथा वेद्रविदा वरिष्ठं विचित्त्य बुद्धश्चा तु समर्वयित्वा । द्वात्सुवर्णं शतमानसभै संगीयवामात्मभूरित्युदीर्यं ॥ शतमानं शतरूणव्यापाशुन्मितम् ॥

इति शतमानदानम् ।

अथ रजतदानम् ।

स्कान्दे-

यः प्रवच्छति विषाय रजवं चांडपि निर्मेटम् । स विश्वयाञ्च पापानि स्वर्गेटोकं महीयते ॥ स्पवान्सुमगः श्रीमानिह छोकेषु जायते । इति रजतदानम् ।

अयाश्वदानम् ।

स्तान्दे— कश्वं

कथं यस्तु प्रयच्छेद्रै हेमचित्रं सुरुधणम् । स तेन फर्मणा देवि गान्धर्वे सोकसःनुते ॥

भारते— सर्वोपकरणोपैतं युवान दोपवर्जितम् । छोऽश्वं दशाति विद्याय स्वर्गेलोके महीयते ॥

तथा--

यावन्ति रोमाणि ह्ये भवन्ति हि नरेखर । सावती याजिता छोजान्प्राप्तुवन्तीह पुण्कलाम् ॥

कालिकाप्रसणे-

क्षभे वा बादि वा शुग्यं शोसने चाइप पातुके ! द्वाित यः प्रधान वे ब्राह्मणेश्यः सुसंयतः !। साथ दिन्याित यानाित राष्य्वप्तराक्षिनः । दुरुः पन्या नचैतेद सित्यति कदाचन ॥ क्षत्र दिस्ययोनत्यतुष्टपयित्द्रसम्पचित्याकम प्रत्येकं पन्ते हेश्यम् !

कथं तन्मृत्यमयवा कतीयो मध्यमोत्तमम् । द्याद्विचानुसारेण वारागणपरिच्छन्म् ॥ श्रीः षश्वपञ्जे द्वीच्ये, सुवर्णान्डहृतं कमात् । सद्क्षिणं सवस्रं च ब्राह्मणायाद्विहोत्रिणे ॥ तारागणसारातुकार्यन्द्वारः ।

वानसन्त्रः--

. ४.--उच्चै:श्रवारत्वमधानां राज्ञां विजयकारकः । सर्यवाह नगरतुभ्यमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

अय खेताखदानम् ।

गारुडे---

अश्वमेदमारं यस्तु कही कहुँपनीश्वरः ।
कश्वदानं हु तेनेइ कर्तव्यं विभिन्नवेक्ष्य ॥
विभि त्रस्य प्रवस्थामि महाणा निर्मिष्ठं पुरा ।
सेतमश्रं हुतं सा स्वर्थामि महाणा निर्मिष्ठं पुरा ।
सेतमश्रं हुतं सा हेद्रा स्वर्थाम् पृतिक्ष्यः ।
कर्त्रेन्तं हुतं सा हुतं स्वर्वन्तोपशोभितत् ॥
कर्त्रेनं हुतंस्तानेः स्वीतपुच्छं सुवासत्त् ॥
कुर्मेण श्वकेतेन संवृतं स्वायुश्यान्वित् ।
धान्यरस्तोपरिस्यं हु वद्यक्शं सुष्टुकच् ॥
एवं सुतेनसं वार्यं माहाणाय निवेद्वेतः ।

मन्त्रादियुगाधयनविषुनोपरागादिषु दानम् । अथ पूजामन्त्रः ।

मार्तण्डाय सुवेगाय काश्यपाय त्रिमूर्तये । जगद्वादाय सूर्याय त्रिवेदाय नमोऽन्तु ते ॥ एनं समुधरेन्मन्त्रं कर्णे द्यात्तिळीदकम् ।

दानवाज्यम् । ॐ जरात्यार्वि जमुक्तोत्रायामुक्तानेण आद्याण-येगमध्यं मुक्पविक्रकारक्कारपुक्तकार मेथेयकपुष्योणानित्वं रीरपक्-रक्तत्तोषशीमितं वननेथं जावस्युं कीयपुच्छं मुद्यालयं मुक्पव्यक्तंयुर्वे स्वापुधानित्वं धान्यस्कोपरिस्थितं यदकक्षं मुक्पुनन्यपुष्पार्यार्चितं सक-स्ट्रमहत्त्यादिपायनाशकारस्युर्व्यक्षं संपत्रे न मम । इति स्वाविधक-रह्मकृत्यादिपायनाशकारस्युर्व्यक्षणकामः) इति ना, 'सूर्यकोकत्रक्रकानः) इति वा यापाकाममुक्कम् । महार्णेव समुत्यन उनेत्यवसपुत्रकः । मधा स्वं वित्रमुख्याय दत्तो हय सुद्धी अत्र ॥ इमं वित्र नमस्तुभ्यमधं ते प्रतिपादितम् ॥ प्रतिगृहीध्य विभेन्त्र मचा दत्ते तु दोभनम् ॥

इति दानमन्त्रमुचाये— कृषे समर्पणं कृत्वा विमहस्ते जस्त्रं क्षिपेन ।

सतः सुवर्ण द्यात् ।

वद्यादश्वपुरो गण्डेत्यदानां सतसाविम् । भारकर्षं मनितः ध्यात्वा काठोक्य स्वयद्धं प्रजेत् ॥ ' श्वेतमश्चं व्य यो स्थारफर्वं दक्ष्याणं भवेत् । बह्यां च तथा दस्या तुस्यमेव फर्डं ठमेत् ॥ पृदं कृते नरस्यास स्वेठोकं स्रजेतरः । '

इति श्वेताश्वदानम् ।

['] अथ तिल्दानम् ।

बादित्यपुराणे— वैद्यादमां ग्रीणेमास्मां वा तिस्त्रान्सीट्रेण संयुवान् । यः प्रयस्टिट्रिजाम्येम्यः सर्वेषायः प्रमुग्यते ॥

ज्येष्ठे मासि तिलान्यस्या पीर्णमास्यां विशेषतः। अभ्रमेशस्य यहस्य एकं प्राप्तीति मानवः।। साथै मासि तिलान्यस्य ब्राह्मणेश्यः प्रयश्काति। सर्वसस्वसमाकीणे नएकं न स पश्यति॥

वसिष्ठः—

नित्यदावा विस्तानां यो नरः खर्गे महीयते । महाभारते—

दद्वो जुह्तवश्रेव हरतः प्रतिगृह्वतः । • विन्ने विन्ने विन्नर्रोणः सीवर्णानां अधिष्ठिर ॥ समा—

> सर्वेषामेन दानानां तिल्लदानं वरं समृत्य । सर्वेषापहरं विद्वि पवित्रं स्वर्ग्यमेन स ॥

विष्णुधर्मात्तरे---

तिला गानो हिरण्यं च अत्रं फन्या वसुन्धरा । दत्तान्येतानि विधिवत्तारयन्ति महामयात् ॥

सथा--

विलोद्भर्भा विल्हायी विल्होमी विलोद्भी । विल्हासा च भोक्ता च पद् विलाः पापनाहाबाः ॥ असकृरपद्विली भूत्वा सर्वपापविवर्जितः । प्रिश्चरूपेसहस्माणि स्वांलोके महीयते ॥

कीमें-

कृष्णात्रिने तिलान्कृत्वा सुवर्ण मधुसर्पिपी । द्रोणैकं बाससा छत्रं विधा तद्वरसदक्षिणम् ॥ माहितात्रौ दिजे दश्वा सर्वे तरति दुन्कृतम् ।

सिषेति हीनमध्यमीचसमेदवः । द्रोणैकं द्रोणद्वयं, द्रोणीयवयं चेति । तद्रसम्हित्वं कमादेकद्वित्रमुवर्णेनिदेतम् । क्षेत्रदं दानवाप्तमः, । क्षोरागृ 'बयुक्तरागीयाय बादाणाय पर्वं कृष्णाप्तिनत्तरं युवर्णीयपुन्त-रिपेश्वं वक्तव्वक्षं तिव्वद्रोणं सर्वपणस्यकामसरुव्यग्धं संपद्वं न मागं कृते-त्रापिकसानाविद्यापित्रदं वर्षणं विश्वणां प्रश्वमाई संपद्वं न मागेति ।

इति विख्दानम् ॥

यम:--

तिलपार्वं तु यो क्यायस्यहं बाज्य वर्षेण । सद्क्षिणं सरक्यायादृदि छत्वा जनावेनम् ॥ भारायेभिविषं पापं धर्भस्य वयनं यथा । स्कान्ये तु जमायां दत्तं वत् पिनृतारकम्, इत्युक्तम् ॥ माद्ये—

वाम्रपात्रं तिलैः पूर्णं प्रस्थमात्रैद्विंबाय तु । सिंदरण्यं घ यो दयाच्छ्रद्वाविचानुसारतः ॥ सर्थपापविद्युद्धारमा रूमते परमां गतिम् ।

दानवानयन्तु, अञ्चल्वाद्वि 'इदं ताम्रपाञं विख्णूर्णं समुत्रर्णमहोपपा-पद्मयकामस्तुभ्यमहं संबद्दे न मम '। सुवर्णं दक्षिणां च दद्मान् । अथ महातिल्याथम्,। साम्रपात्रे तिलान्द्रत्या पलगोदस्कल्यिते । सहिरण्ये सञ्जत्या वा वित्राय प्रतिपादयेन् ॥ साज्ञयोजिविधे पापं बाह्यमनःकायसंभवम् ।

कौंग्रे--

तिरुपूर्व ताम्रपात्रं सिंहाण्यं द्विमातये । प्रावदेश्या तु विभिन्नहुःसमं विनिह्नित सः ।। निल्यात्रं त्रिया मोर्च्छ कनिष्टोचामम्यमम् । साम्रपात्रं दृष्पार्थं ज्ञास्त्रं परिकीर्वित्यम् ।। श्चिमुणं मध्यमं क्रोच्छं त्रियुणं वोष्यमं स्वत्यम् । स्वर्णमेकं ज्ञास्त्रं व्यस्त्रम् विपेन् ।। त्रिमुणं वोष्यमं व्यस्त्रम् परिकीर्वित्यम् । -सुवर्णं दृष्ठिणां व्हास सर्वेषायस्त्रयो भवेत् ॥ भाग्नं मान्नणां व्हास्त्रम् विषयम् ।

आदित्यपुराणे--

यहं सीशामणि पर्तु यदि क्षिणमें विषयते ।
महासारतयमा वाणी कृषे चत्री च दीर्घिकास् ॥
पर्वक्रते मानुक्तामानुष्योजे भवति सारावः ।
सहित्रणं कर्मायणामान्य प्रचान प्रदुष्यते ॥
ह्युद्धणं कर्मायणामाम द्वन्य मानुक्यते ॥
ह्युद्धणं कर्मायणामाम द्वन्य मानुक्यते ॥
ह्युप्तमामान्य निर्देष्टं विद्यानां प्रस्मसाहस् ॥
ह्युप्तमार्थाकातुरः पात्रोपिति विधारयेन् ।
स्तानं कृत्वा निम्नणात्री चितृन्देवांक वर्षयेत् ।
स्तानं कृत्वा निम्नणात्री चितृन्देवांक वर्षयेत् ।
सत्तोऽभिष्मुजयेक्ष्यस्य गृहस्याच वर्षयेत् ।
हित्येत्यां द्वादसारं कृद्धमेनाच चन्दनीः ॥
वतो विद्धस्यापित्वा दोमं सूर्याच्विस्तिः ।
वतो प्रविद्वाणाय पृज्येद्राधिमावतः ॥
वतो प्रावणानाहृष्य चृत्वस्यवं सुसंस्वतम् ।

पारों प्रकात्य भविभिन्मामुखा है समाचरेत् ॥ शहकुत्य सभाशास्त्रण माध्यों ना स्वनासरे । महणे रिवसोमाभ्यां संज्ञान्तिषु युगादिषु ॥ तथान्यदिष यहसं माध्यासुदिश्य मातरस् । तद्श्यसम्बं सर्वे युरा प्राप्त महेश्यरः ॥ जीवन्ती भूषयेद्रस्मान्त्येत्रपि विस्तृपणैः । दृश्या विमस्य पात्रं तु होमं कुर्वाध्ययनतः ॥ सोपरसरे सत्ताम्युरुं कृष्माप्य विमं विसर्जयेत् ।

कार्यवामि विप्राणां भीभनानि प्रवापयेत् । इत्यादि ॥
कथास्य प्रयोगः । माल्युन्तवाबसे, नद्यादी वाय्यादी हा यभामो
क्रतसानो गृहमुखे व्यक्तिमेदो कुक्कुमचन्द्रनाभ्यां द्वारवाहर्षे पर्दा
विराच्य तम वश्वविस्तियश्विरते कांद्यपादः तिश्वस्यसानञ्जूदितपुर
स्थापित्वर्णमापचनुष्टसं च वरवक्षतेष्टितं स्थापयित्वा तस्समीपे हरिं
कक्क्षरं बाबाहनायुपचरिरम्बच्यं पुरतोऽपि स्थापयित्वा तस्समीपे हरिं
कक्क्षरं बाबाहनायुपचरिरमच्यं पुरतोऽपि स्थापयित्वा सस्तप्निविभान्
पृताकौतिश्वर्षया विष्णुभवेण स्थापस्य वाचरित्रास्ताहतिहित्राः
मान्युक्षपाकृत्यमान्त्रपादं कृत्या क्षीवन्त्यां मान्ति तां वकारिभिः सस्कृत्य
वानपान्नं त्रवैवाभ्यच्यीत्वृत्तुत्वपुत्रविष्यावयुक्तगीत्राय माल्यापार्येतं
पष्ठपञ्चविद्यात्रिति कंद्रचणानं प्रस्थसाकभित्रविश्वर्ष्ट्रप्तं सुवर्णवरवक्षविद्वितं समन्तारक्षपादिकामान्यक्षत्रदितं सानुरान्ण्यकामस्तुभ्यमहं
संप्रदे न मम इति व्याद् । मन्त्रास्तु

कार्रवपानं मया दर्च मानुराज्यण्यकाङ्ग्या ।
भगवन्यपानानुभ्यं यथाशकि तथा वह ॥
वह मासांक्र उदरे जनन्या संरिपत्तर में ।
क्रिशिता भाउमायेन स्तनपानाहिमोत्तम् ॥
पुरामुद्रादिसहेयिद्या या च कृता मया ।
मवतो वचनाइद्या मम ग्रुक्तिमेवेदणात् ॥
कार्यपानं गुक्ये च तिलानकारिद्दिक्षणाम् ।
समयान्यं मया दम्मुणान्युक्तिमेवनम् ॥
समयान्यं मया दम्मुणान्युक्तिमेवनम् ॥
समयान्यं मया दम्मुणान्युक्तिमेवनम् ॥
सम्याद्वानुक्तिन तन्त्रानं दारीरकम् ।
सम्याद्वानुक्तिन तन्त्रानं दारीरकम् ।

जगन्मोद्दने नारदः—

स्नानागारं दिक्षि प्राच्यामामेव्यां पचनालयम् । याम्यां शयनगेई च नैक्त्यां शखमन्दिरम्।। प्रतीच्यां भौजनगृहं वायव्यां पशुमन्दिरम् । भावद्यागारं तुत्तरस्यामीशान्यां देवमन्दिरम् । इति ॥

शास्त्रये-

देवतापश्चकं तत्र चत्वारिंदात्समावृत्तम्। पुत्रियत्वा यथान्यायं वतो दवाहृहं गृही ॥ एकाशीतिपदं करना रेणुभिः कनकेन वा । पश्चारिपष्टेचानुस्तिम्पेरस्त्रेजास्त्रेडच सर्वतः ॥ दश पूर्वापरा छेला दश वैवीत्तरायताः । , सर्वे बोस्तुविभागैन विदेशया नवका नव ॥ एकाशीतिपदं कृत्वा बास्तुवित्सर्ववास्तुपु । पदस्थानपूत्रवेदेवान्त्रिशस्प वदशैव तु ॥ द्वार्त्रिशद्वाद्यतः पूज्याः पूज्याश्चान्तस्ययेदशः । मन्ये नवपदस्तवेकेश्वस्वारोधिपदाः स्मृताः ॥ विश्वतिस्त्वेकपदिकास्तावन्तो द्विपदाः स्मृताः । -एवं प्रतिष्ठिता देवाअत्वारिशय पथा च ॥

नामतस्तानप्रवस्यामि स्थानानि च नियोधत । ईशकोणादिषु सुरान्पृत्रवेत्नमशो नव ॥

ईशानादी,

शिखी चैव तु पर्जन्यो अयन्तः बुलिशायुधः। सूर्यः सत्यो मृशक्षेत्र शाकाशो वायुरेव च ॥ पूरा च वितयशैव गृहस्रतयमावुसी । गन्धवीं मृहुराजश्च मृगः वितृगणास्तथा ॥ दीवारिकोड्य सुबीवः पुष्पदन्तो जलाधिपः। **अ**सुरः शोकपापी च रोगोऽहिर्मुख्य एव च ॥ महाटः सोमसपीं च अदिविद्य दितिश्र वै । पहिद्वांबिशदेते तु तदन्तश्चतुरः भूणु ॥ ब्बापञ्जैवाय साविज्ञे जयो रुद्रस्तयैव च I

क्षर्यमा सविता चैन विनस्तान्वियुधाधिपः ॥ मित्रोड्य राजवक्ष्मा च वया प्रध्नीवरः क्रमात । अष्टमस्तापवरसस्तु परितो त्रहाणः स्मृताः ॥ आपश्चेत्रायवस्सञ्च पर्जन्योऽग्निर्दितिस्तथा । पदिकानां नु चर्गोऽयमेवं कोणेप्वशेषतः ॥ सन्मध्ये त यदिविशद्विपदास्ते त सर्वतः। एतरपूर्व गृहारम्भं कुर्याद्वास्तुविचक्षणः ॥ बास्ती परीक्षिते तरिमन्यास्तुदेहे विचश्रणः। बास्तुवदासनं कुर्यात्समिद्रिर्वेटिकर्म च ॥ जीर्जोठारे तथोसाने तथा च नववेदमनि । मबप्रासादभवने प्रासादपरिवर्तने ॥ द्वाराभिवर्तने सद्धासादेषु गृहेषु च। .वास्तूपदामनं क्रुयोत्पूर्वमेव विचश्रणः ॥ एकादीतिपदं छिख्य बास्तुमध्ये तु विष्टकैः । होगिक्षिमेत्रके कार्यः कुण्डे हस्तप्रमाणके ॥ यत्रै: कृष्णतिलैश्चैव समिक्रिः श्रीरवृक्ष्त्रैः । पालाहै। खादिरैधापागागेंदुम्बरसंभीः ॥ कुरादुर्वादछैर्वाऽपि मधुसपि:समन्वितैः । कार्यस्त पश्चभिर्विलेविलावीत्रेरयापि च ॥ होमान्ते भक्षमोज्यैश बास्तुदेहे बिंछ हरेत्। तद्वद्विशेयनैयेशमिदं दशास्त्रमेण तु ॥ पवं संपृत्रिता देवाः शान्ति छुनैन्ति ते सदा । सर्वेर्ण काञ्चनं द्वाद्वक्षणे गां पयस्विनीम् । इति ॥

ग्रहवास्तुशान्तित्रयोगः । यज्ञमानी मासप्शानुहिन्य 'श्रस्य वास्ताः क्षुभतासिद्धपर्य वास्तुशार्ति करित्ये 'इति सद्धरत्य गणेशपूज्ञान् स्त्रसिवाचनमातृपूजाभ्युद्धयिकश्राद्धाचार्यमञ्जलिक्यरणानि जुर्बात् । तत आचार्यो, 'यदत्र संस्थितम् ''अपकामन्तु ' इत्येताभ्याम्—

भूतप्रेतपिशाचाचा अपकामन्तु राक्षसाः । स्थानार्द्रसमद्वजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवं त्यिमाम् ॥ इत्यनेन च सर्वेदान्त्रियं पथ्याब्येन 'द्युची वो हृज्या' इति जयन्तक्द्रार्यमसंविजविवस्वद्विषुधाधिपमिजराजयध्मपृर्थ्वी**धरा**पक्सक हाणी यवतिलसमिदाज्यपायसैरमुक्संट्यया वास्तीप्पतिमेवरेव द्रव्येरस् कसंख्यया प्रश्वविल्वेस्तद्वीजैवो चरकीविदारीपृतनापापराक्षसीस्कन्दार्वे ममन्भक्षविलिपिन्छानिन्द्रादीश तरेव द्रव्येरमुकसंख्यमा यहरे इत्युक्ता शेषेणेत्याचाज्यभागानते महहोमं कृत्वा यवतिलसमिदाज्यपायसैः सि-ख्यादिवेवचाभ्यो नाममन्त्रैः प्रत्येकमष्टावष्टाविशविमष्टोत्तरशतं वा हुत्वा, वास्तोत्पत्तये पतान्येत्र द्रव्याण्यशोत्तरहातं जुहुयुः ऋत्वित्रः । तत्र वास्तो-व्यते इति चरवारो मन्त्राः। एकैकेन च मन्त्रेण सप्तिविशतिः सप्तिविश्वतिः राहुतयद्दरयटोश्तरशतम् । तैअतुर्भिः 'वास्तोष्पते धुवा स्यूणाम् 'द्वति पञ्च-विशतिः पश्व वा विस्वकळानि तद्दीजानि वा जुहुयुः । तत्राचार्यः स्विष्ट-छत्तिहोसरोपं समापयेत् । यजमानस्त छोकपारुभ्यो महपीटदेवताभ्यक्ष वींछ बर्रवा पूर्णोहुर्ति हुत्वा शिख्वादिपश्चवत्वारिशेर्द्रवताभ्यः पायसाः दिना विं इत्ता ईशानादिकमेण चरकीविदारीपूतनापापराश्वसीभ्यो लोकपालेभ्यव वर्कि दुरवा शिल्यादिप्रीतये का वन द्विजेभ्यो बहाप्री-तपे घेतुं च बदात्। ततः शान्तिकछशोदकेन ऋतिनिभरभिषिको यजनात ऋतिवास्यो दक्षिणा दस्ता वाद्यादिपूर्वकं राक्षोन्नपानमानमः न्त्रपृष्टं स्रोण प्रदक्षिणं येष्टयित्वा समन्ताव्वछवारां श्रीर्वारां च ब्रवा पृथ्यनवपरे सुरूपा पृथ्वी ध्यात्वा पृथ्वये नमः इति संपूज्य सर्वदेव-भवं वार्त सर्वविषयं परम् , इतिरादित्वा गृहस्यामय आकारान्देर जातमद्रं भवं साला गीमभूतातुष्ठित्व द्याप्रयन्तपुरमास्वरस्टहुन सप्त भीनानि दथ्योदनं च शिह्ना ननं जडपूर्णकडरी शुक्रैकपुष्पयुर्व गम्धाद्यर्थितमादाय जानुभ्या भुवं गला तज्जलं गर्ते क्षिपेत्, अ नमी वरुणाय इतिमन्त्रेण । जले प्रदक्षिणावर्ते पुष्पे चीर्व्वसुले शुभग्। वतोऽपकपृरपेटिकायां सप्तश्री जद्भयोदनशैवालफलपुरगाणि क्षिप्त्वा सत्-र्यघोपं पूर्वस्थापितां वृपवास्तुपतिमामानीय पेटिकांबी संस्थाप्य पेटिको विधाय पठेन्-

पूजितोऽसि भया नारतो होमायैरचैनै: धुमै: । मसीन पादि विश्वेश देहि मे गृहणे सुदान् ॥ बारतोप्पते जमसोऽखु भूशव्याभिरत मभी । महुदं धनधान्यादिसदृढं हुद सर्वदा । इति ॥ ातो , मृत्पेटिकाँगर्वं संस्थाप्य---

सरीलसागरां पृथ्वी यथा बहसि मूर्द्धनि ।

वया मां वह कल्याण सम्पत्सन्तिविभिः सह ॥ ्रवंत संपार्थ्यं, वयेव स्दा गर्वे पूर्येत् । स्वाधिस्येऽधिकफलम् । म्ये सम्म । स्यूनत्रे स्यूनम् । गर्तोपरि गोमयेनालिया गन्धपुण्याः तादि शिलाडडचार्यत्रहार्त्वनः संपूज्य तेम्यो दक्षिणां च दत्त्वा मह-ठनारतुपीठदेत्रताः संपूज्य ' उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्यते ? 'वान्तु देवगणाः ! त नित्रव्याचार्याय दरेश ब्रह्मशिख्याद्यदेशेन विधानसंभीव्य भूयसी क्षिणां दस्या सुह्रगुतो भुश्नीत ।

इति गृहवास्तुशान्तिप्रयोगः।

अथ ब्रह्मानमयोगः।

गृहमध्ये दक्षिणमागे पद्मं विक्रिक्य बहुपरि प्रस्पमात्रांशिकांस्त-दुवरि शय्यां स्थापित्वा शय्योपरि (सीवर्णशय्योपरि) सीवर्णछक्ती-मारायणपरिवां संपूर्व प्रतिपदीतारं सपरनीकं प्रतिपदार्थ कुरवा वं करे गृहीत्वा समङ्गळवीपं बर्वमाणमन्त्रिगृहं प्रवेशयेत् । ते च मन्त्राः--

पहोहि नारायण दिव्यल्य सर्वामरैवेन्द्रितवादपद्म । शुभाग्रभानन्दशुवानधीस लक्ष्मीयुतस्वं च गृहं गृहाण ॥ ननः कीश्तुभनाथाय हिरण्यक्रवयाय च । धीरोदार्णवसुप्राय जगदात्र नमी नमः ॥ मनी हिरण्यगर्भाय विश्ववधीय वै तमः। धराचरस्य जनको गृहमूताय वै नमः ॥ भूलॉकप्रमुखा लोकास्तव देहे न्यवस्थिताः । मृत्यन्ति यावरकल्पान्यं सथाऽस्मिनभवने गृही ॥ स्वरपसादेन देवेश पुत्रवीत्रैर्वृतो गृहे । पश्चयहक्रियायुक्ती वसेदाचन्द्रतारकम् ॥

तत्सं पूर्वस्थावितशय्योयप्र्युत्स्युख्युपवेश्य खयमासने उपविषय देशकालकीर्वनीत्तरममुकगोत्राचामुकसर्मणे बाह्मणायेदं गृहं पकेष्टकादिरचितं यथीपपचितंपादिवं कास्यताधादिभाजनसर्वधान्य-छवणपृतगुडशकैरागोवळीवर्ददासमञ्जन्छिकावितानादिसर्वोपकरणयुत

सदीपत्रभोद्दशेलं सर्वदेवतं सर्वपायस्वयपूर्वकक्रस्यकृतिहस्रताविभारायणः सभीपे क्षीराजेवनिवासकामस्यय्यवहं संवद्दे न गण, इति दद्यात्। म्रण्यन् यगृहे दानं 'पक्रेकमन्वन्तरावस्थित्रमातिकोक्त्याव्युरिनेशसक्तःमः' इति । यद्वाः सर्वत्रः विज्युरीतिकासः । ततः मार्थना—

्दरं गृहं गृहाण त्वं सर्वोपस्यसंयुवम् । सत्र वित्र प्रसादेन ममास्वितिनतं गृहम् ॥ भृहं मम विभूत्यर्थे गृहाण त्वं द्विजीतम् ।

पृद्दं मन विमूर्यय पृद्दाच त्व ।द्वमातम ।) प्रीयता में जगदोनिर्वास्तुख्पी जनार्दनः । इति ॥

सतः प्रतिमहोता ¹ देवत्य स्वा ³ इति यञ्चय प्रतिगृध ॐ स्वस्तो-धुक्त्या कासकृति ४डेन् । दक्षिणा हा स्वणसहस्रमारभीरस्तृत्वणपर्य-स्ताचया द्विता । ततः पादुकोषानच्छत्रचासरादिक् पुनर्देदश—

संपर्भ वाष्यसंपर्भ गृहोपश्करभूपणम् । सर्वे संपूर्णसेवास्तु स्वश्यसादाहि नोचम ॥ इति प्रार्थयेत ।

प्तरफलमपि मारस्ये-

य पर्व सर्वर्तवर्म प्रकेष्ट विनिवेदयेत् । ध्रुट्यकोटिशर्त याबद्गहालोके महीयते ॥ कैल म दाकां बाडिय यो द्याहिशिपूर्ववम् । ससे श्रीरार्णव रम्ये नारायलस्त्रीयतः ॥ भूगमयं बाडिय यो स्वार्यक्ष स्रोपस्य स्टिक्स

मृण्मयं वाडिय यो दशाहुई घोषस्परान्त्रितम् । पुरेषु छोकमालानां प्रतिमन्त्रन्तरं बसेत् । इति ॥

पत्य वास्तुपूजनम् ।

जनेन विधिना यस्तु प्रतिसंवत्सरं दुवः। गहे जावाने कार्यन प्र

रहे त्यावत छर्यात्र स द्वःरसम्बागुवात् ॥
दश्यस्य प्रतिक्षत्वसरं कर्तव्यम् । अत्र वास्तुदेववानां विदेशनीवेधादश्यस्य प्रतिक्षत्वसरं कर्तव्यम् । अत्र वास्तुदेववानां विदेशनीवेधादिनि । विधिने घृताक्षम् । चर्निन्याय सोत्यक घृवौदनम् । जयन्ताय
पोशक्तं रिष्टमर्थ कूर्वं च । कुन्तिस्रायुव्यक्ष रत्नाति पेटं कुन्तिस्रं
च । सूर्योग विकानकं घृयं सक्तुं च । सत्याय घृवगोपूमम् । मृताय
प्रत्यात् । अन्वरिक्षाय कार्यकीः । व्याये सरक्त् । पूर्णे वातानः ।
वित्याय वार्यकीदनम् । पुरुव्यताय सम्बन्नम् । यमाय विशिवीदनम् ।

गन्भर्यय पत्थीरतम् । मृद्धंराजाय मेविजिद्धिकाम् । स्याय यावकम् ।
पितृस्यः इत्तरम् । दीवारिकाय मृत्यकाम्, वेदं छण्णविष्ठं च । सुपीवायापूर्व । पुरवन्ताय वायसम् । वहलाय छज्रस्त्यमसिदं पद्मम् ।
असुराय पेटं दिएकारं सुरा च । शोषाय पृतीदनम् । पापाय गोजाम् ।
रोगाय पृत्वेदनम् । काव्यं कडान्वितं पुष्पम् । सुर्वाय सर्विः ।
असुराय पेटं दिएकाम् । होभाय मृत्यायसम् । सर्वेश्यः शास्त्रियस्य सर्विः ।
अस्त्रत्य राद्धितम् । होभाय मृत्यायसम् । सर्वेशः । शास्त्रस्य विद्ये पृतिकाम् । लावाय द्वीरम् । लाव्यस्याय
विद्ये । साविशाय स्टब्लाम्मरीयं दृशीद्वं च । स्वित्रे गृहापूर्म् ।
जयाय पृत्वचन्तम् । विवस्ते रक्त्यन्तनं वायसं च । राजयस्मणे लामं वर्षः समस्म । हन्त्रस्य हरितास्त्रायः स्वत्यायस्य ।
वर्षः च मोसम् । हन्त्रस्य हरितास्त्रेदमं चृत्वचंद्वतम् । गुडीदनं तु निशाय ।
वर्षः च मोसम् । इन्त्रस्य हरितास्त्रेदमं चृत्वचंद्वतम् । गुडीदनं तु निशाय ।
वर्षः च प्रत्यायसम् ।

पश्चेमध्ये ववाधीव विल्रस्तव्हिष्टस्त् । भश्ये भोजये च विविधं श्रद्धणे विविधेष्टत्ते । इवि ॥ भश्ये भोजये च विविधं श्रद्धणे विविधेष्टत्ते । इवि ॥ राक्ष्मीनां सु, ईधानभागे चरक्ये भावोष्टर्त पूर्व नम्प्रेसरं ए दिवर्गा न्वितम् । कामेये विदार्थे स्वतिप्रतासीहर्दनं हरिद्रीवृत्तं च । नैर्नते पृतनाये सरुचिरं एथोर्ड्न सरस्वराध्ये संसुक्तं पीतर्रकं च विलम् । मायन्ये पारराक्षर्ये मस्स्यमांसं सुरासवं च । सबैत्र पायसं ्या व्यास् ।

इवि गृहदानप्रयोगः।

अथ मक्दानम् ।

कुरना मठं प्रयस्तेन शयनासमस्युवस् । पुण्यकाले द्विजेभ्योऽय गतिभ्यो था निवेदयैत् ॥ सर्वात् कामानवामोधि निष्कामो मीक्षमान्तुयात् । इति स्कान्दोत्तम् ।

इवि मठदानम् ।

अथ प्रतिभगदानम् ।

मार्कण्डेये —

द्धर्यात्प्रतिश्रयगृहं पथिकानां हिताबहम् । निक्षगेहेंकदेशं वा साधृना यो निवेदयेत् ॥ भक्षयं पुण्यमुद्धिं तस्य खर्गापवर्गसम् । सर्वकामसमृद्धोऽसी देववदिवि मोदते ॥

भविध्यत्पराणेऽपि--

प्रतिग्रये सुविस्तीर्णे कारिते सजलेन्धने । वीनानाथजनाथीय वद कि न कुर्त भवेत ॥

प्रतिश्रयो धर्मशाखा 🗗

इति प्रतिश्रयदानम् ।

अय कल्यादानम् ।

धृहस्पविः-सहस्रमेव धेनूनां शतं बाउनहुद्दां समम् । व

दशानद्रत्सम यानं दशयानसमी इयः ॥ ' दशक्षात्रसम्बद्धाः भूभिदानं वतः परम् । सदते सर्वपापेभ्यो बडालोकं ब्रजन्त ते । इति ॥

देवल:--

तिसः कन्या यथान्यायं पाछियन्या निवेच ध्य ।

न विता नरकं याति नारी वा की प्रस्थिनी ॥ वित्रिप्र:---

हाटकिश्विगौरीणा सप्तजनमानुगं फलम् ।

धन्येंण विधिना दातुमसगोत्रोऽपि युव्यते ॥ श्कान्दे---

भारतीकृत्व सुक्पेन परकीया तु कन्यकाम् ।

भरवयश्टद्धः---बर्गोत्रं समुबार्व अविवासहपूर्वकम् । नाम सङ्घीर्वयेद्विद्वान्कन्यायाध्येत्रमेत्र हि ॥ विष्ठेत्यूर्वेमुको दाता वरः प्रत्यक्ष्मुको भोत्। मध्यकौन्वितायैता तस्मै द्यात्सद्धिणाम् ॥ षद्वानं ततो गृहा मधेणानेन दापयेत ।

गौरी कन्यामिमा वित्र यथाशक्ति विमूपिताम् ॥ कोष्पार संबोध सुध्य दत्ता विश्व समाध्यय । मूर्मि गावञ्च दासीञ्च वासासि च स्वदास्तितः ॥ महिष्या बाजिनंश्रीय दशास्त्रणंगणीनपि । ततः स्वगृक्षविधिना होगाधं क्रमे कारयेत् ॥ यथाचारं विधेयानि माङ्गल्यकुतुकानि च ।

कन्यादाता प्राकृषुको चरः मटाकृषुकः । 'दातोदृङ्गुको घरः प्रत्यकृषुराः • इति भट्टचरणाः बाचारखः॥

कत्राचं प्रयोगः । वरं अधुर्पेण संपूज्य सासपकागुरुवा ' मम सम-सापितृणां निरितिशयसानन्दम्बाओकाबाप्यादिकन्यादानकरपोक्तपटा-बाप्रयेजेन वरेणारयां कन्यायाधुरुक्यमानसन्त्रया द्वादशावरान्द्वा-द्वा परास्तुवस्त्रप्रयोजकुँसारसम्ब अध्यक्षीनारायणप्रीतये प्राह्मवि-वाद्वविधिता कन्यादानमहं करिष्ये । इति सङ्गल्य,

कत्यां कतकसंपकां कतकाभरतैर्शुताम् । शस्यामि विष्णये तुभ्यं त्रक्षांत्रकितीययाः ॥ विश्वन्भरः सर्वभूतः साक्षिण्यः सर्वदेशताः । इमां कन्यां प्रदास्यामि वितृषां तारणाय च ॥

इतिमन्त्रं पुनः मम इत्यादि मीवये इत्यन्तमुक्त्या अगुक्रप्रवादायामुक्तान्त्रात्यासुक्त्वार्मणः प्रचीनायासुक्त्वार्मणः वीत्रावासुक्त्वार्मणः प्रवादायः
मुक्तान्त्रात्यासुक्त्वार्मणः प्रचीनम्बन्ध्यः
मुक्तान्त्रात्याः अविवरक्तिणेऽमुक्त्यवास्त्रकृत्यात्रात्याः
मीवीममुक्त्वार्मणः वीत्रीममुक्त्रामणः प्रचीममुक्तान्त्राति कन्यां
श्रीक्तिणां मुक्यादं संवद्दे दित वदस्त्वे त्याच् । सत्स्तुः वेदस्य स्वेति
मित्रम्भः स्वत्यात्मुक्त्वा स्वशासीयां कामस्तुति पठेत्। एवं न समेत्यादिना संपद्दे इस्यन्त्रेन वाच्येन विदेवात् । कन्यावानमितिद्यार्थं मुक्ले
स्विष्णां मूनिदास्वादिकं वयाद्याकि व्यात् । विस्तरस्तु प्रयोगरते
मन्नुस्तरणेक्तः ।

इति फन्यादानम् ।

अय वैवाहिकदानम्।

स्कान्दे---

वैवाहिकपदानं हि यो दशक्ति दयापरः । विमानेनार्कवर्णेन किङ्किणीआसमास्त्रिना ॥ महेन्द्रभवनं याति सेञ्यमानोऽप्सरीगणैः । इति ॥ वैवाहिकं विवाहोपयोगिद्रज्यवसाखद्वारादीनि । इति वैवाहिकदानम् ।

अय कपिळादानम् ।

अय कपिलादानम् भादित्यपुराणे— '

सहस्यं यो गर्वा द्यारकिपक्षं भाषि सुन्नतः । सममेन पुरा प्राह मञ्जा यस्तिन्तः वटः ॥ हरूमशङ्की रोप्यनुरो सबका कासरोहन्तान् । सक्सरो कविको दूरमा वंशान्सम समुख्येनः ॥ यावन्ति कासरा रोप्या सम्बन्धि हि । सुर्भोको कमासाय रसते ताबतोः समाः ॥

स्वतियान्ति । योमहरूपन्यानस्यनन्यस्यस्यतियान्ति स्वयंश्येन्न्तं कामभुतुलोककामः इमा कपिला सुवर्णयद्वासुपनकरपुराममुक्तापानाः वासुक्रसमेणे विमाय सुभ्यमहं संप्रदृदे स सम १ इति द्वास्।

मन्त्रो मारवे— कपिठे सर्वभूवाना वृजनीयासि रोहिणी । वीधेरेवमधी वरमादव झान्वि प्रवच्छ से ।

सनैव~

वस तु त्रिगुणं धेन्वा दक्षिणा च चतुर्गुणाम् । पदैरलङ्कृतां धेतुं पष्टाभरणभृविताम् ।

किया वित्रमुख्याय दश्या मोक्षमयानुषात् । मुशुर्वेकप्रयोगेता दश्या स्तुरः सुवर्णन् दक्षिणां द्यात् । द्रिमुणो-यक्षरोगेता मृद्यो क्षिणाः स्तुता । वर्णकराः मुक्णेश्ट्रह्वकरोह्नया-साराः क्षामान्यगोदाने स्थ्यमानाः ।

दत्ता सा वित्रमुख्याय स्वर्गमोक्षपळप्रद्वा । सप्तजन्मकृतात्पापानमुख्यते दशसंयुतः । यान्यानपार्थयते कामास्वांस्तानप्राप्नोति मानवः ।

करोत्यादिसमञ्जयस्वयाच्यायस्थानस्य सन्तरः । करोत्यादिसमञ्जयस्वयाच्यायस्थानस्य स्वयादिस्य द्वित्याने-सन्तर्युवं द्यात् । इति महाक्षिलादानम् । इति दस महादानानि । दशधेतको मारखे-

यास्त पापविचाशिन्यः कथिता दश धैनवः। शासां स्वरूपं वश्वामि नामानि च नराशिव ।

प्रथमा गुडघेतुः स्याद्ववधेतुस्वयाऽपरा । तिरुधेनुस्तृतीया तु चतुर्थी जरसंक्षिता ।

श्रीरघेतुरत् बिल्यांता मधुघेतुरतया परा ।

सप्तमी दार्कराधेनः कार्पासस्वाष्ट्रवी तथा ।

रसपेनुस्तु नवमी दशमी स्यात्स्वरूपतः।

कुम्भी धृतादिषेनुनामितरासां हा राज्यः।

सवर्णधेनमध्यत्र फेचिदिच्छन्ति मानवाः।

सबगी दीसतैसेन सथान्येऽपि महर्पयः । **रस**धेतुरधाने सुवर्णधेतुरितजतेलधेतुथा । एतद्विधानमपि मास्ययव-

क्रणाजिनं चतुर्देखं प्राक्तीवं विन्यसेतुवि ।

गोनयेनोपलिप्ताया दर्भानास्तीय रावेतः ।

रुष्त्रेणं चाजिनं सद्वद्वरसस्य परिवस्पयेन् ।

रुष्येणं चाजिनं रुपुरुष्माजितम् । प्राष्ट्रसुदी कल्पवेखेनुसुदक्पादी सनस्सवान् ॥

प्राबृह्वी प्राकृशिरसम्। सबस्तां वत्तरभागरियतबस्तरहिताम्।

. बत्तमा गुडधेनुः स्वाधदा भारचतुष्टयम् । परसं भारेण छुनीत भाराभ्यां मध्यमा स्वता ॥

कार्द्वभारेण वत्सः स्वास्कृतिष्ठा भारकेण हा । घतुर्थाहोन वस्सः स्याद्रुद्दविचानुसारतः ॥

भारः पञ्सहस्रह्यमिति परिभाषायामुकम् ।

धेनुबरसी पृतस्येती सिवस्रमान्यरावृती ॥ शकिक्यांविखपादी श्रुचिस्रकाफडेसणी।

सितसुन्निशराजी यो सितकम्बलकम्बली ॥

साम्रगण्डकप्रधी ती सितनामररोमकौ । गण्डुकं कबुरप्रदेशे ।

विदूषभूयुगोपेती नवनीवस्तनान्वितौ ।_ धौमपुच्जी कांस्यदीही इन्द्रनीलकवारका ॥

सवर्णशृहाभरणी राजतश्रुरसंयुवी । सानापळवेर्वदेन्तेर्घाणगन्धकरण्डणी ॥ गन्धभरण्डकः कर्पूरादियुतः पात्रविद्येषः ।

इत्येवं रचयित्वा तो घूपदीपैरवार्चये ।।

वस्त्रमत्तादीनां सारतो मानत्रशाधिक्ये फलाबिस्यम् । क्षथ प्रयोगः । बद्यत्यादि ' सर्वपापश्चयपूर्वनाञ्चेपयञ्चप्रष्ठप्राप्तिसद्दितः

भक्तिमुसिकामी गुडधेन्वादिदानं करिष्ये श्विसङ्कल्य वित्रं वृत्वा संपूज्य सवत्सार्ध्यनये नमः इत्यावाह्नप्रविद्यापनपूजनानि कृत्वा ता प्रदक्षिणीहरय बक्ष्यमाणमन्त्रीरामन्त्र्याधेत्यादि ' सर्वपाणभ्यपूर्वका-शेययहफ्लातिसहित्सुसियाम इमां धेनुममुक्मवरायामुकगोत्राया-सुरु इमें में विप्राय गुभ्यमहं संप्रद्दे न मम दित् द्यात्। विष्रस्त पुरुष्ठे प्रतिगृहा स्वस्तीत्युत्तरा कामस्तुति पटेत्। दाता हा सुवर्णदक्षिः

णादानविषमो जनभूयसीदानादिषमेदीपं समापयेत् ॥

अयामन्त्रणमन्त्राः-था रुद्दमी, सर्वभूतानां या च देवे व्यवस्थिता । धेतुरूपेण सा देवी मम शान्ति प्रयच्छतु ॥ देहरुथा या च कल्याणी शहूरस्य सदा प्रिया । धेनुहरेण सा देशी मन पापं व्यपोहत ॥ विष्णोर्वेश्वसि या छहमीः स्वाहा या च विभावसीः। चन्द्रार्वशक्रशक्तियाँ धेनुरूपाऽस्तु सा श्रिये ॥ चतुर्भुदास्य या छत्रभीर्यो स्वस्मीर्थनदस्य च । रक्ष्मीर्या छोकपाछाना सा धेतुर्वरदाझतु मे ॥ स्वधा त्वं पितृमुख्याना स्वाहा यक्षभुका तथा । सर्वपापहरा धेनुस्तरमाच्छान्ति प्रयच्छ मे । इति ।। एवमामन्त्रय वां धेनुं ब्राह्मणाय निवेदयेत् । विधानमैतद्धेनुनां सर्वासामिह पट्टवते ।।

सर्वासा प्रत्यक्षघेनव्यतिरिक्तानामित्यथै, । उक्तरचनस्य तत्रा-नपयोगात । एवदेव विधानं स्थात्त एवीपस्पराः स्प्रताः ।

मन्त्रावाहनसंयुक्ताः सदा पर्वेणि पर्वणि ॥

यधार्श्वस्तं प्रदासन्या मुक्तिमुक्तिफळप्रदाः । स्रह्मेपयहाष्ट्रदाः सर्वेषणष्ट्रयः शुमारं ।} स्रायने विदुवे पुण्ये व्यतीपाते तथा पुनः । गुरुधेन्वादयो देया व्यतागादिपर्वस्तु ॥

अत्र 'पावित्ताहित्य इत्युप्तमातात्वेपायहरा इत्युपतंहाराष पापमारा एव पट्ट न अक्तिमुख्यादि ' इति दानवीरचे । तत पुनेष्टावियापैबारोक्तातां मुक्तिमुख्यादीनां त्यागे मानाभावात् । उपक्रमोपसंहारीः
त्वप्रयोजकी । यत्तु 'पद्मपुराणादायेकेनैव चटेन मृतादिभेतुः द्रोणमात्रेण
च विष्ठेन भेतुत्रपा तामकाशस्त्ररम् ' इति चट्टपत्री । दानिविषेषु तु
'पञ्चसह्त्यमाणः दुम्भः ' इति । द्वाद्यपञ्चाधिन पश्चपञ्चरातानि
इन्मः ' इत्यन्ये । तत्वस्र यथापिकारं ध्यत्यत्वा द्वेषा । यत्तपि गुढ्येन्वमन्तरं पृष्येगुद्रविद्वा तथाऽपि तिञ्चमाचे तथा द्वारावृत्येनुमित्युच्या
तिञ्चानां प्राधान्याचाद्रसुरादातुच्यते ।

अथ तिलपेनुः ।

वहिषुराणे च-तिलाश्च पितृदैवत्या निर्मिताश्चेह गोसने । महाणा सन्मयी धेलुर्दत्ता भीणातु फेशवम् ॥ इति मन्त्रान्तरमुक्तम् ।

अय पृत्रधेतः ।

विष्णुधर्मीत्तरे—

तिलाभावे तथा दशाद्युवधेर्तु प्रयत्मतः । वासुदेवं जगन्नायं घृतशीराभिषेचनात् ॥

संपूज्य पूर्ववस्युष्पैर्गन्धधृपादिमिनरः। महोरात्रोपितो नामा अभिपूय मृताऽर्थिपम् ॥

मभिपूय प्रश्वाल्य, घृतार्षिपमग्निम् ।

गव्यस्य सर्पिपः पुरुषे पुरुषमाळादिभूपितम् । कांस्यापिधानसंयुक्तं सितवस्ययुगेन च ॥

हिरण्यगर्भसहितं गणिविद्रमगीकिकैः । क्षत्र पळसहरूपरिमाणः सुरुभः । द्वादशपळाधिकानि पश्चपळशसा-

भीति वा ।. इञ्ज्यष्टिक्यान्यादान्सुरान्रीव्यमशंस्त्रथा । सौवर्णे चाक्षिणी दुर्याच्छक्के चागवकाष्ट्रमे ॥ सप्तथान्यमये पार्श्वे पत्रोजेन च कम्बलम् ।

ष्ट्रयोत्तरुष्टरचर्पुरीप्रीणं परुपयानस्त्रनाम् ॥ तद्वच्छकरवा जिह्नां गुडक्षीरमयं मुखम् ।

पत्रोणी भीतकीशेयम् । तुरुष्यः सिद्धसम् । सिद्धाररस इति यावत् । पुच्छं श्रीममर्थ कार्य रोमाणि सितसंपी:।

साम्रष्टप्रं विचित्रं सु ईट्यूपां मनोरमाम् ॥ विधिना कृतवत्सां च कुर्याह्रक्षणलक्षिताम् । पतैः फ़त्वा तथा नत्वा पुत्रयित्वा विधानतः ॥

सद्भाय प्रदावन्या मङ्गला शास्त्रपार्गे । पर्वा ममोपकाराय गृहीत्व स्वं द्विजीत्तम ॥ भीयता सम देवेशो पृतार्थिः पुरुषोत्तमः।

इत्युशहस्य विप्राय दद्याहेनुं नराधिप ॥

स्कान्द्रे स्वयं मन्त्रः-

पृतं गावः प्रस्यन्ते घृतं भून्यां प्रतिष्ठितम् । पृतमभिश्च देवाश्च घृतं मे संप्रदीयताम् । इति ॥

क्सं च--

घृतक्षीरवहा नचो यत्र पायसकर्दमाः । तेषु लोकेषु सर्वेषु सुपुण्येपूरजायते ॥ सकामानामियं स्युष्टिः कविता सुपसत्तम ।

ब्युप्टिः फल्स् ।

बिष्णुलोकं नरा थान्ति निष्पापा चेतुदानतः । इत्यादि । 'दक्षिणा जैक्सुवर्णप्रमुखि यथाशक्तिः इति मदनरत्ते । ' यथासक्ति दिरण्यम्' इति देसारी ॥

, अथ मसपेनुः।

तत्रैव जलपेतुं प्रक्रम्य--

जलकुम्भं मरच्याम सुवर्णरजतान्वितम् । ' सुवर्णरजनश्रङ्गसुरान्त्रितम् ' इति सांवदायिकाः ।

रत्नाभीमशैरीख मान्यैर्धान्यैः समन्यितस् । सितवस्त्रमुगच्छनं दूर्वापहासौभितम् ॥

कुछमांबीमुरीक्षीरवालकामळकेर्युवस् । क्रियहुपत्रसदिवं सित्त्वकोपवीतिकम् ॥ सन्छत्रं सञ्जानस्कं दर्मविष्टरसंस्थितम् ॥ पद्धिमः संस्तं भूप विल्लानैत्रत्विस्म् ॥

स्यितितं द्धिपात्रेण घृतक्षीद्रवता सुखे । ' तिल्पात्राणि तामस्य द्धिपात्रं कांस्पस्य १ इति दानविषेके ।

• वयोधिवः समध्यस्ये बाह्यदेवं जलेदायम् । पुण्यपूर्वेपद्धियः यथाविकवताहतः ॥ सङ्क्त्य जलर्केतं च हुन्यं तत्ताप्रितृयं च । पूर्यदेहसकं वद्वस्कृतं जल्ययं तुन्यः ॥ पर्वसंदूर्यं गोबिन्दं लस्पेतुं सनसकाम् । स्तित्वस्वपदः शान्तो नीताग्गे निमसारः ॥ द्याहिनाय राजेन्द्र प्रीत्यर्थं जल्दापितः। . स्वान्दे---

लट्सायी जगशोतिः प्रीयतां मम देशवः ॥ -इति चौतार्यं मूनाथ विप्राय प्रतिपाद्यताम् । व्यवहात्राक्षिता रुचेयमहोरात्रमतः परम् ।

तथा—धान्यानि पार्श्वद्वये, छुत्रादीनि घाणदेशे, प्रियञ्जपत्रे अवणे, यञ्जीपतीतं मुन्नि स्थापयेत् । यरसञ्जतुर्याशनैव, दक्षिणा छक्तितः सुवर्णम् ।

क्षतेन विधिना दत्त्वा जरुषेतुं नराधिप । सर्वान्धामानवामोति ये दिव्या ये च मातुपाः । इति ॥

अय सीरवेतुः ।

क्षीरधेनं प्रवस्थामि ता नियोध नराधिप । अनुस्ति महीपृष्ठे गीमयेन नराधिप ॥ गौचर्ममात्रमानेन कुलानारतीर्य सर्वेतः । त्तरोपरि महाराज न्यसेल्ड्रच्याजिनं वतः ॥ वत्रीपरि बुण्डलिकां गीमयेन कृतामपि । श्रीरकुम्भं शतः स्थाप्य चतुर्थाशेन बस्सवस् ॥ स्वर्णस्यशृहाणि चन्द्रनागुरुकाणि च । प्रशस्तपसञ्चर्ण विख्याद्योपरि स्थसेत ॥ मुखे गुडमयं वस्या जिहा शफैरया वधा । मूलप्रशस्तद्दन्ता च मुक्तामवंपलेक्षणा ॥ श्चिपादा दर्भरीमा सितकम्बलकम्बला । वाम्रप्रधा कांत्यदोहा पट्टसूत्रमयं तथा ॥ पुरुष्ठं च नृपशार्द्छ नवनीतमथस्तनी । खर्णशृङ्गी रौप्यखुरा पश्चरत्नमयी सुवि॥ चलारि विल्पात्राणि चतुर्दिस्वपि स्थापयेत् । सप्तत्रीहिसमायुको दिख्य सर्वोसु प्रसिपेन् ॥ पवंटक्षणसंयुक्तां क्षीर्घेतुं प्रकल्पयेत् । माच्छाध वस्त्युग्मेन गन्त्रपुष्पैः समर्वयेत् ॥ ध्पदीपादिकं छत्वा ब्राह्मणाय निवेद्येत्। **जनेनैव** तु मन्त्रेण क्षीरधेतुं प्रकरपयेत् ॥

धनेन गुरुपेन्तिन प्रकरायेद्सुमन्त्रयेत्। आध्यायस्वेति मन्त्रेण क्षीरधेनुं प्रसादवेत् ॥ गृहामि त्यां देवि भत्तवा बाहको मन्त्रमुधरेत् । यवं धेनं प्रदेश्या च श्रीराहारी दिनं चरेतु ॥ विवात्रं त पयोभक्षी ब्राह्मणो राजसत्तम ।

मन्त्रस्तु--

राह्यामि स्वां देवि भक्तया छटुम्बार्थे विशेषतः । भरत्य कामेमी सर्वेः क्षीरघेनी नमोऽख ते ॥ इति । पतां देवसद्ग्रेण शतेनाथ स्वशक्तितः। हातार्द्धमथबाऽष्यद्वे तत्रैवार्द्धे सञ्चक्तिनः ॥ दवाखेतुं महाराज ऋगु तस्यापि यस्फलम् । दिव्यं धरेसहसं त स्ट्रहोके महीयते ॥ विव्यवर्पसहस्रावधि कद्रलोककामः इति कलोहेराः सङ्करपवाषये, **भ**न्यद्गढधेनुवत् ।

अथ द्धिपेतुः।

श्रीव भूडेपनदुराठण्णाजिनान्युक्ला— विश्वक्रमं च संस्थाप्य सप्तगान्यस्य चोपरि I चतुर्योहीन बस्सं तु सीयणेमुखसंयुवस् ॥ प्रशास्तवत्रश्रवणा मुक्तापळसयेक्षणा । पन्द्रतागरुष्टद्वा च मुखं वै यन्थमाहिका ॥ गन्धमालिका गन्धद्रव्यविशेष इति केचित् । 'सुगन्धपुप्पसर्?' । ' कर्पूरादिसुगन्नद्रन्यसमूहः ' इति वहवः।

जिह्नां शर्करया राजन्याणं श्रीखण्डकं तथा । °फलमूलमया दन्ताः सितसूत्रस्य कम्प्रलः ॥ बाह्यप्रधा दर्भरीमा पुच्छं सूत्रमयं तथा । सुवर्णशृङ्गी रीप्यखुरां नवनीतमयुस्तनीम् ॥ इसपादां सुसंस्कृत्यं सर्वोगरणभृयिताम् । बाच्छाच बलयुग्मेन पुष्पान्धैः सुपूजिताम् ॥ माद्यापाय इ जीनाय साधुवृत्ताय धीमते । पुच्छदेशीपविष्टाय मुद्रिकाकर्णमात्रकैः ॥ पादकीपानहीं छनं दत्ता मन्समनुस्परेत्।

मन्त्री गुडधेनुकः ।

इंपितांच्येति मन्त्रेण द्विषेतुं प्रदापयेत् । एवंद्रिक्तियाँ येतुं दस्या राजरित्तदाम ॥ एकाहारो दिनं विद्वेद्दशा च नुपनन्दन । स्वमानो वदेग्राजनिवदिनं च द्विजीचमः ॥ यत्र मञ्जूबहा नयौ यत वायसकर्दमाः ॥ सुनयो नरपयः सिद्धारत्त्व गन्छन्ति योतुद्वाः ॥ सातारो वायकार्थैव वेदिश चारित परं गतिम ।

मधनसी कष्टपायसमापिसिङ्क क्षेत्रकानः, 'इति शेपफलोहेसः ॥

अथ मधुषेतुः । स्कान्दे— मध्येनं प्रवस्यामि सर्वपापप्रणाशिनीम् । बनुष्टिने महीपृष्ठे कृष्णा जिनवृशीचर ॥ धेतुं मधुमवी श्रस्वा संपूर्णघटपृशिवाम् । सहबतुर्धभागेन चरसकं परिकल्पयेत् ॥ सीवर्ण त भुसं कत्वा शङ्काण्यगुरुषन्द्रतम् । प्रमं वाम्नमयं वस्याः पुरुष्ठं स्त्रमयं वधा ॥ पादास्त्विश्चमयाः कार्याः सितंबस्वलकम्बलम् । मर्पं शुह्रवयं छत्वा भिह्ना शक्रियाऽन्विता ॥ मीक्तिकं नवने सस्या दृश्ताः फलमबाः स्वृताः । दर्भरोमधरा देवी रीप्यलुरविभूषिता ॥ प्रशस्त्रपत्रश्राणा नानीत्रमयस्त्रती । सर्वेड्युणसंयुक्ता सप्त धान्यानि दापवेन् ॥ चतारि विल्पाताणि चतुर्दिक्षु च विन्यसेन् । आच्छारा वस्तुवुग्मेन घण्टाभरणमूचिताम् ॥ कांस्वोपदोहर्नी कृत्वा गन्धपुणैरनु पुणिताम् । प्रच्छदेशोपनिष्टाय बाह्मणाय प्रतिपाद्येत् ।) चदपूर्व त कर्वव्यं पश्चादानं समाचरेत । रसञ्चा सर्वदेवानां सर्वसनूहिते, ग्ला.॥.

भीयन्ता पितरी देवा मघुचेनी नमीऽस्तु ते ।

प्यमुखाँचे वां घेतुं ब्राह्मणाय निवेद्येत् ॥ शह गृह्यामि त्वां देवि कुटुम्बार्थे विशेपतः । कापान्कामदुधे गुङ्ख्व मधुधेनी नमोऽस्तु ते ॥ मध्रवातेति मन्त्रेण प्रदाप्यायतचेतसा । धेनं ब्रुवा च मधुपायसाभ्यां च दिनं नयेत ॥ श्राद्याणोऽपि तथैव त्रिरात्रं नयेत् ।

कङ्मुतिरपि---

बन्न मधुवहा नधी यत्र पायसकर्रमाः। ऋषयो मुनयः सिद्धास्तत्र गच्छन्ति धेनुराः ॥ सत्र भोगान्वरान्युद्धे ब्रह्मलोके स तिष्ठति । मधुनदीकपहुपायसकर्दममुनिसिद्धकोकोत्तमभोगोत्तरशङ्कोकपामः, इति विशेपफलोहेपैः॥

अय रसधेतुः ।

श्कान्दे---

रसधेर्तुं महाराज फययानि समासतः । भनुस्ति महीपृष्ठे कृष्णाजिनकुशोत्तरे ॥ रसस्य तु घटं राजनसंपूर्णमैक्षवस्य तु। चद्रत्सङ्कृत्यवेत्वाझश्चतुर्थाक्षेत्र वत्सकम् **॥** इश्चदण्डनयाः वादा राजतखुरसंयुताः । सुवर्णशृक्षाभरणा वलपुच्छा चृतस्तनी ॥ पुष्पक्रम्यञ्ज्यं क्षकंत्रमुप्नभिद्धिका । दन्ताः फलगयास्वस्याः पृष्ठं ताम्रमयं शुभस् ॥ पुष्परीमा तु राजेन्द्र मुक्ताफळहतेश्रणा । सप्तत्रीहिसमायुका चतुर्दिछ सदीपिका ॥ सर्वेपस्करसंयुक्ता सर्वगन्धविभूपिता । पत्नारि विल्पात्राणि चतुर्दिश्च निवेशयेत् ॥ धेतुं हु पूत्रविव्वाऽमे पुष्पगन्धस्नगादिभिः। पूर्वीका ये च मन्त्राह्य तानेत प्रयत्तः स्मरेत् ॥ मन्त्रा गुडधेनूकाः।

एवमुशार्थित्वा सु दीयसे वै द्विजीत्तमे ।

दश पूर्वान्यरांश्रीव भारतानं चैकविंशक्यू ।) नयेतु परमे स्थानं यस्माछ निवर्वते पुनः । हाता वा माहको बाडिप एकाई रखमो नकी ॥ सोमपानं भवेत्तस्य सर्वत्रतुषन्त्रं छमेत् । इत्यादि ॥ स्वाधिकत्दापुर्वेदशपरपुरुपाणां निष्टत्तिरहिवपरपद्माप्तये आत्मनश्र सोमपानसर्वे स्तुफलपाप्ति सामः, इति विशेषफले हेम्यः ॥

अय श्वर्कराधेतः। स्कान्दे --तहच शर्कराधेतं शृजु राजन्यवाऽर्यतः । अनुडिते महीपृष्ठे कृष्णाजिनकृशीचरे ॥ धेतुः शर्करया राजन्सदा भारचतुष्टयम् ।, चत्तमा कथ्यते सद्भिश्चतुर्योशेन बरसकः ॥ त्तर्द्ध मध्यमा प्रोक्ता चतुर्थाहोन कनीयसी । तद्वद्वरसं प्रकृषीत चतुर्थीर्वेन मानवः ॥ अथवाऽष्टांशतः क्रुयीचतुर्याशेन बत्सकम् । मर्शाशत इति भारवतुष्टयत्वाष्टमांशेन अर्द्धभारेणेत्यर्थ । स्वशतया कारयेहेनुमारमपीहा न कारयेत्। सर्वेतीजानि संस्थाप्य चतुर्दिश्च समस्ततः ॥ सीवर्णमुखशृङ्गाणि सीक्तिकेर्नयनानि च । गुड़ेन च मुखं कार्य जिहा पिष्टमयी तथा ॥ कम्बर्छ पट्टसुत्रेण कण्डाभरणमुपिता । इक्षुपादा रोप्यखुरा नवनीतमयस्तनी ॥ प्रशस्तपत्रश्रवणां सितचामरमृपिता । पश्चरत्नसमायुक्ता दुर्भरोमसमन्दिता ॥ कास्योपदोहना सम्यग्गन्बपुष्पैः समन्विता । ईटिनियानसंयुक्ता वहीराच्छादितोपरि ॥ गन्भपुष्पैरलङ्कृत्य ब्राह्मणाय निवेदयेन् । श्रोतियाय दरिदाय साधुवृत्ताय शीमते ॥

वेदवेदाष्ट्रविद्धे विशेषेणाग्निहीत्रिणे । अनम्यवे प्रदातच्या न मस्सरयुवाय वै ॥

अयने विपूर्व पुण्ये ज्यतीपातेषु पण्युरा । अन्येषु पुण्यकालेषु इच्छवा नाऽपि दांपये १ ॥ सत्पात्रं तु द्विशं दृष्ट्रा स्वागतं स्रोतियं गृहे । वादशाय प्रदातव्या पुच्छदेशे निवेदयेत् ॥ पूर्वोमुखः सदा शाता अथवा स्यादुर्ङ्गुसः । धेनुं पूर्वमुखीं कुला वत्समुत्तरतो न्यसेत् ॥ दासकाछे तु ये मन्त्रास्तान्पिदःवा समर्वयेत् ।

मत्राः गुडधेन्साः ।

आच्छाच चैन चं वित्रं मुद्रिकाकर्णवेष्टनैः । स्वरुक्तया दक्षिणां द्याद्वन्त्रपुष्पं सचन्द्रतम् ॥ धेनुं समर्चयेसस्य मुखं च न विद्योक्येत्। यकाई शकेराहारी भाराणिकादिनं वसेता। सर्वेपापहरा थेतुः सर्वेकामप्रदायिनी । सर्वेकायसमृद्धश्च जायते नात्र संशयः । इति ।।

अथ कार्पासधेतः ।

वाराहे---

धवः परं प्रवक्ष्यामि धेर्नु कार्पासकी सभाम् । पर्व विश्वस्य शुस्यर्थे ब्रह्मणा चांश्रकं कृतम् ॥ फार्पासमूर्छ तथापि तैनासानुसमः स्पृतः । सा च कार्पासमारेण पेतुः श्रेष्टा प्रकीर्तिता ॥ मध्यमा च तद्रखेंन तद्रखेंन कनीयसी । पूर्वत्रद्वस्थान्ये च हिरण्यं च तथैन च ॥ घत्सकं तु चलुर्याशाहानमन्त्रो विधीयते । कुर्वीत पूर्वेबद्ररसं वस्त्रधान्यागुपस्कतम् ॥ पूर्वबद्धराहीकविल्धेनुदानवत् ।

द्देगकुन्देन्द्रसदशे क्षीराणपसमुद्रवे ॥ सोमप्रिये सुधेन्त्राख्ये सौरमेथि नमोऽस्त ते । दत्तेयभिन्द्रनाथाय दाशाङ्कायापृताय च ॥ पत्रिनेत्रप्रजाताय सोमराजाय वै समः ।

सस्त्रेषं परवा भगवा माद्याणाय प्रवच्छर्वि ॥ स याति चन्द्रकोर्के हु सोवेन सह मोदवे । इति चन्द्रकोरगमनानन्वरचन्द्रसहबाससुराकामः, इति विदेवकलोहेसः।

अय **छ**नणवेतुः ।

विच्यत्पुराणे युधिष्ठिरं प्रति श्रुष्णः---भृण राजन्मवस्यामि छत्रगरपेह करिशतम् । गौमयेनात्रिते व वर्भसंस्वरसंस्थिवम् ॥ व्याविकं चर्म विन्यस्य पुर्शशासिम्हां स्थितम् । वक्षेण छादिवं छत्वा घेतुं वृत्तीत मुद्धिमान् ॥ हाइकेत्रेय कुर्वात यहुविक्षोऽस्ववानवि । स्वर्णश्रद्धी रीप्यखुराभिशुपादां फछस्तनीम् ॥ कार्यो डार्करया जिहा गन्धवाणवती तथा । समुद्रोदरमां शुक्ति कर्णी च परिकरायेतु ॥ श्टेंड्र चन्द्रनकाष्टाभ्या मौक्तिके वाक्षिणी उमे । कपोडी सनुपिण्डाभ्या यशनास्य प्रशापयेत् ॥ कम्बर्छ पृहसूत्रेण भीवाया छत्रिका तथा । पृष्ठे वै साम्रपात्र हु अपाने गुडपिण्डिकाम् ॥ लाङ्गूले कम्बर्छ दचाइसान्क्षीरप्रदेशतः । योतिप्रदेशे तु मधु सर्वतस्तु फलान्विताम् ॥ पर्वसम्बक्त परिस्थाप्य खत्रणस्य कृतां तु वासु । स्यापवेद्वत्सकं चापि चतुभागेन मानवः॥ एवं धेनुं समभ्यच्ये माल्यवस्त्रविभूष्यैः । कात्वा देवाचेनं कुर्योहाद्याणानभिष्यय च ॥ कुवा प्रदक्षिणं गाँ तु पुत्रमायीसमन्त्रितः । दानमन्त्र----

> छक्पे वै बसाः सर्वे छुक्पे सर्वेदेवताः । सर्वेदेवमये देनि छक्पास्त्रे नमोऽस्तु ते ॥ प्रदक्षिणा मदी तेन छता भवति भारत । सर्वेदानाति सत्तानि सर्वेद्वेकप्रछानि तु ॥

सर्वे रखाः सर्वमन्त्राः सर्वमेतवराचरम् । सौभाग्यं च परा वृद्धिः शरीरारोग्यसेष्टः ॥ नृषां भवन्ति दत्त्वा तु रसघेतुं न संश्वाः सीभाग्यपरमहृद्धपारीग्यकामः। इति विशेषणक्षिद्धरः ॥ पुराणान्तरे तां छत्रणमयी छत्वा चोडक्षप्रस्थर्भभुताम् । चतुर्भिवत्सं राजेन्द्रइत्यादिना स्त्रजपरिमाणान्तरमुक्तम् ।

अय सुवर्णघेतुः

विणुनमें भगवानुवाच---यहसाजोऽपि राजेन्द्र ऊहितं विष्णुना शुरा ससै बिस्तरतो राजन्कथयाम्यतुपूर्वकः । सुवर्णस्य सुवर्णस्य शुद्धस्य परिकस्थितम् पैकं सुवर्णपर्व शोभनं रूपमाह अपर मानम्। रीप्यक्तकसंयुक्तं मुक्ताफलविभूपिवास् । मवालश्कृतेपञ्चतां पद्मरागादिकालिनीम् 🖟 धृतपात्रस्तनवर्ती कर्पूरागदनासिकाम् । शकरारसनोपेतां मिष्टाभरसवासिताम् ॥ बाह्मश्रद्धान्तरां शुक्ति समादस्यानकरिपतास । फलदन्तां बलपुग्मपार्था श्रीमसुकन्दलाम् ॥ श्चपादां नास्त्रिकेरथवणां गुडमानुकाम् । पश्चगन्यापानवर्ती कांस्यष्टछसमन्विताम् | सुपट्टमूत्रलाङ्गूजां सामवान्यसमन्त्रिताम् । फलपुष्पसमीपेवां छत्रीपानरसमन्त्रिशास् ॥ सुवर्णयेतुं विप्राय प्रतिपादोद्दशी नरः। दिरण्यरेसाः पुरुषः पुराणः फ्रज्यविङ्गलः । तप्तदेमच्छनिः सप्ता विश्वातमा श्रीयवामिति भनेतेव तु मन्त्रेण धेनोदीनं प्रकीर्वितम् । **अश्वमेघसहस्रस्य फलमात्रोत्यसंशयम् ॥** कुलामां हु सहस्रं च स्वर्ग नयति बहुधः । इति ॥ ' अन्यमेधसहस्रतुस्यफलगासिङ्गलसहस्रस्वर्गनयनव्यासः ! इति काम-क्लोहेख: ।

विह्युराणे हु---, । , सुतर्गधेत्रवायम् सुरुणीश्च चतुर्वेतः । सुतर्गधेत्रवायम् सुरुणीशः चतुर्वेतः । सुतर्गिण्यमा मता ॥ चतुर्वितः करमसी मीचाः चतुर्वितिन दसकः । , गुद्दिधेतुर्विचालेन तृता सनफलपदा ॥

इत्यादिना सर्वे गुड्येनुबदुकम् ॥

अथ बन्ध्यात्वहरं सुवर्णयेनुदानम्।

वायुपुराणे---चतुर्विधा तु या बन्ध्या भेजेद्वरसदियोजनात् । चतुर्विधा---

बन्ध्या च काकवन्ध्या च कीप्रसूध श्रुतप्रज्ञा । इति ॥ बन्ध्या अपरयसामान्याभावत्रती । काकबन्ध्या काऊदरेकापस्या । बद्दो तस्याः प्रतीकारं तस्यारुपं निषोध मे ।

बह्द सक्याः प्रताकार तस्तरूप निकाभ म । हिरुवेन, यवाशावया सक्यसं कारपेदृहाम् ॥ धेतुं विनेन करतं च पादेन गुरुरक्षीत् । धेतुं दीच्यपुरां रतं तस्याः पुच्छे नियोक्चेत् ॥ घटां,गळे च बामीयां सिक्कं चोमयोरिष । कार्यविक्षिका वा हु मैक्षं पायसं मृत्येत् ॥ मोदृत्रांक त्याऽपूपन्याहं उक्यतेष च । जीरकं च सुवित्तीणं सूर्ये वेणुग्ये हृद्ध ॥

भेनोर्दक भग्नतकथं ब्राह्मणस्तेषु चैन हि ।। पद्मप्टी दरा ना प्यान्तदनन्तरमेन च । भार्कणं सर्पतास्त्रपेइनार्ट धमेपेदिनम् ॥ विद्यानिनयसंपत्रं झान्तं हान्तं क्रितेट्रियम् । फठोर्लुसं पर्वेजनियिकं कराप्यत्रं क्रित्यम् । फाट्य सराया संपूर्य सदारोर्तेन्यपुर्वतेः । सेनैन कारमेस्युजनाराटो भेजनसम्बोः ॥

होमं प कारपेचः सिमदान्यचरूत्कटम् । सोमो भेडमिमं मन्त्रं संगुचार्य सतः पुनः ॥ प्राह्मुराायोपीनद्वाय प्रदशाचामुद्दह्मुखः । मन्त्रेणीतेन विधिवरचुन्छे हस्तं तिवाय च ॥ भेतुर्योऽङ्गिरसः सत्रे विधिष्टे सुरती च या । दृहिता च तथा भानौरभेव वरुणस्य च ॥ याद्य सावः मर्वतन्ते वनौप्यतनेतु च । भीषान्तु ता मम सदा पुत्रपोत्रमत्रद्धैनाः ॥ प्रतच्याद्यं अस्त्रतन्त्रयाद्यं कन्यामस्य एव च ॥ हवेश्व महत्त्रसारं देशिं मम चतुर्विधम् ॥

दानेनामेन दरत या सा कामद्रवाडनया। इति ॥ -अय स्वरूपतो गोदानम्।

त याह्यवरुक्यः---यथाकपश्चिद्दस्वा गां धेर्नु वाऽधेनुमेव वा ।

अरोगामपरिक्षिष्टां दाता स्वर्गे महीयते ॥

जाबार्लः---

होनार्धमिप्रहोत्रस्य यो ना द्वाद्यान्वितः। त्रिर्वित्तपूर्णो प्रथिशी तेन दत्ता न संग्रयः॥

भङ्गितः—

गौरेकस्येव दातम्या भोत्रियस्य विशेषतः। सा हि तारयते पूर्यान्सप्त सप्त च सप्त च ॥

आत्रेय:🛶

सीरते बहुमृत्याय श्रीश्रियायाऽऽहिलामये । कतिथिप्रियाय दान्ताय देवा घेतुरीणान्विता ॥

देवलः—

सुशीलां लक्षणवती युवती वत्सतेयुंताम् । बहुदुरधवती सिग्वां पेतुं दचाद्विचक्षणः ॥

व्यास:--

सद्वामेष्यर्भयित्वा सु यो वै गाः संपयच्छित । यादशीः स्वर्शयद्वानः स तावस्क्लमञ्जूते ॥ सामजद्वोरोममितजस्वरं स्वर्गम्लम् । इतियमोचां गोमती विद्यां जपेत् महामारतेऽपि गोमती—

भारता पामवान्यः गारो पामुजितिहरतु देमश्रद्भवः पयोग्रुषः । सुरम्यः सीरमेय्यश्च सिरदा सागरं यथा ॥ गा वै पश्चाम्यद्द निर्स्य गावः पश्चग्तु मां सदा । गावोऽप्रमाफं षयं वासां यदो गावस्त्वतो वयम् । इति ॥ गावो ममामवः सन्तु गावो से सन्तु प्रश्चतः । गावो में हेदये सन्तु गावां मध्ये बसाम्यदम् ॥ वि

हात पाठता पतु हिज प प्रदेशकाहित्य देशा देशा प दक्षिणामाह बसिछो गरेन हात्रकरण दक्षिणा वरा । • . . .

सुवर्ण पावनं प्राष्ट्रः परिमाणं परं तथा ॥ यजमानस्ततो द्यायधाश्चवा सु दक्षिणाम् । इति ॥ 'वदशक्तपरम्' इति मदनः ।

क्षि सामान्यप्रत्यक्षगोप्रदानविधिः।

अप मकारान्तरेण सामान्यनोः पुत्रनं दानं च।
करोत्यादि 'गृहत्मुद्रनैठवनोपेण्यादात्मक्रैतदेनुवस्तरोमसद्वायुगदेवजोप्तमहितस्वपिनामह्मपितामहन्यकोद्वायुग्तसीरम्बर्ग्यहृद्याकर्षिणायसकर्महेत्रहेन्द्राधानिकर्णादास्त्रात्मक्रियस्त्रहेन्द्रक्षाः
छोत्रमुज्यस्त्रात्मकर्महेत्रहेन्द्राधानकर्मुवस्त्रमाग्रस्यास्त्रज्ञे स्मुक्तस्त्रमानकर्मन्द्रम्य

माहणपूजनम्-तव पादोदकं तीर्थ मुखे वेदाः मीतिष्ठिताः । पादां गृहाण विमान्य भूमिदेव नमोऽन्तु ते ॥ पादाम् । सूमिदेवामकनमाऽसि त्व विष्णुः पुरुषोत्तातः । भ्रत्यको क्षमिपुरुष क्ष्मेंचे मतिगुग्रताम् ॥ क्षयेत् । काचमनगन्त्रपुष्पकक्षादिना पृक्षयेत्। ततो येनोरद्वधु देवता न्यसेत् ।

-गोभ्यो बहा: प्रवर्तन्ते गोभ्यो यहा: समुहिशता: । गोभ्यो वेदाः समुत्तीणाः सपहद्वपद्कमाः ॥ शह्रमुळे गर्ना नित्यं ब्रह्मविष्णु समाधियी । कर्णधोरिश्वनौ देवी चलुपो: हाशिमारकरी ॥ दन्तेषु वायवः सीं जिहाया वरुणः स्थितः। सरस्वती च हुट्टारे यमयश्री च गण्डयोः ॥ सन्य्याद्वयं चोष्ठदेशे भीनायामिन्द्र भाश्रितः । रक्षांमि ष्टक्षिदेशे तु साध्याधीदरसंस्थिताः ॥ चतुष्पादेषु वे भर्मः सायं जहासु संस्थिताः । सुरमध्ये तु गन्धर्याः खुराधेषु च पत्रगाः ॥ पुराणानि च सान्त्रेषु गात्रे चाप्सरसः रिथताः। ष्ट्रीकावृद्दास्त्राध्य वसनः सर्वसन्तिशु ॥ स्रोणितटस्थाः पितरः सोमो छाङ्गूश्मारिथतः । . भावित्याखाप्यची यालाः पिण्डीभूता व्यवस्थिताः ॥ साक्षाइड्रा च गोमूत्रे गीमये यमुना तथा । क्षीरे सरस्वती देवी नमेदा दिथरे स्थिता !! हताहानः स्वयं सर्पित्रीक्षणाना गुरुः परः। अष्टार्निशसिदेवानां कोट्यो रोमसु संस्थिताः ॥ **उदरे पृथिनी द्येया सदी**खबनकानना । चत्वारः सागराः पूर्णा गवां ये तु प्रयोशराः ॥ इतिन्यस्य व्यायेन् । या छ६मीः सर्वभूताना सर्वदेवेप्ववस्थिता। भेत्रहपेण सा देवी भम पापं व्यपोहत् ॥ , विणुप्रक्षसि या छदमी: स्वाहा या च विभावसी: । ध्यन्त्रार्वशत्रशक्तियां चेतुरूपा समाश्रये ॥ चतुर्भुपस्य या छश्मीर्या छश्मीधेनदस्य च । या टक्ष्मीठोष्डपाटानां सा घेतुर्वरदा भन् ॥ सीरमेथि सर्वहिते पवित्रे पापनाहिति । प्रगृहीय मया दर्स पाधं जैलोक्यवन्दिते ॥ पाध्य . · सर्वेदेवमये देखि सर्वेदीधमये शमे ।

गृहाजार्ध्य मया दसे सोरमेथि नमोडलु ते ॥ अन्यम् । देदिस्थता च रुराणी राष्ट्रस्य सदा प्रिया । धेतुरूपेण सा देशी मय पापं व्यपोहतु ॥ जावमनीयम् । सर्वेभीधेनये देवि सर्वेद्रयमे शुभे । पृहाणेद्रं मया दसं सार्व ते देविरूपिणि ॥ स्नानम् । स्नाच्छादनं गवे दशाच्छुमं शुनि सुनिर्मस्यम् । सुर्भे वस्त्रानेन पीयतां परमेशिद ॥ वसम् । या स्वस्ताः सर्वेश्तानां सर्वेश्नतेष्वरिथता । धेतुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ चंदनम् , अक्षताः ।

क्षश्राह्मपुता । सराहे देखे नमः । नासार्वशे वण्युवाय नमः । नासा-पुटे कुरव्लाभूतराज्यां नमः । चर्णयोरश्चित्र्यां देवाज्यां नमः । चल्ल्योः शशिमास्कराभ्यां नमः । दन्तेषु सर्ववायुभ्यो नमः । जिह्नायां वरुणाय ममः । हुङ्कारे सरस्वरेये नमः । गण्डयोध्यमयक्षाभ्यां नमः । कुक्षिदेशे रक्षोभ्यो नमः । उरित साध्येभ्यो नमः । चतुष्पादेषु धर्माय नमः । कष्ट्रयोः सार्यकारतय नमः । कोष्ठयोः सम्ब्याद्वयाय नमः । श्रीवाया-मिन्द्राय नमः । कण्डे सामवेदाय नमः । शृहुमूले ब्रह्मविद्युभ्यां नमः । श्रद्धांने स्थावर सङ्ग्रमेश्यस्वीथेंश्यो नमः । शिरोमध्ये महादेवाय नमः । खुरमध्ये गन्धवेंध्यो नमः । खुरामे पन्नगेश्ये नमः । सर्वगात्रेषु प्रजापतवे नमः । प्रष्टे एकादशरुद्रेश्यो नमः। सर्वसन्त्रिषु वसुश्यो नमः। श्रीणिः तदै पितृभ्यो नमः । लाङ्गूले सोमाय नमः । बाखेव्यादित्येभ्यो नमः । गीमूत्र गङ्गायै नमः । गीमये यमुनायै नमः । श्लीरे सरस्वत्ये समः । दक्षि तर्मश्ये नमः । सर्विषि हुताश्चनाय नमः । रोमसु प्रयक्षिशस्कोः टिदेवताभ्यो नमः । छद्रे पृथिनी सकाननाथै सहीलायै नमः । पयी-घरेषु चतुःसागरम्यो नमः । इत्यद्गपूजा । ततो गवेऽलङ्कारान्द्रवार् । यथा-स्वर्ण शङ्गे । सुरे रौध्यम् । प्रष्ठे वाम्नम् । भाले आदर्शम् । नेत्रयो रत्तदूरम्। कण्ठे घण्टां चामरं यहोपवीतं वसं च । पुरुष्ठे मुका মৰাভানি च।

> देवदुमरसोङ्गनं गोघृतेन समन्त्रितम् । मवच्छामि महामारो गौर्घृषं प्रतिगृद्धताम् ॥ धूपम् ।

मानन्दैकृत्सर्वेठीके देवानां च सदा प्रिये । गौस्त्वं पाहि जनजाथे दीपोऽयं प्रनिष्ट्रशताम् ॥ दीवम् । सरभे स्वं जगन्मातरेंवि विष्णुपदे स्थिता । सर्वदेवमये प्रासमिमं दुर्च संगाऽप्रतः ॥ गोमासम् । गोरहेष्त्राचाहितदेवताभ्यक्ष भूपरीपनैनेशफलताम्यूलदक्षिणां द्यात् । गावः सुरमयौ नित्यं गावौ गुगुखगन्धिकाः। गायः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं सहत् ॥ अभ्रमेत्र परं गानी देवानां हविसत्तमम् । पावनं सर्वभूतेभ्यो रसन्ति च वहन्ति च ॥ हविपा मन्त्रपूर्वन तर्पयन्त्यमरान्दिवि । मस्पीपामित्रहोत्राणां गावो से सप्रतिद्विताः ॥ इति माध्ये, अशेरवादिकामं सद्बरप्य गोपुच्छे वर्षणं कुर्यात् । तथभा-प्रद्या मृत्यतु । रहसमृत्यतु । विष्णुसमृत्यतु । राकाचा देवता-रतृष्यन्तु । मनवरतृष्यन्तु । पर्ययस्तृष्यन्तु । रद्रारतृष्यन्तु । दितिपुत्रा-रतृष्यन्तु । साध्यारतृष्यन्तु । मरुद्रणारतृष्यन्तु । महारतृष्यन्तु । सक्षत्राणि स्यन्त । योगास्त्रय्यन्त । राशयस्त्रयन्त । बसुधा स्यात । अधिनौ तृष्यताम् । यक्षारतृष्यन्त् । रक्षांसि तृष्यन्त् । मातरस्तृष्यन्त् । देवमात-रातृत्वन्तु । श्रीरतृत्वतु । रुद्राणी तृत्यतु । विश्वाचारतृत्वन्तु । सुपर्णान रतृष्यन्तु । पश्चसतृष्यन्तु । दानवारतृष्यन्तु । दैत्यास्तृष्यन्तु । योगिन-स्तुन्यन्तु । विद्याधर्गरतृष्यन्तु । श्रीपश्चयस्तुष्यन्तु । दिसाजारतृष्यन्तु ।देव-शामणारतृप्यन्तु । यशास्तृप्यन्तु । देवपरन्यस्तृप्यन्तु । शोकपालास्तृ-ष्यन्तु । सानिरुद्धरतृष्यतु । वलदेवासृष्यतु । नारदरतृष्यतु । जनतवरतृष्यन्तु । स्थावराणि तुत्यन्तु । अङ्गमानि तृत्यन्तु । नीवीवं कृत्वा । सनकरतृत्यतु । सनन्दनस्तुप्यतु । सनाचनस्तृप्यतु । कपिछस्तृप्यतु । **आधुरिस्तृ**प्यतु । नोस्हस्तृप्ततु । पथाशिरास्तृप्यतु । अपसन्यं छत्ता । कन्यवादनस्तृप्यतु । कनलातृत्यतु । सोमस्तृत्यतु । यमस्तृत्वतु । कार्यमा तृत्यतु । कार्प्राचा• त्तासमृत्यन्तु । वर्हिपदामृत्यन्तु । सोमपासमृत्यन्तु । पितरसमृत्यन्तु । यमतर्पणं-यमं तर्पयामि । धर्मराजं त० । मृत्यं त० । अन्तकं ए० । वेव-सतं तः । कारं दः । सर्वभूतक्षयकरं तः। औदुम्बरं तः। दर्भ तः । नीलं त० । परमेष्ठिनं त० । बुकोदरं त० । वित्रं त० । चित्रगुनं तर्प-यामि । पश्कष्यजावान्यिवन्वर्पयामि ।

मातृपक्षात्र्य थे केचिये केचिरिन्तृपक्षका । गुरुप्रदुरप्रन्यूना ये सुटेशु समुद्रवा ॥ ये चान्ये सुद्रपिण्डा वे पुत्रदूररिवर्दानाता । ते सर्वे मृतिमायान्तु गोपुन्छोदकर्वणे ॥ क्रियाडोप्पता ये च जात्वन्त्रा पङ्गुनस्वया । विरूपा आध्यापाँच्य द्वाताद्वाता सुटे मम ॥ ते सर्वे मृतिमायान्तु गोपुन्छोदकवर्णे ॥

तत सवित्रा सवत्ता गां जि प्रदक्षिणीवृत्य 'का गावी भागन्' इतिस्क पठेत् 'करणस्योत्तन्भनमसि ' इति जलं पियेताम् ।

अय दानम्।

कंतियानि युत निभाव विज्वभेतुण्यण्यात्रस्य सिर्वित्वानि विव्रह्तत निभाव सहपरि गोँपुरछ दश्य मण्यारा पुरछोगरि विव्रह्तत रुपात् । मास्त्रस्य प्रवृत्ति स्वाय स्वयात् । मास्त्रस्य प्रवृत्ति स्वयात् । मास्त्रस्य प्रवृत्ति स्वयात् । मास्त्रस्य प्रवृत्ति स्वयात् । मास्त्रस्य स्वयात् । मास्त्रस्य प्रवृत्ति स्वयाने । मास्त्रस्य स्वयाने स्वयान

यद्यसाधनभूता या विश्वस्यापीधनादिवती । विश्वरूपधरी देव भीयतामनया गवा॥ इति मञ्जमुक्ता—

घृनश्रीराम्दा गानी घृतयोन्यी घृतोज्ञवा । घृतनयो घृतावर्ताता मे सन्तु सदा गृहे ॥ घृत मे हृद्ये नित्य घृत नाम्या प्रतिष्ठितम् ॥ घृत मे सर्वगर्धेव गता मध्ये वसाम्यक्षम् ॥

इतिजीराणमन्त्रान्यित्वां कलमुन्यजेत्। ततो गौरानयिष्ठासि द्रवय सुवेण दक्षिणां दक्ता भाषाणधेन् अनुभाय गावः सुरक्षयः इत्यादि पठेन्। प्रैतिमहीता 'सुवर्ण दक्षिणात्वेन परिपृष्टामिः' राजा स्या वरुणो सचतु देवि दक्षिणेऽप्रये हिरण्यं तेनाधृतत्वामदर्णं वयी दात्रे मगे महामस्यु प्रतिमहीत्रे क वृदं कस्मा अदात् '।

स्वैदावेव भूतावां गावः स्थापमुचमम् । गावः पवित्रं परमं गोप्ते मद्वस्यचनम् ॥ गावः सवत्य लोकस्य यादो पत्याः सवस्याः। सम्मे गोभ्यः जीगतीभ्यः सीरमिथित्य एव च॥ सम्मे प्रस्कृतस्य पविद्यास्यो नमी नमः। प्राव्याक्षेत्र गावेक सुरुक्ते द्विषा स्वत्यू ॥ एकत्र मन्त्रासित्यनित हविरेकत्र विद्यति ।

इति समोक्तं गोमती विधां जमेत् । वज्ञमान:-गावी मासुपतिग्रम्, इसगृह्वयः वयोसुनः । सुरभ्यः सीरमेगाञ्च सरितः सागरं यथा ॥ गा वै प्रस्वामयहं नित्यं वावः परवन्तु मां सन् । वाकोऽसागः वयं सासां यतो गावस्तो चयन् ॥ गावी समायतः सम्तु गावी में सन्तु प्रस्तः।

गावो ते इत्ये सम्तु गर्वा मध्ये बसाम्यहम् । इति ॥ ग्रवामङ्गेषु तिस्रन्ति सुवनानि चतुर्वसः । सहमात्तरमा स्थितं मे स्वादिहलोके परमच ॥

इतिप्रार्थं यस्य स्मृत्या ' इति कर्मेश्वरार्थणं सुनात् । इति प्रकारा-स्तरेण स्वरूपतः सामान्यगोदानविभिः ।

वय हेमणुङ्गीदानम् ।

अथ मात्ये हेमश्रद्धी---

दश सौतिणिक रहे सुराः पञ्चपळान्वताः ।
 पञ्चाहासिळिक कॉर्स्य वासं चापि तथैश च ॥
 सार्वाऽस्याः सर्वमामोति यावदाम्बसंद्रवर् ।
 सवर्षमत्र दक्षिणाः ।

इति देमग्रङ्कीदानम् । शिवायः विष्णवे बाऽपि यस्तु षृद्यात्पर्वस्विनीम् । धेतुं स्तानोपहारार्थं स परं व्रद्य सच्छति । इति ॥ स्कान्धे देवताभ्यो गोदानम्

सदृपं गोदातं दद्याच्छिवायातीव शोमनप् । वि.सप्रवरुपैः सार्द्धं शृणु तत्पदमाप्नुयात् ॥

इत्यादिना शिवधर्मोर्क शिवाय दृशिषकगोशतदानम् । देवताभ्यो दाने देवतेव संप्रदान न मासणः । दत्तं च वत्तदेवतायतने

दक्षिणभागे स्थाप्ये, इति दानसीख्ये ।

अयोभयतोष्ठ्रखी ।

तशनकारः स्वान्दे— अर्द्धप्रसूता गा दशास्त्रास्त्रादि स विचारयेत् । कास्त्रः स एव प्रदेणे यदा सा द्विसुस्ती तु गैरेः ॥

माराये— दश्मण्यद्वी रीप्यन्तुरा सुक्ताराह्मणूल्यूपिवाम् । कास्योपदोह्ना राजन्सवरता द्विजपुङ्गवे ॥ प्रसूपमानां यो दयादेनुं द्रविणस्युतास् ।

पावद्वस्यो योनिगतो यावद्वर्भ न मुख्यति ॥ त्यावद्वस्यो योनिगतो यावद्वर्भ न मुख्यति ॥ त्यादृहेः पृथियी क्षेया सदीलवेनकाननः ।

देवर:----अउद्गुरवोत्तविधिना सुवर्णीन्नपटाग्विता । दावच्या दिपटा सध्येकपटा च कनीयसी ॥

वाराहे---श्रश्नोमयमुली व्याज्ञमुक्तनकान्तिताम् । त्रीदनं पाश्रश्नाहारः पयसा वाऽविश्वाह्येत् ॥ मुच्चेत्रस्य सहस्रेण स्ट्रहेंतापि वा पुन. । साराप्यदेशसं साऽय प्रभारत्य क्याउटेनम् ॥

योगी---सनत्सा रोमतुस्यानि युगान्युभयतोमुखी ।

सक्ता रोमतुस्यानि युगान्युभयवोमुखी । दावाऽस्याः सर्गमाप्नोति पूर्वेण विभिन्ना ददत् ॥

ययाराचयाऽपि दावन्यं वित्तराष्ट्रयविवर्शितम् ।

मारखे— • गोलोकः सुलभस्तस्य महालोकत्र पार्थिव ।

शियश्च तं चन्द्रसमानवकाः प्रतप्तज्ञाम्यूनद्गुल्यवर्णाः।

प्रतिगृह्यमि स्वां धेर्नु कुटुम्बार्धे विशेषतः । स्वरितभवतु मे नित्यं रुद्रमासनैमी नमः ॥

377777

इति र स्टामनद्वाह सर्वर निरल हुतम् । दश्या प्रभापतेलोंबान्विशोक प्रतिपयते ॥ इत्यादिसुवर्णश्रहरीच्यलाइगृहादिवमपि भारतोक्त घोष्यम् न इतिरण्ड प्रवस्थातकाम्बरम् ।

अध वैतरणी ब्रहावैवर्ते ।

या सा नैतरणी नाम यमद्वारे महानदी । द्यानयोजनविस्तीणां प्रयुत्वे सा महासरित् ॥ भगाषाऽनन्तरूपा च रष्टमात्रा भयावहा ।

RVI.--

पसनित सत्र वे मत्याँ जन्दमाना सुदारणम्। त्तरहरूगुरुद नर्हयाच वथ्यमान युधिष्ठिर ॥ अयमे बियुधे पुण्ये स्थतीपाते दिनस्ये । पारसाम्यवा हृष्णा दुर्याद्वैतरणी शुभाम् ॥ स्वर्णशृङ्गी शैव्यक्ता कारवपात्रसद्दीहनाम्। कृष्णश्रस्युग्रह्छशा सप्तधान्यसमन्विताम् ॥ कापीसुत्रोणशिखर जासीन साम्रभाजने। यम देन प्रकृतीद्वै कोट्यण्डसमन्बितम् ॥ महामहिषमास्वमूदवाहा करे परे। क्षुद्रव्हमय बढ़ा छहुप पट्टबन्धने ॥ चडुवीपरि ता घेतु सूर्यदेहसमुद्रवाम् । ष्ट्र वा प्रवाशमिद्विहाञ्ख्योगनद्वयुत्ताम् ॥ द्रामधारयेन्त्रन्त्र संग्रहोदकमण्डलम् ।

भए प्रवीत । पूर्वीसायनादिकाळे वा पाटळा हृष्या वा हेमश्रह्मारी-वेता कृष्णवस्त्रयुगच्छन्ना सोमान्यसयुक्ता छत्रोवानंतुगडसेयुरा गा सनिधारय द्रोणमितकावीसशिक्षरे वासपात्र तत्र च महिवास्ट दक्षिण-बामहस्तपृतलोइदण्डपादा हैम यम स्थापियत्वा सद्मे परमद्वेश्वदण्ड-निर्मित्रजीपरि ता धेत स्थापवित्वा उदस्युख प्रतिप्रधीतारमुपयेश्य स्वय प्राह्मुख ---

यमद्वारे महाघोरा या सा वैतरणी नदी । किंति सर्तुकामी ददाम्येनां तुम्यं वैतरणी च गाम् ॥

इतिमन्त्रेण गामधितासयेत्। वतः विध्यदि सङ्गीर्स्य 'वैतराणीं सर्वु गां दार्ये 'दितांकदण प्रतिमाधामञ्जावृत्ते या विण्युं 'मां विष् च संपूत्र, करोरतादिकमुक्तोत्रायमुक्तकंभेण प्राद्वणायाद् यमद्वारे रिक्षाच्या नद्याः सुक्तेनीत्राराणार्थीममां वैतराणी गां सवस्तां सोपाकरां हैतयायात्रात्वाद्विता विण्युरियतां संप्रदर्शः

दात्तमन्त्रः— ।

े विण्युस्य दिमश्रेष्ट भूदेव पष्ट्रियावन । सन्दक्षिणा मया तु>थं दत्ता वैवरणी च गीः । इति ॥ ततः सुवर्ण दक्षिणां दत्ता तहेनोः पुच्छं प्रग्रतात्रसभैत । तत्र मन्त्रः~

े धेतुके हैं प्रतीक्षक वमद्वारे महाभये। जित्तवीर्पुरहं देवि वैतरण्ये नमो नमः ॥ इति वैतरणीरानम् ।

अथ महिपीदानम् ।

भविष्योत्तरे---

महिषीनानमाहास्थं कथवामि बुधिद्वर ।
पुरुषं पित्रमानुष्यं सर्वकामत्र सुख्य ॥
पन्नस्यकंतु पुरुषे कार्तिक्यमत्यने सथा ।
शुक्रपद्धं चतुर्देश्यां सर्वसंवानिकाधरे ॥
यदा वा जायते विश्वं विष्यं न्य कुरुतन्दन ।
तरैव देया महिषी संवारमव्यक्तिका ॥
प्रधामसञ्ज्ञा कर्या सुर्वाच्य वीषवर्णिता ।
सुवर्णगृद्धं तिल्का चल्दामरणगृपिता ॥
रफ्तलादुवा स्थ्या तावदोहनिकानिकता ।
पिर्णाकपिटकोषेता सहिरण्या य शक्तितः ॥
पिर्णाकपिटकोषेता सहिरण्या य शक्तितः ॥

सप्तथान्ययुता देया ब्राह्मणे वेदपारमे । द्रव्येरेभिः समायुक्ता पुण्येऽहि विभिपूर्वकम् ॥ दशान्यन्त्रेण राजेन्त्र पुराणपठनेन तु । ' दशात्प्रदक्षिणीष्टत्य त्राह्मणे तां पवस्थिनीम् ॥ प्रतिमहः सम्बस्तस्याः प्रधदेशे स्वयन्भुवा ।

दानवाक्यं तु. ॐ अद्येखादि ।

इन्हारिछोकपारानां या राज्यमहियी हामा । महिजीदानमाहात्म्यात्साञ्चतु मे कामरा सर्ग ॥' भनेराजस्य माहात्म्ये यस्याः पुत्रः प्रविद्वितः । महिपाससस्य जननी या साञ्च वरदा मन ॥

इतिमन्त्रमुद्दार्श असुक्तोत्रायासुक्तर्यस्थ नाह्मणाय इमां सहिपीं सुवर्णस्टक्तित्वकासरणां घण्टातात्रस्रोहिन हां पिण्याकपिटकसत्रयान्य-पादुकोषेतां स्वरेदेश्यामायुग्यसुद्धसम्बद्धान्यकाससुद्धसम्बद्धं सम्बद्धं रे हिंव की सु 'राजमदिशीत्यकामा' इति , 'जयनामा' होते अतियां, 'सम्यान्यकामाः' इति वैदयः । एवं दृष्टेणापि स्वामिन्यितं पत्रसुक्ते-ययम् । 'द्रेष्टामीनकामः' इति वा सर्वेदः। वतो वृक्षिणां प्रधाविति ।

> कतेन विभिना दस्या महियी द्विस्तपुद्धते । सर्वान्त्रमामानामीति इह होके परत्र च ॥ या की दद्दाति महियी सा राजमहियी भयेन् । महाराजः पुजान्याजन्यासस्य वचने वचन ॥ यहायाजी भयेद्विणः कृतियो विजयी भयेत् । वैद्यस्तु धान्यधनसम्बद्धाः सर्वार्थस्युतः ॥

इत्यादिपछश्चितिरिति तत्रैबोक्ता ।

इति महिपीशानम्।

अय मेपीदानम् ।

भविष्योत्तरे—

रृष्णु पार्षे परं दातं सर्विकित्वियताहानम् । यदसं विविषं पापं सद्यो विख्यमृज्यति ॥ सुवर्णरोगां सौवर्णी प्रत्यक्षां वा सुवोभनाम् । सुवर्णतिककोषेतां सर्वोद्ध्यरासृचिताम् ॥ कविष्यपरिवानां च दिव्यचन्द्रनसृचिनाम् ।

विष्यपुष्पोपहारां च सर्वधात्रसँर्युताम् ॥ राप्तधातुसमायुक्तां फलपुष्पवती तथा । शतेन फार्येतां तु सुवर्णस्य प्रयस्ततः ॥ यथाशत्त्याऽथवा कर्योदिचशाह्यं न कारयेत । अयने विषये पुण्ये भहणे दाशिसर्ययो: ॥ दु.स्वप्तवर्शने चैव जन्मक्षे विधिसहये। यदा वा जायते वित्तं चित्तं श्रद्धासमन्त्रितम् ॥ सरैव दानकालः स्याद्यतोऽनित्यं हि जीवितप् । नद्यां सीधें गृहे वाडिप यत्र वा रमते मनः ॥ तत्र संस्थाप्य देवेशमुगया सह शङ्करम् । अह्याणं सह गायप्या सधीकं श्रीधरं तथा ॥ रस्या सह तथाऽनङ्गं लोफपालान्महानिप । सांस्त पत्र्य विधानेन गन्धपुष्पतिवेदनैः ॥

जमाशहररूपम्---

धर्मान्यस्थलुर्गोहुः श्रूरमद्वाङ्गपाशभृत् । पुपाङ्कः शहरी गौरी वामीत्सङ्गे स्थिता भवेत । इति !! मद्मगामञ्चाविरूपाणि तु प्रागुकाति । ताति च वद्याशक्ति सौव-र्णानि कार्याणि ।

तदमे फार्येद्धोमं तिलाज्येन महीवरू । भलद्वरय द्विजं शान्तं वासीभि: परिपूत्य च ॥ सहिद्धमन्त्रेहाँमध्य कर्तव्यो व्यक्तिऽनले । तत्तरतां तिलकुरमस्थां खबणाभिमुखां स्थिताम् ॥

पुत्रविरवा विधानेन मन्त्रमेतमुदीर्येत्। मन्त्रः प्रयोगे द्वायः। एषमुश्रार्थ तां द्वाद्वाहाणाय फ़ट्रीवने । नाभिभापेत्तती दत्त्वा न मुखं बाडवलोक्येत ॥ द्रष्टप्रतिमहणतो विघो भवति पातकी । अपुत्री लभते पुत्रमधनी लभते घनम् ॥ दत्त्वा दानं शुमां कान्ति कीर्ति च विपुछां तथा । इति ॥

भय प्रयोगः । उक्तायनादिकाले गृहे तीर्थे वा दाताऽहोस्यादि ' सर्व-

रोमस्वद्भांसमञ्ज्ञाचाः सर्वोपकरणैः सदा । जनतः संमञ्ज्ञाजिस स्थानतः प्रावेवेदिसतम् ॥ बाद्मनः ज्ञाजनितं वदिकश्चिनम् दुरुहतम् ।

त्तसर्व विखयं यातु स्वदानातृपसेवितम् ॥ द्वीतमन्त्रमुरस्वा किष्यादि सङ्कीर्वे 'सर्वशार्व्यपूर्वकृत्रप्रवक्ता-नित्तकीरितामिकानो दुरस्यस्वित्वानिक्षनितृत्तिकानो येगरे सेपी सर्वाद-स्वरुत्वानामुक्तियासुम्बन्धर्येण विश्वासं संप्रदेश न सम् १ इति वृद्धाः वियोग यमास्विधि प्रतिमद्दे कृति दक्षिणां द्वात् । यदमेव सुवर्णमेपी देया । प्रविभक्तीनृवित्रसंतापणसुरावकोक्ने वर्त्वम् ।

इति मेथीशनम्। अथाजादानम्।

नुमन्त्र —

अभाषाठो महीपाठो हामावानिर्धि गतः । अयने विशुवे पैत्र गुमादी महणेषु च ॥ अमावारमामादानं पीर्षमास्यां च झस्वते । विभि सस्य महस्यामि विमामिश्रण निर्मित्यम् ॥ सर्वरतोपसंपत्रां सात्रमान्योपरिस्याम् । सहसास्योपमाना ग्रे मुचितां पशुमानकोम् ॥ सक्तास्योपमाना ग्रे मुचितां पशुमानकोम् ॥ सक्तां दीमप्रदृष्ठां सात्रगृशा सरोहनाम् । सस्तां दीयपादां च सुश्री द्यापिकोद्दकम् ॥ गोदानपरायुष्ठीत मन्त्रणानेन संयुतः । मन्त्रवादो को सहस्य प्रतस्यकर्वे गुमे ॥ स्वरा सं दृष्ठ से प्रतस्यकर्वे गुमे ॥ प्यं सधुर्वेदस्यया वित्रहत्ते जलं श्चिपेन् । प्रीवतां यक्षनाधाय वासुदेवाय ये नमः ॥ प्यंत्रद्दिश्चित्रस्य स्थ्ये समवलीक्येत् । स्वत्रः गण्टेस्सपृष्टं हर्षि संस्कृत्य सानवः ॥ ये वास्त्रे युत्ताः पायाः कानवा वास्त्रः वक्षाः वास्त्रः कान्त्रः । यावस्त्रः वक्षाः विव्यवस्त्रः ॥

विष्णुधर्मी त्तरे---

ष्ट्रं वा गर्रभं घाउपि यः प्रवच्छति सुद्रिणे । बामासुर्भं सरगं ययास्वया सदक्षिणम् ॥ बाह्यां से समासताय सदेवः सद् भोदते । स्वेदानसम्बादात्म सदेव्याग्सं स्वेद्या । स्वात्रणा प्रवप्टस्स ततः सदेवनाव्यक्ति । सन्येणानेन विभिन्नस्टब्रुत्य स्वद्याचितः ॥ स्वं पूर्व ब्रह्माणा स्वद्या प्रविद्या भवती प्रम् । स्वत्मनुनी शिवता यक्षास्त्रामाच्छान्तिकरी भव । प्रतिगृह्यित सं चेद्य प्रधुदेश द्विभोत्तमः ।

दानवाक्यं हु महिपीदानवज्हीयम्।

अजायिकं प महिपं दश्वा विधाय शक्तिः। मृतशीरवहा नयो यत्र सत्र समेधते।।

इत्यनादानम्।

अय मेपदानम् ।

बौधायनः--

अप्रेमर्र्न्यं भवेषस्य बस्नेलाग्निविनासनः । बक्ष्यामि तत्प्रदोत्तरारे यत्रोक्षं श्रद्धाणा पुरा ॥ पट्टार्द्धेन चत्र्द्धेन चत्रद्धेनाध्या पुनः । राजर्वं कार्यस्तीन्यमेनीहित्मुस्पम् ॥ सीवर्णाश्र्यस्तुनियमेनीहित्मुस्पम् ॥

कृत्याचीः बीतान्वैर्पु हे द्धान्यपुष्य है ॥ शब्दुछोपरि संस्थाप्य पुनस्त पुत्रवेग्युचीः । शन्दरहाना वरीमाणं श्रीणइयगुदाहनम् ।। आप्रेप्या दिशि होमध्य गनिदास्यविश्रिपि । आधार्येण विनीतेन सर्वशास्त्रायेपेदिना ॥ दह्वपेन च वर्तस्यस्तत्र मन्त्रानिमाच्छ्य 1 अग्निगृद्धतिमन्त्रण समिद्धीमः प्रशस्पति ॥ भंत नवस्याज्यहोबोऽप्यमिनामिनिसासर्वः । मन्त्राच्यायोशमार्गेत चासिमस्यापनं भवेत् ॥ काने: प्रामुक्तरे देशे हार्थ कुरुभं च किन्यसेन् । प्रजीसामीक्षपर्यन्ते कृते स्नानं विधीयते ॥ कापोद्दिशेरवि तृथं दिरण्येति चतुर्वस्थ्यै । पत्रमानानुवारेन मार्भेपेट्रीगिर्भ ततः ॥ शकोशातानुवायेन जारित चापि प्रवस्तयेन्। सभे हुनवते रोगी प्राइमुखाय हुर्द्रसुपः ॥ पृक्तिताय यथादानया दचाचं हु सदक्षिणम् । देवानां यो सुर्व इच्यवाइनः सर्वपृत्रितः ॥ तस्य श्रं वाहर्न पून्यं देवे' सेन्द्रैबेहविभिः ! अग्निमार्ग्य पूर्वसमेविषाकोत्थं तु यन्मम ॥ हत्सर्व नाहाय श्चित्रं जाठरासि प्रवर्क्षय । इति दानमन्त्रः ।

एवं विप्राय यो द्याद्रप्तेवीहनमुत्तमम्। षळवानप्रिमानमत्यों जीवेद्वपंशतं पुनः ॥ सतः खबन्धुभिर्वित्रैः झात्वा मुखीत मानवः । .

इति मेपदानम् ।

अथ पर्वतदानानि । भारस्ये-

> प्रयमो धान्यशैट. स्वाहितीयो छवणाच्छ: । गुडायरस्तृतीयः स्याचतुर्वो द्वेमपर्वतः ॥

पश्चमस्तिव्हीतः स्वादपद्यः कार्पासपर्वतः ।
सप्तमो पृत्रदीतः स्वाद्रग्रेशः कार्पासपर्वतः ।
राज्ञतो सवसस्तद्भव्याः श्वरेतप्रवः ।
यद्भवे विभाजमेतेषाः चयावद्गुपृत्रेशः ॥
करने विष्युवे पैत न्यतीपाते दिनकृषे ।
द्युवे पृत्रीधायाग्रुपग्गे सिनकृषे ॥
विवादोत्सस्यक्षेषु द्वाद्श्यामथवा पुनः ।
द्युवा पश्चद्रश्यो च पुण्यक्षे चा विभाजनः ॥
धान्यत्रीत्वाद्यो देवा यदाश्चरं विभाजनः ॥
धान्यत्रीत्वाद्यो देवा यदाश्चरं विभाजनः ॥
सम्यत्रीत्वाद्यो देवा यदाश्चरं विभाजनः ॥
सम्यत्रीत्वाद्यो विभाजनः ॥
सण्डपं कृरदेकस्वया चतुरस्तुद्वसुद्वस् ।
प्रागुवक्षवृणं सद्वरपास्मुलं वा विभाजनः ॥

प्राव्यामुरीचर्या चैकमेव द्वारम्, न चस्वारि द्वाराणीत्वर्धे । द्वारे-क्याच ठोरणार्थ्वभेव द्वारणीरकारणस्वातस्य । मण्डवोऽष्टादशह-स्तोऽज्याम श्रीणसङ्काविभितवर्यविनयेशायोगातः ।

गोमयेनोपिछ्तायां भूमानास्तीर्थं वे हुशान् । सन्तम्बर्धे परेते क्रुजीहिरकम्भा परेतेषुत्रम् ॥ भान्यप्रोणसहरोण भनेतिरिरिहोचमः । मच्यमः पश्चारिकः कतिष्ठः स्वास्त्रिभिः सतेः ॥ मेदमहानद्वीहिमयस्तु मण्ये सुनर्गदृक्षवयसंसुतः स्वात् ॥

ष्ट्रभावं मन्दारपारिजातकत्पपृश्चरुपम् । मध्ये कल्पतर्वदिक्षणीत्तरं धोर्मेन्दारपारिजातौ । शक्तौ हरिचन्द्रतसन्तानाविष पूर्वपश्चिमयोः स्थाप्तौ । निवेदगै सर्वशेलेषु विशेषाच्छक्तराऽष्ठले, इतिवस्यमाणवाक्यान् च्छकेराचळ्यानं त्वावस्यकम् ।

पूरेण मुफाफळपञ्चुको याग्येन नोमेड्कपुष्परागै: । पक्षाय गाहरूवनीकरनी: सीम्येन वैद्वयेसरोजरागै: ॥ सरोजरागः पद्मरागः । मुकाफजवीनि पूर्वादिदेववस्थितराक्तरथू-ृषु निवेदयानि ।

मन्दर:---

श्रीखण्डखण्डैरभितः प्रवालल्लान्बितः शुक्तिशिलातलः स्यात् ।

न्नद्वा च विष्णुभैगवान्युसरिदिवानको यन्न द्विरंकसयःस्वात् ॥ मृर्द्धव्यवस्यागतमस्तरेण कार्यास्त्वनेके च तथा द्विजीया । 'न्नद्वादिवस्त्रिमा न्नद्वाण्डदाने, द्विमा पश्चिणो सुनयन्न हैमा अनेक्यदस्वरसाद' इति मदा ।

च नारि शृक्षाणिच राजतानि नितन्त्रमागेषिच राजत स्यात्। आर्द्रेश्वशादतकन्द्रस्तु घृतोदक्षप्रस्त्रकाण्य दिश्व॥ शृक्षान्त्रराज्यन्श्वशरावद्धी स्यात्पूर्वेण पीतानि च दक्षिणे स्यात्। वासासि प्रधादय कर्युराणि रक्तानि चैगोत्तरतो पनार्छी॥

सार्देश्व एव वशा । घृतमेवोदकम् । शुक्राण्यम्यराण्येव मेपावडी । रीप्यान्महेन्द्रममुखानधाष्टी सस्थाप्य छोकाथिपवीनम्मेण ।

महेन्द्रासिक्ष्मण सुकाराने— नामाफर्पाकी न्य समस्वतः स्थानमनोरमः मास्यविकेपने न्य । विवानकः चोपरि चक्षकणमन्यातपुणमास्या सितं च ॥ इत्य तिषरयामस्रोकनम्य मेरोस्तु विराजमगिरीन्त्रमेण । न सुरीयभागेन चतुर्दितः सुसस्यप्रवेत्तुव्यविकेपनाङ्ग्यान् ॥ विविक्तकम्यप्रवेतं सरीयाशेन विकासभागेनान्त्रस्य ॥

सुरीयमामेन चतुर्दिश हा सस्थायये-पुरुषविध्येनाह्यायः ॥

'मितिविष्करभाष्येत सुरीमाशेन चतुर्याक्षेत्र विष्करभाषेनात्त्राययेद्धः

मिति छन्णाचक वस्यमाणानाम् १६८ सदन । सास्य हु पकेनैव
चनुर्यातेन चलारोऽपि विपन्त्रभपवेता कार्या हति यत्रैय बस्यते ।

पूर्वण मन्दरमनेक्फर्स्टिश ख्राप्ति

युक्त गर्गे फनस्भद्रश्रस्यिक्षम् । पामेन काश्वनसयेन विराजमान मानारये कुपुमवक्षविरुपनाह्वयम् ॥ शीराकणोदसस्सा च वनेन चैव रीप्येण इत्तिचटितेन विराजमानम् ।

षामरूपमाद विश्वनमी---

वापनाणसर कामी रविवेद्यात्मुगण्यम । काळापी नन्दने रागी रूपवानिययमीहक । इति ॥
' मैदमेर्स्सिक्षमाताद्वाच्यान्यात्तुपदेशाच मा स्टोऽनि झीदिसय पन, इति मद्दन । तत्र ' निरुक्तमात्त्वाचे वीच ये कुर्वेतु पूर्वेत । इति प्रसाणदोक्ते । गणीरिति नराकृतिभिक्षिभिगिर्विद्यम् । करिक्टबन् । कनकिति कनकिनिमेतो अद्रकन्दरः । बहुदं प्रयोगे होमम् । श्रीरेति । ४ शीरपूर्णेन रीप्येणारुगोदास्येनं सरसा रीप्येण बनेन च विराजमानम् ।

' यामेत रान्धमद्गन्य निर्वेशनीयो गोधूमसभ्ययमयः फल्जीतजन्त्वा।

हेमेन यञ्चपतिना घृतमानसेन बस्नेश्व राजवयनेन च संगुतः स्पात् ।।

कल्पीसमन्त्रा हैमजन्यूयुक्षेण । यक्ष्यविरूपं हेमाद्री श्रीमभे-

हरामापिद्रनेत्रं च गदिनं पीतिनेपदम् ।

पुरुषक्त्यं धनाव्यक्षं व्यायेच्छितसरां सद्दा । इति ॥ सत्रतेन राजतेन मानससरसा ।

पश्चात्तिछाप्यस्तेकसुर्यणेषुव्यसीवर्णाप्यस्यक्तर्गयाद्वस्यक्त् ।
 आकारयेद्रमसपुद्वप्रयोग तज्ज्ञस्याम्बनं द्धिसित्रव्यस्यामे ॥

भाकारपेरकुर्यात् । द्वीति सद्भिराजनं पात्रं सितोदाख्यं सरः ।

संस्थाप्य तं भिपुलशैलमधौत्तरेण शैलं सुपार्श्वमपि मापमयं सवस्वम् ।

मुप्तेश्च हेमयरपादपश्चेरारं तः माकारयेत्कनकभेनुविराजमानप्।

माक्षीकभद्रसरसा घ बनेन सद्वर

द्रीप्येण मास्यस्वता च युर्व विभाव । संस्थाच्येति शैकान्तं पृत्रोक्तविकाचकातुवादयम् । अथस्याविः पुनः

पार्श्वविधः । माक्षीकेति समधुरूवभद्राख्यसरसैत्यर्थः । े होमञ्जूतिमस्य वेदपुराणविद्धिः

दानश्चुामस्य यदपुराणावाकः दानरितन्यवरितः कृतिभिद्धिंत्रेन्द्रैः (

पूर्वेण हस्तमितमन विधाय हण्हं कार्य तिळैयंवघृतेन समित्हरीख ॥

Malag-

इन्द्राचा को रूपालाव्य तेपां होमी विश्वीयते । विद्विद्वीया मन्त्रेय समित्रियमा विद्धाः ॥ पौरुपेण तु मुक्तन बढ़ादीनां विश्वीयते । तया व्याह्मितिहॉमस्त्रिलेपयन चैव दि ॥ अप्टरातं तु होतव्यं सर्कामसम्द्रत्ये । इति ॥

रात्री च जागरमनुद्धतगीतन्वैरावाहनं च कथवामि शिलोचवानाम्।"

रात्राच जागरमः मन्त्रा वस्यन्ते ।

प्रकारिक से के मन्द्रे चामिपुनवेत् । प्रकारिक वास्त्रे समाने विमले पुनः ॥ स्वाताऽत्र गुर्दे द्वारिक्यमा वर्वेशेतसाद ॥ विकारावर्षेवास्त्रावादिकस्य वर्वेशेतसाद ॥ विकारावर्षेवास्त्रावादिकस्य वर्वेशे स्वात्रे श्रिक्यात् ॥ प्रकार सा बाउटी वा पण्य द्वार्व्हाकिमात् ॥ पर्वे वा गुरवे द्वाराव्हित्य च प्रवादेविकमात् ॥ पर्वे वा गुरवे द्वाराव्हित्य च प्रवादेविकमात् ॥ पर्वे वा गुरवे द्वाराव्हित्य च व्यावस्त्रक्षाञ्चनम् ॥ पर्वे वा गुरवे स्वात्र पर्वे प्रकार । प्रवाद्याविक्यायां व्यात्रे प्रवाद्याः ॥ प्रवाद्यां च सर्वेश्वयाव्यात्रं वस्त्रे स्वातः ॥ प्रवाद्यां सर्वेशेल्याव्यात्रं नात्रित्यत्र ॥ विवाद्यात्रं सर्वेशेल्याव्यात्रं नात्रित्यत्र ॥ विवाद्यात्रे सर्वेशेल्याव्यात्रं नात्रित्यत्र ॥ विवाद्यात्रे सर्वेशेल्याव्यात्रं नात्रित्यत्र ॥ विवाद्यात्र सर्वेशेल्याव्यात्रं नात्रात्रे प्रवाद्यः ॥ वानकालेलु ये सन्त्राः पर्वेतेषु च सस्त्रस्य ॥ मन्त्राः प्रयोगे होयाः ।

क्षभ्रमेव यतो छङ्गीरक्षमेव अनार्दनः । भान्यपर्ववरूपेण पाहि सरमात्रगोत्तम ॥ छनेन विभिन्ना यस्तु दशाख्रान्यमर्थ गिरिम् । मन्यन्तरत्तं सार्व दशाख्रोके महीयतं ॥ अपस्तोत्तणात्वर्थेनाकीणेन विदानितः । विमानेन दिवः पृष्ठमायाति खुरसेविवः ॥ कर्मस्रयाद्राजराज्यं प्राप्नोतीत् न संशयः ।

३ति धान्यादिरौछदानप् ।

अथ साबारणः प्रयोगः । यजमानः पूत्रीकदेशेऽष्टादशहस्तं मण्डपं पूर्वतःकुरीत् । सस्य च प्राच्यामुदीच्यां वैकमेव द्वारं तीरणं च, न परवारि । कुण्डं चै रुमेव प्राच्यामे रुहस्तम् । प्राच्यां हरतमात्रा प्रहवेदी ॥ अथ शैलिमाणम् । मध्ये कुशानास्तीर्यं सहस्रद्रोणभितराजशा-खिनामकमहात्रीहिभिक्तमं तद्खेन मध्यमं द्रोणशतत्रयेणाधममिति मेर्र शक्तया करपयेत्। द्रोणं परिभाषायामुक्तम् । मेरोस्परि मध्ये करप-ष्ट्रभम् । प्रागादिदिक्षं हरियन्दनमन्दारसन्तानपारिभातानः । अदाची मन्दारकरुपवृक्षपारिजाततरनः स्थाप्याः । शर्कराचछे त सन्तानहरि-चन्दनावावत्यकौ । पूर्शदिदिख बहाविण्युत्रसूर्यवितमाः पश्चिसंघान्युः निसंघांस । तथा प्रागादिदिक्चतुष्टये ममेण मुकाफउद्दीरकैगीमेदपुण-रागैर्मारकतनील्रसेवेह्वर्यपद्मारागैः समसंख्याकेभृथितं शृङ्खयतुष्कम् । सद्भृहिर्दिगप्रके रौप्यमिन्द्रादिखोकपालम्बिमाप्टकम् । समन्तारशीरा-ण्डेर्ठेतानां स्थाने प्रवालानि । शिलानां शुक्तीः प्रागादिषु मेपानां श्वेतपीतकर्युररक्तवस्राणि, वंशानामिक्ष्म् । जलस्य भृतप् । गन्धपुष्प-मानाफलानि च परितः संस्थाप्य पश्चवर्णवितानकं तथैव याम्ये चोपि वप्नीयात्। ततो वनैर्मेरोख पोडशांशेन प्राच्यां मन्दरम्। तद्वपरि 'नररूपं गणत्रयं कदम्बं च सौवर्णे कदम्बमूले दैम: कामदेश: । भरुणोदसरःस्थाने दुग्धपूर्णरौष्यपात्रम् । रौष्यं चैत्ररथाख्यं वतं गन्ध-पुष्पफलकाणि च स्थापयेत् । याम्ये मेरुपोडशांशगोधूममयं गन्धमादतं तदुपरि सौवर्णनम्बृष्ट्यं तन्मूछे सौवर्णमुदङ्गुरां घनदं मानससरःस्थाने सपृतं रीप्यपात्रं रूप्यं गन्धर्वाख्यं वनं नानाफलवस्त्रमाल्यानि च स्थाप-

येतु । पश्चिमे मेर्ह पोडकाशतिलमयं विपुलपर्वतं तदुपरि सीवर्ण पिप्पलं तनमुळे प्राइ मुदासीवर्णहंसप्रतिमां सितीदसरःस्थानं पयीद्धपूर्णराप्यपात्रं • रोत्यं विभाजवनं वस्त्रफळमाल्यानि च स्वापयेत् । उत्तरे मेर्ह वोडशांश-मितमायैः मुपार्थपर्वतं तदुपरि सीवर्णवटं तन्मूले दक्षिणाभिमुद्रीं सवत्सां सुवर्णभेतुं भद्रसरःस्थाने मधुपूर्णरौज्यपात्र स्ट्यं साविह्यानं वस्त्रफरादि च स्थापयेत् । एवं वस्यमाणपर्वतेष्विभ मेरद्रव्यचतुर्धीद्येन स्वणादिद्रव्येण प्रागादियु विस्कम्भादिपर्वता शेया. ॥

लथ यजमानोऽशेस्यायुक्तवा, अप्सरीगन्धर्वयुवविमानकरणकरवर्ळो -कामनसाममन्बन्तरशताबधिकालदेवलोकवासीचरभूलोकराजस्वकामः ईश्वरप्रीतिकामी वा श्वी धान्यपर्वतशनगई करिप्ये इतिसङ्कल्प गणे-शपुत्रास्यस्तिश्राचनमातृपुत्रासान्द्रीश्राद्धाचार्येत्विग्वरणतन्मधुपर्कपूत्रसमः ण्डपुत्रमाचार्यविमियोगान्त सामान्यप्रयोगोक्तं झ्योत् । आचार्योऽपि महादिश्यापनादिकुण्डसमीपश्यितकल्दास्थापनान्तं हुर्यात् । अप्रत्विजः प्राक्छण्डे प्रहादिद्वात्रिशहेवताभ्यस्तन्मन्त्रैस्तिछैः पृथ्यववृताभ्यां मिलि-ताभ्या कुरीक्षेति त्रिभिः साधनैः प्रत्येकमप्टवारं हुत्वा दशलोकपाले-भ्योऽष्टवसुभ्य पकादशरुद्रेभ्यो द्वावशादित्येभ्यश्च प्रश्येकमष्टसंख्यया समिक्रिस्तिटैर्वा जुहुयुः । मन्त्रारतु सामान्यप्रयोगे वक्ताः । ततः पुरुष-सुकेन ब्रह्मविष्णुशिवेभ्यः समिद्रिश्तिलेवा सूर्यनामदेवधनदहंसकामधितः भ्यरितरैकृतेन चाटोत्तरसतं जुहुयुः ' तत्र चतु पञ्चाशत्तिरैश्चतुःपञ्चाश-द्घृतेनेति । तदो यज्ञमानो मेरुमानाहा पूज्येत् । तत्र मन्त्राः--

त्वं सर्वदेवगणधामिनिधिर्विरुद्धमस्महृद्देऽप्यभरपर्वत नाहायाशु ।

ं क्षेम विधारव सुरु शान्तिमनुत्तमां न संपृजितः परमभक्तिमता मया**या।** स्वमेव भगवानीशी ब्रह्मा विष्णुर्दिवाकरः । मूर्तामूर्व परं बीजमवः पाहि सनातन ॥ यस्मात्वं छोकपालानां पाहि त्वं विश्वमन्दिरम् । रुद्रादित्यवसूनां च वतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ यस्मादशूर्यममरैर्नारीभित्र्व द्विरस्तव । सामानमामुद्धराशेपदुःस्तसंसारसागरात् ॥

लध मन्दरस्य-यस्माचैत्रर्थेन त्वं भद्राश्वप्रमुखेन च । शोमसे मन्दर क्षिप्रमलं तुष्टिकरो भव ॥ ः अथं गन्धमादनीस्य--

। यस्मारच्छामणिर्जम्बुद्धीपे स्वं गन्धमादन ।

ो सन्धर्वयसभीभावाँस्तवः कीर्विष्टंबाऽस्त् मे ॥

अर्थ विषुउस्य---

ावपुरस्य---यस्मास्त्रं येत्रमाहेन वैश्राजेन वनेन घ ।

ं हिरण्ययाश्वत्यशिरास्त्रसात्प्रष्टिईढाऽस्तु मे ॥

मध सुवार्श्वस्य---

उत्तरे: ध्रुविभर्यस्मात्सावित्रेण वनेम च ।
 स्वार्श्व श्रीभसे नित्यमतः श्रीरक्षयाऽस्तु मे ॥

्ततः। सर्वेषांतरणे कते सामादि कर्या कुण्डसमीपस्थककरांकलैपैन गनमभिषिष्येषुः । सतः कतौ गृहीतकुसुमी सेर्व प्रवृक्षिणीकृत्य जप-सेष्ठेतः। मन्त्रास्य---

> खन्नं ब्रह्म यतः प्रोक्तमन्ने प्राणाः मितिष्ठिताः । अन्नाज्ञतन्ति भृतानि जात्तनेन पर्वते ॥ अन्नतेन यतो उक्तमीरत्नमेय जतार्थनः । धान्यपर्वतस्त्रपेण पादि तस्मान्नमो नमः ॥

् इत्युर्ययाय पुत्पाश्विक प्रक्षिय नमस्कृत्य प्राव्ह्यात व्यविद्योवइञ्चलेश्यो गुक्रोविन्यः मसेण निर्दारक्षात् । प्रयोगस्तुः 'अधिरवादि
देशकाङ्कविनाम्नेऽप्रगोशायामुककेषात्माकुक्षात्माण्योविकद्मकृत्रार्गेण
त्योऽप्तरीगःश्वर्यकण्युद्धविमानव्यणक्रसार्वेक्वमानवन्तः
राताविक्षसम्यदेवकोकिनावादोश्वरम् कृतिक्वमानवन्तः
राताविक्षसम्यदेवकोकिनावादोश्वरम् कृतिक्वमानवन्तः
होरकाविम्युणिनदीग्वमश्यद्वन्यक्षयोगिम्यं कृत्यमयेन्द्राविकाक्षयाव्यहोरकाविम्युणिनदीग्वमश्यद्वन्यक्षयोगिम्यं कृत्यमयेन्द्राविकाक्षयाव्यव्यवस्यानित्राव्यविद्याम्यवद्याव्यक्षयापिकग्रक्षपीककुर्युत्वन्वक्यव्यवस्यानित्राव्यक्षयाम्यविद्यान्त्रिक्वम्यव्यक्षयापिकग्रक्षपीककुर्युत्वन्वक्यव्यवस्यानित्राव्यक्षयास्यविद्यान्त्रिक्वम्यव्यक्षयाप्यविद्यान्त्रिक्यः
व्यवस्यानित्राव्यक्षयास्यविद्यान्त्रिक्यः
व्यवस्यक्षयास्यविद्यान्त्रिक्यः
विद्यक्षयास्यविद्यान्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयः
विद्यक्षयाः
विद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयः
विद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयः
विद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयः
विद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयः
विद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयाः
विद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयाः
विद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयः
विद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयः
विद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयः
विद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयः
विद्यक्षयास्यविद्यक्षयाः
विद्यक्षयास्यविद्यस्यविद्यक्षयास्यविद्यस्यविद्यस्यविद्यस्यविद्यस्यविद्यस्यविद्यस्यविद्यस्यविद्यस्यविद्यस्यविद्यस्यविद्यस्यविद्यस्यस्यविद्यस्यविद्यस्यस्यविद्यस्यस्यविद्यस्यस्यविद्यस्यस्यविद्यस्यस्यविद्यस्यस्यविद्यस्

ऋत्विग्भ्यः, अष्टसप्रपक्षयोध्यतस्रतिस्रो वा गुरवे, एकैकां ऋत्विग्भ्यः, पश्चपक्षे सर्वस्य एकैफाम् , एक्पक्षे गुरव एव ता कपिलाम् , ऋतिवस्यः सुवर्ण, इति मदनाइयः । एवं पूर्विस्यतं मन्दरास्यविष्कः भागिरि यवमयं सोवर्ण मानापरम्भद्रकदम्यतन्मुखस्यसौवर्णनामदेवप्रतिममक्णोदसरः-स्थानीयश्रीरपरितरीप्यपात्रं रीप्यघटितचैत्ररथवनवस्ननानापछादियुर्व तुभ्यमृत्विजे संप्रद्दे न मम इति दचात्। इमं दक्षिणश्यितगोधूममर्थ गन्धमादनं विष्यम्भपवेतं सौवर्णजम्बृतृक्षमुखस्थितसौवर्णकुवरप्रतिमान न्वितं मानससर.स्यानीयपृतपूरितरीय्यपातं स्ट्यपटितगन्धवननवस्र-नानापछमास्यविकानादियुर्वे तुभ्यम् , इति ददात् । इमं पश्चिमरिथतं तिलमयं विपुलाख्यं विष्वस्भपवेतं सीवर्णपिप्पलतन्मूलस्थितसीवर्णहेन स्रवित्रान्त्रितं सितोदसरःस्थानीयद्धिपूरितर्ज्ञतपार्तं रजतपटितवै॰ भाजवनवस्त्रफलादियुतं तुभ्यम् , इति द्चात् । इमीमुत्तरिथतं मापमथं सुपार्थाच्यं विव्यनभववेतं हैमबटतनमूलस्थितहैमधेनुप्रतिमायुतं भद्रसाः-रधानीयमधुपृरिवरीप्यपात्रं रीप्यघटितसावित्रवनदस्त्रपद्धादियुवं तुभ्यम्, इति द्यात् । छवणादिदानपक्षे प्रयोगे घान्यपदस्थाने छवणादिपदं प्रक्षेण्यम् । वत्तरप्रशामि वत वत्र वद्यामः । आचार्याचनुह्रयाऽन्ये-भ्योडपि दानपक्षे युष्मभ्यमन्येभ्यश्च ब्राह्मणेश्यः संप्रदेषे, इति दशात् । ततो महवेचा यज्ञमानी देवता. सपूच्य नमस्तुयात् । गुरुखान्धि-सर्भवेत्। यज्ञमानस्य मण्डपादिप्रह्मितिमादि गुरवे प्रतिपाद्य शास-णान्सभोन्य भूयसी दक्षिणा दश्या ' यस्य स्ट्राया इति प्रमादासुर्वेताम् । इति चीन्ता विष्णु स्मृत्वा कर्मेश्वर समध्ये विप्राहित्यो गृहीत्वा सहिमत्रादियुवी मुखीत ।

इति धाम्यादिमेरसाधारणप्रयोगः।

अय रत्यणाच्छः ।

वादी-

उत्तमः पोडशत्रोणः कर्तव्यो स्वणाचनः। मध्यमः स्यातदुर्देन चतुर्मिस्प्रमः स्यतः॥ वित्तद्दीनो वधाक्षत्तया द्रोणादृष्वं सु कारवेत्। चतुर्यासन विष्क्रस्मपर्धतान्त्रारयेत्य्यस् ॥ भन्न प्रथागित्युक्ते प्रत्येकं मेनद्रव्यचतुर्णाज्ञपित्मितेन छन्नणेन विषक-म्मपर्वेवचतुष्कम् । अयं च न्यायः त्वेविष्क्रम्मिगित्यु इति मद्याः । युक्तं त्र चतुर्योद्योत्तेति , विधेयचतुर्याज्ञगतिकत्वविवक्षयैकसीव चतुर्योद्योत्तेन चत्वारोऽपि विष्क्रम्भाचकाः कार्याः । पृथका त्रु गिरिगताऽन्तृतते न चतुर्योद्यात्वा विषीयते इति ।

विधानं पूर्वयत्क्रयोद्धशादीनां च सर्वदां। तद्वद्धेमतरून्सर्वाह्वीकपादान्निवेशयेत्।। सरांसि कामदेवादींसद्ववात्र निवेशयेत्।

पुर्वेवद्यान्याच्छवस् ।

सीभाग्यरससंभूतो यतोऽयं छवणो रसः । सद्दात्मकत्वेन च मां पादि पापात्रमी नमः ॥ धरमाद्रैत्र रसाः सर्वे नोरकटा छवणं विना । प्रिमं च शिववोर्गित्यं तरमाच्छान्ति प्रयच्छ मे ॥ विष्णुरेहससुमूतं यसमार्शेमवर्दनम् । समारायैतरुपेण पाहि संसारसाग्यास् ॥ धनेन विधिना यस्तु द्याह्मवण्यत्वम् । चमाळोषं वसेत्कर्यं ततो याति प्रांगतिम् ॥

फल्पपर्यन्तसुमाठोकमातिसमनन्तरपरमागीतमातिकामः ईश्वरमीति-वामो वा ठवणाचठदानं करिय्ये इति संकल्पवाव्यस् । सकल्पपस्यसु-रप्भितठोकमातिपूर्वककल्पावष्युमाठोकतिवाससमनन्तरपरमगतिकामः इति मदनः । सन्दृष्टे तु विनन्त्यम् ।

अय गुहपर्वतः ।

पादी--

श्रैयातः संगवस्याति गुटवर्वतगुत्तमम् । "यस्त्रदामात्ररः न्सर्गः प्राप्तेतिः सुरपूजितस् ।। उत्तमो दशिभर्भार्रोभ्यमः पश्चभिर्मतः । त्रिमिर्भारेः विद्यः स्यात्तदुर्द्धेनाल्यवित्तनान् ॥

भारः पलस्हस्रद्भयम् । तुला खियां पल्यतं भारः स्वाद्विश्वति-खुटाः इत्यमरः । दानमयुख:

210

तद्भदामन्त्रणं पृजां हैमदृक्षसुरार्चनम् । ' विर सम्भपर्वताँस्तद्वत्सरासि वनदेवताः ॥ होमं जागरणं तद्वहोकपाटाधिवासनम् । धान्यपर्वतवत्तुर्यादिमं मन्त्रमुदीरयेत् ॥ यथा देवेषु विश्वात्मा प्रवर्श्व जनार्देनः । सामयेद्रतु वेदाना महादेवस्तु योगिनाम् ॥ प्रणवः सर्वमन्त्राणां नारीणा पार्वती यथा । तथा रसाना प्रवरः सदैवेह्यस्यो मतः॥ मम सरमारपरां छदमी द्दछा गुडपर्वत । यस्मारसौभाग्यदायिन्या भ्रावा स्वं गुडपर्वेत ॥ नियासभावि पावैत्यास्त्रमान्मां पाहि सर्वेदा । अनेन विभिना यस्तु दशाहुडमयं गिरिम् ।। पूज्यमानः स गन्धवैगीरीठौकै महीयते । पुनः करपशतान्ते तु सप्तद्वीपाधिपौ भवेत् ॥ भायुरारोग्यसंपन्नः शत्रुभिश्चापराजितः। अत्र सक्छपापक्षयोत्तरं गन्धर्वपृत्यमानत्वपूर्वककल्पशताविभगौरी॰ धीकप्राप्यनन्तर संपन्नापराजितायुरारोग्यपूर्वकसप्तद्वीपाधिपतित्वकामः इंश्वरप्रीतिकामी वा इति सह्रह्पे विशेषोऽन्यत्सेव पूर्ववत् । अथ सुवर्णाचळ: । पाध-भथ पापहरं बक्ष्ये सुवर्णीचल्रमुत्तमम् । यस्य प्रसादाङ्कन वैरिश्वं याति मानवः ॥ उत्तम' पळसाहस्रो मध्यमः पश्चभिः इतैः । सदर्धेनाषमस्तद्भदरपविचोऽपि शक्तिः।। दद्यादेकपलादूष्ट्री यथाशत्त्रया विमत्सरः । धान्यपर्वतवस्सर्वे विद्ध्याद्राञ्चसत्तम् ॥ विष्यमभरीठाँस्तद्वच ऋत्विग्भ्यः प्रतिपाद्येत् । नमस्तं ब्रह्ममभीय ब्रह्मनीजाय नै नमः ॥ यस्मादनन्तपञ्चदस्तरमात्पाहि शिलोचय । यस्मादग्रेरपत्य स्वं यस्माचेनी जगत्पते: ।।

् देगर-स्तरूपेण तस्मात्माहि नगोत्तम ।।

अनेन विभिना यखु द्यात्कनकपर्वेतम् ॥

स्र याति परमं महाळोकमानन्दकारकम् ।

सत्र करपरार्व विशेचनो याति परा गतिम् ॥

अन्न 'गुवांदिश्यो' मेवांदिदानमस्प्रूट्यविषयम् , बहुद्रस्ये तु तुजनपुत्रपद्वे चुप्पे यांचां ग्रातेश्रन्यतु वदाक्षयाञ्चयेश्योऽपि विशिष्टेश्यो देयाः १ दि होमादिः । अत्र 'सकळ्यापक्षयोत्तरताकरपावयानन्दकारक्षत्रक्राक्षणेक्षभोगानन्वरपरमाविकासः । इति वानवाष्यम् ।

अय तिलाचलः ।

पाचे--

स्कारदे-

वत्तमी द्वाभिर्द्रोणैः पश्चिमिर्मयमी मदा ।
त्रिभिः किन्नप्रो राजेन्द्र तिळक्षेळः प्रकीर्तिदः ॥
पूर्वव्यापरं सर्व द्वव्यवित्तः मक्तिविदः ॥
पूर्वव्यापरं सर्व द्वव्यवित्तः मक्तादिकतः ॥
वातमन्त्रान्त्रव्याने विद्यापा च्युनिपुद्धत्व ॥
वस्तानमञ्जने विद्यापा वर्तिव्यापा ने भवदिवह ॥
हन्यकन्त्रेयु वस्ताच तिर्देश्वाभिरक्षणम् ।
भवाद्धदः देशेल्द्र तिरुप्ता कामोऽस्त्र ते ॥
-इत्यानन्त्र्य चर्चा प्रवाचित्रव्यव्यत्त्रत्त्वत्तम् ।
स भव्यव्यत् योत्तं प्रवाचित्रव्यव्यत्त्वत्तमम् ।
स भव्यवं पदं धाति प्रवाद्यत्विद्वय्या ॥
दीर्भीर्युक्ष्यमधान्नीति पुत्रं गीन्ने व गानवः ।
विद्वित्रवित्रान्वेतं पुत्रमानो दिवं व्यत्तेत् ॥

142) भवना-धनः धूचमाना दिव प्रवाहः [] *स रूपापश्चयद्दीर्पयुष्यपुत्रपौजसान्वितानन्तर्राधनृद्देवगन्धर्यपूर्वे रुपू ,त्रमानस्वपूर्वे रुगुळोषनमससनन्तराक्षयवैष्णवपद्माप्तिकामः ग्रस्ति दान-वास्यम्]

अथाद्वीदयत्रतं तिलपनेतदानम् ।

पूर्वाते सङ्गमे सात्या श्राचिभूत्या समाहितः। सर्वेपापविशुद्धपर्य नियमस्यो मनेशरः॥ नियममन्त्रस्तु-- ।

त्रिदेवत्यन्तं देवाः करित्ये मुक्तिमुक्तिः ।
भवन्तु सिक्ष्यौ मेञ्ज ययो देवाक्योऽप्रयः । इति ॥
महाविष्णुमदेवानां सौवर्णपर्यस्वया ।
प्रतिमास्तु प्रकृतेन्यानस्त्रत्ति द्विमोत्तमाः ॥
सामं रातन्यं सम्बोद्राणानां तिरुपर्वतः ।
महाविष्णुद्विमपित्ये दावन्यं तुंगतां मयप् ॥
दिरण्यमूधिभान्यादिदानं विभवतारतः ।
मणाहे तु नरः स्नात्वा द्विचेश्वात्वा समाहितः ॥
तिरुपर्वतम्यस्यं प्रमार्थेन्यान्यम् समाहितः ॥

आदी शहापूजा ।

नारी विश्वस्त्रे तुर्ध्यं सत्याय परमासने ।'
देशाय देवपवये यज्ञानां पतये नमः ॥ शनेन मन्नेण सन्नी पृत्रा ।
कथाङ्गरूत्रा-च्यां मन्त्रेण नमः पादी पृत्रवामि । दिरण्यामीय० जतः
श्रेतास् । परमास्मते० जहारुयाम् । वेवसे० तृष्टे । पर्योद्धत्याय०
सत्ती । देस्ताहासाय० पदिशे । श्रवानन्दाय० व्यक्षि । सामिद्रीपवये०
सत्ती । देस्ताहासाय० पदिशे । श्रवानन्दाय० व्यक्षिणे । सामिद्रीयवये०
पत्रिमे । अपवेदाय० प्रवे वन्ने । यजुदेदाय० दक्षिणे । सामिद्रीय०
पत्रिमे । अपवेदाय० प्रवे वन्ने । यजुदेदाय० दिस्ति । इंसाय नमः ।
कपालाय नमः । ततो लोकपालादिषुननं स्वमन्त्रैः ।

हिरण्यार्भ युरुष प्रधानस्यक्तरूप यः । प्रसादसुग्रको मुखा पूर्वा गृह नको जुत ते ॥ इति प्रार्थेना । भय दिण्णोः । कान्याय नसः पादी । दिश्वरूपाद० उरुत्थात् । सुङ्गन्दार० आतुष्ट्याप् । गोनिन्दाय० जत्ताभ्याम् । प्रशुप्तदेषार० गुढे । पद्मनामाय० नागौ । उम्बोदराय० खदो । कोस्तुमदस्ति० बद्धांत् ।

पतुर्भुजाय० बाहुपु । विश्वतीमुसाय० वदने । शतसहस्रश्रिरसे० मौस्रो । आदित्यचन्द्रनयन दिग्याही देत्यसुद्दन । पर्जा दत्ता मया असमा करणाया ।।

पूर्वा दत्ता मया भत्तया गृहाण करणापर ॥ इति विष्णुत्रार्थनम् ।

अय शिवस्य।

महेश्वर महेशान नगते त्रिपुरान्तक ।

डीमृतकेशाय नमी नमस्ते वृपमण्यन ॥ ईशानाय नमः पादी जहारमां चन्द्रशेखरम् । जाहुरूपां पशुपतिव्योकस्यां शहरः सस्तः ॥ वसाकात्ताय सुखे तु नामौ वे नीठठोहितः । चद्रे फ्रीत्वासाय ससे नागोपनीविन ॥ अत्मकारं मसनात्मा नमो छोकान्वकाय स्व ॥ पूर्मा वृत्तां मया मकस्या गृहाण द्वपम्यत्म ॥

इतिमहेशेप्रार्थना ।

इति पृश्वकाः प्रोक्तो मन्त्रेरेतैः प्रयस्तदः ।
भावार्षे पृत्रभेदस्यतः पृत्राव्हारपूर्णः ॥
इन्हानाः कर्णमाः पीठं छत्रं काण्यक्ष्यम् ।
क्षेत्रयात्रुपां वेदं महाणे सर्वमृत्ये ॥
पीतवज्ञुपां विद्यानां सर्वमृत्ये ॥
पीतवज्ञुपां विद्यानां कृत्ये। स्वर्कः ॥
क्षमत्तेष्ठवक्षीयत्रीतिन्वयेत्रस्य तु ।
पश्चाहतः काष्यं मृत्यां कृत्याः स्वराक्षम् ॥
कार्यक्षत्रस्य त्रावेद्यान्यस्य स्वराक्षम् ॥
कार्यक्षत्रस्य महत्वेद्यं पृत्या देवा प्रयाक्षमम् ॥
प्राप्ताक्षम् अत्रविद्यां पृत्या देवा प्रयाक्षमम् ॥
कार्यक्षत्रय कर्णाविवानं श्रृणु त्रव्यतः ।
क्षेत्रवान्यगृहिस्य झाक्षप्रदेन कर्मणा ॥
प्रमावत्वे विश्वकर्मण क्षाम् वारायः मरिकाः॥
इस्यनेत्व मन्त्रण्य विद्यान्त्रम्य मरिकाः॥

इत्यननन नन्त्रण याह सस्याप्य भाषातः ॥ सतौ ब्रह्मविष्णुशिवानौ नाममन्त्रेणाष्ट्रीत्तरसङ्ख्रमञ्जेतर्शतं तिरुद्धोमः ।

अप होमानसाने द्व गां च द्वाराव्यस्तिम् ।.
 देमश्ट्वीं रूप्यसुर्तं प्रपटामराणभूपिताम् ॥
 सामश्टमं फांस्यरोहें सर्वोध्यस्त्रसंख्याम् ।
 सदक्षिणां सुभां पुष्यां वासाणाय निवेदयेत् ॥
 तेन दशं हुवं कातिष्यं यदे सहस्रका ।
 श्वतः सर्वेदियो व्यवसारय प्रभावतः ॥
 इसक्षेदिये विद्यानस्ताम् ।

अथ कार्पासाचल: ।

पाद्मे--

पाची—

कार्यासपर्वतसदृद्धिसमौरिष्ट्रोदित ।
दशिर्माम्प्यमः प्रोक्तः पनिष्ठः पथ्वसिः समृतः ॥
सारेणाल्यभनो द्याद्विचराठ्यविवर्गितः ।
भारेणाल्यभनो द्याद्विचराठ्यविवर्गितः ।
भारेणाल्यभनो द्याद्विचराठ्यविवर्गितः ।
प्रभावाया तु शर्वेया द्यापादिससुरीरयम् ।
स्थेयावरणं यस्ताह्यकानिष्कः सर्वेदा ॥
कार्यासायक वस्तान्यमणीपर्यसनो सब ।
पत्रकार्यासहेल्यनं यो द्यारपर्वसिक्षणो ॥
इहलोके सस्तन्त्रमं वाते राजा सर्वेदिद्द ।
सर्वजाराक्ष्यपृथेककस्याविवरहलोकनिवासान्यस्मृलोराजस्वकाम । इति दानवाच्यम् ।

अय घृताचलः ।

लथातः संप्रवह्यामि घृताचन्यमुत्तमम् । तेजीमयमिदं दिव्यं महापातकनाशनम् ॥

विश्तरा धृतकुम्भानामुत्तमः स्थार्य्वाचळः । मध्यमग्तु तद्देन वद्देनाथमः स्मृतः ।। अस्पवित्तः प्रकृतीत हाभ्यामिह् विधानतः ।

हुम्भः पछसद्कात्मकः परिमाणनिशेषः । विष्क्रम्भपर्वतास्तद्धचनुर्मागेन क्लयेत् । शास्त्रितन्दुरुपात्राणि सुम्मोपरि निवेशतं

द्यारिवन्दुच्यात्राणि हम्मोपरि निवेशवेत् ॥ सत्र हु हुम्म. पारुक्त एवं, स च प्रायो पृतस्य द्रवरवेन तद्धारण-योगयपरिमाण, सदुपरि च सन्दुच्यात्रम्। एव विरद्रम्भाचरेत्वरि एवर्मिप्रार्थेनेव पात्राणीति बहुबचनमा ।

कारपेरसंहतान्सर्वान्ययाशोमं विधानतः । वैष्टपेरछुङचसोमिरिछुरुण्डफ्टगदिकै.॥ धान्यपर्वतवरुछेपं विधानमिह पठ्यते । किपवासं च द्ववींत वक्ष्योमं सुरार्थनम् ॥ प्रभातायां तु शर्वर्या गुरवे विनिवेदयेत् । घताचळिमिति श्रेपः ॥

विज्रुक्त्मपर्ववांस्वह्रद्दस्विग्म्यः शान्तमानसः । प्रयोगाद्धृतसुर्व्यं यसमाद्यृततेजसः ॥ सहमाद्गृताचिविद्यातमा प्रीयतागम्य शहूरः । यह तेजीसयं प्रदा पृते तथ व्यवस्थित्। ॥ पृत्वदेतस्रवेण तस्मानः पादि मुखर । कनेन विधिना दणाद्युतायलमगुत्तमम् ॥ महापातस्रयुक्तेऽपि लोकमायाति शाहूरम् । हंससारस्युप्तेन किह्निणीजालमारिका ॥ विमानेनाक्ष्मणेन सिद्धविशासपाचितः ॥ विभानेनाक्ष्मणेन सिद्धविशासपाचितः ॥ विभानेनाक्षमणेन सिद्धविशासपाचितः ॥

षत्र सकल्यातकनाक्षमपूर्वकहंससारसञ्जाकिक्किणीजालमास्वकेवणै-विमानकरणकराङ्करलोकागमनपूर्वकसिखविधायरार्थितःवविशिष्टिमन् दितभूतसंहाराऽविकविधरणकामः, इति दानवाक्यम् ।

अथ रत्नाचलः।

पाश्चे---

अधातः संप्रवक्ष्यामि रत्नाचलम्बुत्तमम् । सुक्ताचलसहरीण पर्वेतः स्वादिहोचमः ॥ मध्यमः पष्याकार्षकाता चाष्याः स्वतः । चतुर्वादीत विष्क्रमपर्वेतः स्वाः समन्ततः ॥ पूर्वेण वस्त्रामेदेद्विशिणमेन्द्रनीळकः । पक्तामेदेदिशिणमेन्द्रनीळकः ।

पद्मरागयुर्तैः कार्यो विद्वन्निर्गन्यमादनः । वैद्वर्यविद्वनैः पद्मात्समिश्रो विपुष्टाचरः ॥ पद्मरागैः ससीपर्णेश्चरेण तु विन्यसेत् ।

सुपार्श्वमिति शेषः । बन्नगोमेरैः समसंरयः । समं स्वादश्वतिस्वात् इति न्यायात्, प्वमुत्तरशापि शेषम् । धान्यपर्वतवच्छेपमञ्जापि परिकल्पते । तद्वाबाह्नं कुर्याद्वहदेवांश काञ्चनान् ॥ पुत्रयेत्पुष्पपानीयैः प्रभाते च विसर्भनम् ।

दानामन्तरमिति दोषः। व्हेबद्रहन्सित्यम्य इमान्सन्त्रानुदीरयेत् । गुरुमस्विषयो दानायेति दीय.।

यथा देवगणाः सर्वे रत्नेध्वेत व्यवस्थिताः । ह्वं च रत्नमयो नित्यमत. पाहि महाचल ॥ थामाइलामसादेन दृष्टि प्रहरते हरि:।

महारत्नप्रसादेन वस्थान. पाहि सर्वत: ॥ अजार्युपन्नमादारभ्य विसर्जनादीना व्युरम्मीचाववि चान्यपर्वतस दातिदेशिकः मभी क्षेयः।

लनेन विभिना चन्तु दशाहरनमहानिरिम् । स वाति वैष्णवं सो नममरेश्वरपृजितः ॥ धावत्यत्परातं सामं वसेदिह नराधिप । ह्यारोम्बगुकोपेतः सप्रद्वीपाधियो भवेत् ॥ महाहत्यादिकं यसयादिह वाडमुत्र वा कृतम्। शरहर्वे नाशमायासि गिरिवेजहती यथा ॥ अन्नानेकजन्म इतलासहत्यादियापश्चयोत्तरमभरेश्वर्यू निवत्यपूर्वकला-

महरूदातावश्चित्रविष्णुलोकनिवासातन्तरहरपारोग्यगुणोपेतसप्तद्वीपा-भिपत्यकामः, इति दानवाक्यम् ।

अथ रीप्यावतः।

पादी--दशिम पलबाह्येहत्तभी राजताचळः। पश्चिममैध्यमः प्रोक्तस्यद्वेताचमः स्पताः ॥ **बाराकी** विश्वतेस्की कारवेस्टक्षित. सदा । विष्करमपर्वतास्तद्वसारीयाञ्चन करपयेन् ॥ पूर्ववद्राञ्चताः दुर्शान्यस्यात् रिकास्तः । षरभीनपयास्तद्रक्षीकेशानस्येद्युषः ॥

कलपौतं करिचनम् ।

प्रहाविष्णुत्रिवानसुर्योक्तिसम्बोऽत्र हिरणस्यः । राजतं स्वायदग्येपां काञ्चनं स्वाचद्दत्र वै ॥ इपं च पूर्ववस्कृषोद्दोमजागरणादिकम् । द्वाचद्वस्यानते च गुर्तेच रीत्यवर्षतम् ॥ दिव्यस्मरतेखान्नत्वसम्याः पूत्र वस्वविभूष्णेः । द्वाचा स्वायं स्वायद्धिनंदीः शहरस्य च । रम्त्रां वाक्षां स्वायद्धिनंदीः शहरस्य च । रम्त्रां वाष्ट्री चरमान्नतः कोकस्तारस्वतारात् ॥ हस्यं विषेच यो द्वाहरुवाच्यस्यम् । गवां दशसहस्रस्य फळं प्रामोवि मानवः ॥ सोन्वोक्षे व गण्डी रिकारापसस्यां गणैः । पूरुमानो वसेद्धीशान्यावदासूत्वसंह्वस्य ॥

सत्र सक्छपापअयद्श्वसहस्रगोदानफळावाप्तिपूर्वकगन्धविकित्रराप्सः रोगाणपुर्वमानस्वविशिष्टयावदाभूततंत्र्वसोमछोकतिवासकामः, इति

. दानवाक्यम् ।

अय शर्कराचलः ।

पाद्ये--

कवातः संगवस्यामि शकैराचलशुक्तमम् । यस्य प्रसादाद्विष्णकर्कद्वास्त्र्यास्य सर्वदा ॥ क्षाद्वीकः शर्वराजारेक्तमः स्यान्मद्वाचलः । च्युर्मिर्मेष्यमस्यद्वाद्वारास्याम्यमः स्यूषः ॥ भागेण वार्ड्यमरिण श्वर्वादाः स्वस्पवित्तवात् ॥ विरक्षम्भर्यवात्त्रयुर्णेशुर्सयाग्रेम स्थानः ॥ धान्यपर्ववतस्यगासायामस्यव्यत् ॥ भरोत्यारि वद्वा स्थाप्यं स्पेयकत्रयम् ॥ प्रसाद्वाद्वयत्रयं मुर्गि सर्वेवयि निवेदायेत् ॥ प्रसिद्धाययं मुर्गि सर्वेवयि निवेदायेत् ॥ प्रिपेन्द्वसम्यानी पूर्विवित्रमामार्योः ॥ निवेदयौ सर्वेशिक्षेषु विशेपाच्छकैराचले ॥ मन्दरे कामदेवस्त प्रत्यग्तकः सदा भवेत् । गन्धमादनगृहे च धनदः स्यादुदह्मुखः ॥ पाइमुको वेदमृतिश्च इंसः स्याद्विपुटाचरे । देमी सुपार्थे सुरमिर्देक्षिणाभिसुची भवेत् ॥ भान्यपर्वतवत्सर्वभावाहनमखादिनम् । षरबाऽध गरवे दद्यान्मध्यस्यं पर्वतोत्तमम् ॥ प्रतिकवश्चतुरः शैलानिषान्मन्त्रानुदीरयेन् । सौभाग्यामृतसारोऽयं परमः शर्कराचलः ॥ सन्ममातन्दकारी त्वं भव शैलेन्द्र सर्वदा । क्षमृतं विवेतां ये तु निपेतुर्मुनि शीकराः ॥ देवानो सत्समुद्यं पाहि नः शर्कराचल । मनोभवधनुर्भध्यादुङ्खा शर्दश यदः॥ स-मयोऽसि महादील पाहि संसारसागरात्। बी दद्याच्छक्राशैटमनेन विधिना गरः ॥ सर्वपापविनिर्मेकः प्रयावि शिवमन्दिरम् । चन्द्रादित्यप्रवीशाशमधिरुद्धाऽनुशीविभिः ॥ स हेमबानमाविष्टेचतो विष्णुपुरं वजेत्। सतः वरुपशतान्ते तु समुद्रीपाधिपो भवेत ॥ कायुरारोग्यसंपन्नो यावज्ञन्मायुवन्नयम् । भोजनं शक्तितः कुर्यात्सर्वशैलेष्वमरसरः ॥ सर्वत्राक्षीरत्वणमश्नीयाचदनुद्वया ।

भीजनं त्राह्मणानाम् । सर्वत्र सर्वेद्रेलेखु । दानात्पूर्वेतुः छत्तीपवासी दानानन्तरं गुर्वोधनुहयाऽश्वीरख्यणमङ्गीयादिस्यर्थः ।

> सर्वज्ञोपस्करान्सर्वाटमायवेद्वाद्वाणाळवम् । पदयेदिमानस्पधनोऽपि अचया समरेन्मनुष्वैरपि दीवमानम् । शृणोति सचयाऽय मर्ति वरोति निटरसमयः सोऽपि दिवं प्रयाति ॥

दुःस्वप्रं शमनगुपैति पट्ट्यमाने शैष्टेन्द्रे भवभयभेदने मनुष्यः । यः कुर्यातिकमु मुनिपुद्गवेह सम्यक् सन्नात्मा सक्छिमिरीन्द्रसंपदानम् ॥

सञ्चातमा प्रसन्नवित्ताः । धत्र सम्बद्धारितद्ययानन्तरं यस्यरातावयि-ष्मवित्युक्षोकनिवासानन्तरसाद्वीपाविषयवित्तरमनायुक्तत्रयोविरुष्टनायु-रारोग्यकासः, इति दानवाक्यम् ।

· अथ शिखरदानम् ।

विध्युधमीचरे-

श्रण राजनप्रवस्थामि शिखराणां यथाकमम्। दानं देवं यथा येन सन्द्रमुख समारानम् ॥ मापशुक्रवृतीबायां मार्गशीर्षस्य वा प्रनः । त्ततीया बाड्य वैद्याले शुरुा या रोहिणीयुता ॥ प्रीप्तपद्यां सूतीयायां विश्लेषेण स मार्गय। गडेसवखळवणधान्यकाचाचित्रकेताः ॥ पर्जरतम्बुल्द्राक्षाधौदैर्मलवजेन च । क्छमेनोहरे रम्येः शिखराणि प्रदापयेत् ॥ े तैपामन्यतमं वद्याद्यथाश्रद्धं विधानतः। आस्मप्रमाणं सुर्वीत पादेशस्यशिकं शुभस् ।) अवि गीमयशिसायामिल्लवत्राणि संस्तरेत् । रातः कृषीत शिरारे गीरीरथानमञ्जनमा ॥ द्विहरतम् कं पर्यव्यं हरवमात्रं शिर्रवया । भित्तिरिश्चदक्षैः कार्या वेष्ट्येट्रकनाससा ॥ शानद्रव्येण सन्मध्यं पूर्वेज्युनन्दन । इस्यन्त्रफदे गौरीं बस्योपरि निवेशयेत् ॥ चतुर्मुनां देममधी पूजवेल्ड्लमेन तु । गौरीलक्षणमुक्तं देवीपुराणे--

गौरी हातुन्दुवर्णामां हार्वरीहानिवेविवाम् । ष्टत्तपदासमां रम्यां साञ्चसूत्रकमण्डलम् ॥ परपोधनरूपाटकां साञ्चसूत्रकण्डलम् । परपोधनरूपाटकां सामस्यक्तिमाम् । परदोधनीतं बस्तामथकरामित्यर्थः। वेष्टवेत्सूक्षवद्यीण देवी शिखरमेव च । मप्रार्ट्स पुत्रयेहौरी मन्त्रेरेतेस्तु मक्तितः ॥ समी अवान्ये पादौ तु वामिन्ये जातुनी नमः। बाइदेवी तथा चीरू नामि चैव जगतिये ॥ आनन्दायै तु हृद्यं नन्दायै पूजवेटलनौ । सुभद्राये सुखं पूजं छल्तियाये नमः शिरः ॥ एवंपूज्य महादेवीं शिखरानिमान्त्रयेन । रामाध्रिवासः पार्वत्याः शियर त्वं सुरैर्ष्ट्रतः ॥ सदा विवास: सर्वेषां तस्मान्मां त्राहि भक्तित: । त्तरमानमां पाहि भगवेंस्त्वं गौरीशियनरः सदा ॥ एवपामन्त्र्य शिलाई त्रतीयायां स्टम्पदः। त्रतः स्नात्वा प्रभाते तु दद्यानमन्त्रेण मक्तितः।। यामारवं सर्वभूतानामुपरिष्टादवरिथतः। त्तरमान्त्रां पाहि भगवेंस्वं गौरीशियरः सदा ॥ प्रमामन्त्र्य शिखरं तृतीयायां दद्मतः। यस्मान्त्रं सर्वेभवानामुपरिष्टादवस्थितः ॥ सारिहरूकः प्रीयतां से तब दानेन सर्वता । मर्दमार्ग चतुर्ध वा पश्चमं चापि वै गुरो: ॥ द्धाच्छेपं तु बन्धुनां शिशनां स्वजनस्य च । अनुजीविनां च भूतानां दुर्गतानां च धर्मतः॥ एवं दत्तवा तु शिखरं गौर्या भुजीत बाग्यतः। संगुत्तकेशः संप्राथ्य श्रीरं घृतमथापि वा ॥ विधिनाऽनेन यो दद्याहीयाः शिरतरमत्त्रसम् । स वसेप्रवने देन्याः कस्पकोटिशतत्रयम् ॥ पुण्यक्षयादिहायाची जायते पृथिवीपतिः। मनेन विभिना देयं विधिहीनं न कारयेत्।। विधिद्दीनं कृतं सर्वे तन्न दातुः फलं भवेत् । इति शिखरदानविधिः ।

नय प्रवोतः । थनमानो माघगुङनुषीयागुक्तकाले पूर्वाह्ने गणेशपूना-स्वतिवायनमानुकावसीद्धीरापूनाना-दीधाद्धानि करिष्यमाणीशसर- दानाङ्गुतया करियो, इतिसङ्कल्य वानि छत्या मासक्यायुक्तवा द्योभीपद्मीत्याभावपूर्वक्रवर्षको दिश्यत्ययानि चिछ्यमी रीभवनित्वासामन्तरप्रिथिनिपत्यकामः स्रो गुडितिर्द्धारतम्बद्धं करियो, इतिसङ्कर्य तम्
स्र्यांकप्रभावेष्य सम्बन्धित्यमानार्थे छत्या संपूच्य विद्याया मृमाविष्ठप्रशाणि
संस्तीर्थे मृखे द्विद्दस्तियातार्युर्यविद्धायानित्यतारं पद्धार्का राज्यत्वे
राज्यमाणाः प्रादेशाणिकसुणिवृद्धस्यां सुसूकं छत्या तद्यस्यन्तरे
राज्यक्या संवेद्ध्य छात्रिवेश्वर्यणापूर्यापरीष्ठपत्रक्षरमात्यीर्थे तद्यस्वीमापिकसोपरि स्वर्णेन्दुवर्णाभां पन्त्रमी छिपशासनामस्वयुक्तम्बद्धार्था
स्वाम्यवर्था गीरी हैभी सविद्यार्था पुर्माविष्ठणाविष्ठ छङ्कुमादिना
संवृत्य , भवान्ये नमः पानी पुन्तयागि । कामिन्द्र्ये जानुत्ती ।
कामवृत्ये जल्ल । काणिकृष्ये जानिम् । आनन्दाये इद्यम् ।
कन्त्रये जल्ल । काणिकृष्ये जानिम् । अनन्दाये इद्यम् ।
कन्त्रये स्ता । सुभदाये छुप्यम् । छिल्वाये रिश्वर संवृत्य
पुप्पालाकिमादाय विश्वरं तिग्रविष्ठणं क्रास्त्र—

यस्मानिशसः पार्वत्याः शिखर त्वं सुरैर्द्धेतः । तस्मान्त्रां पाहि भगवंसवं गौरीशिखरः सदा ॥

अय भद्रनिधिदानम् ।

बहिपुराणे--

पुण्यां विधि भाष्य तु यौर्णमासी तथोपरागे शक्तिसूर्वयोशं । पतुर्धुगादिष्ययनद्वये वा भनोधने प्रस्वपनेऽच विष्णी: ॥ सुर्योदयीसुन्यरमेक्टुम्मं हिरण्यमानेन ययास्वदासया।

भौदुःचरं ताम्रमयम् । हिरण्यमानेनान्तःप्रक्षेतःयर्भारादिमितसुवर्ण-रत्नादिना यथा कुम्भः पूर्णः स्यादित्यर्थः ।

नशार्रियानं च सुराजतं स्याद्धिरण्यमारेण तु पूरवैत्तन्। सद्द्वतीऽद्वेन तद्रथंती वा स्वशक्तितः स्वर्णपटेः शतेन ॥ तदक्षेमद्वेन स विचशचया परत्रयाद्धीमपि प्रसुर्यात् । वत्ताग्रमाण्डे कनकं निधाय सवस्रनीलोत्पलपद्मारागम् ॥

समुक्तवेद्वर्यसविद्वमं च तदाञतं पात्रमधोमुखं स्यात् । तत्राजतं पूर्वोक्तं पियानपात्रम् । एवं तु वं भद्रतिधि स विद्वान्छत्वा-सने प्रावरणोपयुक्ते । प्रावरणमुत्तरच्छदस्तेनोपयुक्ते सहिते । हशोत्तरे द्रेणचामराड्यं सपादुकोपानहच्छत्रयुक्तम् ।

शक्षीमवस्त्रोत्तमयुग्मयुक्तं संपूत्रयेग्मन्त्रवरेरथैतै: ॥ आही त पश्चाम्तमाप्य विष्णुं संस्नाप्य संसारहरं समर्थ्य । रुधेश्वरं पावक्रमेव हुत्वा आमन्त्रयेद्रद्रनिधि तसस्तम् ॥ श्रीकण्डकपृरसकुड्युमेन पश्चाक्षरं साम श्रियः प्रहिएय । ममस्तथीहारयुतं च पात्रे तदाजतेडप्येवमथार्चयेत्तम् ॥

मन्त्रः प्रयोगे वक्ष्यते । एवंपूज्य विधानेन तती विप्रमधाऽर्चयेत् । किरोटाङ्गदनिष्याम्यसुण्डलाङ्गुलिभूपणैः ॥

अलङ्कत्य हरि यहा पीवान्यरघरं ततः। पुत्रवेद्श्युतं ध्यात्वा मन्त्रेणानेन भक्तिमान् ॥

सन्त्रः प्रयोगे वक्ष्यते ।

पर्वपृत्य हरिं ध्यात्वा सं द्वितं विष्णुरूपिणम् । तती भद्रनिधि द्यान्मन्त्रेणानेन मातवः ।। स्वगोत्रोबारणेनादी विष्णोर्नाम महात्मनः। यवदर्भतिलैः सार्द्धमुद्कं संपरित्यजेत् ॥ पितृसन्तारणार्याय नित्यानन्द्वियृद्धये । सर्वाचौघविनाशाय विष्णोदीनं मया कृतम् ॥ ' सङ्ग्रेन सरलेन धातुत्रवयुतेन च । सर्थीमाग्वायुक्तेन सादर्शपादुकेन च ॥ सासनेन सच्छत्रेण चामरोपानहेन च ।

सदानन्दिक्षानेन प्रीयतां विष्णुरीश्वरः ।।
पश्चमार्यं तं दशाद्विजाय हरिरूपिणे ।
, गोदानिश्विता दशाद्वेमसंस्थां न कीतेयेत् ।।
प्रकीतितं कीटियुवायुतं क्लं प्रगोपितं करपगणेनं संज्ञायः।
,इतीदमाख्याय न कीतेयेसुधीर्मिधानमध्ये निहितं च यहवेत् ॥
प्रवेश्वतं स्थान्यगुनः इताला भवेश च स्थान्यरणं कदाशित् ।
प्रमाति विष्णोः पद्मध्ययं विक्वास्मकानन्दमर्थं स साक्षात् ॥
इति स्मृतिथिदानम् ॥

कथ प्रयोग: १ वृष्टोंके काले वक्तमात्तिस्वय्याशृहिक्य सफ्लग्यक्षय-सर्वैिमृत्यारणानन्दिशृहित्त शियानमकानन्दमयान्यविश्वणुषद्भामिकामी भद्रितिधिदानमदं करियो, इतिसङ्करण भद्रतिथि खीमकक्षद्रयान्विद स्थागिद्या परितो दर्शकणामरगद्यकोषानच्छ्याशि चालाच पुरतो हरित्तरी स्थापिया संपूच्य प्रागुक्त देशै स्वगृह्यानुतारेणामिस्यापनादि कमे छत्या पृताक्तरिकरकोष्टास्यादिसंस्वया हुखा श्रीखण्डकुर्ह्जमक-पूरें प्रणवादि 'क्वे क्रेबे नमः ' इति वच्चाक्षरमन्त्रं निश्चिक्तमे पिधाने च छिरोस्या तेनेच अद्रनिधसुष्यार्थः संयूच्य गृहीतक्क्रमुष्याक्षक्रमेद्रनिधि प्रदक्षिणीकुळ-

खया समस्तामरसिद्धदक्षविद्याधरेन्द्रोरगक्षिभैह्य। गन्धवैविद्याधरदानवेन्द्रैयुंतं वृतं विश्वविद्यं नमस्ते ॥ सममसंसारकरी स्वमेव विभोः सवानन्दमभी च मागा। समस्तवस्याणवयःसमाजिद्दस्तिये भद्रनिधे नमस्ते॥

हृत्युपयाय पुरपाचकि मक्षिण नामकृतीयद्ध्यामावार्वे किरीडा-हृद्दिक्काम्यकृष्टकाङ्गुकिमूप्पणीतवासक्षन्तादिक्षिः संयुच्य सं विद्यु-हृदिकं स्थाना कुमुमणणी:—

भूदेबोऽसि निर्मो निर्स्य नित्यानन्दमयो हरे। हर मे दुष्टतं कर्मे छपावर नगोऽस्तु ते॥ भूदेव भगग्रहम्य अवभद्गकरेश्वर। मयमुदेकरो जिल्लोः प्रभविष्णो नगोऽस्तु ते॥

इति पुष्पा चल्निाऽम्यच्ये तुश्यवतिलज्ञलान्यादाय अगुकशन् र्यादं सकल्पापश्चमसक्लिपृसन्तार्णनित्यानन्दविष्टद्विशिवारमधान- न्द्रमथाव्ययदिष्णुपद्रप्राप्तिकामोऽक्षुपनोत्रायामुबदार्थणेऽमुक्कास्वाच्या-यिने इमं भद्रनिधि सरत्नपात्रजयात्मकं सञ्जीमान्यस्युग्ममादर्शपादुकी-पानच्छत्रासनीपकरणसहितं विष्णुरूषिणे तुम्यमहं संपद्दे न मम, इति द्यात । ततः सुवर्णं दक्षिणां दस्या विमान्संभीत्य भूयसी दक्षिणां दस्या यस्य स्मृत्या, प्रमादारकुर्वता कमें इत्युक्तवा कमें धरापैणं कुर्यात् , इति भद्रनिधिदानप्रयोगः।

अ्थानन्दनिधिदानम् ।

बहिपुराणे सगबद्धयो गरुडं अति— तस्मानिधानं शृणु सर्वदानतः प्रभावदं निस्यपलप्रदं च। देश्वर्यदं मोक्षदमक्षयं यद्वातुत्रयोज्ञृतमनेकरत्नम् ॥ कारयेत्कातिकान्ते वा माध्या वा माध्येऽपि वा । **अयने विपुवे बाऽपि मन्यादिपु युगादिपु ॥** चन्द्रसूर्योपरागे च खशास्त्रीहुम्बरं घटम् ।

भौदुम्बरं तास्त्रमयम् । विधानं राष्ट्रतं तद्वनमध्ये सौवर्णसुरस्कीत्।

सुवर्णमेद सौवर्णम ।

नानारत्नवरै. पूर्ण नानावसैर्मिरायृतम् । हैमरामतवाम्रोत्येः सरिचरिष पुरिवम् ॥

रिकं शीतिः।

नानानानाशतादूर्वमयुताद्पि शक्तितः । एकं नानापरं बहु प्रकारवाचि, परं महाराष्ट्रप्रसिद्धनाणक्वाथि । शक्त्या पलसङ्खेण शतेनाऽद्वेशतेन वा ।

तदर्शक्षेंन वा राजन्यलाखीनं न कारथेत् ॥ . कार्य विद्धि युवं देखा वित्तशाठ्यम्बुर्वेता ।

षक्तनाणकातिरिकं पलादूर्वे पलसहस्राऽवधि हास्त्या है। क्षिवेत्, इति मदनः।

राभतेनाऽयं वाश्रेण रत्नैकी वससंदृतम् । राजतेन विवानेन तांग्रेणावि घटेन च ॥ नानाधान्योपरि स्थाप्य क्ल्पोक्षरर्नयेत्पदै: । नानाधान्यान्यष्टादश धान्यानि । पदानि मन्त्राः । पौराणिकं प्रस्कृत्य स्वयं वा तद्भुशया ।

यौराणिको गुरुः । कतिहयोऽग्रिसाञ्चिये विष्णोरीशस्य चाण्डज ।

इमं समुश्ररेन्मन्त्रं छुदापाणिः प्रसन्नधीः ॥ सन्त्रः प्रयोगे तेयः ।

एवंपूज्य विधानेन निस्यानन्दनिधि सुधीः। समिद्धार्थकद्वाभिः सङ्गाक्षतचन्द्रनैः ॥

सिद्धार्थकादिभिरानःदमेवं संपूच्येतियोजना । तिललाजासुसंपूर्ण भूमायुदकपुरस्रजेन् ॥

मन्त्रेणानेन विधिवस्टस्पोफेन छगोत्तम । सन्त्रः प्रयोगे क्षेत्रः ।

यहाःश्रेयोऽभिवृद्धवर्थं मातापित्रोरनयात्मनः। पुराणन्यायमीमांसावेदवादिभ्य एव च ॥ पवमुरसुष्य छद्कं विषेभ्यः प्रतिपाद्येत् । संविभव्य यथाद्यासं न कश्चित्रपहानयेत् ॥ महादानमिर्द यश्माचस्मादेकोऽपि नाहेति । जधान्ये केचिदिच्छन्ति समस्तविधिपारगाः ॥ यहादानव्रतानां च सोऽप्येफोऽईति सहदे। पर्व यः कुरुते दानं नित्यानन्दनिधेः परम् ॥ परं पद्मवाझीति रासारेऽस्मिक्तरन्तरम् । दानानामप्यशेषाणामनन्तं पछवश्रते ॥ नित्यानन्द्विधानस्य प्रदानाद्पर्याभाक् ।

इत्यानन्दनिधिदानम् ।

मध प्रयोगः । तत्र यजमानः पूर्वेके काळे सुराविलयवज्ञलाजाः नादाय सरुदानपदी देशकालकीवैनान्ते निरन्तरपरमपदावाप्तिसकल-दानजन्यानन्तपळयोगानन्तरापवर्गप्राप्तिकामः वेशःपदाधिकरणासष्टद्रा-**४यकरणोत्तरस्यक्रमे**दोयसन्धितत्रेवायुगरालीननिजानुजीविसदितासिछ• गद्दीराभ्यायाप्तिपूर्वकनित्येशानपद्मास्यनन्तर्षल्याविधानलाश्रीकवै-याभरपद्रराज्यलाभीत्तराज्यवर्गेन्यावपद्रवामिद्रीर्घायुद्धाविन्छिन्नसन्तान-

क्ष्माः सर्वदात्मय सर्वसंपद्भिवद्धेत ।
वर्ष्वयासानसम्बद्धेष्ण आयुगा यदासा श्रिया ॥
नमस्तेऽनन्त्रस्यान सरानन्य सर्वोदय ।
स्त्रं मुख वे पुरुष्णेद स्पन्तरमा मा धनायुगा ॥
नमः प्रवानिध धनेश शतरात्र श्राह्म नैतरिश ।
हमं नपाऽपातृरित हर प्रभी नमी नमसे हर शहरेश ॥
नमः समीराय हुशाहनाय नमोऽस्तु राजाय सुनामधेय ।
नमः समीराय हुशाहनाय नमोऽस्तु राजाय सुनामधेय ॥
नमः समीराय हुशाहनाय नमोऽस्तु साविध शिव श्रियोषि ।
सरास्त्रामीतिहरीतः स्थिति पुष्टिश्च बुद्धिस्त्रित्रानिकतित्रीत ।
सरास्त्रामीतिहरीतः स्थिति पुष्टिश्च बुद्धिस्त्रित्रानिकतित्रीत ।
सर्वामप्रामीतिहरीतः स्थिति पुष्टिश्च वृद्धिस्त्रित्रानिकतित्रीत ।
सर्वामप्रामीतिहरीतः स्थिति पुष्टिश्च वृद्धस्त्रित्रानिकतित्री ।
सर्वामप्रमृतौऽति प्राप्तस्य विश्वस्य वस्त्राप्रगतिकति सद्धाः ।
नमो स्त्रः सीन्वयीनिध स्रिश्च नमोऽस्तु योगभीविनिध सद्धाः ।
नमो समः कान्तिनिधान इन्हो तेजीविध स्रंप्रणोतिहरीत मानी।।
नमः पश्चाय भश्चय नमस्ते स्वतिकाय व ।

नमः पद्माय अद्भाय नामस्त स्वास्तकाय च । नमः शद्भाय भाष्य मिष्प्रभूताय ते नमः ॥ नमो नन्दविवयोग नन्दावयोग ते नमः ॥ नमः कप्टकर्षाय क्ष्यावयोग ते नमः ॥ नमे नन्दप्रविद्याय नमो देसप्रियाय च ॥

नमो हिएण्यार्गाय नित्यानन्दाय ते नमः ॥ हत्युपरमाय पूनियत्म इत्ततिहरू।जयवास्तत्रज्ञान्यादाय अधे-त्यागुरुता—

बरोह् पुण्यकालेऽस्मिन्द्रिकदैवाग्निसन्निधौ । यदाःभ्रेयोऽभिष्टुद्धपर्यं मातापित्रोस्त्यात्मनः ॥ पुराणन्यायमीमांसायेव्यादिश्य एव च । समो विद्याविचायित्यो नालागोत्रेत्र्य एव च ॥ विप्रस्थाऽलेक्समेन्यो नित्वानन्द्रतिथि चरम् । अहं संप्रदर्दे ग्रेत्यो मानामाग्रहेतन च ॥ सत्यगरीत्यातार्थेण सरलेन सवाससा । स्रोयस्करण कुरसे व्यक्तिय्युद्धियात्मकः ॥ प्रोयवां तिथिदानेन श्रीयस्पुरागोऽच्युतः ।

हितमबेहद्वर्क सूची शिक्षा विशेष्यीऽसुकागुकागोकेन्योऽसुकानुकाम्मारेस्योऽसुवीदुक्वरं रोक्षणियास्मुद्वकीवसाग्राद्वकास्मारियुकामान्न-तिथि तिरन्वरेखादिमारिकामः इतिसक्तृत्तवस्य प्रकारिक्वयास्य कृदानवस्य हु वेधप्रवेदयादिसन्तानकामः १. रचुवन्त युक्तव्य प्रकारम् तंत्रवर्षे इति द्वामान् । पक्ती वा दवात् । वतः सुवर्ज दक्षिणां दश्या विभाग्ननं भोज्य भूषमी दक्षिणां दस्या, वाय खहराः इति प्रमादादिति चीनस्या विश्वास्य

अथ वेवतादानानि ।

तत्र साबद्दशावतारदानम् । विश्वामित्रः—

> दानानामुत्तमं दानं हैमं विष्णोः स्वरूपकृष् । त्तमारपुण्यार्थिना वैद्या हैमा बिष्णोः स्वरूपकाः ॥

ते च--

मस्याः कूर्मीऽध बाराहो मार्राधहोऽध वासनः । सभो समक्ष फुल्माक बौद्धः बल्की च ते दश । इति ॥ मस्यादिकारुपणि विश्वपनदाने दर्धिशानि । ययशायन प्रकृति सुकार्णेन विभानता ॥ समेन पोडरीनैव समान्येतानि कार्येत ।

पोडशेने मधानीतिमहाभूतपटारवे पोडशहाने, प्रादेशादहुखसां वायत्वर्यारमाणवः इति बद्यमाणपुक्तं तद्यमाणकानि मत्यादिस्य-काणि भवन्तीत्पर्यः ।

वित्तानुरूपतो रामन्तुस्पमादगदरिद्रयोः।

संपूर्य नामिसनीस्तु पुराम्यूपनिवेदनैः ॥

भित्तमः प्रणामान्ये निर्मेश्व अद्ध्या ततः ।

धाद्वय प्राक्षणान्यानन्यान्ये प्रश्चास्य यत्नवः ॥

धवदेव्यासने वर्षाम्यन्येनानुष्ठेपवेत् ॥

सुरान्धेः सुराग्नेशेव पृष्ठेनिष्यत्येव च ॥

धार्यात्रा वयवुर्धान महणे चन्द्रसूर्ययोः ।

धर्यने विगुवे चापि द्वादश्या तु विशेषवः ॥

धर्माया मर्क्य चारित्यात्र पितामदः ॥

प्राक्षान्या मर्क्य चारित्यात्र पितामदः ॥

प्राक्षानिक्णुस्पान्न अर्थेयेत विस्तस्यः ।

प्रकृष्ठे वेद्युर्वे वर्षेनेस्त्य वस्तर्येन् ॥

धार्वेक वेद्युर्वे वर्षेनेस्त्य वस्तर्येन् ॥

धार्वेक वृद्युर्वे वर्षेनेस्य वस्तर्येन् मानवः ।

भारत्वेत वृद्युर्वे वर्षेनेस्य वस्तर्येन् मानवः ।

दशनवारको राजनिवजोरीनमं स गच्छति ॥ महापावकसंसगोन्युच्यते तत्स्रणादिष । इति ॥ अयोत्पादि महापायसंसगीकदोपनिष्टस्यर्थे विष्णोर्दशाववारान्दास्यै इति सङ्करयानकारान्धिमानसंपृत्यः

> देवहवं मया वित्र फारितं काश्वनं शुभम्। तहहाण प्रदानेन पीयतां विश्वरूपपृक् ॥

एसद्बार्थ विप्रस्य हरते बीचं क्षिपेरस्वयम् ।

इतिमन्त्रमुख्या देशकाळासुक्या अभुस्योत्रायासुस्यामेणेऽसुस्वर्ण महापापसंसर्गकदोर्थानेषुत्तिसामानुत्यगर्व संग्वदे न मम इति एकैं समेनेसस्य देशात्। एकस्यै वा सर्वाणि। दानमनिद्यार्थसुयर्णे दक्षिणां च ।

इति दशावतारदानप्रयोगः।

अथ ब्रह्मनिष्णुस्द्र्यानम् । ब्रह्मण्डपुराणे शौनकादिभिः षृष्टेन रोभर्एपेणेन शृज्यन्तु सुनयः सर्वे इत्पासुस्त्रस्योत्तम्—

> त्रिमृविदानं दानानामुत्तमोत्त्रममुच्यते । विपुर्व त्वयने वाऽपि चन्द्रसूर्यमहेषु च ॥

तिस्यं च पथ्यद्वशां च जनमञ्जेषु समारमेत् ।
देवालये नदीनीरे पुण्येष्यायवनेषु च ॥
गृहे चा फारवेदानं चन्न मुश्लिः ह्यिममेवेत् ।
गृहे सा फारवेदानं चन्न मुश्लिः ह्यिममेवेत् ॥
गृहे सा फारवेदानं चन्न मुश्लिः ह्याप्तिकेदेष्णाः
गृहि गोगयेनोगलेपयेत् ॥
तम्रव्यः ।
पक्ष्मस्या द्विस्त्या चा सित्युणा दैर्घ्यः स्थला ॥
प्रिकेद्षण भवित्तर्यंष्ण्येमतन्तुलिमिज्ञवा ।
प्रक्रा च वित्युभौगवान्तुलिमिज्ञवा ।
प्रक्रा च वित्युभौगवान्तुलिमिज्ञवा ।
स्वा च वित्युभौगवान्तुलिमिज्ञवा ।
सित्राल्यस्यमुक्त स्थाण्यदाने ।

प्तस्मतिमालक्षणमुक्तं ब्रह्माण्डदाने । खानार्भपाद्याच्यमनीयवस्त्रैर्गन्यादिभिस्तानभिपुत्र्य भच्या ॥ प्रवक्षिणीकृत्य सपुष्पहस्तः प्रणम्य चौद्वास्य सतः प्रदद्यात् । प्रत्येकमेवं बहुमानपूर्वे संपूज्य दाखव्यमनुक्रमेण ॥ तथा जगस्त्रष्टिकरस्यमेव स्वमेव सर्वस्य वितामहीऽसि । स्वमेव कर्ता जगतां विद्वर्ता त्वमेव घाता जगतां विधाता ॥ स्वरसंप्रदानादनधो यथाऽहं स्वया च सायुज्यसुपैमि देव । तथा छुठ रवं दारणं प्रपन्ने सूचि प्रभो देववर प्रसीद ॥ रवया जगद्याप्तमिदं समस्तं श्वां विष्णुमेव प्रवद्गित सन्तः । स्वरस्थानि सर्वाणि बदनित देव स्वया पृतं विश्वमनन्तमूर्वे ॥ खरसंप्रदानादनची भवासि यथा जगत्कारणकारणेश । तथा कर रवं शर्ण प्रपन्ने मयि प्रभी देवनर प्रसीद ॥ स्वया सराजाममृतं विहाय हाछाहछं संहतमेव यस्मात् । तथाऽतुराणां त्रिपुरश्व दम्धमेकेपुणा लोकहितार्थमीश ॥ स्बद्धपदानादहमध्यहोपैदोपैविश्वको हि यथा भयेयम् । सया हुक स्त्रां झरणं प्रपन्ने भयि प्रभो देववर प्रसीद ॥ इत्येवमुत्तवा विधिवहदाति स याति सायुज्यमथ त्रिमृर्ते: । यः कारयेद्विप्रवराय तस्मै सुवर्णसंख्यागणिते हिरण्यम् ॥ दधाच वासीयुगमादरेण तथा कृते तहमते परू तत् ।

इति त्रिमूर्तिदानम् ।

अथ द्वादशादित्यदानम् । '

ब्रह्माण्डपुराणे—- },

श्णु चारद् भरं ते दानमादित्यसंक्षितम् । यद्योक्तं छोक्नगुरुषा विष्णुता ममविष्णुता ॥ वर्तुः पाषाद् पुष्यमाञ्जूष्यं श्रीकरं छुमम् । भारोग्यं सर्वमङ्कत्यं द्वारमाञ्जूष्यात्मात्मात् ॥ सर्वदान्तिकरं होतत्सर्यसिद्धिष्टश्रदम् । चन्नुत्यं सर्वरोगामं शुक्तिश्वरित्यदम् । विश्वरुत्ययं राष्ट्रमङ्गि चन्त्रस्येयोः । जन्मस्ये सौरवारे वा पश्चद्रयाक्तंनमे ॥

सीरवारे सूर्यसम्बधिनि वारे ।

सास्यां वाडव नक्षत्रे सावित्रञ्जवस्त्रीने । द्वास्त्रयं नहीतीर तडागे वरणाव्ये ॥ अन्येषु पुण्यदेशेषु देवदानं समाचरेत् ॥ अन्येषु पुण्यदेशेषु देवदानं समाचरेत् ॥ आरिण्यं वे द्वास्त्रस्तरेत्यां क्षिति यथा गोमयसंयुतािभः। सारिमन्त्रितेस्तन्दुञ्जुष्यकेत्र विन्तारयेद्वादश पङ्कािन ॥ प्रावेद्यमात्राणि हाभाित सामि सक्तिणकारण्यद्वदेषु त्रेषु । दिरण्यक्षाणि त्वेर्षियाय यथात्रमादुत्यरोऽपयाः॥ प्रसम्बद्धानामाद्वस्तर यय वेवास्त्रयुगान्मादिनितादरेण। संत्रीयकािमस्ययं व समेण प्रत्येक्ष्मुवाये तदीयनाम ॥ भाता च सिन्नश्च तताः प्रमेण मार्वेष्ट्यामा च तथार्यिया च। श्वास्त्र्य देवो चरुणस्त्रपाडसी भगो विवदसाव्यस्त्रप्रयाम् ॥ आदित्यनासा सविता वथाऽन्यस्त्यद्वार स्वरस्त्रयाद्वार स्वरस्त्रावाम् ॥ विद्युत्वया द्वापदासः स्वमन्त्रिताराव्येदेवदातिन्त्रभाव्यां॥।

पुरा देवऋपेर्दानं प्रीकं कमल्योनिना । षया मयाऽपि युष्माकं प्रोकं ग्रुनिवरोत्तमा: ॥ द्वादशादित्यप्रतिमालक्षणं प्रागुकं वेदिवन्यम् ।

इति द्वादशादित्यदानम्।

अथ चन्द्रादिस्यदानम् ।

विण्यवमीत्तरे भगवानुवाच--

क्षतः परं प्रबद्धवामि दातराजं नराशिप । यदत्त्वा त वली राजा शकराज्यमवाप ह 👭 शक्तथ बिलराज्ये त दत्त्वा पुनरवाप है। चन्द्रसूर्योपरागेषु भयने निपुरे तथा ॥ चन्द्रक्षये च हाद्ययां वैज्ञाख्यां प्रवजन्मति । कार्सिस्यां च महामाच्यां समस्यां च यथा तथा ॥ चन्द्रादित्यौ त दातव्यौ सूर्यः सौवण उच्यते । श्रदस्य रजनस्यैव मण्डलं हिमरोचियः॥ द्वादशाङ्गलरूचं तु चभवोर्षि मण्डलम् । धती पद्मसमादारी मध्ये चैव त कर्णिका ॥ भाहुं वास्त्रवये पात्रे घृतपूर्णे तु निक्षिपेत् । सोमं शक्ते धीरपूर्णे उपरि स्थापयेद्वधः ॥ सूर्य तु रक्तऋसीः सोमं शहैस्तवैव च । आदिस्याय सुगन्धं च धूपं चैव प्रदापयेत् ॥ सोमञ गुग्गुलुर्नेयो गन्धः गुरुस्तधैव च । कुर्कृतं तु पतझाय दीपं चैव घृतेन तु ॥ पर्वसंपूत्रम बल्नेन चन्द्रादिस्यौ प्रथरपृथक् । अपृतमूर्तये सीमं नमीऽन्तेनेव पृत्रयेत्॥ प्रप्रोतकायेति वै सूर्व नमोडन्तेन पुनः पुनः । षाद्वय प्राह्मणं भत्तया वेदवेदांद्वपारमम् ॥ **छड्डिन्त्रनं दरिहं च आहितापि त्यैव च ।** ,रकेन बाससाच्छाच हुइकुमेनाकुलेपयेतु ॥ संपूज्य पुरुषपूर्वेश द्विजं सूर्यमिनापरम् । रिष च चन्द्रविम्मं च घृतस्यं तु निरीक्ष्य वै ॥ समर्पयेदाद्याणाय मन्त्रेणानेन भूमिए:। रसमं च पुण्करं चैव वर्ण पुण्करमेव च ॥ श्रमी विद्या च साह्या तु यस्याह्नं विश्वरूपिण: । स वै दिवाकरी देव: भीयतां विश्व मा चिरम ॥

एवमुचार्य भानुं तु प्राह्मणाय निवेदयेम् । त क्षीर्फं देवदेवं हु द्विजराजं वर्वेव च ॥ अमृतमृतिं द्यीवांशं दृद्यमि ते द्विजीचम । गायत्या चैव सूर्यस्य अईणं जायते विभीः ॥ सोमं तरसमन्दीयं शुचिः शुद्धेन तेजसा । एवंचन्द्रं र्सि दत्त्वा वटी राज्यमवाप ह ॥ सर्व तेन त दर्च स्यायी द्याचन्द्रभारकरी । सर्वे तेन कृतं राजन्सर्वे तेन च संख्तम् ॥ सर्व दक्षिणया चेष्टं संसारे तु नरोत्तमैः। पुत्रवते सिद्धगन्थवें ऋषिभिर्देवदानवैः ॥ इति चन्द्रादित्यदान्त् ।

महाण्डपुराणे---

अथ लोकपालाएकदानम् । २००१ नारद भर्र से दाने सर्वायनाशनम् । सर्वमद्वलमायुष्यमारोग्यं शहरं हाभम् ॥ दानानामुखमं दानं सर्वतिद्धिकरं परम । करोति दानं नारी बा सायुष्यं ब्रह्मणो ब्रजेत । विपुबत्ययने राहुमहणे चन्द्रसूर्ययोः। भारतेषु पुण्यकालेषु जनमधेषु विशेषतः ॥ देवालये नदीवीरे गृहे वा दानमाचरेत्। पुण्यदेशेषु सर्वेषु पुराणीकेषु नारद ॥ चतुरसां समां भूमि दिला गोमयवारिका ! पट्करं चाष्टइस्तं वा दश द्वादश वा करान् ॥ प्राच्योदीच्यश्च कर्तव्या रेखाश्चतस्त्रकाः स्मृताः । नव कोशानि चत्र स्युः श्वेततन्दुलपुश्वकैः ॥ सिवैरष्टदर्र्युचानकमहान्विन्यसेच्छुभान् । राजतरूपमयं देवं जगनकर्तारमञ्जयम् ॥ तेया मध्यमकोष्टेषु कमलस्यं विवेशयेतु । इन्द्रमर्ति यमं चैव निर्भरति वरुणं तथा ॥ नार्युं सीमं वयेशानं प्रागादिषु ययात्रमम् ।

जातरुरमयान्देवान्द्री खायुषसंयुवान् ।। त्रिपटायोगसुयणांचु यद्याशकि विनिर्मितान् । यहाणोऽभिसुखान्तवाँन्वर्षेषु विनिषेशयेत् ॥ स्वर्णेमप् कमलस्यं ब्रह्माणं ब्रह्मलोकरालप्रविमाट्यूणं ब्रह्माण्डदाने इष्टरमा ।

प्रत्येकं वा समायेष्ट्य संगोद्ध्य कुत्रावारिणा । योऽसौ कारविवा विप्रस्वेवसेवतस्त्राचरेत् ॥ दानकाले तु संग्रीते पावा स्नात्वा कुर्तोदकः । प्रसन्निप्तवदनः परमेष्टिपुरोगानात् ॥ स्वनायमन्वैरिमित्वो नमोऽन्वेराराच्या गन्यादिभिरादरेण । विप्रांस्त्रयाऽभ्यच्ये यथाम्भेण संगीयतामन ममेति चोक्स्या ॥ योऽदा काराविता विप्रस्तानी द्वाव दाखिणान् । सुवर्णसंख्यागणित दिरूप्यं चेव वाससी ॥ प्रतिकृत्ये दानं लोकरावाहाद्वं मात्राव ॥ हिमान्यच्ह्रोतुमिच्छा ते तदिदं यद सांप्रतम् ॥ हिसान्यच्ह्रोतुमिच्छा ते तदिदं यद सांप्रतम् ॥

अथ नवग्रहदानम् । मह्माण्डवुराणे मह्मोवाच---

मह्दानकर्म कृदये सर्वसिद्धिकर परम् । सर्वसान्तिकरं नृजां सर्वपापप्रणाशनम् ॥ विषुक्त्यम्ने राहुमग्णे शक्षिस्पर्ययोः । जन्मश्रं सीरवारे वा पश्चरस्य वर्षेत्र च ॥ पृण्यकान्तु सर्वेषु पुण्यदेशे विशेषतः ॥ स्रादानं हु प्रतेक्ये भित्यं प्रेमोऽभिकाह्विण ॥ स्रामार्ग द्विसर्वं वा त्रिहस्तं वाड्य नारव । च्युरस्तं समां पूर्णि गोमयेनोपन्नेपर्येत् ॥ रेसाः प्राच्य वदीच्याच् चतस्रसास्त्रवण समाः । नवक्षेत्रेषु प्रमानि विन्यसेच्नेत्रवण्युन्तैः ॥ वादिस्यवन्द्रमा भौगो सुवसीवसिवार्यकर्मः ।

राहुः फेतुरिति प्रोक्ता प्रहा छोकसुरावहाः ॥ एपा हिरण्यरूपाणि कारयित्वा यथाविधि । त्रिनिदरेणायवा दुर्यादायाशक्त्या पृथरपृथक् ॥ हिरण्यरूपाणि हिरण्यप्रविमाः । वहश्यान्यत्रैव वद्यन्ते । वादित्यं मध्यमे कोष्ठे दक्षिणेऽद्वारकं न्यसेत् । षत्तरं तु गुरुं विद्याद्वुधमुत्तरपूर्वके ॥ भागवं पूर्वतो न्यस्य सोमं दक्षिणपूर्वके । पश्चिमेऽरमुतं न्यस्य राहुं दक्षिणपश्चिमे ॥ पश्चिमीत्तरतः चेनुः सक्षिवेश्यो यथाविधि । तदूर्णपुष्पतन्थाचैरचीयसश्खमन्त्रकैः ॥ षानं श्ट्रोऽथवा कुर्यात्स्त्री वा तत्र सु नारद । भूछेपनादि यस्कार्य सर्व विश्रेण कारयेत ॥ कामकाले तु संशासे कात्वा सुराविष्टी(वर्क: । प्रवती यत्रमानलु भौतवलः प्रस्त्रातीः ॥ कार्षेथित्वा स्वयं दचादहरूकर्मुख_{ाटमहान}। प्रतिक्रोके विभोजनी स्वस्थानन्य केन्द्रित् ॥ पद्यासनः पद्मकरो द्विषादुः पद्मुतिः, सातुत्र द्वादः । द्वित्रकरो छोक्गुरुः क्रिरीटी सर्षि प्रसादं विद्याद्व देवः॥ श्वेतान्यरः श्वेतविभूषणध्य श्वेतगृतिर्देण्ड हरी द्विबाहुः। चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः विरीटी श्रेयामि महैं। प्रद्वालु देव. ॥ क्षणान्यां स्कार्यः किरोदी चतुर्वे मुस्ति। भरामुकः शक्तिसम्ब भूति सदा स्वित् । इत्यः भ्रतान्यः ॥ भीवान्यरः भीववयुः विरोदी चतुर्वे मुस्ति । इत्यः भ्रतान्यः ॥ भूगोसिपृम्सोसमुकः सदा नः सिद्याभृत्वे वर्षम् सुद्वाद्व द्वारः वियङ्ग विकाश्यामी रूपेणाऽयतिमी भूवि । सीम्यः सौम्यगुणोपेतः सदाऽख्त बरदो मम ॥ पीताग्यरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशान्तः ।

द्यावि दण्डं च कमण्डलुं च वयाऽऋतूनं वरदोऽस्तु महाम् ॥ सुराणां च सुनीना च गुरु कनकसिनाः । श्रुद्धिराजा त्रिटोक्स स मो रक्षतु मानपविः ॥

श्वेताम्बेरः श्वेतवपुः फिरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः । तथाक्षरात्रं च कमण्डलुं च जर्ग च निभद्वरदोऽस्तु महाम् ॥ होमकृत्द्रमृणालाभी दैत्यानां भरमी गुरुः । सर्वशास्त्रास्त्रका च मार्गको बरदोऽस्त सः ॥ नीलरातिः ग्रलगरः किरोटी गृष्टस्थितसासकरो धतुष्मान् । चतुर्भे जें: सूर्येस्तः प्रशान्तः स चाऽस्तु महां वरमन्दगामी ॥ भीलाऽम्यरो मीलवपुः किरीटी करालक्तः करवालगुली । चतुर्भजञ्चर्मधरश्च राहः सिंहासनस्यो बरदोऽस्त महान् ॥ धून्नो द्विवाहुर्वरदो गदामृद्धवासनस्यो विक्रताननम । किरीटफेय्रविभूषिताङ्गः सदाऽस्तु मे केतुगयः प्रशान्तः ॥ इत्युक्त्वा दापगेत्सर्वानादित्यादीश्रव महाम् । प्रतियो बाउथ नारी वा यथीकं फलमामुबात ॥ -मध्यमं गुरवे दद्यादन्यस्मे वा प्रदापयेता । गुरुरात्र प्रजादिकती । मध्या दक्षिणा देया सुवर्ण वाससी ध्रमे I इत्याह भरात्रान्त्रहा। नारदाय महारमने ॥ तथाहमप्रवे दाने युष्माकं मुनिसत्तमाः।

इति महदानम्।

अथ वारदानानि ।

श्वान्त्रे— ब्वादियादिवु बारेषु सहिरण्यः सहैव तु । यः प्रयच्छित चन्धुर्गेश्तस्य कुप्यन्ति ने प्रहाः ।। द्यादादित्यभादित्ये सीमं सीमे कुमं कुमे । , व्यं नुयादीन्यम्ये तु राहुकेवुस्त्रेस्यरम् ॥ इति वारदासानि ।

अय श्लदानम् ।

श्वपुत्तणे— या निष्कृतिस्तु पाणना कृतानां प्रद्यया विना । यत्पाशुप्रतमाच्यातमस्त्रं देवस्य श्रृहिनः ॥ तस्य प्रदानादस्रकृतं वत्पापं संप्रणस्यति । षृष्णपत्ने चतुर्द्दयामष्टरचां वा सितेतरे ।। ' धुर्याद्वादस्तिरचेण त्रिश्चं छत्रणान्वितम् । निरकं चतुष्कः सीवर्णिकः, सीवर्णमात्रं पद्यभ्यादाद्विस्सत्त्रव्य-पणमृत्यो वेति पश्चत्रवं शत्वा शेवम् ।

युगान्तकरणं घोरमपविष्वंसनं परम् । नानारजोविरात्रिते चक्रे पहरमूपिते ॥

चर्क पोडरारं वरिभाषायामुच्यू । नामी निथाय संपूर्ण विखाना वाझनिर्मिवम् ॥ पात्रमाढकसंगानं चत्र शुक्तं न्यसेखुनः । हुर्यासेनैय मन्नेण वस्मात्युनामतुकमात् ॥

हुयास्तव मन्नण तस्मार्युमामगुरुमात् ॥ सेनैव शुरुप्य नमः इति मन्नेण । विरूपाक्षं च तस्पार्थे कमलोपरि पूजितम् । क्षणेरेभ्योऽपि मन्नेण पूजान्ते प्रणिपस्य च ॥

अधोरमन्त्रस्त छेड्डे---जघोरेभ्योऽथ यीरेभ्यो घीरघीरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ क्षिप्रं च शानिन तद्वरसंपूत्र्य मुनिपुङ्गवाः। प्रदक्षिणं तथी गत्ना इमं मन्त्रमुदीरयेन् ॥ भगवनभगनेत्रतः दक्षयङ्गप्रमदेन । सवायुधप्रदानेन पापं नश्यतु शङ्करः ॥ युगान्ते येन छोजाना त्यमन्तकविनाशनः (१) विदम्धं चलवपापैन तेन पापं व्यपोहय ॥ येन दग्य क्षणार्द्धेन त्रिपुरं सुरदुर्जयम् । तेन पाशुपताखेण मम पापं विनाशय ॥ यद्युद्धिकृत पापं मम वाक्स्यं च मान्सम् । तत्सर्व क्षयमभ्येतु तव शूल्प्रदान्तः ॥ इत्यामन्त्र्य तती दशाच्छुङं वस्मै द्विजनमने । व्यवस्य कुरुते पापमझानान्मानवी यतः ॥ वर्षे वर्षे वतो दृषाचस्य वस्यापनुचये । इति श्ख्दानम् ।

अवात्मपविकृतिदानम् ।

भविष्योत्तरे—

दानकांतः सदा वस्य इत्युक्ता-

हैती प्रतिकृति मन्यां कार्ययत्वातमनी नृप । अभीष्टवाहनगवामिष्टाङङ्कारभूपिवाम् ॥ अभीष्टलोकसङ्गितां सर्वोपस्करसंयवाम् ।

मभीष्टलोकः वियवनः।

नेत्रपट्टपरीवसैन्द्रप्रदिवां स्विवसूचिवाम् । इन्हुक्सेनाञ्चलियाङ्गी कर्षूरागुरुतासिवाम् ॥ स्वी धा द्रयाञ्च स्वयत् शयितां कारपेरस्ययम् । स्विध्यत्मं किरिवाचरसर्वं गार्येको न्यसेत् ॥ व्यकारसरं स्त्रीणां गुरुपाणां च यत्रवेत् ॥ तत्सर्वं स्थायरेरागर्वे स्वयं संचित्त्य चैवसि ॥ परस्तर्वं स्थायरेरागर्वे स्वयं संचित्त्य चैवसि ॥ परस्तर्वं सेश्वयरेरागर्वे स्वयं संचित्त्य चैवसि ॥

कार्यक गण्यका एक रवाण ।वयावयत्। सर्वेत्यदि सामञ्जतक्षेपर्यत्तं सुरसाहित्येतः स्वर्गादीष्टभोगोत्तरः स्मनीष्टवन्यकावियोगकाम आसम्बन्धितहानं करिक्ये, वित सङ्कल्य-

पुत्रियत्वा छोकपाछान्यहान्देशी विनायकम् ।

देवी दुर्गो ।

ततः शुक्राम्यरः काल्या गृहीतव्युमाश्वतिः । इमसुगारदेकमन्त्रं विसस्य पुरतः स्थितः ॥ कासमनः प्रविधा येथः क्षिपकरणेश्वतः ॥ स्यादनसागुक्ता तत्र विश्व निवेदितः ॥ काल्या शम्युः स्थितः शोदिः स्यादसमाग्रेशैतः ॥ तास्मादासमञ्जानेत सम पासमा असीद्व ॥

इत्युक्त्या गातपञ्जादि चोष्टिच्य पूर्वेक साम इत्यादिकाम इत्यत्यं सङ्क्ष्यसम्पर्कतः इसामातम्यतिमां सोषस्करामसुक्त्योथेऽमुक्तोगाय दुरुपमहं संग्रदे ।

इत्युचार्य वती द्वादाक्षणाय युचिष्ठिर । प्राक्षणश्चाय मृह्माति कोऽदादिति च कीर्तवेम् ॥ तवः प्रदक्षिणीहत्य प्रणिपत्य विसर्जयेत् । विभिनाऽनेन राजेन्द्र दानमेत्रज्ञयच्छति ॥

यः प्रमानय या नारी रृष्णु तत्फळप्रापुयात् ।
सामं वरेत्रातं भव्यं सवेठोकः सुरेकृतः ॥

समोधफलत्तेन चामोधफळमाग्ययं स्थम् ॥

यत्रैवोत्त्यते जन्तः प्राप्तः फर्मस्ययं स्थम् ॥

सत्रैन सर्वेद्वामानां फलमाग्यायते तृष ।

इष्टनस्युननेः सार्द्धः न वियोगं कराचन ॥

प्राप्तीति पुरुषो राजन्यर्गमानन्त्यमस्तुते । इति ॥

इत्यातमप्रतिमादानम् । अय धनदम्दिदानम् ।

वायवीये---

वाय---वृतिद्रो जायते मत्यों वानविधं करोति यः। ऐयर्य जायते येन कमणा तच्छृणुष्य से॥

पलाद्वेन तर्द्वेन तर्द्वेनाऽथवा पुनः । पहेन वा तर्द्वेन वर्द्धार्द्धेन वा , इति कवित्याठः । तर्द्वेनाऽथव। प्रमिति च कवित् ।

भनदस्य प्रतिरुति छुयोत्स्वर्णमयी शुभाम् ।

द्विमुक्तां बाहनोपेतां नयनानन्दकारिणीम् ॥ , भनदरूपं तः—

हारमापिहनेनं च गदिनं पीतविमहम् । पुणकस्यं धनाष्यक्षं च्यापेच्छित्रसस्यं सद्य ॥ इत्यादिनोक्षम् ।

रामुष्यानिषिक्यां च शुक्तं तत्यार्थयोद्वेयोः । श्वेतवरूपा संशेष्टच वन्दुलोपरि विन्यसेत् ॥ तन्दुलानां परीमाणं सनेद्दोणवयुष्टमा । तप्दु वा वन्द्वं वा विदयाळां न फारवेत् ॥ श्वेतमास्पेतत्पागन्यस्युटिय्य प्रयुचवेत् ।

षाप्रेत्यां दिशि होमध्य समिदाज्यतिकैमेरेत् ॥ मन्त्रो राजाभिराजायेत्येप योज्यः स्वलिद्वकैः । व्याहृत्या तिल्होमध्य क्तैत्र्यो धनकाद्विभिः ॥

भागार्थः सर्वज्ञासङ्गो वितीतः सर्वसंप्रतः । महाकुलप्रसूत्य धर्मज्ञः सत्यवाक्छिचः ॥ 'कारयेदचेनं तेन धनदस्याविमधितः। रोहेवरपेन मन्त्रेण स च फामश्रारी भवेत् ॥ तस्मै होमं कतवते प्रदश्यत्प्रतिमां तु वाम् । मन्त्रणानेन विधितवाङ्गुलस्तु उदङ्गुराः ॥

मध्यः प्रयोगे क्षेत्रः ।

एवं शुरेरदानं यः करोति विधिपूर्वकम् । धनदेन समो मार्थस्वरक्षणादेव आयते ॥

कथ प्रयोगः । सार्द्धमापद्वयाधिकां पश्चाधन्मापायविद्ववेरसृति पुल्पकविमानस्थां पार्श्वयोः पदाशद्भाकारयुवां कृत्वाडघेत्यादि यथै-ष्ट्रधनकामोऽहं अनदमुर्तिदानं करिच्ये इति सङ्कल्य श्रेतनखां मृति यथाशकि पकद्विचतुर्राणतन्तुलराज्ञौ निशाय संपूज्य वदामेय्यामसि संस्थाच्य समिदाग्यचन्भिः प्रत्येकमष्टाष्टाविशस्याविसंख्यया राजा-धिराजाय इतिमन्त्रेण प्याद्वतिभिध तिहेर्ट्खा आचार्येण धनद-पुत्रां कार्यिस्या-उत्तराशापते देव छवेर नरवाहन ।

पद्मश्रहिषीमां त्वं पति: वीकण्ठवस्मः॥ वानाचेन यथा प्राप्तं दारियं सम दःखरम् । वत्सर्वमाध्यक्षानेन पापमाध्य विनादाय ॥ इतिमन्त्रमुक्त्वाऽरोत्वादि इसी धनदमूर्वि दारिह्यनाशकामोऽमुक-

गोजायामुकशमीणे कुम्यमहं संबददे न सम इति दस्या, देपद्रव्यकृतीयं चतुर्व बांडा सुबर्ण दक्षिणां दथात् । इति धनदमृतिदानम् ।

थव शालग्रामदानम्।

शालमामशिलाचकं यो दशादानमुच्चम् । भूचकं तेन दत्तं स्थालाशैलवनकाननम् ॥

इतिपादो बालमामदानम् । सशैलवनभूचनदानंपलकाम इति दानमा-वयम् । मन्त्रस्त--

महाकाशनिवासेन च हारीरपशीभिवग् । **जस्य देवस्य दानेन मम सन्त मनोरथाः । इति ।।**

अय फालपुरुपदानम् ।

भविष्योत्तरे--कान्यो दानविधिः पाये कियमाणो ययात्तपम् ।
फुटाय मुनिक्षः प्रोको विषयोतो मयाय च ॥
देवं निष्कृदतं पाये दानेषु विधिकताः
म्राम्यास्य नहर्तेन प्रदेशनाः ।

द्वा तिरुक्तत पान वान्यु ।वान्यपनः । मध्यमत् तद्वेत तद्वेतातरः स्टतः ॥ एवं यूद्ये १४६ण्डे च धेनोः कृष्णानिनस्य च । अत्तरुक्तराऽपि सन्तरोऽयं पश्वसीवर्णिको विधिः ॥ अतोऽप्यत्येन यो द्यान्महादानं नराधिप ।

प्रतिगृहाति वा तस्य दुःराशोकावदं भवेत् ॥ पृक्षो महादानेषु कत्पृक्ष्यः । रयो हिरण्यात्रस्यः । अण्डं नद्गाण्डम् ।

घेतुः कामधेतुः।

पुण्यं हिनमयासाय भूमिमागे समे हासे । चतुर्देश्या चतुर्ध्यां वा बिष्ट्यां वा पाण्डुनन्तन ॥ पुनान्ह्रण्याभिने कार्यो शेष्यद्वनः सुवर्णदृद्धः । स्द्वोत्यवक्षो दीर्घो अपाक्षुत्रकृषकः ॥ रचान्यस्यः सम्बो शहुमाशाबिन्यूरियः । वीक्ष्णाविद्यनीनन्थेन विकारिकस्त्रीतदः ॥

वाङ्गासपुत्राः असिपुत्री छुरिका ।

सद्भा हुएस्डा । उपास्तुगरुकाङ्किः कृष्णकृत्रदूष्पर्यागः । पृद्दीदमासिण्डस्थ वासे कृत्तुले तथा ॥ पर्वदिशं पुगान्छता गृद्दीत्रहुपुपाञ्चलिः । यत्तमानः प्रसन्नात्मा इसं सन्त्रसुद्दीरयेत् ॥ संपूर्व गन्धरुतुरीरवेदां विनिवेदा च ।

सर्वे फाट्यसे यस्मात्फाट तं तेन चीचयसे ॥ मद्राविष्मुशिवादीमां त्वमसाध्यो हि सुन्नत । पूजितस्तं मया भचया पार्थिवत्र तथा सुराम् ॥ यदुद्धस्ते तव विमो तत्त्वरुण नमो नमः ।

एवं संपञ्चित्वा वं बाह्यलायः किरेन्य्रेकः भः माह्मणं प्रथमं पूज्य बाह्योभिर्मूण्णैस्तथा ।

शक्षिणी जित्तवो ददात्राणिपत्य विसर्भवेत ॥ दक्षिणां प्रामकां निष्कश्वादिक्षाम् ।

• धनेन विधिना यस्तु दानमेतत्वयच्छति ॥ नापमृत्युभयं तस्य त च व्याधिकृतं भवेत् । भवत्यव्यादृतैश्वयः सर्वश्राधाविवश्रितः ॥ देहान्ते सुर्थेभवनं भित्ता याचि परं पर्म् । इति ॥ पुण्यक्षयादिहास्येत्व राजा सवति धार्मिकः। सत्रयाजी श्रिया युक्तः पुत्रपौत्रसमन्वितः ॥

संपूज्य कालपुरूपं विधिवहिकाय दस्या शुभाशुभक्तलीदयहेतुभूतम् । रोगातुरे सकलक्षेपमये च देहे देही च मोद्मुपमच्छित तद्मभाषात् ॥ क्षय प्रयोगः । चतुष्यां च चतुर्वद्यां सद्राकरणे वा रौष्यद्वानं सुवर्णनेशं सङ्गोद्यतदक्षिणकरं मांसपिण्डयुतवामकरं अपाइसुमकुण्डलं रक्तस्रीवणं शहुमालावरं छुरिकया युवकटिदेशमतिदीर्धं छुण्णातिने काळपुरुपं निर्मायादीत्यादि 'अपसृत्युव्याधिसर्वेत्राधानिवारणाव्याहतैश्व-र्थमाप्तिमरणोत्तरपरपदतदुत्तरधर्मश्रीपुत्रपीत्रादिकतृत्वराज्यकामः काल-पुरुपदानं करिट्ये । इति सङ्कल्प्य फालपुरुषं विश्रं च संपूर्य पुष्पा-थालि ग्रहीत्वा-

सर्वे काळयसे यस्मारकाळसवं तेन चौच्यसे । प्रदाविण्युशिवादीनां त्यमसाध्योऽसि सुघव ॥ पुजितस्वं मया मचया पाधियम यथासुखम् । यद्युव्यते तव विभो शस्त्ररूप नमी नमः ॥

इति मन्त्रमुक्तवाऽग्रेत्यादि । अपमृत्युन्याधिसर्वनाधानिवारणस्यादि-काम, इत्यन्तं पूर्वोक्तं सङ्कल्पनाक्यं चौक्त्वा इमं कालपुरुपं सीपरकरम-मुकारोत्र (यामुकशर्मणे विमाय तुभ्यमदं संग्रददे च मन इति दस्या पथा-सुमणीवृष्येमानिष्यक्षतं दक्षिणां दत्त्वा मृयसीदानविषयोजनानि कुर्यात् । इति कालपुरुपरानविधिः।

अय काळचकदानम् । मृह्यक्तये---

> चकं रूप्यमयं कृत्वा मुक्तार्विभगवासमञ्जू । प्रत्या मुक्ति शरवन्द्रं रशियमध्यान्तरस्थितम् ॥

तप्रशतेकस्याणि गात्रेषु च समन्तवः । 🧍 एवं ध्यानवतस्तस्य स चन्द्रः कृष्णतां व्रजेत ॥ तनो रायत्रकारं प्रशासियत्वा विप्रप्रदक्षिणाम । तं गृहीत्वा बजेहरमदप्टलमपि बजेत् ॥ खयं बाडबतसद्वावपूर्णकायस्थितस्थितिः । कालचक्रमिदं नाम्ना दानं मृत्युविनाशनम् ॥ इमं ते राजतं चन्द्रं रिवमजालसमाऊलम् । अपमृत्यविनाशाय ददामीति समुधरन् ॥ सुवर्णदक्षिणायुक्तं ब्राह्मणाय निवेद्येत् । एवं कृते विनश्येत अपमृत्यं विनाशय ॥ सत्मादेवत्समादेयमपमृत्युभयान्वितैः । अरादिरोगमस्तैर्वा महापत्पतित्तैर्वि ॥ तती गृह्योक्तविधिना स्थापयेज्ञातवेदसम् । जुहुयारकालनामा तु शतमष्टोचरं विलै: ॥ सत्तु भो प्रयेद्धत्त्वा विप्रान्द्वादशसद्वयया । स्वयमधारस्वणं भुश्तीत सहदेव तु ॥ एवंद्भते नरो नूनं चिरं जीवेश संशयः।

प्तरुत नता नून । पर आवश्व सञ्चयः। स्था प्रयोगः। श्रदेशवादि 'श्रपश्युनिवारणकान्नः काळवश्रदानं इत्यि हिस्त्य वादितो रूप्यकृतं चन्त्राक्तरसरीकग्रुकामाळा-सम्बारिमयुर्व काळवर्भ वित्रं च संपुग्य--

द्दमं ते राजवं चन्द्रं रिमजालसमाउलम् । अपस्युविनाशाय ददामीति समुधरन् ॥

क्षरपुर्धाननाशान द्वामात समुचल् । इर्त् काल्वकं मुचादामयुग्नम्यूज्यिवारककामोऽमुक्नोगायाऽमुक्न हामेने दिगाय सुप्यमहं संप्रददे न मम , हवि दत्त्वा सुवर्ण दक्षिणो दत्त्वाऽप्ति संस्थाप्य काल्यकाय स्वाहेत्यहोत्तराहतं विलेट्ट्रीया हाद्दश विज्ञान्मोमधिया स्वयमशारमञ्जूलं स्टब्लकीत ।

इति कालचक्रदानविधिः।

अय यगदानम्।

रायुक्तये— छोड्पात्रे स्थितं कांस्थं तत्र पदां तु राजवप् । वस्मिन्काळेश्वरः स्वर्णाः पुरुषाकारवां शतः ॥ यहरूपं तः

र्ट्युत्रीतो समः कार्यो दण्डहस्वो विजानता ।

• रक्तद्रक्षपाशमस्त्रद्धः इति ।

वस्त्रारुष्ट्रारसंयुक्ती भयदास्त्राणि सर्वतः।

त्रिलोहाकारपुरुपैः कालदृतैश्च पार्श्वतः ॥

भयदाखाणि सहादीनि । जिलोहं कांस्यवाधियलारयम् । काल-वृतैर्वण्डहस्तैश्विभिः प्रस्पाकारैः ।

अस्या च माहिषे पृष्ठे वं दशाद्यममाञ्चन ।

कालपन्यमं ददामीखुधरन् । अप्रस्यां च चतुर्देश्यां करोति विभिवशु यः।

स मुख्यते धुवं नाशाहरवा पृतपटोत्तरम् ॥

ताशी सत्युः । घृतघट उत्तरी दक्षिणास्याने यस्य, इति दानविवेके । अपरे स ' दक्षिणा स्वर्णम् ' इति ।

क्षय प्रयोग: । छोहपात्रे कांस्यपात्रं तस्मिन्दीच्यपदां तस्मिन्सीवर्ण-महिषस्यं दुण्डवाहाकरं यसमलद्भतं सत्समीपे दैमानि प्रद्वाद्यकाणि शिलोह्घडितान्दण्डफरान्काल्युतांश्च संस्थाप्य विध्वादि स्मृत्वा ' अप-मृत्युनिवारणकामी यमदानं करिप्ये दित संकल्य सवाहनदूवासं धमं विप्रं य संपूज्यादीत्याद्यपमृत्युनिवारणकाम इसां पुत्रोपस्करसुताम-मुकडार्मणेऽमुकगोताय विमायाहं संबद्दे न मम, इति दस्ता दक्षिणां सवर्ण द्यात्।

इति यमदानम् ।

अथायप्करदानम् ।

वद्याग्रजे---

भूमी गौमविद्यायां दक्षिणोत्तरतः शुमाम् । निधाय तत्र पाणिश्यां पूर्णानि सिववन्दुकै: ॥ धरमारि तेषु दैयानि मण्डलानि निवेशयेन ।

मण्डलानि स्थलाकाराणि, सुम्मान् इत्यन्ये । सीवर्णाद्य सती देवानचैयेव यथानमम् । पूर्वमारवसुवं सत्र विष्टरश्रवसं सतः ॥

कृतिवाससमीशानं वज्रपाणि शतकतुम् । '
गत्यादिभिरताम्यच्ये दक्षिणोत्तरः कमातः ॥
प्रत्येकमेकं विक्रमो दवादारस्य मरिकतः ।
वं सं देवविक् च्यात्वा मन्त्रानेतातुर्दरियेत् ॥
संमीयता मे भगवातात्ममृतियुर्दरियम् ।
संमीयता मे भगवात्मानियरप्रवाशः ॥
संमीयतां मे भगवात्मानियरप्रवाशः ॥
संमीयतां मे भगवात्मानियरप्रवाशः ।
संमीयतां मे भगवात्म्यप्रवाशिः शतन्तुः ॥
पवताह पुरा नक्षा नास्वाय पुर्दर्पे ॥
प्रोक्तं स्वाऽपि सत्तं मुक्तकं स्निगुक्कः ॥
अत्र श्रक्षिकृतिविक्ता यथाशकि सुवनमवाः क्ष्मोः । जानुः

रक्षामी ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्रप्रतिमादानमहं करिक्ये इति संकल्य । इति आयुरकरदानम् ।

अथ संपत्करम् । ब्रह्माण्डे---

संपरकरं दाजमतीव पुष्यं यस्मिन्कते संपदोऽभ्येति सन्तुः ।

वया--

षायुष्करं रोगहरं छ पापविनादानं नादाकरं त्वपानाम् । स्वर्गापवर्गौ छुरुषुत्रशृद्धि त्रियं तथाच प्रददातीष्टसिद्धिम् ॥

तया---काठेषु सूर्वभहणादिकेषु वारेषु जन्मत्रिवयेषु कार्यम् । देशेषु देवायवनादिकेषु गृहेषु वा यत्र मनः प्रसन्नम् ॥

साता मातिकावित्रैः कुत्तीदैः शुचिर्भूता धौतवासाः भवत्वात्। सङ्कृत्य विद्रं वृद्धं गुर्वे च कार्ये च सस्याऽनुमतेन सर्वम् ॥ शर्वे क्वेवि शेषः।

गर्चेन सूर्मि शहता क्षकेन विशेषपिद्विशकमारद्वाम् । स्रोत वेदयाव्यपुरः समाः स्थः प्राध्यक विश्वेह च यदोपदिष्टम् ॥ नव कोष्ठानि सत्र स्युत्तेषु पूर्णित वण्डक्रैः । निषावन्यानि पात्राणि सासोसिससिवेद्वर च ॥ , पात्राणि बुस्भान् ।

परस्याऽर्यानित्रनिष्कार्द्धं यथाशक्ति विनिर्मितान् ।

निष्कोऽत्र सुवर्णप्।

दिह्गोचरतो देवाशावरूपस्याध्यसेत् । पार्यान्त्यकोष्ठात्रितये सु विद्रां वया च देवं वर्का च सोमम् ॥ चतुर्धुनं मध्यमकोष्ठकेषु जगत्यति विष्णुमुनापति च । विवाकरं कृत्रहणं च यहि सेवृत्य सर्वान्विषवरक्रमेण ॥

भित्रलक्षणं तु---

पद्मार्गस्ताः कार्यो भित्रः कम्लसंस्यितः । भाजातुलस्यनालान्यविकयास्योजदकप्रसः ॥

वरुणादिरूपमुक्तं श्रह्माण्डदाने ।

अध्यच्ये विद्यानि गत्नवादीः वृथक्य वृत्तव्यस्तुक्रमेण । संप्रीयतां सेड्यांस्टेबस्नवा ततो हि दृगास्तोद्दर्भ पृषेत्र ।) एकस्य नैके च हिरणस्य प्रमाणपूर्व परिणीय वर्तान् । पात्राणि वासः परिधाय येव सवन्द्रत्व हिरण्यं च एक्स ।। क्यांसिटिसिंह क्यते च सर्वामायुष्यमारोयसुरीति चात्रम् १। क्यांचरेष्ट्र द्वारवे ग्रुवर्ण बार्गपुर्या दानसभं च दृशात् ॥ विदेस्तवा वान्येस्टास्यगान्यं तत्री दृशाहिक्षणां वानकेस्यः।

बय प्रयोग: । प्रावसिकङ्शियांवेद्वने काल्याऽवेद्यारि ' संवरावु-रारीगंवपानतास्त्रवादिक्रकृतिक्रशिक्षामेशेक्षारिक्षामेशे विकादिवादिक मातानं करियो 'शी संकर्ण गुणं एत्वा तेनासागे विकादवां चारुक्तां धुवं गोमयेनाठिच्य तत्र प्रामायनाङ्काक्ष उद्यागवाङ्माक्षा छेता विरित्तानाच्या नेष्ठ सुर्गात्रवाद्याचे पञ्चाक्षांक्षा छनाः प्रतिभा-स्थागवेद्युनयेच । नत्र पश्चिमावृद्धी चल्यसंत्वानिक्षा छनाः प्रतिभा-स्थागवेद्युनयेच । नत्र पश्चिमावृद्धी चल्यसंत्वानिक्षा इत्या प्रतिभा-स्थागवेद्युनयेच । नत्र पश्चिमावृद्धी चल्यसंत्वानिक्षा इत्या प्रतिभा-स्थागवेद्युनयेच । नत्र पश्चिमावृद्धी चल्यसंत्वानिक्षा व्यवस्थानिक्षा विकाद प्रतिभान्तिक्षानां विकादिक्षा विकादिक्य विकादिक्षा विकादिक्य विकादिक्य विकादिक्य विकादिक्य विकादिक्य विकादिक् दानपगृशः

प्रीयतामिति वरुणादिप्रतिमां गुरवे च देयद्रव्यक्षमं सुत्रणे वरू-युगं च द्यात्।

इति संपत्रस्दानम् ।

अथ कृष्णाजिनम् ।

सोर-कृष्णाधिनं च महिष्में मेपीं च दश घेनतः । श्रद्धालोकप्रशायीनि बुलापुरुष एव च ॥

वम:--गोभृहिरण्यसंयुक्तं मार्गेमेकं ददावि वः इ

सर्वेदुष्ठतकर्मापि सायुक्यं महाणी वर्मन् ॥ भरीचिः—

ह्यणाजिनोभयमुर्यी यो ददादादितामये । सप्तजन्मरूतं पापं चत्र्यणादेव नश्यति ॥ ह्यणाजिनसमं दानं न चारित सुवनप्रये ।

प्रतिप्रहोऽपि पापीयानिति वेदविदो विदुः ॥

मात्से— वैद्यापी पीर्णमांधी च श्रह्मं इशिस्त्येयोः । पीर्णमांसी सु या माये आपादी कार्तिकी तथा ॥ चत्तरायणं द्वादशी वा तस्यो दर्श महापळ्या । आहितामिद्विजी यञ्च वदेशं क्स्य पार्धिय ॥ यथा येन विज्ञानेन तन्से निगदतः स्थ्यू ।

जसरावण द्वारवा वा तस्या एक सहस्तक्य ।

गोविकी होने यह वहिये तस्य वाधिय ।

यधा येन विजानेन तन्से निगम्बर श्रृणु ।
गोविकोणिंदो तु हुवी देहे नत्तिय ।।
श्राद्यंक समासायि शोधनं वस्त्रपादिकम् ।
यत्ते स्वरुद्धं च स्वरुद्धन्तं वसेव च ।
सार्क्युकं वीकिनेयुकं विकर्ण्यंत्रं तसेव च ।
सार्क्युकं वीकिनेयुकं विकर्ण्यंत्रं वसेव च ।
सार्क्युकं वीकिनेयुकं विकर्ण्यंत्रं वसेव च ।
सार्क्युकं वीकिनेयुकं विकर्ण्यंत्रं वसेव च ।
सार्क्युकं वीकिनेयुकं विकर्ण्यंत्रं वस्तुव्यंत्र्यः ।
सुवर्णनामं सद्ध्यंत्रस्थाया सार्व्यायः

कांस्यपात्राणि पत्नारि दिशु द्यारायाहमम्।।

मृष्यवेषु च पात्रेषु पृष्टीदेषु क्रमेण हु। गृतं श्रीरं द्वि श्रीरमेवं द्वाद्यवाविधि ॥

सरत्नानि फांस्यपाञाणि चतुर्दिश्च स्यापयेत् । मृण्मयानि पाञाणि

प गृतश्रीरद्विमधुपूर्णानि पूर्वादिदिख स्याप्यानि । धारपकार सथा शासाः समर्ण सम्भगेत च ।

पाणीपस्थानकं कृतवा गुमनिसी निवेशयेत् ॥ दामदेशाद्वाही उप समीपे स्थानं वस्येति कुम्मविशेषणम् ।

जीर्णवसीण पीतेन सर्वाद्वानि च मार्जवेत् ॥

भानमयानि पात्राणि पादेप्वस्यं तु दावयेत् ।

शातुविशेषाः पात्रमध्यायानि त्रव्याणि च मन्त्रतः प्रयोगे बीच्यानि । तिलपूर्ण तवः छत्वा वामपादे निवेशयेत्।

मधुपूर्णे हु सरक्रत्या पादे वे दक्षिणे न्यसेत् ॥ पतःपात्रद्वयं पश्चिमपादयोः स्थाप्यम् ।

ऊर्थ्यपादे स्थिमे फार्चे वामस्य रमवस्य च ॥

कर्ज्यादे बामपादयोः । एकवचनमनिवक्षितम् । वाप्रपात्रं तिस्पूर्ण दक्षिणवादे । रजतपात्रं मधुकूर्ण सञ्चवाद इति व्यवस्था । प्रयोगे वश्य-माणमन्त्रात् । ' सुवर्णपात्रमक्षतपूर्ण मध्ये स्थापवेत् ' इति देगात्रिः ।

हेममुक्ताविहुमं च दाहिमं वीजपुरकम् । प्रशस्तपन्ने अवणे खुरे शृङ्काटकानि च ॥ प्रबंद्धाया थयोचेन सर्वशाकफलानि च । सरप्रतिमहविद्विद्वानाहितामिद्विजीत्तमः ॥ स्तावी बस्रयुमच्छत्रः स्वशक्तया चाडप्यस्रद्वतः । प्रतिमहस्य संस्थीताः पुरुखदेशे महीपते ॥ **प्**सुवर्णनाभिकं दद्याव्यीयतां युपमध्यत्र: ।

भय प्रयोगः । पूर्वोक्तकाले गोमयेनोपलिने देवी व्यविलोमनिर्मितं वस्यतं बदुपरि सर्राष्ट्रं सुरं वहिलांम प्रामीवं सूच्याजितमास्तीर्य सुवर्णश्रद्धं रूप्यदन्तं मौक्तिकपुच्छं सुवर्णनाभं च तत्कृत्वा सदुपर्यात्मव-माणांस्तिहानसंखाप्य वाससा सञ्छाच सगन्वरस्वानि चत्वारि फांस्य-स्य घृतदुरघदचिमधुपुतानि सन्द्र्य प्रागादिदिक्षु दानदेशाद्वहिश्व-स्पकशास्त्रां सञ्चलकुम्भं च संस्थाप्य देशकालादि स्मृत्वा ' ब्रह्मलोक- प्राप्तिकामः सप्तमःभोषात्त्वाषनादाकामः चित्रपुत्रम्हंपुपरिहारभाषीभनः देशाचित्रयोगनःमः प्रख्याविषक्षमाप्तिवर्वभूदानमञ्चर्यर्जकेपत्रपतिकामीः । मोश्रकाम देशामीतिकामो वा कृष्णाजितदानं चरित्ये, इति सङ्क्त्य जीर्णपीतवाससा स्वाङ्गानि संस्वयः—

याति पापति कान्यानि मया छोमारह्वाति वै। छोद्दपान्यत्वोत्त प्रणस्यत्व मगागु वे॥ इतिनन्त्रेण सविख छोद्दपार्त्र कुण्णाजितस्य वामे पादे। याति कान्याति पापानि कर्मोत्याति कृवाति वै। कास्यपातम्यानेन वानि नश्यन्तु मे सदा॥

कारयपासप्रदानन जान नरवन्तु स सद इति समधुकारयं दक्षिणे ।

परापनादपैश्रन्यादृथा मांसस्य भक्षणात् । सत्रोत्थितं च मे पाप साग्रपातास्मणस्यतु ॥

३ति सतिल वाल्रणमं बामहस्ते ।

कन्यान्तर्वं गवा चैव परदारप्रधर्पणम् । रीध्यपानप्रदानेन क्षियं नाशं प्रयाद्व मे ॥

इति समधुरीप्यपात्र दक्षिणहरते । , जन्मजन्मसहस्रेषु कृतं पापं सुतुद्धिमा । सुवर्णपात्रदानात्तनासयाश्च जनार्दन ॥

शतनिष्कसमोपेवं वदर्दार्दमयाऽपि वा । षवो न्यूनं न दावन्यमधिके फलमूर्जितम् ॥ वज्ञैब—

कार्यस्यः स द्विजी राजन्तित्रेयुपसमी हि यः । दांने च श्रादकाले च द्रातः वरियजैवेत् ॥ व्याद्वानेय्यः सं वियं वण्डले खानसाच्यतः । वद्वासं क्रम्भसद्दितं नीला छोयं चलुप्यये ॥ स्वित्रेयुत्रमच्यां वियोगं भार्यया एदः । भन्देशयरित्यागं न चैचहानुवारक्यित् ॥ समाम्यूमिदान्यः चल्ले धारोवि मानवः । समाभूमिदान्यः चल्ले धारोवि मानवः । समाभूमिदान्यः चल्ले भारतियां विदङ्गसः ॥ क्राभूसद्वादं याचस्योगानित्यान्यम् । हित कृष्णाणिवदानं सञ्ज्योगान्यः

अय प्रस्पादानम्।

सहाभारते---

हाप्यापाखारणीयेलं सुप्रच्छादमसंस्कृताय् । प्रद्वाधास्त्र विषयः २१णु वस्त्रापि यदमञ्ज् ॥ सुरुपः सुमगः श्रीमान्स्रीतस्त्रीस्त् संहतः। स्हाव्यस्तदसाणि स्वर्गजोक्षे गृहीयते॥

विष्णुसंहितायाम्--

द्वेजैः वाद्याणेख नानाष्ट्रवेवित्रूववैः । चतुःकोषेषु संस्थास्य व्यवाहत्तवा बुविहिर ॥ चतुःकहुमयोग्न्यूपीयाधं कारुस व । इत्यां संपूर्णियाधं कारुस्य मध्यावणः ॥ इताःविध्युटी सून्वा इत्योच्छान्यां परिवणात् । नाः प्रमाण्ये देव्येति प्रणन्य च चतुर्वित्यत् ॥ माहाणाय दिशाव जुनात्यवनन्योहिने । साहाणाय दिशाव जुनात्यवनन्योहिने । साहाराम्य दिशाव जुनात्यवनन्योहिने । साहाराम्य दिशाव जुनात्यवनन्योहिने ।

> तस्मादिन्द्रपुरं गच्छेत्सैश्यमानोऽप्सरोगणैः । पष्टिवर्षसहस्राणि क्रीडित्वा च यथासुरतम् ॥

इन्द्रजोज्ञात्वरिष्ठष्ट इह जोज्ञे त्युपे मनेत् । पष्टियोज्ञतिवत्वोणं स्वामी भववि मण्डले ॥ भवित्योचरे---त्रामाच्छत्यां समासाद्य सारतारुपयी रद्याम् ।

धन्तपत्रचिता रम्यां हेमपेट्टेरलङ्कताम् ॥ हंसत्छोपतिच्छन्नां शुमगण्डोपधानकाम् । प्रच्छादनपटीयुक्तां घुनगन्वादिवासिताम् ॥ षस्यां संस्थापयेद्धैमं इर्रि रहमीसमन्यितम् । वच्छीर्पके धृतसूनं कछशं परिकल्पवेष् ॥ विशेष: पाण्डवयेष्ठ स निदाक्लशो सुबैः । ठाम्ब्रहकुषुमधौरकपूरागुरुवन्दनम् ॥ दीपिकीपानहच्छत्रं चामरासनभी भनम्। पार्श्वेषु स्थापयेत्रत्या सन्न धान्यानि चैव हि ॥ शयनस्यं च भवति यदन्यदुपकारकम् । मृह्वारकरकादां च पश्चवर्णे विवानकम् ॥ शब्दामेवंवियां छत्वा ब्राह्मणायोपपादयेत् । सपत्रीकाय संपूज्य पुण्येऽहि विधिपूर्वकम् ॥ यया न कृष्णरायनं शून्यं सागरजातया । श्रच्या मनाप्यशून्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि । इति ।। अय प्रयोगः । अष्टदले तिल्पस्यं तस्मिन्स्वस्तीर्णा द्यस्यां तस्याः समन्तात्सद्वरुपत्राक्ये वस्यमाणानि कुम्भादीनि संस्याप्य, सर्वपापक्षयपूर्वकाप्सरीगणसेन्ययुत्रिमानकरणवेन्द्रपुरगमनी॰ **धरपष्टिसद्सार्पतद्धिकरणककीडनस्नीसहस्रसंत्ररणसहितस्त्रलेकमी**हे॰ सत्तवदुत्तरपष्टियोजनमण्डलराज्यानन्तरशिवैनयकामः शप्यां शास्ये, इति सङ्कल्य सपत्नीकं वित्रं शच्यां बदुपरि प्रतिमायां स्ट्मीयुतं नारायणं च संपूर्व प्रदक्षिणीकृत्व ' नवः प्रमाप्यै देन्यै । इति चतुर्दिस् प्रणस्य विष्यागुहोरानान्ते सर्वपायस्योत्यादिकामान्तं पृत्रोक्तं क्यममुक्सनीत्रायामुक्त्रार्भणे बाह्यणायेना राष्यामीशानादिकोणचतु-ष्टयस्थापितप्तरुक्तगोधुमजलपूर्णवात्रामुच्छीपैकप्रदेशस्थापितघृतपूर्णकः द्धाः इंसन्हीप्रच्छनां शुभगण्डीपशानमा प्रच्छाद्वपटीसप्तधान्यतान्यू- ध्यस्येठ्क्त्मक्षोद्वर्गभूत्वाहचन्दवदीविकोषानच्छ्यपामरासत्तमोजन-व्यात्ररभवर्णवितान्द्रदर्भीनारायगातिवायुवामद्वितेदेवनाम्युक्तः गोत्रोऽसुमदार्माद्धं संपद्दे न मम इति । शय्योपविश्वितवियह्ते हृशौ-वक्तं क्षिपेत् । मन्त्रः----

यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरआतया । शब्या ममाऽत्यशून्याऽस्तु तथा अन्मति जन्मति । इति ॥ हिरण्यं दक्षिणा ।

इवि शय्यादानप्रयोगः।

अथ शिवाय शय्यादानम् । इतत्वशिक्षमायुक्तास्वद्धं राद्धामञ्द्कवाम् । सर्वोपकरणोपेशं शिये शय्यां नियेद्येत् । शिवं देवीसमायुक्तं पैटं कव्या नियेदयेत् । इति शिवयमं शिवशय्यादानम् ॥

अथ वस्त्रदानम् ।

नन्दिपुराणे—

यस्रं पश्चार्थिने वृत्ताच्छुमं चाषि यरच्छया । स भयेद्रतनाव्यसीमान्वृहस्पतिपुरे वसेत् ॥

विष्णुधर्मी तरे---

वासी हि सर्वदैवत्यं तर्वभायोज्यपुरुवते । श्रस्तदानातपुरेषः स्माद्वपद्रिकार्ययुक्तः ॥ युक्तो स्मायपसीभाग्येविरीमस्य वया हिनः । तथा---

> द्रेचा कार्गीविक वक्तं स्वरंकीके महीयते । दरबा सरोमं तमापि पत्नं दश्युणं सरेत् ॥ शाविकं वसनं दरचा मुदानां कोकप्रायुण्यः । छागं दरचा चाऽडिवृत्तां छोगं वरचा कृद्धवतेः ॥ वसूनां छोजमामीति छुक्कीवेयवाससा । छमित्रं च तथा दरवा सोमछोके महीयते ॥ कप्रिष्टोम्मूनग्रीवि दस्तेव सग्लोमिकाम्।

सर्वदो बखदः प्रोक्तो यतः सर्वत्र वखवान् । सन्तरोति च धर्मजस्तद्धि तस्माहिशिष्यते ॥

मविच्यपुराणे--

यो वस्त्रं भानवे दद्यादहतं च महाधनम् । स हेलिलोकमासादा वन्यते जिदशैरपि ॥

षादित्यपुराणे-वहेर्वेखप्ररानेन प्रदालोके महीयते ॥

निद्युराणे-वासासि त विचित्राणि सारवन्ति यहन्ति च । कापितानि शिवे द्यात्सकोशानि नवानि च ॥ यावत्तद्रस्ततन्तुना परिमाणं विधीयते ।

ताबद्वर्यसहसाणि स्वर्गछोके महीयते ॥

सापिवानि प्रश्वालिवानि ।

वाराहपुराणे—

श्रीमान्त्रराणि यो द्वात्पत्रीणीनि च चित्रणे । कार्पीसजानि वा द्वाइको वित्तानुसारकः ॥ तत्र बासासि यावन्तातन्त्नां परमाणवः । सावद्रपंसहस्राणि विष्णुछोके महीयते ॥

देवीपुराणे---

मण्डनैर्वाण्डनैर्वाऽपि वजीरभ्यस्य शैलनाम । संभूष्यामर्णैः शक चक्रवित्त्रमाष्ट्रयात् ॥

नन्दिपुराणे-ज्यापदायिनी मर्खा जायन्ते क्षुत्रजुटीव्यक्षाः ।

बिस्तीर्णराजवंशेषु सितच्छत्राह्यलक्ष्याः ॥ नारदीये---

> निष्किष्यनेभ्यो दीनेभ्यः शीतवातमहात्यैः । अर्दितेभ्यः करुणया वस्त्रमूर्णे दशावि यः ॥ न सस्य सुरुवं बर्ग्यु जिद्दरीरपि शक्यते । भाषित्रयाधिविनिर्मुकः सोऽस्यं सुखमस्तुते ॥

इति वसदानम्।

अपासनदानम् ।

बासनं यः प्रयच्छेतु सुवात्राय च भक्तितः । सं दिन्यान्मोगर्धभोगानरोगः सर्वदाऽद्युते ॥

गहामारते--यस्य दशाहिजाम्बेम्यो भवया चामरम्ब्यटम् ।

स सूपरमवामोति निःशेषेऽमनिमण्डले ॥

पद्मपुराणे—

चन्द्रोदयं तु यो दवाऊतया चच्छति पुज्यथीः । न सस्य श्रेयसामन्तः कदाचिद्रपि जायते ॥ चन्द्रोदयो वितासम् ।

अय भाजनदानम् ।

रक्ष्मवद्भागि—

भाजने यः प्रयच्छेत्त हैयं रत्तविभूषितम् ।
सोऽत्तराःशतसङ्गीणाँ विमाने दिनि मोदते ॥
राजतं यः प्रयच्छेत्त विप्रेययो भाजनं द्युगम् ।
स गन्यर्वपर्द प्रायच वर्षत्रया सह मोदते ॥
सान्नं यो भाजनं दगाद्रास्त्रवाय विदेवतः ।
स भवेचक्रराजस्य प्रभुवेळसमन्तितः ॥

श्रह्मपुराणे---जीदुम्पराणि भाण्डानि चो दृशादायसानि च । मह्ती दृद्धिमामीनि दुर्छमा त्रिद्शादि ।

औदुम्पराणि ताग्रमयानि । मदनररने--

उत्तर्भ यञ्जाष्टिक चत्वार्दिक्तु स्व्यसम् । द्वादशायमपार्वं स् वाश्रमत्रायसं स्कृतम् ॥

अत्रायसक्तररी चातुमात्रपर । वासांसि धरणे द्रवादुपवीतं समाल्पकम् ॥ चन्दनं चैव तान्बूटं विष्रं संपूजयेत्ततः । धृतादिद्रव्यसंपूर्णं देमगर्मे सवस्नकम् ॥ दानाग प्रा

244

प्रतिष्ठाप्य तु तत्पात्रं झाझणाय निवेदवेत्। त्तरतूर्ण मुक्ण हु प्रतिष्ठार्थ द्विभाय हु ॥

त्तव सप । चन्द्रलोके वसेचावयावदिन्द्राव्यतुर्देश । इति ॥ द्यादिति शेप

धृतादीनि चात्र चतुर्दश । तत्रैव---

वृतं च नवनीतं च द्धि दुग्धं तथैन च ।

प्य । । इकिरागुइतैसानि विस्न मधु जलं वया ॥ हारणं च फलं सर्वे याबद्रत्तसमन्त्रितम् ।

एवं चतुर्देशयुतं दासञ्यं विधिना नृप । इति ।।

पाद्ये-सर्वेपामेत्र दानानामुत्तमं पात्रमिध्यते ।

वयाविभि प्रदातव्यं वित्तशास्यविदर्भितम् ॥ _{कारयन्त्रतिर्देनो} योऽपि सोऽपि द्याचयाविधि । चतर्वहार्ग्रमर्दे वा द्यादशफ्लेप्सया । इति ॥

वाराहे--लधात. संप्रवश्यामि पात्रदासमनुचमम् ।

कत्वा काम्रमयं पात्रं यथाविभवविस्तरम् ॥ उपया सहितं शम्भं हरि सन्त्रीकमेर च ।

कृत्वा तु काश्वनी दिव्या संपूरवाबाहनादिभिः ॥ प्रतिमा प्राञ्जणे इचात्पात्रभृते विवश्चणे । बारेब पूर्वोत्तगृतादिचतुर्दशरूब्याधिकाशकार्पासीपादानेन सङ्गब्य-

पूर्णपोडशपात्रदानं युक्तम् ।

अय स्याळीदानम्। भविष्योत्तरे-

दत्त्वा वाम्नमयी स्थार्टी पराना पश्चिम: शतै: । अशक्त तर्देन चतुर्वीशेन वा पुनः ॥ सर्वशक्तिविहीनस्तु मृन्मयीमपि भार्येत् । सुगभीरोदरदरी हडदण्डकडच्छक्रम् ॥

षडच्छकशब्देन दर्व्यभिधीयते ।

गृदुवन्दुरुनिस्पन्नस्वित्रश्चीरेण पृरिताम् ॥

वपदेशोरैक्युकां पृतपान्नसमिनताम् ।

इतपार्था भीवनणी चर्चितां चन्दनेन च ॥
भाष्य मण्डल्के यक्षेत पुरुष्कुरैत्वाचेत् ।
शादिरोऽइनि संकान्त्री चर्नुदेशप्रमीशु च ॥
प्रमाद्य मण्डल्के यक्षेत्र पुरुष्कुरैत्वाचेत् ।
शादिरोऽइनि संकान्त्री चर्नुदेशप्रमीशु च ॥
प्रमाद्य मुतीयायां विषाय प्रतिपादरेत् ।
प्रताद्य मुतीयायां विषाय प्रतिपादरेत् ।
प्रताद्य मुतीयायां विषाय प्रतिपादरेत् ।
प्रताद्य मण्डले विष्णुद्ध सम्बद्ध ।
स्तिविद्य सिक्षम्यमानां स्वं पुष्टिः पुष्टिमिच्छतास् ॥
शादिवन्धुद्धद्वर्थाविगेषु स्वजने तथा ॥
श्रमुक्तवस् नाक्ष्मीयात्त्रया भव वरप्रद ।
श्रमुक्तवस् महानियात्त्रया भव वरप्रद ।
श्रमुक्तवस् महानियात्त्रया भव वर्ष्यद ।
श्रमुक्तवस्तु महानियात्त्रया ।

अथापाकदानम् ।

सम् द्युभावती प्रति विज्जादः—

श्वेत पूर्वविद्वितं वदसी प्राम्मुते फलम् ।

फर्मभूमिरियं राक्षि माऽवः शोचित्रमहेसि ॥

समाज्ञबद्धिदेदने प्राप्तं वद्रान्यमुत्तमम् ।

मृश्यमिशारिसंचन्यो न दत्तः प्राप्तवे छतः ॥

श्यादिमा देवरस्यात्रानिर्मतनानाविष्माण्डानां सर्वसंपत्तरमापाष्ट्रामाञ्चन स्वरूप्ता

इत्यापावदानम् ।

अय विद्याद्यानारूपमतिदानम् । तत्र पुराणदानं वरसंख्या च वाराहे— मादां वादां विष्णवं च होनं मामावतं तथा । रायान्यतारद्वीयं च मार्कण्डेयं च सात्तमम् ॥ वार्त्यसम्म प्रोक्तं मिक्यं नव्या । दशमं ब्रह्मीवर्तं चेह्नुसेकाद्यं तथा ॥ द्वाराहं द्वारहां प्रोक्तं रकान्हं चैव वयोदेसम् । चतुर्देशं वामनं च कौमें पश्चदशं वथा ॥ मात्सवं च गारुडं चैव महाण्डमन्तिमं वया । झत्यान्युप्युराणांनि सहिरण्याति पर्वणि ॥ स्टिरित्ता च स्वच्छेतु स विद्यापारगी भवेत् । इति ॥ क्रोणा क्रालीबीणः ।

(ब्राइं जरुधेनुयुवं वैज्ञाख्यां, फर्न् ब्रद्धरोकः । पादां हेमपद्मयुवं ज्यायां. फलम्यमेथस्य । वैष्णवमापाद्यां स्वर्णधेतुसहितं, फलं वरुणः छोकः । होनं गुडभेनुसहितं आवण्यां, फलं शिवलोकः । भागवतं हेमसिः ह्युतं प्रौष्टपयां, परमपतं फलम् । नारदीयमाश्विन्या हेमयुतं, परा सिद्धिः फलम् । सार्कण्डेयं हेमहस्तियुतं कार्तिक्यां, फलं पीण्डरीकरय । आमेयं हेमपद्मतिल्धेनुयुवं मार्गशीर्थी, सर्वत्रमुफलम् । भविष्यं गुडप्रध्युवं पौच्यां, फलं विष्णुलोकः । त्रहावैवर्ते चामरसुतं मान्यां, फलं ब्रह्मलोकः । छेङ्गं विरुपेतुपुर्वं फाल्गुन्यां) फलं शिवसाम्यम् । बाराई गुडपुर्वं बैज्यां, फलं विष्णुपदम् । स्कान्दं देमश्लयुर्वं मकरसंज्ञान्ती, फलं शिवपदम् । बामनं हेमवामनपुर्व मेपे, विष्णुपदं फलम् । कौमें हेमरूमंपुर्व कर्के, गोसहस्रश्रतम् । मारत्यं द्देममरस्ययुवं शुलायां, प्रप्वीदानफलम् । गारुढं देमहंसयुर्त विपुरे, सिद्धिः फलम् । महाण्डं कीशयसुवर्णभेतुपुर्वं व्यवी-पाते, राजसूयफटम् । एउन्मूछं मास्ये । कथिच्छैतस्थाने प्रायवीय-महणम्। एतरन्यान्युपपुराणानि तहाने फलं विद्या विष्णुङोकः, सर्वत्र विष्णुभीतिवी । भाग दानवाक्यमपि, देशकाली सङ्कीर्व तत्कल-सहिल्य । देयदक्षिणा न प्रयोगित केचित् । युक्त वत्तदाने युक्तभेन्वा-दिकेव दक्षिणा)

> रामायणं भारतं च दस्ता स्तर्गे महीयते। पुराणं वर्कसार्खं च छन्दीरुख्णमेद च ॥ वेरं मीमासकं दस्ता शिवसर्षे च वे छूप। सप्तदीपपृथिक्यां च राजराजी भवेदिः सः॥

सपा-

धर्मशाखं नदो दस्या स्वर्गलोके महीयते ।

अथ घेददानम् ।

गारहे--

माञ्चायरूपाणि विधाय सम्यम्पीमानि पूर्वोदितळ्श्रणानि । विद्यसन्तामणिभूपितानि श्रत्मावियेदक्यतो निवेदय ॥ वेदरुपं महाभूतपटे उक्तम् ।

सासोरि देवानि यसाक्रमेण पीतानि शुक्रान्यय छोदितानि । सीछानि थैवं सुसुमानि दच्या संयुव्य गन्मास्त्रतपूंपदीयेः ॥ सामोदितीदकपुतं पृतवायसं च सम्रोद्रमक्रमप पुचवुतं क्रमेण ।

तेश्यो नियेश विधिवश्यवः प्रणस्य सम्यनप्रदक्षिणविधि धिवधीत विद्वाने ॥ हेवां पूजाविधिः कार्या गायत्र्या धीमतां यह । म्याहरेय व्याहतीः कुर्यादावादनविसर्जने स मन्त्रैरेसैरततः कुर्वादगीपामञ्जूमन्त्रणम् । भरगोद पत्रपद्माद्ध मां रूपं रक्ष क्षिपाऽञ्जभम् ॥ शरणं स्वां प्रपन्नोऽस्मि देहि से हितमहत्त्व । यज्ञवेद नमसीऽस्त छोकत्राणपरायण ॥ ष्यस्त्रसादेन में कामा निरित्रज्ञः सन्तु सन्वतम् । सामवेद महाबाही स्वं हि साक्षादघोश्चनः ॥ प्रसादसमुक्ती भूरता कृपवाऽनुमहाण माम्। भयवेन्सर्वभूतानां त्यदायते हिताहिते ॥ शार्ति तुरुष्य देवेस पुष्टिमिष्टां प्रयच्छ नः। इति संप्राप्य देवेशान्त्रिप्रयः प्रतिपाद्येत ॥ प्रदेशादेकमैकसँगै सुवर्ण जिपलान्वितम् । पद्मादेकपञीपेतमेकैकभिह दुर्वेछः ॥ थय स्वयक्तिती बाऽपि दानमेपा विधीयते । प्तदेव प्रमाणं स्थादेतेषां सूर्विनिर्मितस् ॥ मनधीतवतौ धेदान्वेदवानविभिस्त्वयम् । सदाऽष्ययनयुक्तस्य घेदाध्ययनमेत्र हि ॥ ₹¥- ₹Q

166

याज्ञबल्क्य:--सर्वधर्ममयं ब्रह्म प्रदानेभ्योऽधिकं यतः।

तहद्दसमवाप्रीति श्रद्धाळीकर्मावच्युतम् । इति ॥ इति वेददानविधिः ।

अय प्रस्तकदानम्।

भविष्ये---शास्त्रसारावविद्वपे वाचके च त्रियंत्रदे ।

' बहायुग्मेन संगीर्ध पुस्तकं प्रतिपादयेत्। इति ॥

तथा-

कपिछादानसङ्ख्रेण सम्यग्दचेन यत्प्रहम् । तरफलं समवाप्रोति प्रस्तकैकप्रदानकः ॥

पुराणं भारतं वाडिव रामायणमधाडिव वा । इस्का बल्कसमामेति पार्थ तरकेन वर्ण्यते । इति ।।

सम्र हेम्हःच्याप्रद्नतमाष्टाद्कृतेऽन्योन्यसंख्रिष्टे यन्त्रे नदस्य संपूज्य देवम्, इति पुराणान्तरे ।

एवं त्रिविधे विद्यादानं पुस्तकदानं, प्रतिमादानमध्यापनं चेति । इति पुम्तकदानम्।

अय छत्रोवानदानम् ।

पाश्चे-मसिप्रवने मार्गे शुरधारासमन्विते ।

वीक्ष्णावपं च वरति छत्रीपानत्त्रदो नरः ॥ इति छत्रोपानदानम् । अधाऽसदानम् ।

स्काम्दे---

मनः, प्राणरः प्रोत्तः प्राणर्श्वाऽपि सर्वरः । सामादनप्रदानेन सर्वदानपछं छमेन् । इत्यन्नशानम् ॥

महार्णवे ब्रह्मतीतायाम्--षर्योशनं ओवियाय हार्थिने च विशेषत:। बसाध्यव्याधिना प्रस्तो धनं द्शाहिजासये ।)

इति वर्पाशनदानम् 1

- 96

अथ ताम्युलदानम् ।

भविष्यपुराणे--

र्धाम्यूसं यो नरो दशास्त्रस्यदं नियमान्त्रितः । ' ः देवेभ्योऽय द्विजातिभ्यः स महाभाग्यमङ्गुतं ।।

इति साम्यूलदानम् ।

अथ गन्धद्रव्यद्दांनम्।

स्कृत्वे—

नरः सुवर्णदेहत्वं गन्धदानादवाप्तवात् । ' भोगवाश्वायते नित्यं शरीरं नास्य तप्यति ॥

विष्यभगें तरे--

सीमाग्यकारकं दानं भोक्ते वे कुंक्कुमस्य हु । सथा कर्पुरवानेन सर्वकामानवाप्रवास् ॥ स्वादर्भदानेन स प्राज्यं राज्यकतुते । इति ॥ गुन्धदुष्यदानं छैक्के-

तृष्टिभेवेरसदाकालं प्रदानाद्वन्धमास्ययोः । इति ॥

मस्विपुराणे— भूपदः सुरंभिनित्यं पुष्पदः संभगस्तया । इवि ॥

' अथ रत्नदानानि ।

जाशालिः--

रतानि यो द्विजे द्याद्वहृमूत्यानि मानवः । अरुद्वारिभित्तं चा देवताभ्योऽतियत्नतः ॥ सन्तापपापनिर्मुको मुक्तिमेव समभुते ।

स्कान्द्रें—

विदुषाणां प्रदानेम स्ट्रालोकं ज्ञ्लेस्यः । संबंधापविधिग्रीकी गुकाबानेन सायवे ॥ लोकमाश्चीति पानेन नरो वस्त्रय व्यवणः । स्या प्रमुक्तानिकीविधिग्रावे । सर्वे प्रदुाः प्रतुष्यनित पुष्परामश्चानतः । गार्डस्पर्वेगस्यने तथ्यरामश्चानतः ॥ याहावल्क्यः— ; सर्वधर्ममयं त्रहा प्रदानेश्योऽधिकं यतः । , तर्वदत्सभवाग्रीवि त्रहाळोकमविन्युतम् । इति ॥

तर्दत्सम्बामीति ब्रह्मलोकमविच्युतम् इति वेददामविधिः ।

अय पुस्तकदानम् ।

भविष्ये— द्याखसन्नाविद्ये बाचके च वियंतरे ।

हात्वसः त्यायुपं वायकः च अयवदः । ' वत्त्रयुग्नेन संबीतं युक्तकः प्रतिपादयेत् । इति !! तथा—

कपिलादानसहरोण सम्यादचेन यत्प्रत्यम् । सत्प्रतं समवाप्रोति पुस्तकैरप्रदानतः ॥ पुराणं भारतं वाडित रामायणमधाडित वा ।

पुराण भारत वाडाव रामायणमयाडाव वा । दस्या यत्मलभाभीति पार्थ तत्केन चर्चते । इति ॥

तम हेमस्व्यागदन्तकाछादिकतेऽस्योन्यसंश्रिके यन्त्रे न्यस्य संपूज्य देवस्, इति पुराणान्तरे ।

स्य, इति पुरानात्तरः । एवं त्रितिकं विद्यादाल-पुग्तकरातं, प्रविमादालमध्यापनं चेति । इति पुग्तणदानम् ।

अथ छत्रोपानहानम् । पारी— असिपत्रवने मागें श्रुरधारासमन्विते ।

वीक्ष्णावर्षं च वश्रीत छत्रीपानत्त्रद्रो सरः ॥ द्रित छत्रीपानहानम् ।

अयाऽन्नदानम् ।

स्कान्ये— षष्ठदः प्राणदः प्रोत्तः प्राणदक्षाऽपि सर्वदः । सामादकादानेन सर्वदानफळं रूमेन् । इत्यब्रदानम् ॥ महार्णवे महागीवायाम्—

वर्षारानं अधिवाय द्वाधिने च विशेषतः । बाराण्यास्याधिना प्रत्यो चनं द्वाहिजातये ॥ इति वर्षारानदानम् ।,

अथ ताम्ब्रलदानम् ।

भविष्यपुराणे--ताम्बूळं यो नरो दवाव्यत्यहं नियमान्वित: । देवेभ्योऽय द्विजातिभ्यः स महाभाग्यमञ्जते ॥

इति साम्यूलदानम् ।

अय गम्बद्रव्यदानम् ।

स्कान्दे--

नरः सुवर्णदेहस्वं गन्धदानादवाप्तयात् । भौगवाश्चायते नित्यं शरीरं भारय तप्यति ॥

विष्ड्यमाचिरे-

सीभाग्यकारकं दानं प्रोक्तं वे कुङ्कुमस्य हु । तथा कपूरदानेन सर्वकामानवागुयात् ॥ रुगदर्पप्रदानेन स प्राज्यं राज्यसञ्जते । इति ॥ गन्धद्रव्यदानं छैद्रे-

त्रष्टिभीवैत्सदांकालं प्रदानाहरूभमारुययोः । इति ॥ मन्दिपराणे-

धूपदः सुरभिनित्यं पुष्पदः सुभगस्तथा । इति ।।

' अथ रत्नदानानि ।

पायाडि:—

रस्तानि यो द्विजे ददाहरुमूल्यानि मानवः। **म**लद्वारनिमित्तं वा देवताभ्योऽतियक्षतः ॥ सन्तापपापनिर्मुकी मुक्तिमेव सम्भते ।

स्कान्दे-विद्रमाणां प्रदानिन सदलीकं वज्ञानाः।

सर्वेपापवित्तिर्मुको सुकादानेन जायते ॥ छोकमाप्रीति दानेन नरो वजस्य विज्ञणः। तथा प्रमत्तेगोंभेदैभोंदते नन्दने वने ॥ रावे महाः प्रतुष्यन्ति पुष्परागप्रदानतः । गारुत्मतैर्गरुतमन्तं नियतं जयति श्रियः ॥

बेह्नयः सूर्येळोकं च पद्मरागैररोतवाम् । प्रदानादिन्द्रलोबाना नीर्छानां भावनं भवेन् ॥ सुत्ती शङ्कपदानेन शक्तिः द्यक्तिप्रदानकः । इति स्तदानमः ।

अय गलन्तिकादानम् ।

भविष्योत्तरे—

वसन्तसमयं ज्ञाला गरवा देशाल्यं परम् ।
शिवाय विकारिकेस ष्टर्यस्य वा पुतः ॥
कानने कार्येरकुम्मिक्टिक देशस्तके ।
कानेन विविधा दरवा नरी भारायलुष्ट्यम् ॥
वतः कईटके प्राप्ते वेतं पश्चायतेन तु ।
सक्षाय्य पूजयेद्गन्विनेवेदीय मनोरमेः ॥
प्रणियदे महेशानी मन्त्रमेत्सुरीरयेद ।
क्रम्मा काह्यः सम्प्रमेत्रो धाता शिवी हरः ॥
प्रीयता ने महादेवी काल्ड्रम्मायताना ।
पव सङ्कत्य दाता तु पश्चायात्य वेशमित ॥
वश्चायता शिवमकाश्च विष्मात्वाश्च मोनवेद ।
पवं यः वृत्तेते भीनो, जल्द्यानीकवा हरेः ॥
यावद्विन्यूनि व्हिस्य पीतातिन न संगयः ॥
स वश्चित्रकृष्टि कोके तावनकोट्यो नरेखर ॥
१६ महिन्यहर्ग कोकि तावनकोट्यो नरेखर ॥

अथ भपादानम् ।

भविष्योत्तरे— णवीवे फाल्मुने मासि प्राप्ते चैत्रमहोत्सचे १ पुण्येऽद्धि विद्यक्रियेत मण्डप फारयेत्तव. ॥ पुरास मध्ये पिव वा चैत्यदृश्वरहेऽद्यवा । सुरीवज्वतर रूचे विचित्रसन्तरसुवम् ॥ सन्मध्ये स्वापचेद्रम्यात्मिण्डुम्मांत्र सोमनात्र ।

ब्राह्मणी सीलसंपनी मृति वस्त्रा यथीचिताम् ॥ प्रपापालः प्रदर्शन्यो बहुपुत्रपरिच्छदः । •पत्रंतियां प्रपां करवा हामेऽहि विधिपूर्वकम् ॥ यथाजात्त्वा नरश्रेष्ठ प्रारम्भे योजयेहिजान । सत्वश्रीत्सक्षेयेद्विमं मन्त्रेणानेन मानवः ॥ प्रपेशं सर्वसामान्यभूतेम्यः प्रतिपादिता । सास्याः प्रदानारियतरस्ट्रप्यन्तु प्रविवासहाः ॥ कानिवारितं ततो देयं जलं मासचतुष्टयम् । त्रिपर्श्वं च महाराज जीवानां जीवनं परम् ॥ प्रत्यहं कारयेचायां भोजनं शक्तितो द्विजास्। अनेन विधिना यस्तु भीव्मे वापप्रणाशनम् !! पानीयमुक्तमं दद्यात्तस्य पुण्यकळं शृणु । कविज्ञाहातवानस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम् ॥ सर्वण्यपळमाप्रोति सर्वदेवैः सुपूजितः । पूर्णचन्द्रपतीकाशं विमानमधिरहा सः ॥ योवि वेवेन्द्रनगरं पूज्यमानोऽप्सरोगणैः। विद्यातकोडयो हि वर्णणां यक्षगन्धवसेवितम् ॥ पुण्यश्चयादिहागत्य पतुर्वेदी द्विजी भवेत्। घतः परं पदं याति पुनराष्ट्रसिद्धर्रभम् ॥ इति प्रपादानम् ।

गयोवकदानम् ।

स्फन्दप्राणे—

त्रवाणामपि छोकानामुद्धं जीवनं स्मृतम् । • पवित्रमम्दं यस्माचदेयं पुण्यमिच्छता ॥

मविष्यपुराणे--

प्रीप्रेम चैन नसन्ते च पानीयं यः प्रयच्छति । बक्तुं जिद्धासहस्रेण वस्य पुण्यं न सन्त्यते ॥ नन्दिपराणे—

योऽपि कश्चित्तृषार्वाय जलपानं प्रयच्छति । स नित्यतृप्तो भवति स्वगे युगशतं नरः ॥ गरुडपुराणे-- ँ ँ - - - र मूल्येन कीत्वा धर्मान्ते जलदानं प्रयच्छवि । : स याति चन्द्रसाछोक्यं शुभमाराशुकाष्ट्रवः ॥ -श्रीर्षु स्यास्तमायान्ति तथाऽऽयान्ति मधुस्रवाः

घृनदृथ्युदकास्तस्य समुद्रा वशवतिनः ॥

सतीयां पधिके वित्रे प्रद्यात्करयन्त्रिकाम् । फ्छं स कूपसातस्य नूममात्रोति मानवः ॥ महाभारते—

पिपासया न ज़ियते सोपउन्दुश्च जायते । -नैवाञ्चयाण व्यसनं परकान्यः प्रयच्छति।। 🏞

आदित्यपुराणे--यो द्दाति घटीमात्रं हुण्डिकाः करकांस्तथा । मुपारीत्य तथा धर्मे छमते शीवलं जलम् ।

इस्युदकदानम् ॥

अय धर्मघटदानम्। विष्णु शीतलेन सुगन्धेन बारिणा पूरितं घटम्। शुक्रचन्दनदिग्वाङ्गं पुष्पदामीपेशोभितम् ॥ द्व्योदनमृतं कुर्याच्छरावं तस्य चोवरि । षपानच्छत्रसयुक्तं धर्मीस्यं बरूपयेद्वटम् ॥ पुष्पाक्षतं गृहीत्वा तु इमं मन्त्रगुदीरयेत् । 💞 नमो विष्णुरूपाय नमः सागरंसंभव ॥ **अ**पाम्पूर्णोद्धरास्मांत्त्वं दुःरासंसारसागरात् । ' एरवुम्मी मया दत्ती भीष्मकाले दिने दिने ॥ **धदनुस्मप्रदानेन प्रीयतां मधुसूदनः।** मविष्योत्तर्-

प्रत्यह धर्मघटको वस्त्रसंवेष्टिको नक । ब्राह्मणस्य गृहे देयः शीवासलजलः शुनिः । वसन्त्रमीप्पयोमेय्ये यः पानीयं प्रवच्छति । , पेट क्हें सुवर्णस्य फलमात्रोति मानवः ॥
मार्गवार्गतसमारम्य वत्त्रस्यं सु या श्विषम् ॥
दिने, दिने सहस्य गवां पुण्यफ्टं ल्येम् ॥
तह्येशेराप्तः कार्य मार्ग्य सार्य मार्ग्य ॥
सह्येशेराप्तः कार्य मार्ग्य मार्ग्य सार्य मार्ग्य ॥
विद्य शङ्करं विष्णु महागणमयना पिनृत् ॥
स्विलं मोक्षयित्वा सु मन्नेगानेन मानवः ॥
प्र पर्भयते द्वो महाविष्णुशिवात्यकः ॥
स्व प्रदानास्तत्वं मम सन्तु मनोरयाः ॥
मनेन विधिना यसु धर्मसुर्भं प्रयच्छवि ।
सत्त्वभीत्मवयो गोत्रदान्तम्लं ल्येन् ॥
दिसं प्रमित्वन्तम् ॥

अथ यहोपनीतदानम् ।

बीधायनः—

यज्ञीपवीतदानेन जायते व्रहावर्चसी । सस्मात्तानि प्रदेयानि व्राह्मणेभ्यो विपश्चिता ॥

अतिः—
 श्रीममं वापि कार्पासं पट्टसूत्रमधापि वा ।
 यद्योपनीवं यो व्याच्छेतवर्णं सुशोभनम् ॥

यज्ञीपनीर्वे यो व्याच्युत्तवण सुरोभनम् ॥ यथाशत्त्रया विधानेन अग्निष्टोमफळ रुमेत् । नन्दिपुराणे—

यक्षीपश्रीतदानेन सुरेभ्यी ब्राह्मणाय वा । भवेद्विप्रश्रतुर्थेदः श्रुद्धभीनीत्र संशयः ॥

विष्णुमोक्त-

उपाकर्मणि विधेश्यो दशासक्षेपजीतनम् । भायुष्मान्जायते तेन कर्मणा मानवो सुनि ॥ ' इति यज्ञोपवीतदानम् ॥

शत यज्ञापवातदानम् । अय यष्टिदानम् ।

यष्टि ये च प्रयच्छन्ति नेजहीनेऽथ हुवंछे । तेषां सुविषुछ, पन्थाः परुमूलोपज्ञोभितः ॥ प्रदावैवर्ते— !!

चै यहुम्ब्रह्म पायेश्यो दीनेश्योऽपि द्यालकः यष्टिदानं प्रकृषेन्व निरोगासे न संदायः ॥ । पह्नेश्वरणकार्योगि यष्टिः प्रकृते सदा । गोतपादिनिष्ट्रिच्छा व्यायने यष्टिभारणाव । श्रीतानं दाराजे यष्टिगंच्छात निश्चि वा तने । सर्चा पद्मादिवातीरण नियमेनं निरस्यवि ॥

स्कृतपुराणे— ' वतिस्यो बैजब दण्डं द्विजेश्योऽपि खनित्रकम् ।

प्रदाय परलोके स यमदण्डं न गच्छति ॥ प्रद्दावि यथावर्णे यो दण्डं श्रद्धचारिणे । स महायुद्दपो लोके श्रद्धवर्षसमश्चुते ॥

इति यष्टिवानम् । अथेन्थनदानम् ।

वहिपुराणे—

य इन्धनानि काप्तानि श्राह्मणेश्यः प्रयच्छति । सर्वार्यात्तस्य सिद्धयन्ति तेज्ञत्ती चापि जायते ॥ हेमन्ते शिशिरे चैव पुण्योऽप्ति यः प्रयच्छति । सर्वेटोकप्रवापार्थे पुण्या गतिमवाप्तयात् ॥

यमः—

ननः— इन्धमानां प्रदानेन दीतासिर्भुवि जायते । महाभारते—

> यञ्चेन्धनाधै फाग्रानि श्राद्वाणेभ्यः शवच्छित् । , प्रवापनार्थ राजेन्द्र प्रष्टुचे द्विहित्तरे नारः ॥ सिद्धयन्त्ययोः सदा वसम फार्याणि शिविचानि च उपर्युपरि राहुणा चपुपा दीय्यते नारः ॥ मगवाश्चास्य सुपीतो वहित्येविति नित्तवाः । न वं स्यमन्ति पदावः संगासेषु असल्यपि ॥

"इत्रान्धनदानम्"।

अथाशीष्टिकादानम् । भविष्योत्तरे छुप्प चवाच--

आवी मार्गदिर मासि शोमने दिवसे शमे । भागिष्टिकां कार्यित्या सुसासनवर्ती दढाम् ॥ देवाद्वणे मठे हुट्टै जिस्तीणें चत्वरे तथा । दमयोः सन्ध्ययोः कृत्वा सुशुद्धं काष्टसन्त्रयम् ॥ त्ततः प्रज्ञालयेद्धि हत्वा व्याहृतिभिः प्रमात् । माधाणान्भोजयेद्वचया तेश्यो ददाच दक्षिणाम् ॥ भनेन विधिना कृत्वा प्रत्यहं आळ्येत्ततः । धदि फश्चिल्झुवार्ताः स्याङ्गोजनं तस्य करपयेत् ॥

प्रयोगः । अधेत्यादिदेनन्तशिशिराख्यमृतुद्वयं यास्यस्यहं शीवार्वप्राणिवापनार्थिममामभीष्टिकां विष्णुरैववां पष्टिसहस्रपष्टिशवा-विच्डिन्नमहाजीकमहितत्वानन्तरसर्वार्यक्षपत्रचतुर्वेदित्वप्रातिकामोऽहसः स्तुजे । अस्य धानस्य फलमवि तसैव-

विमाने पार्कसङ्गारी समारुदी महामते। पष्टिवर्पसहस्राणि पष्टिवर्पशताति च ॥ व्यक्तिऽस्यन्तसन्तृष्टी ब्रह्मलोके महीयते । इह लोकेऽवतीर्णश्च चतुर्वेदो द्विजो भवेत् ॥ भीरजः सध्यवादी च अग्नितेजाः प्रभावतः ।

चैत्ये सुराज्यसभावसथेषु भन्यां बेडमीष्टिकां प्रचुरकाष्टवर्ती प्रदृष्टः। द्देमन्तरीक्षिरऋती सुरावां जनानां कार्याभिदीप्तममळं वपुरावद्दन्ति॥ इत्यमीष्टिकादानम् ।

अध दीपदानम् ।

र्सवर्ते:---

देवागारे द्विजानी वा दीपे दस्ता चतुष्पर्ये । मैभानी ज्ञानसंपन्नद्यभुक्तींद्य सद्दा भवेत् ॥ गरहपुराणे—

नीलकण्डल मोक्षेण गयायां च विलोक्कै: । वर्षासु दीपदानेन पितृणामनृणी भवेर्त् ॥

नीटदण्डस्य मोश्रो नीडदण्डपुपी मर्गः ।

यमु ब्राह्मणोदेषु दीवगण्डां ब्रवच्छनि ॥ स निर्जिय समे घोरं न्योतिम छोदमानुवान् ।

महाभारते—

हीपत्रक्षातं वर्षावि पाययोगसन्तमम् । सभा तेन सद्दा चेत्र प्रदेशा साहसास्त्र ति ।। प्रेशितिकाः प्रवासं बाठप्यूर्यमस्याऽपि पाणिव । प्रताने तैनमां सम्प्राचेत्री बर्देयते गुणाम् ॥ स्रतानं त्रमां सम्प्राचेत्री बर्देयते गुणाम् ॥ सन्तानं व्यवस्थिते पादिस्यानं प्रशासने ॥ सम्प्रदूर्यतेनेनन् तमस्येव संप्रमा । सम्प्रदूर्यतेनेनन् तमस्येव संप्रमा ।

विष्णुवर्गोत्तरे-

महावर्तिः सदा देवा भूमियास महापन्ता । पृष्णपञ्चे विशेषण समापि च विशेषतः ॥ धमाबारया विनिर्दिश हाद्दी प महापछा षाश्चपुज्यमधीतायां कृष्णपञ्चस्य या भदेशु 👭 भमात्रास्या तहा पुण्या द्वादशी च विशेषतः। देवाय दक्षिण पार्थे देवा वैद्युद्धा सूप ॥ पळाइक्युता गजन्त्रति वत्रैत्र दापयेन् । वाससा हु सम्भेण सीपनासी मितेन्द्रिय: ॥ महावर्तिद्वयमिदं सहदस्या महीवते । निरिश्टद्वेषु दातृत्वं नदीना पुलिनेषु च ॥ चनुष्पपेषु रध्यामु ब्राह्मणाना च वेदमस् । पुत्रमूरेषु गोष्टेषु कान्तारगहनेषु च ॥ दीपदानेन सर्वत्र महत्यखमुपास्तुने । यावनस्यश्चितिमेपाणि दीपः प्रध्वस्ते सूर ॥ सावन्त्येव स शजेन्द्र वर्गीण दिवि मीरते। दीपर्मनेन राजेन्द्र चर्सुच्मानिह जायते ॥ रूपसौमाम्बयुक्तस्तु धनधान्यसमन्वितः । इवि दीपदानम् ।

अथाऽभयदानम् ।

संवर्तः--

.भूताऽभयप्रदानेन सर्वान्कामानवाप्रुयात् । दीर्घमायुश्च छमते सदा च सुर्फितो भवेत् ॥

रामायणे—

बद्धाःकछिपुर्वं दीनं याचन्तमपराविनम् । न हृत्याच्छरणं प्राप्त सत्तां धर्ममनुसमस्य ॥

न हन्याच्छरणं प्राप्त सर्वा धर्ममनुसमस्य ॥ महाभारते— क्षीभाद्वेपाज्ञयाद्वाऽषि_यस्यजेच्छरणामसम् ॥

लक्षाहरपासम् सस्य पापसाहुमेनीविणः ॥

अथ धासेव्यनुक्रमेण द्वासारि । -विष्णुधर्मोत्तरे---

ति उदानात्माणे हु वाम्यं ठोकं न गच्छति ।

तिवह फारनुते ६२वा त्रियो भवति भूवते ॥

वैत्रे विश्वाणि वक्षाणे दश्या सीभाग्यमञ्जते ।

श्वापाना प्रदानेन वैद्याले दश्यासञ्जते ॥

श्वापाना प्रदानेन वैद्याले दश्यासञ्जते ॥

श्वापाने वाम्य व्येष्ठे सर्वाग्यसञ्जते ॥

श्वापाने वर्णवानस्य क्षाणि विश्वासञ्जते ॥

श्वापाने वर्णवानस्य क्षाणि विश्वासञ्जयः ॥

श्वापाने वर्णवानस्य विश्वास्य व्यापानस्य विश्वास्य व्यापानिक विश्वास्य विश्

पळाना च संधा दान ऋष्णपक्षे महापळम् ॥ अयाश्वत्यसेचनम् ।

भिक्योत्तरे— वदुक्सप्रदातेऽपि हाशको यः पुमानसवेत् । , " १३८ ः शानमञ्जाः

तेनाऽश्वत्यत्रोमूँछं सेच्यं नित्यं मितासनात। सर्वेपायदामनं सर्वेदुःस्वप्रताशनम् । सर्वेरोगपदामनं नित्यं सन्वविवर्द्धनम् ॥ ष्रश्वत्यदेश्ये सम्बान्यीयवां से जनार्दनः । इत्युवायं नमस्यूत्य प्रत्यदं शायनारामम् ॥ यः करोते वरोमूँछे सेकं मासन्तुष्टयम् । सोऽपि।सरुक्रमाप्रीति श्रुविरोग सनावनी ॥

> इत्यश्वरयसेचमध् । जथ पान्योपचारः ।

गरुखपुराणे— र्वे पान्धं परिचरेशस्तु शयनासन्भोजनैः ॥

स स्वत्येन प्रयासेन जयति जन्त्याजिनम् ॥ दश्या वासो निवकाथ रोगिणे वक्प्रविक्रियाम् ॥ तृपातीय जलं दस्या मृष्टमकं युगुश्रवे ॥

पथिकाय ययात्रिमं सर्व तरित दुण्ज्तम् । कम्बन्यमनुमान्यापि शाकमूलमलेर्मलै: ॥.

कावन्यमनुमान्याप साकमूलकलकालः ॥, सञ्चरसञ्जय बाचाऽपि श्रेयसो भाकतं मदेन् । सथा—

अभागे तृणभूस्वस्युपनेश्वनफळाति च ।
 दृश्वाऽङ्गतायाऽनिर्विणाः स्वर्गे याति श्रियेण वा ॥

विष्णुधर्मोक्तरे— व्यानद्भर्या च छत्रेण श्रान्तं संयोज्य मानवः ।' संस्याप्य शुमदेशे तु क्षणाद्वदुष्टळं ऊमेत् ॥

वर्गा— वीरेम्यो रक्षणं छत्वा शक्छोके महीयते ।

यस्तु मार्गपरिमान्तं द्विजादि यामकवितम् । तैष्टेनाय्यख्येत्पादः सं सुखी मोदते थिरम् ॥ सर्पिषा किष्णिपेनोस्यवाऽन्येन सर्पिण । वत्तरायणमासाय योऽम्यव्यवि धूर्मेटिम् ॥ •महापूनां धृतेनैव वस्मिन्नेव दिने सिवे । छत्वा मनुष्यो छमते राज्यं निहतकष्टकम् ॥ सर्पिःगछसहस्रेण योविन्दस्य शिवस्य च । महास्तानं नरः छत्वा महाहत्यां वरिष्यवि॥

त्तन्दिपुराणे—

पादाभ्यन्नं तु यो द्यारणान्याय परिकेदिने । स शुभाभरणैः पारैवेदिक्षित्तिस्वदिद्वः ॥ भवेषुपो महाभागो मण्डले द्यायोगने । संवाहाञ्यपरिश्वान्तं वादाभ्यक्षुदिमा नरः ॥ भवेश्य द्वामामेति सर्वकामगुणीञ्चलः । दस्वा पारि सुसंस्यत्ते पादाभ्यां च द्विजावये ॥ णव्यव्यमाजीवाचाऽवि गोदानपञ्चमञ्जते ।

वारळहमाजनावाडाच गादानम्ळमञ्जूतः। भविष्यपुराणे— शक्षणस्य तु यो भत्तवा पादी प्रकारम शक्तितः।

धृतैसाऽभ्यज्य पादी तु विष्णुलोके महीयते ॥ इति पान्योपचाराः ।

अय गोपरिचर्या।

गर्वा कण्डूयनं चैय सर्वेकल्मपनाशनम् । गर्वा माराप्रदानेन स्वर्गेखेके महीयते ॥ भादित्यपुराणे—

भारदत्यपुराण— छवणं च ययाशस्या गर्वा यो वै ददावि घ । *सेपां पुण्यकृता छोकानावां छोकं झजन्ति ते ॥

महाभारते— फुस्मा गवार्थे धारणं शीसवात्रक्षमं महत्। आसप्तमं धारयति कुळं भरतसत्तमा ॥

हारीत:— श्री मान्नी पालवेहत्वं सतीवे नियनं

द्वी मासी पाययेद्वत्सं तृतीये द्विस्तनं दुदेत्। चतुर्थे त्रिस्तनं चैव ययान्यायं ययाय्वम् ॥ २९०

ब्रह्मपुराणे-आदी विचार्य वयस परिमाण घळ रचिम् । क्षाकरिमक तु दात्तव्य पुण्यार्थ तु गवाहिकम् ॥

विष्णधर्मोत्तर--

गवा क्टूबन चैव सर्वकस्पनाशनम् ।

तासा शृद्धीदक नाम जाहवीजलसभिमम्॥ संधा-उच्या परगवे शास पुण्य स सहदाश्च**यात् ।** क्षिक्षिर सक्छ काल मास परगंदे तथा ॥ वस्वा स्वर्गमवाप्रोति सवस्सरशवानि पद् । अप्रमुक्त नरी दशाकित्यमेव सथा गवाम ॥ मासाष्ट्रयंत स्थत नाकलोक समायुतम् । साय प्रावर्मनुष्याणामशन रमृतिनिर्मितम् ॥ संवैक्तमदान दुरुवा गवा नित्यमतन्त्रित । द्वितीय य समभाति तेन सक्तसर नर ॥ गवा छोजमबाबीति यावामावस्तर द्विज । शीतप्राण गवा फुरवा गृहे पुरुषसत्तम ॥

बारण छोक्माप्तीति मीडस्यब्दगणायुतम् ।

सया-

सिंहञ्यात्रभवत्रस्वां पङ्कलप्रा जले गताम् । गामुद्धस्य नर स्वर्गे परपभोगानुपादन्ते ॥ तासाँ सस्पर्शन घन्य सर्वन स्मपनाशनम् । दानेन च तथा वासा क्लान्यपि समुद्धरे ।।। उद्द्वयास्तिमादीयो नैन तन गृहे भरेत् । इति गोपरिचर्या ।

अथ सहस्रादिविषयोजनविधिः।

भारत---शहायाना सहस्र शु सभीत्र भरतर्पम । भर पापाटमगुरुवेत पापप्रश्लिततोऽपि स ।। भोजवित्वा दशशत नरी बेदविदा नृप ।

न्यायिद्वयीयितुषा स्यूतिभाष्यविदा वथा ।
न यार्ति तरक पोर ससाराश्च न सेवते ।
सवै जासकायुक्त भेल जाड्यक्ट्रते सुदम् । इति ॥
। लक्ष्मोजनारी तु न विधेः काष्मुपरम्म । यस्तु मैथिडमम्ये कविदन्
रेरित सोडप्यनाकर ।
। कार्येतस्य प्रयोग । देशकालौ सङ्गीर्त्य सक्छवापप्रमोपननरकागमनससारासेनिहस्यकेनासभारायाद्गिन्यसुक्षमासिस्वपक्रकाम सहसमाह्मणान्भोज्यादिनाऽड्यित तार्यिय्ये इति सङ्क्रस्य पुण्याहं वाष्यिसाडादिकालाहक सप्तृत्य भावाणान्यपूर्वापक्रमालाङ्क्रीरः स्तृत्य समुवारकनाड्यति भोजयेत् । तत्रोडिक्रस्यपनामिद्यसान्य छला नैयाविदमिद्र्द्विदानामिभ स्वाहा-वैकृतेन हुल्या दस्यक माह्मणेत्रमो निवेष सिष्टक्ष्यादि क्रत्य माह्मणेश्यस्त्रमोधानाही प्रयोग स्वाहा-वैकृतेन हुल्या दस्यक माह्मणेत्रमो निवेष सिष्टक्ष्यादि क्रत्य माह्मणेश्यस्त्रमोधानही प्रयोग स्वति शक्यसिक्ते

अथ नामाद्रव्यदानमन्त्राः।

सादिभोजन कार्यमिति प्रतीयते । शिष्टास्वनैकविनैरपि समाप्यनित,

हेमात्री 'वतसन्डे---

तत्र मूळ विचारणीयम् ।

प्रमात्तर्थन्यः
प्रमात्तर्भितं धार्यमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥
ध्रमात्तर्भितं धार्यमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥
ध्रमेन कारत् थिया प्राणिता प्राणरक्षण्यः ।
ध्रमेन कारत् थिया प्राणितः प्राणरक्षण्यः ।
ध्रम्यक्षयः पर्याचनाः चेमक्तिणः ।
स्वया सर्वय्रेषु प्रयस्ता चेमक्तिणः ।
स्वयान-हर्व्याचेन प्रीच्या विश्ववेशवाः ॥ शण्डुलामाम् ।
स्वयान-हर्व्याचेन प्रीच्या विश्ववेशवाः ॥ शण्डुलामाम् ।
स्वयान-हर्व्याचेन प्राण्डुति प्रयच्छ मे ॥ गोपूमानाम् ।
धार्याजाश्रमाद्वाच्याचि प्रयच्छ मे ॥ गोपूमानाम् ।
धार्याजाश्रमाद्वाच्या विष्याचिष्यच्या ।
धार्याजाश्रमाद्वाचेन प्राण्डुतिकरा प्रवाः ।
सामोदिण प्रवानेन मामास्विमार्यं कष्टमः ॥ ध्रमात्वामः ।
धार्याजाश्रमाद्वाचेन स्वयाविष्याणि परमेदिन ।

२६० । बा श्रद्धपराणे— ।

आदौ विचार्य वयस परिमाण वह रुचिम् । आवस्मिक तु दावस्य पुण्यार्थे तु गवाहिकम् ॥

विष्णवर्गोत्तरे---

गवा कण्डूयन चैव सर्वकल्मपनाशनम् । तासा शृङ्गीदक नाम जाहवीजलसिनमम् ॥

तासा राष्ट्रादक नाम जाहवाजवाजवाजवार तथा— वस्ता परगवे जाम पुष्य स महदाप्रवात् । हिरित्र सक्ल काल मास परगो तथा ॥

स्वार सरक काल जाता नारने करना । दश्चा स्वर्गमकामीति सदस्यस्वानि पद् । ज्ञामभक्त जरो दशाक्षित्यमेव तथा गवाम् ॥ मासाष्ट्रकेन रुपते लाकलोक समायुतम् । स्वर्गमकाल दश्चा गवा नित्यमतन्त्रित ॥ स्वर्गमकाल दश्चा गवा नित्यमतन्त्रित ॥

त्तरेक्षमदान दश्या गया गिरयमती-द्रव । द्वितीय य समभाति तेन स्वरस्य मर ॥ वर्षायमात्रोति यादन्यन्वत्दर द्विज । हतित्राणं गया कृत्या गृहे पुरुपसम्म ॥ बारण कोन्माप्रीति मीडस्यन्द्रतणायसम् ॥

स्था---

अथ सहस्रादिविमभौजनविधिः ।

भारत---

नाराणामा सहस्य तु समीज्य भरतर्वमः । तर पापाटममुच्येत पापप्यभिरतोऽपि यः ॥ भोजयित्वा दशशत तरी वेदविदा सृष । न्यायिवद्यमंतिद्पा स्मृतिभाष्यविदां स्था । न वाति नरक घोरं संसाराध्य न सेवते । सर्वकामसमायुक्त प्रेटय चाडप्यवसुते सुग्रम् । इति ॥

। लक्षभोजनादी तु न विधेः षाष्युपलम्मः । यस्तु मैथिलमन्धे फचिद-

रेटिय सोऽप्यनाकरः ।

। क्ष्येतस्य प्रयोगः । देशकाली सङ्घीर्यं सञ्ख्यापप्रमीचनगरकागमन-संसारासेवनेदिकसर्वकामसवास्थामुब्निवसुरामाप्तिरूपपञ्कारा. सहस्र-श्राह्मणान्भीज्यादिनाऽऽतृप्ति तर्पविष्ये इति सङ्ख्य पुण्याहं वाचिय-धाऽऽदिकालाष्ट्रका सपूज्य बाद्याणानध्यरीपवसालङ्गरैः संपूज्य सप्ताले-नाडडरामि भोजपैत् । सतोडमिस्थापनामिमुखान्तं प्रत्या पेशवादि-भिद्वीदशनामिशः खादान्तैवृतेन हुत्वा दृष्यशं प्राक्षणेभ्यो निवेद्य क्षिष्ठकुदादि करना बादाणेभ्यक्छनोपानही प्रस्पेक दत्त्वा स्वस्ति बाक्य तान्धमापियवाऽऽशियो गृहीत्वा विसर्जयेत् । ततो भुक्तक्षेपं बन्धसहितौ

दम्वती इप्रमनस्की सुक्तीयावामिति । अनेन चैकरिमन्नेव दिने सह-सादिभोजन वार्यमिति प्रतीयते । शिष्टास्त्वनेकदिनैर्पि समापयन्ति त्र मूल विचारणीयम् ।

यामासिकृता चाहे त्यं पीठं मञ्जूषी का मान्य प्राप्त का स्वाप्त प्रस्त का स्वाप्त का स्वा

पार्वत्या सहितो देवो जगदुलिकारकः ॥ उमासहेश्ररयीः । शिवहात्त्यात्मकं यस्माञ्जगदेतवराचाम् । यस्मादनेन सर्व मे फरोतु भगवाद्शियम् ॥ फैल्स्यासी गौरीको भगवानभगनेशवित्। चराचरात्मको छिह्नस्वी दिशतु बास्टिनम् ॥ छिह्नस्य । इदं मारपत हिङ्गं रीप्यपीटसमन्वितम्। धान्यैद्वादशभियुक्तमेकादशप्रशन्त्रितन् ॥ संप्रद्या विधानेन यथोक्तं फलमस्तु से । मस्वतिह्नस्य । फाश्मीरलिङ्गपछे तु इदं काश्मीरलम् , इति वदेन्। महाकोशनिवासेन चवायीसपशोभितम्। **अस्य देव प्रदानातु मम सन्तु मनोरथाः ॥ शाल्मामस्य ।** महाकोशनिवास खं महादेवी महेखाः । प्रीयता तुन दानेन सतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ शित्रनाभस्य। राष्ट्रकर्णप्रलग्नीछलम्बभूदीयनासिक् । ष्टिनेत्र चर्तुंकः विस्तीर्पाहात्योज्ञन,॥, • व्यवीपात नमस्तेऽस्तु सोमसूर्यसुन प्रभी ।

यरान्तविकृतं सर्वतद्शस्यमिहाऽस्त मे ॥ व्यतीपातस्य । विघन्तद नमस्तेऽस्त्र सिहिकानन्दनाऽयय । दानेनानेन नागस्य रश्च मां वेत्रभाज्ञयात् ॥ स्वर्णनागस्य । जन्मान्तरसङ्खेषु यत्कृतं दृरितंनाया । 'सर्गपात्रप्रदानेन ग्रान्तिरस्तु सदा मम ॥ सर्गपात्रस्य । स्वदुङ्यो जगस्त्रप्दुर्वेनसी हेमपङ्का । ·पद्मावास हरेर्नाभिजात मां पाहि सर्वदा ॥ स्वर्णपद्माग्य । षान्तारवनदुरीयु चौरव्यालाकुरे पथि **।** हिसकात्र्य न हिसन्तु सिहदानप्रभावतः ॥ रवर्णिनहस्य । हिर्ण्याभेसंभूतं सीवर्ण चाङ्कलीयकम् । धर्मप्रदं प्रयच्छामि प्रीयतां कमछापतिः ॥ अञ्चलीयस्य । काञ्चनं हस्तवलयं रूपकान्तिसुरापदम् । विभूषणं प्रदास्यामि विभूषयतु मां सवा॥ वलयस्य । क्षीरोदमथमोज्तमुज्तृतं सुण्डलद्वयम् । श्रिया सह समुद्धतं ददे श्रीः प्रीयतां गम ॥ गुण्डलस्य । अगम्यागमनं चैव परदाराभिमर्शनम् । रीप्यपात्रप्रदानेन सानि नदयन्तु मे सदा ॥ रीप्यपात्रस्य । मसुरेषु समुद्धतं रजतं पितृबह्धभम् । ्र वस्मादस्य प्रदानेन रहः सं तो मम ॥ रजवस्य । परापवादपैशृत्यादभद्यस्य अञ्चलात् । तस्त्रज्ञातं च यत्पापं ताम्र् न् ।। ताम्रपात्रस्य । यानि पापानि काम्यानि व नात्थानि कताति व । कांस्यपात्रप्रवानेन वानि नश्यन्तु मे सदा ॥ कांस्यपात्रस्य ! ∡यानि पापान्यनेकानि मया यानि कृतानि च। लोहपात्रप्रदानेन वानि नक्यन्तु सर्वदा ॥ लोहपात्रस्य । यथा रहेपु सर्वेषु सर्वदेशा व्यवस्थिताः । तथा शान्ति प्रयच्छन्तु रखदानेन मे सुराः ॥ रङ्गस्य । ताम्रपर्णयोगोत्पन्ना वर्णाद्याः फल्पवर्णिताः । , मुक्ताः शुक्तयुद्धवाः सन्तु भुक्तिमुक्तिप्रदा मन ॥ मुक्तानाम् यथा भूमिप्रदानस्य क्लां नाईन्ति पोडद्गीप् ।

दानमध्यः',

222

दानान्यन्यानि में शान्तिभूमिदानाञ्ज्वसिंह ॥ सुबः। सर्वभवाध्या भूभिर्वराद्देण समुद्रुवा । अनुस्तुसस्यपञ्जा अतः शान्ति श्रयच्छ मे ॥ मस्यभूमेः । सवा रोहन्ति बीमानि पाटकृषे महीवर्छ । स्य प्रदानात्सरुख मम सन्तु मनोर्याः ॥ दृष्टकेत्रस्य । इदे गृह गृहाण त्व सर्वे प्रकरसंयुवम् । वय दानवसादेन ममाञ्जलिमार्च फळम्।। गृहस्य । स्ताध्यं प्रयच्छाति प्रीयतां से जगतिथि: । आश्रयस्य । गवामद्वेषु विष्ठनिव सुवनानि पतुर्दश । वामासमाच्छियं में स्वादिह टोफ परत्र च ॥ गीः। यमदारे महायोश या सा वैवरणी नही। का सर्वकामी बच्छामि एतास्य सुर्यन माम् ॥ वैतर्ज्याः । यामास्वं प्रथिषी सर्वा धेतुर्वे कृष्णसिमा । सर्वपावहरा निरयमतः शान्ति प्रवच्छ मे ॥ कृष्णधेनीः । मृत्यूकान्तिप्रश्चस्य मुखोत्यान्तिविषृद्धये । तुभ्यं संप्रदेदे नाम्ना गा समुद्धान्तिसंक्षिताम् ॥ उत्मान्तिपेनोः। इन्द्रादिछोक्पाशमां या राजमहिपी हामा । महिपीवानमाहास्यात्साऽस्त से सर्वेशामदा ॥ धर्मराजस्य साहाय्यं यस्याः पुत्रः प्रतिष्ठितः । . महिपासुरस्य जननी साऽलु मे सर्वेद्यामदा ॥ महिप्याः । महियाँ बरससंयुक्तां सुशीलां च पयस्थिनीम ! रक्तवक्षेण पुरपेण दस्ता मृत्युं जयेशरः ॥ मृत्युमहिष्याः । बाङ्मन कायजनितं यरिकचिन्मम दुष्ट्रतम् । तत्सर्वे विख्यं यातु त्वदानेनोपसेवितम् ॥ मेण्याः । रोमत्वष्ट्मासमञ्जादीः सर्वोपकर्णैः सद्य । जगतः संप्रहत्तोऽसि स्वामतः प्रार्थये शिवम् ॥ कर्णमेपस देशना यो मुखं हब्यबाहनः सर्वपृजितः (' सस्य स्वं बाह्नं पूत्र्यं देवैः सेन्द्रैर्गहर्षिभिः ॥ मन्निमान्दां पूर्ववर्मविपाकोत्यं तु यन्मम । तसार्व नाजय क्षिप कटराप्ति विवर्द्धय ॥ मैपस्य । स्वं पूर्व महाणा सुष्टा पवित्रं भविधी परा ।

त्वस्प्रसती स्थिता यक्षास्तरमाच्छान्तिकरी भव ॥ अजायाः । गौरी फल्यामिमां कित्र यथाशक्ति विभूपिताम् । गोत्राय धर्मणे दत्तां त्वं हि वित्र समाश्रय 🕊 वन्यायाः । इयं दासी मया तुभ्यं श्रीदत्स प्रविपादिता । तव कर्मकरी भोग्या यथेष्टं भद्रमस्तु मे ॥ दास्याः । यस्मादशुन्यं शयनं केशवस्य शिवस्य च । शय्या मर्माप्यशुन्याऽस्तु वरमाजनमनि जनमनि ॥ शय्यायाः । देवदेव जगन्नाथ विश्वातमन्द्रत्तयाऽनया । प्रभो शिविकया देव प्रीतो भव जनाईन ॥ शिविकायाः रथाय रथनाथाय नमस्ते विश्वकर्मणे । विश्वभूताय नाथाय करणाय नमी नमः ॥ रथस्य । फण्टकोव्छिष्टपायाणवृश्चिकादिनिवारणे । पाद्यके संप्रदास्यामि वित्र प्रीत्या प्रमुखवाम् ।। पादुकयोः । उपानही प्रदास्त्रामि कण्टकादिनिवारण । सर्वस्थानेषु सुखदावतः शान्ति प्रयच्छ से ॥ उपानहीः । इहाइसुत्रांडडेतपत्राणं कुरु केशव से प्रसी । ं छत्रं खळीतये दत्तं ब्राह्मणाय नया शुभम् ॥ छत्रस्य । कमण्डादुर्जेलैः पूर्णः स्वर्णगर्भः सुलक्षणः । अपितस्ते महासेन प्रसमस्तेन में भव ।। कमण्डलुनः । शशाङ्करसङ्खाश हिमडिण्डीरपाण्डर । भीवसार्याश दुरितं पामराऽगरवङ्ग ।। सामस्य । पत्रिका सर्वेजन्तूनां शैत्यानन्द्करी शुमा । विकृतां तृप्तिदा नित्यमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ व्यक्तसः दर्शनेन स्वमादर्श नृणां मङ्गलदायकः । र्शीर्यसीमाग्यसत्कीर्तिनिर्गळहानदो सत्र ॥ क्पेजस्य । भगवन्श्रूछङ्स्तेश द्ष्णाध्वरविनादान । सवायुगप्रवानेन शूलं नदयतु में सदा । 🗬 स्य । सर्वपदर्श्वतारेश सर्वेशस्य हि सास्कर । संक्रान्तिशृङ्गोपं मे निवास्य दिवाकर ॥ संक्रान्तिशृङ्ख्य त्वं देवातां मनुष्याणां रक्षसामायुवावसि ।